RNI No. 65373/94 मूल्य रु. 100 अंक 32, जुलाई 2020 – मार्च 2022

चन्द्रताल

RNI No. : 65373/94

अंक 32, **जुलाई 2020 - मार्च** 2022

संस्थापक : स्वंगला एरतोग, लाहुल-स्पिति में कला व संस्कृति के उत्थान हेतु सोसाईटी।
पंजीकरण संख्या : लस 42/93
सोसाईटीज़ रजिस्ट्रेशन एक्ट 21, 1960

सम्पादक
डॉ. छिमे शाशनी

उप-सम्पादक
बलदेव कृष्ण घरसंगी

प्रकाशक
सतीश कुमार

डिज़ाईन/ले आऊट
किशन श्रीमान

सम्पर्क
उप-सम्पादक, 151/1, रामशिला, आखाड़ा बाज़ार, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश-175101
मो.: 9816019157, 9459774779
ई-मेल : editor.chandrataal@gmail.com

स्वांगल एरतोग सोसाईटी (पंजी.) के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक सतीश कुमार द्वारा हिमतरु प्रकाशन समिति, कुल्लू से मुद्रित एवं नीरामाटी, ज़िला कुल्लू, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित।
सम्पादक : डॉ. छिमे शाशनी।

सम्पादन एवं प्रबन्धन
अवैतनिक

रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं तथा उनमें सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं। - सम्पादक

इस अंक में

सम्पादकीय		03
पाठकीय		04
कसौटी : भूटान मॉडल नहीं हमें लाहुली मॉडल ही चाहिए	- बलदेव घरसंगी	05
कविताएं		
इस छेद में प्रवेश करने से पहले	- अजेय	07
संयोग, छमिग्	- केसङ ठाकुर	07
टूरिज़्म	- शेर सिंह मेरुपा	08
गे देररे बंज़ोग	- अश्वनी बोक्ट्रपा	08
कहानी		
शरीफ चोर	- शेर सिंह	10
क्षेत्रीय दृष्टि		
टनल पर्यटन के बीच वह जो बचाया जाना चाहिए	- सतीश कुमार लोप्पा	14
लोक गाथा		
सूर्य और चन्द्र के घुरे का सांगीतिक विश्लेषण एवं स्वर लिपि	- समीर हंस	15
श्रद्धांजलि		
वे इस दुनिया से तमाम सेक्टेरियन बाईनरीज़ को....	- अजेय	29
स्व० प्रो० बनारसी लाल जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	- ठिनले शाशनी	32
विकास-यात्रा		
टिम्रकोड़ि से पीज़ा बर्गर तक का सफ़र	- छाया राम	34
पर्यटन विशेष		
अटल टनल और लाहुल का पर्यटन	- ई० रामनाथ साहनी	37
रोहतांग सुरंग के बाद लाहुल में पर्यटन	- प्रेम चन्द कटोच	39
अटल टनल रोहतांग और लाहुल पर संदर्भित प्रभाव	- डॉ० हपिन्दर सिंह	40
अटल टनल रोहतांग : लाहुल घाटी को संभावित स्वास्थ्य दुष्प्रभावों से कैसे बचाएं?	- डॉ. जे० पी० - डॉ. रंजीत वैद	42
लाहुल और स्पीति : प्रकृति का नैसर्गिक भंडार	- डॉ. मिलाप शर्मा	44
पर्यटन का लाहुल पर पर्यावरणीय प्रभाव आकलन एवं समाधान	- भूपेन्द्र सिंह राणा	52
पर्यटन का लाहुल पर पर्यावरणीय प्रभाव आकलन एवं समाधान	- शेर सिंह वैद	55
अटल टनल रोहतांग के खुलने के बाद लाहुल में पुलिसिंग : चुनौतियां एवं समाधान	- मानव वर्मा	57
कानून व्यवस्था एवं यातायात संबन्धी समस्याएं एवं समाधान	- अश्वनी कुमार	62
भूटान मॉडल : क्या लाहुल में स्थापित हो पाएगा	- प्रेम ठाकुर	64
एकीकृत पर्यटन परिपथ मॉडल लाहुल के संदर्भ में	- बलदेव घरसंगी	65
ग्रामीण पर्यटन की रीढ़ : होम स्टे	- रिगज़िन हयरपा	66
बढ़ते पर्यटन का स्थानीय समाज पर प्रभाव एवं समाधान	- रणवीर शाशनी	68
पर्यटन का लाहुल की कृषि अर्थव्यवस्था पर प्रभाव	- विक्रम कटोच	71
पर्यटन का परिवार संरचना, सामाजिक मूल्य व्यवस्था एवं रीति-रिवाज़ आदि पर पड़ने वाले प्रभाव एवं उनका निराकरण	- निर्मला वैद	74
रोहतांग में सुरंग : किंवदन्तियां और हकीकत	- शेर सिंह	75
बढ़ते पर्यटन का स्थानीय समाज पर प्रभाव और समाधान	- सुरिन्द्र सिंह 'यूसुफ'	77
लाहुल घाटी की सुरंग	- विजय बौद्ध	81
लाहुल और पर्यटन, पुष्प और मधुकर	- इशान मार्वल	82
लाहुल में पर्यटन की संभावनाएं	- नीतू ठाकुर	83
कितना बटोर लेना	- शेर सिंह मेरुपा	84
संस्मरण		
अध जले नोटों की दास्तान	- डॉ० बी०एस०रावल	85
समीक्षा		
स्नो फेस्टिवल सीरीज़ : एक झलक, चंद पुस्तकें और लोक संगीत	- ञग: छेरिङ	87
लिपि		
वर्धित नागरी वर्णमाला	- सतीश लोप्पा	92
कला		
चार्ली हेब्दोऊ वरका	- रोहित जी. रूसीया	97

सम्पादकीय

डॉ. छिमे शाशनी

पत्रिका के इस अंक में अटल टनल रोहतांग, पर्यटन, घाटी के विकास आदि विभिन्न पहलुओं की चर्चा से अतीत की भूली बिसरी स्मृतियां मानस पटल पर उभर आईं। बचपन में पहली बार धूल उड़ाती जीप को कौतूहल से देखना, तदन्तर लैम्प की रोशनी की जगह बिजली की जगमगाहट देख कर आश्चर्य चकित होना, जीविकोपार्जन के लिए सर्दियों में घाटी से बाहर गए लोगों का मार्च-अप्रैल महीने में कृषि कार्य के लिए रोहतांग की बर्फीली हवा का मुकाबला कर, किल्टे में सामान डाल कर, अपने घर पहुंचने तक रास्ते में रिश्तेदारों या परिचितों के घर रुकना, गृह स्वामी का आत्मीयता से स्वागत सत्कार करना और आगन्तुक का अपने संघर्ष, बाहरी दुनिया के रोचक किस्से सुनाना; बच्चों का उत्सुकता से किल्टे की ओर देखना, सबकुछ आंखों के सामने साकार हो उठा। समय बीतने के साथ घाटी में भी काफी कुछ बदलाव आया, लेकिन लोगों का दुर्निवार रोहतांग की तूफ़ानी हवा से संघर्ष ज्यों का त्यों रहा। महाविद्यालयी शिक्षा से वंचित शिक्षार्थियों का संघर्ष भी कम न था। मार्च के अंतिम सप्ताह में पुस्तकें आदि और एक दिन की खाद्य सामग्री पीठ पर लादकर कई फुट बर्फ में पैदल चलकर रोहतांग की बर्फीली हवा का सामना कर मनाली पहुंचना किसी कहानी के कथानक का आभास देता है और आज अटल टनल रोहतांग का बनना चमत्कार से कम नहीं लगता।

अटल टनल रोहतांग तैयार होने के साथ कई तरह की आकांक्षाएं और आशंकाएं भी जन्म ले रही हैं। प्रसिद्ध अंग्रेज़ी लेखक किपलिंग ने लाहुल के बारे लिखा- ''यह जगह मनुष्यों के लिए नहीं है, यहां अवश्य देवता रहते होंगे''। इससे हिमनदों की घाटी के नाम से भी अभिहित किया गया है। वर्ष में छः महीने दुनिया से कटा रहने वाला क्षेत्र अब उतना दुर्गम नहीं रह गया है। अटल टनल रोहतांग के खुलने के बाद अब लाहुल घाटी पूरे वर्ष देश के अन्य क्षेत्रों के साथ सड़क मार्ग से जुड़ा रह सकता है। इस वजह से लाहुल के निवासियों की समस्याओं का काफी हद तक समाधान हो सकेगा। उम्मीद है यह घाटी भारत के पर्यटन मानचित्र में अपनी एक अलग पहचान बना पाने में सफल होगा। एक अलग भू-पटल की वजह से यह स्थान भारत के अन्य पर्यटन स्थलों से बिल्कुल अलग है। यहां की गहरी घाटियां, हिमाच्छादित उत्तुंग धवल शिखर, विशाल हिमनद साहसिक खेलों के लिए भी आदर्श स्थल हो सकते हैं। ज़ाहिर है पर्यटन की यहां आपार सम्भावनाएं हैं। बौद्ध मठ तो यहां के प्रमुख आकर्षण हैं ही, माता मृकुला, त्रिलोकीनाथ मंदिर तथा नीलकंठ महादेव जैसे तीर्थ स्थल भी धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा दे सकते हैं। पर्यटन से लोगों की आय भी बढ़ेगी और नौजवानों को रोज़गार के अवसर भी प्राप्त होंगे।

हर बात के दो पहलू होते हैं- सकारात्मक और नकारात्मक। लोगों की आमदनी बढ़ेगी, जीवन स्तर ऊंचा होगा, रोज़गार के अवसर भी मिलेंगे। लेकिन हमारी संस्कृति और परम्पराएं भी इससे अछूते रह नहीं पाएंगी। इसके अतिरिक्त पर्यावरण पर भी विपरीत प्रभाव अवश्य पड़ेगा। अभी शुरुआती वर्ष में ही जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हैं। हज़ारों गाड़ियों के आवागमन से पूरे लाहुल में कार्बन की मात्रा भी बढ़ेगी, जिससे यहां हिमनदों के पिघलने की गति तीव्र हो जाएगी। जैसा कि अनुमान है कि हिमालय के अधिकांश ग्लेशियर 2035 तक लुप्त हो जाएंगे। लाहुल के हिमनदों के लुप्त होने की संभावना और बढ़ जाएगी। इस से लाहुल जिसे ठंडा मरुस्थल कहा जाता है, पूर्ण रूप से ठंडे मरुस्थल में बदल जाएगा। टनल के खुलने से लाहुल के विकास में ज़रूर गति आएगी पर यह गति कितनी देर तक बरकरार रहेगी, यह भविष्य ही तय करेगा। जिस तरह से लाहुल में पन-बिजली परियोजनाओं की घोषणा हो रही है उससे तो यही लगता है कि पूरा लाहुल नर्वदा घाटी परियोजना की तरह परियोजनाओं की भेंट चढ़ जाएगी। कोई मेधा पाठकर लाहुलियों को बचाने नहीं आने वाला। मात्र बीस-तीस हज़ार आबादी वाला यह क्षेत्र क्या कर पाएगा? क्या हम बड़े-बड़े सरमाये दारों की लालच की बलि चढ़ जाएंगे? सच तो यह है कि पूरे लाहुल का वजूद ही खतरे में है। महात्मा गांधी ने ठीक ही कहा है- ''यह पृथ्वी हमारी ज़रूरतें पूरी करने के लिए पर्याप्त, परन्तु हमारी लालच पूरी करने के लिए नाकाफी है।''

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान, जो विक्रमादित्य के समय भारत आए थे, लिखते हैं कि भारत में लोग घरों में ताले नहीं लगाते हैं, यह तो भारत के स्वर्णकाल की बात है। लाहुल में हम हाल ही तक खेतों में या आस-पड़ोस में जाते समय ताला नहीं लगाते थे। लेकिन अब क्या ऐसा कर पाएंगे? आज पुरानी अवधारणाएं ध्वस्त हो रही हैं; नये विचार, नई अवधारणाएं उनका स्थान ले रही हैं। सच तो यह है कि नये विचारों का स्वागत होना ही चाहिए। प्रगतिशील और तार्किक विचार से प्रगति होती है; ज़रूरी यह है कि इनकी गति बाधित न हो। इन्हें दुराग्रहों और पूर्वाग्रहों से मुक्त रखा जाए।

''राजा घेपन हर प्रकार की बुरी बलाओं से हमारी घाटी को बचाए रखें।''

पाठकीय

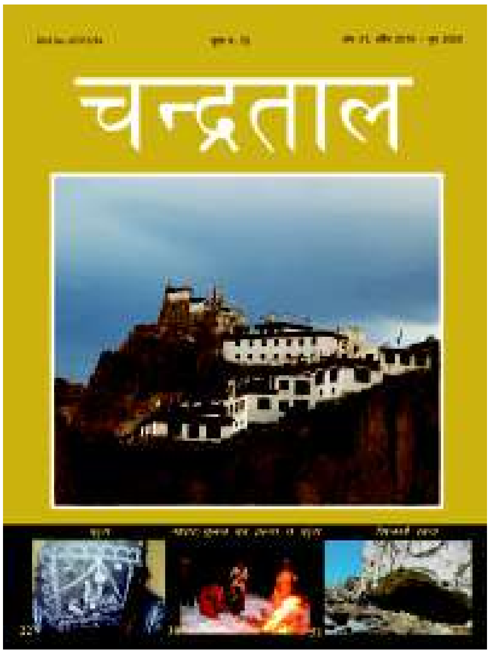

सम्पादक महोदया,

आपका और आपके सम्पादक मंडल का बहुत-बहुत धन्यवाद कि आप लोगों ने लोट गांव के खोगल और कुस नामक लेख को अपनी प्रतिष्ठित पत्रिका में जगह दी। लेखन में कुछ त्रुटियां मेरी ओर से रह गईं थीं, अतः पुनः यदि स्थान मिले तो इन्हें शामिल कर लेना।

१. खोग्लाणु :- स्वस्तिक के चिन्ह को खोग्लाणु कहा जाता है...खोग्लाणु अंकन का तात्पर्य हुआ स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करना... इसी तर्ज़ पे, शायद खोगल (यहां ओ का ह्रस्व रुप है) अर्थात् मंगल या पावन पर्व।

२. पिछले अंक के खोगल लेख में माता मराली (मराड़ी) और केलिंग वज़ीर को मां बेटा लिखा गया, अतः भूल सुधार करना चाहूंगा कि, इनका रिश्ता भाई बहन का माना जाता है... केलिंग वज़ीर इसलिए कहा जाता है क्योंकि ये शिवजी महादेव के वज़ीर माने जाते हैं..गद्दी लोग इन्हें भेड़-बकरियों का रक्षक तथा निर्जन एकांत स्थानों पर अपना सहायक मानते हैं।

३. (तिन्दी में कुस को जुकारु कहा जाता है, तिंद्र्याली में जुकारु का अर्थ है मेल-जोल) चिप्यक्सि शब्द का अर्थ भी मेल-जोल है।

४. आप सभी के लिए समीकरण का सवाल आसान लगा होगा...इसका हल भी बहुतों ने कई तरह से निकाल लिया होगा। इसका हल आसान था। इसी तरह २० रोटियों और बीस मर्द + औरतों +बच्चों वाले सवाल को इस तरह हल करना था कि मर्दों को डेढ़, औरतों को पूरी रोटी तथा बच्चों को आधी रोटी के हिसाब से बांटना ज़रूरी था। इसके कुल नौ प्रकार के हल हैं। खैर! आप सभी ने कोशिश की होगी और हल भी अनेकानेक निकाल लिए होंगे।

५. म्हे'शुल के दौरान एक टिप्पणी की चर्चा की गई थी वह अधूरी थी। पूरी टिप्पणी थी- -घ्य'त'अ म'लोड़ी। पङमिन्ज़ा कोड़ी। घ्यातो टूड़िंग लक्षो बाहूस। घरनिउ टूड़िंग कस्तूरिउ बाहूस। "पहली पंक्ति लगी कहीं अपमानजनक न लगे इसलिए उसे नहीं लिखा।

६. कुछ मुहाबरे या लोकोक्तियां अधूरे या त्रुटिपूर्ण छप गए थे जैसे ज़किउ घंडाड़, म'ज़किउ खनाड़ (म'किउ गलत छपा था) अर्थात् जो धैर्यवान या सहनशील है उसकी जीत होती है जो नहीं उसका विनाश होता है। मक्कड़ो चे'ब अर्थात् बंदर के हाथ में सुई। एकमात्र चीज का दिखावा करना।

७. टंग ट्विस्टर को हिंदी में जिह्व मरोड़क शब्द कहा गया है न कि जिह्व मरोड़।

८. अंततः यह कहना चाहूंगा कि लोट गांव का नामकरण के बारे जो मुझसे लिखा गया, वह केवल एक अनुमान मात्र है। अंतिम बात नहीं क्योंकि अनेक विद्वानों के अलग-अलग मत हैं।

रणवीर सिंह शाशनी,
गांव व डाक० लोट, लाहुल।
ranvirsinghkullu54@gmail.com

भूटान मॉडल नहीं हमें लाहुली मॉडल ही चाहिए

बलदेव कृष्ण घरसंगी

'पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन या फुरसत के क्षणों का आंनद उठाने के उद्देश्य से की जाती है'।

विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटक वे लोग हैं जो ''यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थानों में रहने जाते हैं, यह क्षेत्र ज़्यादा से ज़्यादा एक साल के लिए मनोरंजन, व्यापार तथा अन्य उद्देश्यों से किया जाता है। यह उस स्थान पर खास क्रिया से सम्बन्धित नहीं होता है।''

विश्व पर्यटन संगठन का पूर्वानुमान है कि अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन 4 प्रतिशत की औसत वार्षिक दर के साथ बढ़ता रहेगा। 2020 तक यूरोप सर्वाधिक लोकप्रिया गंतव्य रहेगा। ई वाणिज्य के आगमन के साथ पर्यटन उत्पाद इंटरनेट पर सब से अधिक कारोबार वाले उत्पादों में से एक बन गए हैं। प्रति व्यक्ति पर्यटन व्यय और जिस अंश तक देश दुनिया के संदर्भ में भूमिका निभाते हैं, इन दोनों के बीच गहरा सम्बन्ध है। न केवल पर्यटन उद्योग के महत्वपूर्ण आर्थिक योगदान, से स्थानीय अर्थ व्यवस्था को लाभ मिलता है, बल्कि यह उस विश्वास का भी संकेत है जिसके साथ दुनिया भर के नागरिक संसाधनों का लाभ उठाते हैं। यही कारण है कि पर्यटन में विकास का कोई भी अनुमान उस सापेक्ष प्रभाव का सूचक है जिसे प्रत्येक देश भविष्य में अनुभव करेगा।

पर्यटन उद्योग एक लुभावना शब्द है और इसके पेरोकार इसे लच्छेदार विशेषणों से अलंकृत करते रहते हैं। मुझे याद है सन् 1986 में जब मनाली में एक-दो बस में पर्यटकों का आगमन होता था तो हलचल मच जाती थी और आज 2021 में अनगिनत बोल्वो बस, टेम्पो ट्रेवलर और टैक्सी जब भरभराते हैं तो डफ डंबार के घने जंगल की भी सांस फूल जाती है। वह नाक भौं सिकोड़ते हुए अपने आपको चारों तरफ सड़कों से घिरा देखता है तो बेबस इस मकड़जाल को कोसता है। उस वक्त मैंने अर्जी आईज़नस्टीन द्वारा लिखित पटकथा (रील-4) के साईनॉप्सिस या ड्राफ्ट ट्रीटमेन्ट के सीक्वेन्स से प्रेरित होकर मनाली में पनप रहे पर्यटन पर पटकथा लिखने का विचार किया था और तब क्या पता था कि पटकथा का परिदृश्य बदल कर अब एक लम्बे सुरंग से निकलता हुआ लास्ट इनहेविटेबल वर्ल्ड को भी पीछे छोड़ देगा।

साठ के दशक में लाहुल में धार्मिक पयर्टन ही विद्यमान था। भारत वर्ष भर से साधु संत त्रिलोकीनाथ के दर्शन हेतु पैदल यात्रा करते थे और लद्दाख के धार्मिक पर्यटक आर्य अवलोकितेश्वर के दर्शन हेतु आते थे। लद्दाख को जब पर्यटक के लिए 1998 में खोला गया तो फिर विश्व भर से पर्यटक वाया लाहुल व श्रीनगर से लद्दाख जाने लगे। अब जब से अटल टनल का शिलान्यास हुआ है पूरा लाहुल क्षेत्र पर्यटकों के अत्याधिक आवक से त्रस्त हो रहा है। आम आदमी असमंजस में तथा हतप्रभ है। लाहुल के फेसबुक ग्रुप बुद्धिजीवियों के लिए यह एक तोहफे के रूप में मिला है जहां वह इस पर तरह तरह की टिप्पणी कर सकते हैं, सुझावों का पिटारा खोल सकते हैं तथा विभिन्न पर्यटन मॉडलों पर चर्चा कर सकते हैं। उनमें से एक भूटान मॉडल पर बड़ी चर्चा होती है। टनल, टूरिज़्म व टरबाईन के अन्तर्गत भी लाहुल में एक सार्थक पहल की कोशिश की गई और अब भी कुछ संस्थाएं समय-समय पर गोष्टी करते रहते हैं। इन सबका अब तक धरातल पर कोई प्रभाव स्पष्ट नज़र नहीं आता है जिसके कई कारण हो सकते हैं। इन प्रयासों में अर्न्तनिहित भावना क्या थी, और फिर क्या यह सचमुच समस्या से प्रेरित प्रयास थे या फिर कुछ और सामान्य कार्यकलाप भर थे। हमें इन से इतर यह देखना है कि समस्या क्या है? पूर्व में किए गए प्रयास संभावनाओं पर आधारित थे और आज समस्या मुंह बाय हमारे सामने आकर खड़ी है। अभी कोविड-19 आपदा के कारण इस समस्या से थोड़ी राहत मिली है परन्तु आने वाले समय में इस 30,000 की आबादी वाले ज़िले में रोज़ाना 25,000 से 30,000 पर्यटकों का आगमन खतरे की घंटी है। इन सबसे निपटने का एक ही तरीका है और वह है सामूहिक प्रयास।

भौगोलिक समानता लिए 4 से 5 ग्राम पंचायतों में पर्यटन सहकारी सभाओं का गठन करके और इनके ऊपर एक फेडरेशन रहे जो इनके कार्यकलापों को निर्धारित, विकसित व नियन्त्रित करेगा। अब लाहुल को अपना पर्यटन मॉडल विकसित करना होगा जिसकी जड़ें घाटी में विभिन्न कार्य प्रणालियों में ही पहले से ही अन्तर्निहित है। आवश्यकता है तो इन्हें पर्यटन उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित कर कार्यान्वयन में लगाने की। जैसे लाहुल में हर तरह के मॉडल पहले से बने पड़े हैं।

1. गांव स्तर पर कूहल सिंचाई प्रबन्धन मॉडल

2. गांव स्तर पर जानवर (रोतार) भेड़ बकरी (पोघल) प्रबन्धन मॉडल

३. गांव स्तर पर वैली वृक्ष (ब्रेन बुट) प्रबन्धन मॉडल

४. गांव स्तर पर बैल व याक (प्रजनन) प्रबन्धन मॉडल

५. गांव स्तर पर जागरा व डड़ि जातर (धार्मिक आयोजन) प्रबन्धन मॉडल

इन सब मॉडलों को जब पर्यटन अधोसंरचना, पर्यटन सेवा उद्योग, ग्राम स्तर पर पर्यावरण, संस्कृति, स्थानीय आर्कीटेक्चर, बोली का संरक्षण, मार्जिनलाइज़ेशन से सुरक्षा, भूमिहीन होने की परिस्थिति में ग्राम स्तर पर इसका निवारण, खेती संरक्षण की सभावनाओं पर कार्य, और पर्यटकों की आमद के दबाव को झेलने व उससे निपटने हेतु ग्राम स्तर पर कार्य योजना प्रयोग किया जाएगा तो हमें बाहरी मॉडल की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। यह मॉडल घरेलू होने व सभी लोग पूर्व से ही परिचित होने के कारण आसानी से इसका निर्वहन कर पाएंगे।

इस मॉडल की आवश्यकता अधिकाधिक पड़ेगी। क्योंकि किसी भी स्थान को पर्यटन उद्योग में तबदील करने के लिए करोड़ों नहीं अपितु खरबों रुपए की आवश्यकता पड़ेगी। इतना पैसा व्यक्तिगत व समूह लगा नहीं सकते अतः पर्यटन सहकारिता के अन्तर्गत ऐसी व्यवस्था विकसित की जा सकती है जहां पर्यटन स्थल की आवश्यक विभिन्न अधोसंरचनाओं हेतु धन की व्यवस्था सरकार की वित्तीय संस्थाओं से, ग्राम पंचायत, बीडीसी, जल शक्ति मन्त्रालय, हुडको, एन सी डी सी से ज़िला प्रशासन के मार्फत की जा सकती है। इस हेतु इन पर्यटन सहकारी सभाओं द्वारा फेडरेशन का गठन अनिवार्य है जो पूर्णतयः यह तय करेगी कि इसके कार्यक्षेत्र में सस्टेनेबल पर्यटन हेतु क्या आवश्यक है और इसका निर्धारण विशेषज्ञों, जैसे : आर्किटेक्ट, स्ट्रक्चरल इंजीनियर, सहकारिता विभाग, पर्यावरणविद्, वित्त पोषण प्रबन्धक, सांस्कृतिक धरोहर ज्ञाता और बौद्ध व हिन्दू पुरातन कला पारखी, द्वारा की जाएगी तथा ध्येय व नियम और उपनियम का निर्धारण हेतु इनकी राय आवश्यक होगी।

इस मॉडल की कार्यान्वयन प्रणाली निम्न होगी :

किसी भी पांच ग्राम पंचायतों द्वारा हर पंचायत में पर्यटन सहकारी सभाओं का गठन किया जाएगा तथा इसके ध्येय नियम व उपनियम उपरोक्त विशेषज्ञों द्वारा निर्देशित होगी। यह मॉडल अभी उदाहरण के लिए प्रस्तुत की जा रही है तथा यह किसी भी प्रकार से धरातल पर उतरी नहीं है।

अब उपरोक्त पर्यटन सहकारी सभाएं मिल कर एक पर्यटन सहाकरी फैडरेशन का गठन करेंगी। इस फेडरेशन का ध्येय आपस में तय मानकों द्वारा इन पर्यटन सहकारी सभाओं के लिए एक कॉमन ध्येय, नियम व उपनियम बनाना तथा इन सहकारी सभाओं के उन्नयन व सुचारू संचालन हेतु निर्देशन करना है जो सभी पर्यटन सहकारी सभाओं को मान्य होगा। इसकी आवश्यकता धरातल में स्थाई पर्यटन (sustaintable tourism) के साथ-साथ पर्यावरण, संस्कृति, धर्म, आचरण, व पर्यटन से उपजने वाली हानियों से अपने कार्यक्षेत्र को बचाने की है। जब तक सामूहिक स्तर पर इसका निर्णय लेने की क्षमता विकसित नहीं होगी व इसे अपनाया नहीं जाएगा तब तक यह पर्यटन उद्योग दुधारी तलवार की तरह होगी तथा इसके लाभ से ज़्यादा हानि की सम्भावनाएं ही ज़्यादा रहेंगी। फिर यह कहा जा सकता है कि इस पर्यटन व्यवसाय को हम क्यों अपनाने जा रहे हैं? इसका उत्तर है कि इसे आपको न चाहते हुए भी अपनाना पड़ेगा क्योंकि पर्यटक की आमद पर आपका नियंत्रण नहीं है परंतु उनको कैसे वैज्ञानिक तौर पर संभाला जाए वह आप कर सकते हैं क्योंकि यह अभी विकसित होना है और इसको नियंत्रित करने की अभी 100 फीसदी संभावानाएं हैं अगर, हम पर्यटन उद्योग को सहकारी सभाओं व फेडरेशन के अन्तर्गत लाकर सामूहिक प्रयास करते हैं, अन्यथा यह पर्यटन ऐसी बीमारी है जैसे मटर, गोभी व सेब की फसल बिना स्प्रे के बरबाद हो जाती है वैसे ही पर्यटन उद्योग समाज में घुन की तरह फैल जाता है और एक बार यह बीमारी लग गई तो इस का कोई इलाज नहीं है। इसका निवारण सिर्फ सामूहिक निर्णय व प्रयास ही है।

इस छेद में प्रवेश करने से पहले

(साऊथ पोर्टल पर चंद हिदायतें)

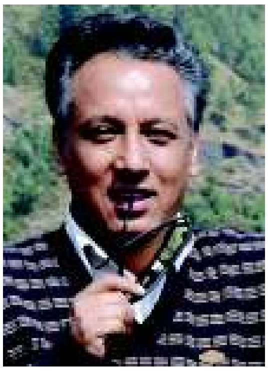

अजेय

रुको दोस्त, सुनो...
यह जो छेद बनी है न यहाँ
तुम इस में यूँ दनदनाते हुए मत घुस जाना
कि हम जो वहाँ के पत्थर हैं
मिट्टी हैं, झरने हैं, फूल पत्तियां और परिंदे हैं और पेड़ हैं
हम अपनी जगह से उखड़ने न लग जाएं
कि हम जो सदियों से भी सदियों पहले से
बेसुध पड़े हुए हैं निश्चिन्त उस पार...
बरफ जमी सभ्यताओं के भीतरी परतों की अपनी ही दुनिया में
अपने ही अंदाज़ में हम वहाँ के निरीह जीव
हम नहीं हैं तैयार
पकड़ने को तुम्हारी चाल और रफ्तार
कितना अच्छा हो कि इस छेद में प्रवेश करने से पहले
ज़रा सा मद्धिम हो लो
संभालो अपने इस हुड़दंग को जिसे एनर्जी कहते हो
या फिर यहीं छोड़ जाओ इस पार
जैसे जूते छोड़ जाते हो मंदिर के बाहर
और हम से हम जैसा ही बन कर मिलो
और मिलते रहो बार बार
स्वागत है इस अद्भुत अछूते निसर्ग में
तुम्हारा दिन अच्छा बीते!

सम्पर्क :
ajeyklg@gmail.com

संयोग

केसङ ठाकुर

ओ सुरंग!
क्यों नहीं खोल पाए मेमे अपनी आँखें?
गहरी चमकीली आँखें
तुम्हारी ही तरह उनके शरीर से जोड़ दिए गए थे
ढेरों पाइप
वेंटीलेटर
ताकि चूस पाते वह भी अपने हिस्से का ऑक्सीजन।

छ़मिग्

अबी,
तलाश रही हूँ
ओखली में पीसे छ़मिग् की गंध
तलाश रही हूँ
जंगली फूल और पत्ते
तुम्हारे जंगलों, जोत और झरनों से मीलों दूर
कभी गोवा के सब्ज़ी बाज़ार में
कभी मजनू का टीला की तंग गलियों में
तो कभी अमरीकी सुपर मार्केट्स में।

सम्पर्क :
kesang.thakur@gmail.com

टूरिज़्म

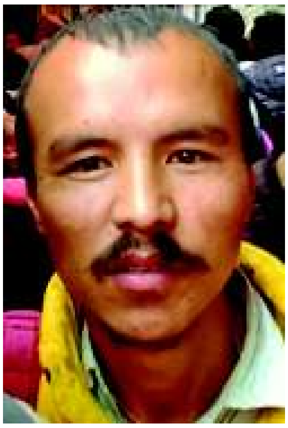

शेर सिंह मेरुपा

दो पैसा जोड़ेंगे होम स्टे का ब्रोशर लेकर दौड़ेंगे शिमला
विक्टरी टनल के आस-पास जिस तरह ख़ान मज़दूर
आती हुई बसों और कैब को देखकर दौड़ते हैं उसी तरह
हम भी रोहतांग टनल के आस-पास दौड़ेंगे।
हम अच्छे से अच्छा इंतज़ाम की बात चलाएंगे,
माथे पे पसीना और सिर पे अटैची लेकर उन्हें अपने घर लाएंगे।
खाने का स्वाद उंगली में बिकता है पैसे वाले सोचेंगे यहां हर चीज़ बिकता है।
मांगने वाले न जाने क्या-क्या मांग बैठें,
बातों-बातों में क्या पता कब कौन अपनी सीमा लांघ बैठे।
पहले के ज़माने में दिन भर की थकान को एक टहनी भर छांव चाहिए था,
जहां ज़रूरत खत्म हो जाए चादर में बस उतना ही पांव चाहिए था।
घर का नक्शा कुछ इस तरह बनता था
एक कमरा गर्मी के लिए और एक कमरा सर्दी के लिए होता था,
एक राजा की तरह सोता था, अब नींद करना उतना आसान नहीं होगा।
हर बार मेहमान भगवान नहीं होगा, लेकिन अब खेतों में टेन्ट है
मल्टीपल चॉइस होगा हमारी सभ्यता शालीनता
और मधुरता का बाई गॉड मिस्टेक हो गया कहेंगे,
तब भी क्या सर मत्थे रहेंगे, जब जिस्म को टटोलना शुरू करेंगे।
सिर्फ एक रात की बात है कोई अपनी नीयत फिरा देगा तो क्या होगा,
चांद को आसमान से गिरा देगा तो क्या होगा।
बेशक हम रहेंगे ओढ़कर लाज का गहना,
लेकिन देखने वाले ऊपर से नीचे तक देखेंगे
क्या-क्या है पहना,
ये पैसा इतनी आसानी से हज़म होने वाला नहीं है
जब तक उनकी ज़िद्द पूरी न हो कोई सोने वाला नहीं है
अब उनके बिस्तर पर कौन बिछेगा, चलती गाड़ी से भी कोई किसी को खींचेगा
तब दुनिया को मुंह दिखाने के लिए क्या रहेगा।

सम्पर्क : बिलिंग, लाहुल-स्पीति।
sher8944@gmail.com

गे देररे बंज़ोग

अश्वनी बोक्ट्रपा

तोग ग्यू ल्वाड़िङ एके रोपिरङ हज़ांर शुचे इलि
प्या प्यूचः लः सरके चुपे शुचे इलिरे
ञोखोल्कि शिमला रेड्रिगतः होस्साँ अचः इलिगा
सेमरि चेसिरि भत्ते ग्होसिरि भत्ते ञंदिगः
पता लेति सुरंग अलसि, मीतिङ इबी अपिरिङ
पर ग्यू भत्ते अम बंद ले केरि
भत्ते ल्हेक्सा इलि द
दोरिङ करनम चुकसा द घड़ि छङ्से चादर चोक्सि लेति
द अतिङ र्हुम्ज़िगः
इच्चः केतु अपिमि आस शुचाड् तो करनम
रेलमो करनम केतिङ र्हुम्ज़ा बङ्ज़ि
ग्रिफो दोरेला माबि द्
अतिङ हुपोर दोचेला द् सड़कः
केतु अम ल्हेक्सा इलि द्
अरि अपोर ग्यू कचङ, ग्यू अम्ज़े द्
द् अतिङ र्हुम्ज़िगः
मीरे त् अपोर ल्हेकि, केतु गप्पा शता तोई
गेरङ दोई म्हस मीरे अप्पा ल्होर
पर हेन्दु दोइमि गप्पा उई तोई
उई मीरे अपोर ग्यू ल्वाड़िङ
ग्होज़ा ग्हाज़ा अच्चा योर
रेई मीचे ग्यू फायदा ल्हेपोर
टंगः ढब्बा कमाके खुश शोर
रुठे तः अपतो गिबिलः दोतु वचि मोद खएं
उइतिङ गे हमेंशा खुशी रेइंगः
रेइरे ग्होज़ा रिल्ज़ा, रेइरे टंगा ढब्बा कमाचा
वचे वचे इउआ ल्हेइरे

केतिङ छल्ले रंङ्रि मरथिगा, न केचे़ छः पेड़िईं
बरदो खाँचा़ झेत्ते बङ्ज़िईं
मुग शू सन्दाड़ शू, वचि मोदङ ए बंज़िईं
केतु ए दोतु बिचङ दीए फर्क तोई
हर साल ठटिक्श्रा बङ्ज़तेग केतु अपिमि मोक्का
द तः ग्यू ठटिक्श्राला लस में शोतो
पल घड़ि ग्यू सेम स्वार्थी शुचे सोचिग्सः
चिले हुतिरे सुरंग, चिले हेन्दु बिचङ छेवः इबि ल्हेइरे
समझाच़तग सेमबि, परिवर्तन प्रकृतिउ नियम शु
अपिला बेन्डिउ अम धिरे शुबी अपिला न्हुरे
ल्हेक्सि रुठे शुबि अपिला
अम खन्ड्रआ बङ्ज़ोग केतु
अपोइंऐ अम पेश्रा अपिला
गे रू़हुम्ज़ा बङ्ज़ोग
गे देररे बंज़ोग।

अनवुाद :

मैं यहीं रहूंगा
आज मेरे आंगन में सूर्यस्त होते ही अंधेरा छा गया
परिन्दे और चूहे भी जल्दी चुप हो गए
शाम को शिमला रेडियो सुना तो धक् से रह गया
मन में लगा जैसे सब खत्म हुआ सब खो दिया
पता लगा सुरंग खुल गया जन आवागमन के लिए
पर मेरे सारे रास्ते बंद कर गया
सब कुछ बदल गया अब
उस पर हेमंत शुरू, शीघ्र ही सफेद चादर ओढ़ना होगा
अब किसका इंतज़ार करूं
एक तुम्हारे ही आने की आस रहती थी हेमंत में
बसंत हो या हेमंत तुम्हारा ही इंतज़ार था
ग्रेफ वाले भी नहीं आएंगे अब
किसके लिए खोलेंगे सड़क वे भी
तुम्हारा रास्ता बदल गया अब
कौन आएगा मेरे पास, मेरी राहों में
अब किसका इंतज़ार करूं
लोग तो आएंगे मैदानों से, तुम्हारी बात और थी
मुझसे मिलने बहुत लोग आते रहेंगे
पर तुम्हारे मिलन की बात और थी
और भी लोग आएंगे मेरे आंगन में
कुछ मेरा फायदा उठाएंगे
रुपए पैसे कमाकर खुश होंगे
अच्छा तो मुझे भी लगेगा उनके मुस्कुराते चेहरे देख
औरों को मैंने हमेशा खुशियां दीं
कुछ खेलते दुलराते, कुछ धन कमाकर
हंसते-हंसते विदा होते रहे
तुम्हें कुछ न दे पाया, न तुम ने ही कुछ मांगा
सिर्फ दुःख ही झेलते रहे तुम
बर्फ हो बर्षा हो चेहरे पर हंसी लिए रहे
तुम्हारे और उनके बीच बस यही फर्क था
हर साल सिंगार कर बैठा रहता तुम्हारे आने की रुत में
अब मेरे सिंगार का भी मोल न रहा
इस पल मेरा मन सोच रहा स्वार्थ के वश होकर
क्यों निकला सुरंग क्यों हमारे बीच डाली गई दरार
फिर समझाता हूं मन को परिर्वतन प्रकृति का नियम
नदी के साथ की राह कभी इस पार कभी उस पार
कभी बदलाव भी शुभ होता है
तुम्हारी राह तकता रहूंगा
आओगे कभी राह भटक कर
मैं प्रतीक्षा करूंगा
बस इसी तरह यहीं रहूंगा।
(अनुवाद - चंद्रताल ब्यूरो।)

सम्पर्क : गांव सुमनम, डाक० तान्दी, लाहुल।
ashwaniboktapa@gmail.com

कहानी

शरीफ चोर

शेर सिंह

रात भर नाइट सर्विस बस से तीन सौ किलोमीटर की चण्डीगढ़ से यात्रा कर सुबह घर पहुंचा, तो घर में अजीब सी मायूसी छाई हुई थी। माहौल बड़ा तनावपूर्ण लग रहा था। इस समय सुबह के साढ़े नौ दस बजे का टाइम हो चुका था। घर में उस समय कॉलेज में पढ़ने वाला उसका छोटा भाई विनय, और उसी की उम्र के पड़ोस के दो लड़के केशव तथा हरीश थे। उन सबके चेहरों पर अजीब सी मायूसी, हैरानी और असमंजस के मिले-जुले भाव भरे हुए थे। उनके लटके, उदास चेहरों को देख, उसे कुछ ताज्जुब हुआ। उसका माथा ठनका। घर-परिवार के कोई अन्य सदस्य दिख नहीं रहे थे। यहां तक कि बगीचे का चौकीदार भी नज़र नहीं आ रहा था। उनके बुझे-बुझे से लटके चेहरों को देख, उसे किसी अनहोनी की अशंका हुई। वे तीनों घर के बाहर आंगन में ही बैठे हुए थे। ''पिता जी... और मां कहां हैं ?''
उसने विनय से पूछा।

''वे दोनों नहीं हैं। तीन चार दिन हो गए... वे उदयपुर को गए हुए हैं । "विनय ने कहा ।

''यह रतन भी कहीं दिख नहीं रहा है?'' रतन को ना देख, उसे कुछ अशंका हो रही थी। रतन चौकीदार ज़रूर था, परन्तु वह घर के एक सदस्य की तरह ही रहता था। घर का कोई भी सदस्य कहीं बाहर या इधर-उधर से घर में पहुंचता था, तो रतन चंद ही सबसे पहले स्वागत-सत्कार में हाज़िर होता था। आज वह अभी तक दिख नहीं रहा था । इसी से उसे ताज्जुब और हैरानी हो रही थी।

''रतन चंद भाग गया है!'' विनय ने जैसे बम फोड़ा।

''भाग गया... मतलब ?''

''पिछले कल... वो घर के दरवाज़े का ताला तोड़ कर... चोरी करके भाग गया है!'' विनय नाम का ही नहीं, स्वभाव से भी विनयशील, विनम्र था। मक्खन की लोई सा नर्म, मुलायम था उसका हृदय। रतन चंद इसे खूब जान चुका था। उसकी विनयशीलता को धता बताकर और घर के किसी सदस्य के उपस्थित नहीं होने से, उसने अच्छा मौका पाकर घर के मुख्य दरवाज़े से अंदर घुस कर कमरों और अखरोट के बक्सों पर जड़े तालों को तोड़ कर, विश्वास और सहृदयता का खून कर दिया था। कुछ कीमती ज़ेवरात, गहनों और पश्मीने की चादरों को उठाकर वह नौ-दो ग्यारह हो चुका था। ये सब जानकर उसे बहुत ज़ोर का झटका लगा। परिवार के सदस्य की तरह रहने वाला कोई व्यक्ति इतना घिनौना और कमीना हो सकता है? किसी पर कैसे भरोसा करें? उसकी बुद्धि खराब हो गई थी । ''अरे ... तुम कहां थे? किसी को बताया... या उसे इधर उधर ढूंढ़ा... खोजा ?'' उसका दिमाग गर्म हो चुका था।

''मैं क्लाथ गया हुआ था। घर में वह अकेला ही था। मुझे क्या पता था... वह चोरी करके भाग जाएगा!'' विनय ने वस्तुस्थिति से उसे अवगत कराया।

''किसी ने उसे जाते हुए देखा?'' उसने फिर पूछा।

''हां... हमारे पड़ोसी लाल ने उसे रोडवेज़ की बस में चढ़ते हुए देखा है। लाल ने हमें अभी बताया।'' विनय भी हैरानी और अविश्वास से भरा था। ये सब बताते हुए उसे अब भी जैसे विश्वास नहीं हो रहा था। अब विनय को कुछ बोलने या अधिक पूछने का मतलब ही नहीं था। उलझन, चिंता उसके चेहरे पर एक साथ उभर आई। उसने बगीचे के पेड़ों की ओर देखा। वे वैसे ही फैले और फलों से लदे हुए थे। हालांकि सेब अभी आकार में बहुत छोटे-छोटे थे। मध्य अगस्त के बाद अपने पूरे आकार में आएंगे। लगता था, उन्हें रतन चंद के भागने की रत्ती भर भी परवाह नहीं थी।

उसने रतन चंद की शक्ल याद की। लंबा कद। डील-डौल वाला गठीला बदन। लंबोतरा चेहरा। चेहरे पर एक-दो जगह कटे के निशान। लंबी नाक, आगे से तीखी। होंठों के ऊपर तरतीब से काटी, तराशी हुई छोटी-छोटी मूछें। सिर पर भी छोटे-छोटे मगर घने, काले बाल। बाईं ओर के निचले होंठ का किनारा ज़रा सा टेढ़ा। तीस- पैंतीस के आस-पास की उम्र। वह अपने को रिटायर्ड फौजी बताता था। कद-काठी उसकी फौजियों जैसी ही थी। लेकिन ओष्ठ भाग टेढ़ा होने के कारण फौजी होने में संदेह होता था। क्योंकि फौज में तो शारीरिक रूप से स्वस्थ और तंदुरूस्त युवाओं को ही ठोक-बजा कर भर्ती करते हैं। उसने अपना गांव नग्गरी, बैजनाथ में बताया था। स्वभाव से बड़ा विनम्र और बहुत आज्ञाकारी। पिता जी ने उसके स्वभाव को जांचने-समझने परखने के बाद ही उसे बगीचे का चौकीदार रखा था। वह अपने विनम्र स्वभाव और दीनता की मूर्ति जैसा बनकर, घर के सदस्यों के साथ बहुत जल्दी घुल-मिल गया था। उसने सबका विश्वास जीत लिया था। थोड़े अरसे में ही सबका चहेता बन चुका था। भ्रमित सी करती उसकी दृष्टि, वैसा ही कुशल व्यवहार! कसी ने उसके भीतरी तह तक जाने की कभी कोशिश ही नहीं की थी। यहां तक कि उसने अपने गांव और इलाके का जो नाम और जगह बताई थी, सबने उसे सच मानकर उस पर विश्वास कर लिया था। किसी ने शक नहीं किया था। किसी दूसरे के ज़रिये पूछताछ कर पक्की जानकारी नहीं ली थी। लेकिन वह छिपा रुस्तम निकला! विश्वास, भरोसे की निर्ममता से हत्या कर वह भाग चुका था।

इस समय वह ही घर में सबसे बड़ा था। बाईस-तेईस वर्ष का था, तो क्या हुआ? अब क्या किया जाए? इसका फैसला और तुरंत निर्णय तो इस समय उसी को लेना था।

उसका दिमाग भन्ना गया था। फिर भी तुरंत विचार दूरी और समय को पार करने में एक क्षण भी नहीं लगा उसे। पुलिस में तो रिपोर्ट लिखानी ही पड़ेगी। घर का विश्वसनीय चौकीदार ही घर के ताले तोड़ कर, कीमती सामानों सहित भाग गया है। ऐसे कैसे छोड़ दें? उसका मामा पुलिस में इंस्पेक्टर थे। किसी दूसरे शहर में थे, तो क्या हुआ पुलिस में तो थे उसे उन्हीं के भरोसे इस मामले में कुछ कार्रवाई किये जाने की उम्मीद थी वह रात भर के सफर का थका हुआ था। फिर भी वह नहाया-धोया और कुछ खा-पीकर कपड़े बदल, मनाली पुलिस थाने में रिर्पोट लिखाने निकलने से पहले विनय से बोला, ''तुम लोग ध्यान रखना... थोड़ा सावधान रहना। केशव और हरीश... प्लीज़... तुम दोनों विनय के साथ ही रहना। घर में इस समय कोई नहीं है। तुम लोग विनय का ख्याल रखना।''

''ठीक है भैया।'' सुनने के बाद वह थाने में एफ़आईआर लिखाने चल पड़ा।

यह वह समय था जब मोबाइल तो क्या, लैंड़लाइन फोन ही केवल इने-गिने नसीब वालों के पास होता था। आज के आधुनिक संचार उपकरणों, सुविधाओं की तो तब कल्पना भी नहीं की थी किसी ने।

''हमारा चौकीदार ताले तोड़ कर... घर के ज़ेवरात... गहने और कुछ कीमती सामान लेकर भाग गया है। आप एफ़आईआर लिख लें। मेरा नाम जीवन है। मेरे मामा वीरेन्द्र शर्मा बंजार में थानेदार हैं।'' उसने चोरी की जानकारी और अपना परिचय दिया। थाने में इतना बताना ही काफी था। पुलिस थानेदार के भांजे के घर में चोरी! यह उनकी कल्पना से बाहर की घटना थी। थाने के एसएचओ का बात करने का लहजा, भाषा, बोली अब सब बदल गए थे। कठोर गेंद मुलायम ऊनी धागे के गोले में बदल गई थी।

''चोर का क्या नाम है?''

'' रतन चंद...''

''कहां का रहने वाला था?''

''नग्गरी... बैजनाथ बताता था।'' उसने वही दोहरा दिया जो उन्हें रतन चंद ने बताया था। उसका बताया पता-ठिकाना सही था, या फर्ज़ी? उन्हें इस की भी पक्की जानकारी नहीं थी। बस, उन्होंने उसके कहे पर विश्वास कर, उसे अपने यहां रख लिया था। एफ़आईआर की औपचारिकताएं पूरी करने के पश्चात् एक सिपाही को उसके साथ भेज दिया गया। सिपाही ने उस कागज़ को अपनी जेब में डाल लिया था जो अरेस्ट वारंट जैसा था।

सिपाही के साथ वह बस से वापस घर आया। सिपाही ने बक्सों, ट्रंकों के टूटे तालों को देखा। विनय से कुछ पूछा, और शाम होते-होते चोर को ढूंढ़ने, उसकी तलाश में वह उस सिपाही के साथ नग्गरी, बैजनाथ के लिए निकल पड़ा। बस से मण्डी पहुंचे। वर्दी पहने सिपाही को देख, बस के कंडक्टर ने न सिपाही से किराया मांगा, ना उससे कुछा कहा। बिना टिकट दोनों मण्ड़ी पहुंचे। रात मण्डी में पुलिस गेस्ट हाऊस में रुके। इंस्पेक्टर वीरेन्द्र शर्मा का भांजा जानकर उसकी खूब आवभगत की गई। वह सोच रहा था यदि उसके मामा पुलिस में नहीं होते, तो उसका इतना ध्यान रखते? शायद कभी नहीं! सोने के लिए बढ़िया बिस्तर और ऊपर से मच्छरदानी। जुलाई महीने में बरसात के कारण खूब मच्छर थे। मगर मच्छरदानी में सोने के कारण उसे बहुत अच्छी नींद आई। वैसे भी, पिछली रात को आधी-अधूरी नींद हुई थी। किसी पुलिस गेस्ट हाऊस में रात बिताने, सोने का उसका यह पहला अनुभव था। अनुभव बड़ा सुखद था। परन्तु सारी रात वह रतन चंद और उसको पकड़ लाने की कल्पनाओं, योजनाओं, ख्यालों-विचारों में डूबता-उतरता रहा।

अलसुबह उसके साथ वाले सिपाही ने ही उसे उठाया। वह अपनी वर्दी में तैयार था। हथियार के नाम पर उसके हाथ में केवल बेंत का एक मोटा सा डंडा भर था। वर्दी और वह डंडा ही उसकी पहचान थे। दोनों सुबह की पहली बस पकड़ बैजनाथ पहुंच गए थे।

''नग्गरी गांव कहां पड़ेगा?'' सिपाही ने एक चलते राहगीर से पूछा।'' साहब जी ! नग्गरी गांव तो बहुत दूर है। वहां तक बस आदि कुछ नहीं जाती है। आपको पैदल ही चलना पड़ेगा।'' उस राहगीर ने जो बताया, उस हिसाब से पन्द्रह-बीस किलोमीटर पैदल चलने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं था। जहां तक नज़र जाती, रास्ते के दोनों ओर दूर-दूर तक पानी से भरे धान के खेत ही खेत दिख रहे थे। ताजा रोपणी की हुई धान के खेत मनोरम दृश्य उपस्थित कर रहे थे। लगता था आसमान का नीलापन, धरती और खेतों में उतर आया हो जैसे। खेतों में धान की हरियाली में बरसात का बहुत बड़ा हाथ था। जुलाई महीने की तीसरी-चौथी बारिश की बौछारों ने रास्ते के किनारों, खाली स्थानों और दूर दिखते जंगलों को हरितिमा से अच्छादित कर रखा था। लेकिन उन दोनों का ध्यान प्रकृति की इस अनुपम सुंदरता को निहारने और आत्मसात करने का समय नहीं था। दोनों के मन-मस्तिष्क में चोर को पकड़ने के विचारों का मंथन और द्वन्द चल रहा था। रास्ते में जो भी मिलता, उससे पूछते, ''नग्गरी गांव कितना दूर है? रतन चंद को जानते हैं... वह पहले फौज में था ।''

'' नग्गरी गांव? गांव अभी काफी दूर है। रतन चंद को तो नहीं पहचानते हैं... '' जो भी मिलता, सवाल यही होता। सबका जवाब भी वही।

पैदल चलते-चलते दोनों थक कर चूर हो चुके थे। अंततः दोनों जंगल के पास स्थित नग्गरी गांव में पहुंच ही गए थे। पुलिस को देखते ही गांव के लोग कन्नी काटने लगे। वे किसी घर की दीवार की आड़ में, किसी गली के ओट से छिप-छिपकर देखने लगे थे। लेकिन पुलिस वाला तो पुलिस वाला था! ऐसे कैसे नज़रअन्दाज़ करता?

''रतन चंद कहां है? उसका घर कौन सा है?'' उन्हें जो भी दिखता, सिपाही उसी से तहकीकात करनी शुरू कर देता। ओट में होने की या कन्नी काटने की कोशिश के बावजूद, जो भी एकदम सामने पड़ता तो सकपका कर कहता, ''यहां कोई रतन चंद नहीं है... हम किसी रतन चंद को नहीं जानते... पहचानते हैं ।'' कोई भी व्यक्ति, कोई भी ग्रामीण कुछ भी बताने को तैयार नहीं था। उनकी सारी मेहनत

और कोशिश व्यर्थ हो गई थी। कोई भी मुंह खोलने को तैयार नहीं था। बहुत कोशिशों के बावजूद रतन चंद का कोई सुराग नहीं मिल पाया। आखिर में दोनों निराश, हताश होकर खाली हाथ वापस लौटने को लाचार, मजबूर थे।

वापसी में वे दूसरे रास्ते से लौट रहे थे। यह पूरा इलाका चाय के बागानों से भरा पड़ा था। जंगल-झाड़ियों वाला। बारिश की अधिकता और रास्ते। के किनारे उगी झाड़ियों, चाय के छोटे-छोटे पौधों में जमी आर्द्रता एवं रुके पानी के कारण दोनों के पैर, टांगे पिंडलियों तक गीले हो चुके थे। जूते-मोजे भी गीले। और कपड़े भी भीग चुके थे। बीच-बीच में बादल का एक टुकड़ा आता। बरस कर उन्हें फिर से गीला और भिगो कर गायब हो जाता। अधिक वर्षा के कारण ही सीढ़ीनुमा बागानों और जहां तक दृष्टि जाती, चारों ओर छाई गहरी हरियाली ही दिख रही थी। पूरे वातावरण में अजीब सी गंध तैर रही थी।

दोनों गांव-देहात वाले उबड़-खाबड़, फिसलन भरे रास्तों, गीले मेंढ़ों के किनारे-किनारे लगातार चल रहे थे। रास्ते के किनारे की जंगली झाड़ियां उन्हें तेज़ चलने से रोक रही थीं। फिर थक भी बहुत गए थे। चलते-चलते रात होने को आई, तो एक ढाबेनुमा होटल में रात गुज़ारने के लिए दोनों ठहर गए। होटल में बिजली की रोशनी में अपने जूते, मोजे और पेंट पर मोटी-मोटी जोंक चिपकी देखी, तो उसका दिल धक से रह गया। चाय बगानों के पास से गुज़रते हुए जोंक उनकी टांगों से चिपक गई थी। उनका खून चूसकर, मोटी होकर फूल गई थीं । उनके जूते-मोजे और पेंट भी खून से लाल हो चुके थे।

होटल वाले ने देखा तो, "बोला यह नमक छिड़क लो... जोंक निकल जाएंगे..." उसने नमकदानी उनकी ओर बढ़ाते हुए कहा। जैसे ही उन दोनों ने जोंकों के ऊपर नमक छिड़का, एक-एककर जोंक नीचे गिरने लगीं। दोनों ने राहत की सांस ली। रतन चंद तो नहीं मिला, लेकिन रतन चंद की तलाश ने ज़िंदगी के कुछ अनजाने, अनझेले पहलुओं से साक्षात्कार ज़रूर करा दिया था? नए अनुभवों, दृष्टांतों से रूबरू कराया। होटल वाले ने खाना खिलाया। सोने के लिए बिस्तर दिया। अधिक थकान के कारण उसे नींद नहीं आ रही थी। उसके शरीर का पोर-पोर दुख रहा था।

किसी तरह रात कटी और सुबह हुई। दोनों चोर को पकड़ने में नाकाम होकर वापस लौट रहे थे। दिन के समय वापस अपने गांव पहुंचे। वह अपने घर लौट आया। सिपाही मनाली थाने को चला गया। उसने व्यक्तिगत तौर पर जोखिम और कष्ट उठाकर चोर को ढूंढ़ने, तलाशने की अपनी समझ और क्षमता के अनुसार बहुत कोशिश की थी। पुलिस विभाग ने भी पूरा साथ दिया था। लेकिन चोर का न तो पता चला, ना ही पकड़ में आया। वे अब इस घटना को एक बुरा सपना मानकर भूलने लगे थे, या भूल जाने की कोशिश कर रहे थे।

समय बड़ा बलवान होता है। और संयोग कभी-कभी अनहोनी को होनी में बदल डालता है। लगभग दो वर्षों के पश्चात् एक दिन वह मणिकर्ण में अपने मित्र विनोद शर्मा के साथ शाम को युं ही सड़क में टहल रहा था। टहलने से थक गए, तो विनोद बोला, "चलो नीचे ढाबे में चाय पीते हैं ।"

"ठीक है ...थक भी गए हैं... कुछ ताज़गी मिलेगी ।" उसने हामी भरी।

दोनों ढाबे में चाय पीने के इरादे से भीतर गए। भीतर एक बेंच पर बैठे व्यक्ति पर जैसे ही उसकी नज़र पड़ी, उसका जैसे दिमाग ही घूम गया!

"रतन चंद तुम! पहचाना मुझे... में जीवन हूं। तुम चोरी करके भागे थे न मेरे घर से... दो साल पहले याद है ?" क्रोध, आवेश, उत्तेजना के मारे उसका पूरा शरीर थरथराने लगा था। बेंच पर बैठा वह शख्स रतन चंद ही था। अचानक उसको सामने देख वह सकपका गया था। उससे कुछ कहते, बोलते नहीं बना। वह जहां बैठा था, वैसे ही बैठे रह गया। मानों उसका होश गुम हो गया था। किंकर्तव्यविमूढ़, बेहोश सा! अनिश्चय, अविश्वास तथा अचानक मिले सदमें से भरा हुआ। परन्तु वह तो दो साल से अपने भीतर भरे गुस्से, अविश्वास को दबाए बैठा था। क्रोध से अधिक उसके द्वारा किए गए विश्वासघात से वह उबर नहीं पाया था। आज उसका चोर चौकीदार सामने था।

वह अपने को नियंत्रित नहीं रख सका। जैसे अकस्मात दौरा पड़ गया हो, कुछ इस अन्दाज में उसके हाथ-पैर उस पर ताबड़-तोड़ चलने लगे! रतन चंद बिना बचाव किये या अपने स्थान से हिले डुले, उसकी लात-घूंसे खाता रहा। जैसे उसमें प्रतिरोध-प्रतिकार करने की ताकत ही ना हो!

आखिर उसके मित्र विनोद ने पकड़ कर उसे शांत कराया । "अरे यार ! जानते हो... यह चोर है । दो साल पहले हमारे घर से चोरी करके भागा था। आज यहां मिला... तो अपने ऊपर कंट्रोल नहीं रख सका।" लेकिन वह उसको आसानी से छोड़ने वाला नहीं था। उसके विश्वासघात से उपजे क्षोभ और क्रोध के कारण संवेदना के लिए कोई गुंजाइश ही नहीं बची थी उसके अंदर। उसने रतन चंद को हाथ से पकड़ उसे मणिकर्ण के पंचायत प्रधान के घर पहुंचाया। वह शायद इतना घबरा चुका था कि उसने कोई विरोध या प्रतिरोध नहीं किया। शायद अपने किये पर बहुत शर्मिंदा था? लेकिन था बड़ा ही डरपोक! उसने चोरी करने का साहस कैसे किया होगा? क्या आत्मग्लानि से गल चुका था? या अपनी करनी पर बहुत पछतावा था? पता नहीं?

"प्रधान जी! यह चोर है... आज रात आपके घर में रखूंगा। कल इसे मनाली थाने में ले जाना है।" उसने ग्राम पंचायत के प्रधान से अनुरोध किया।

"ठीक है... लेकिन इसके साथ कमरे में आपको रहना होगा। इसने कुछ कर लिया... फांसी आदि लगा ली... तो इल्ज़ाम हम पर लगेगा।" पंचायत प्रधान ने उसके अनुरोध को मान तो लिया, लेकिन सशर्त। यानी शर्तों के साथ उसे अपने घर में रात को चोर के साथ ही रुकने की स्वीकृति दे दी थी। प्रधान के घर के भूतल में एक कमरे में रात भर रतन चंद चोर और वह, दोनों ही साथ

रहे। बस, रतन चंद के दोनों हाथों को रस्सी से पीठ पर बांध दिया गया था। वह चोर के साथ एक ही कमरे में था। उसे डर नहीं लगा। उसका गुस्सा डर को उभरने नहीं दे रहा था शायद। लेकिन तनाव और विचारों के तूफ़ान की वजह से वह रात भर सो नहीं सका । उसकी नज़रें जब तब रतन चंद पर पड़ रही थी। संभवतः वह भी जग रहा था। परन्तु खामोश था। कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। सुबह हुई। उसने रतन चंद के बंधे हाथों को खोला। उसे हाथों से पकड़े-पकड़े कमरे से बाहर निकला। उसने कोई विरोध या प्रतिरोध नहीं किया। वह किसी पालतू कुत्ते की तरह दुम दबा, साथ चल रहा था। शारीरिक रूप से वह उससे बीस ही था। हट्टा-कट्टा, लंबा-तड़ंगा। वह चाहता तो हाथ छुड़ा सकता था। उसे धक्का मार कर गिरा सकता था। भाग सकता था। परन्तु अपने अपराध बोध से संभवतः इतना घबरा चुका था, कि अपने से भी कमज़ोर और कम ताकत वाले का भी प्रतिरोध नहीं कर पा रहा था। वह अस्वाभाविक रूप से चुप था। उसकी चुप्पी हैरान कर रही थी उसे। मनोवैज्ञानिक तनाव, डर व्यक्ति को अपने से कमज़ोर के सामने भी घुटने टेकने तथा भय से उबरने नहीं देता है। बल्कि डर की उस भावना से इतना ग्रसित हो जाता है, कि अपनी शारीरिक बल को भी भूल जाता है। अनभिज्ञ हो जाता है। उसका अपराध उसे बल नहीं, गलने-खलने लगता है। वह उसके हाथ को कस कर पकड़े मनाली जाने वाली बस में चढ़ गया। वह बिना आना-कानी के किसी मासूम, आज्ञाकारी बच्चे की तरह बस में उसके साथ चुपचाप बैठ गया। ''लो संभालो... चोर को... आप तो कुछ कर नहीं पाए! मैं खुद ही पकड़ कर लाया हूं। याद है... दो साल पहले मैंने एफआईआर लिखवाया था। यह वही चोर है। मणिकर्ण से पकड़ कर लाया हूं। सौ किलोमीटर का सफर अकेला इसके साथ कर आया हूं।'' उसने रतन चंद को पुलिस थाने में पहुंचा दिया था। पुलिस वाले भी उसकी कार्रवाई और साहस पर हैरान थे।

''क्यों बे! जिस घर में रहा... उसी में चोरी कर ली ... चोरी का सामान कहां है?'' थानेदार ने उसके गाल पर एक झन्नाटेदार चांटा मारते हुए पूछा। फिर वो सिपाही रतन चंद पर पिल पड़ा जो उसके साथ उसे खोजने, पकड़ने निकला था। थोडी देर के लिए भाड़ में दाने भुनने जैसी पट-पट की आवाजें आती रहीं। चोर पर बेंतों की बौछार पड़ रही थी। बेंत की मार से त्रस्त होकर वह गिड़गिड़ाने लगा। सिपाही अपने माथे से बहते पसीने को पौंछने लगा था।

''साहब जी... मेरे पास अब कुछ नहीं है। सारा सामान मैंने बेच दिया था।'' उसके स्वर में अब भी पछतावा नहीं था। लेकिन आंखें और गर्दन झुकी हुई थीं।

''कहां बेचा? हरामी कहीं का... किसे बेचा?''

''साहब जी! चोरी करके मैं पंजाब को भाग गया था। फगवाड़े में सारा सामान बेच दिया था। अब न पैसे है... ना ही सामान..'' उसने अपना जुर्म काबूल कर लिया था।

''बड़ा हरामी है तू। बेशर्म... फिर से यहां पहुंच गया? शर्म नहीं आई ?'' थानेदार गरजा।

''साहब जी... दो महीने पहले ही आया था।'' चोर अपने कारनामों को परत दर परत खोल रहा था।

''जीवन जी! अब क्या करें? इसके पास तो कुछ भी नहीं है।'' थानेदार ने उससे पूछा।

''मैंने चोर को पकड़ कर आपके हवाले कर दिया है। अब आपकी मर्ज़ी है... जो करना चाहो।'' उसने कहा।

''अच्छा देखते हैं...फिलहाल इसको लॉकअप में डाल दो।'' थानेदार ने फिर से दो बेंत चोर की पीठ में जमाते हुए सिपाही से कहा।

वह वापस अपने घर आया। परिवार के सदस्यों को चोर को पकड़ कर पुलिस थाने में बंद करने की जानकारी दी। घर के लोग भी हैरान थे। चोर को देखने के लिए सभी उत्सुक हो उठे थे। दूसरे दिन उसके पिता जी रतन चंद को देखने नौ किलोमीटर दूर थाने पहुंच गए। रतन चंद उनके आगे सिर नहीं उठा पा रहा था। थानेदार के इशारे पर एक सिपाही ने फिर से चोर की धुनाई शुरू कर दी, जैसे धुनकी रूईं, कपास को धुनता है। उसके पिता को चोर पर दया आ गई। उन्होंने उसे और पिटने से बचा लिया।

''पंडित जी! इसके पास तो कुछ नहीं है। न पैसे है... ना ही चोरी का सामान. .. क्या करें?''

''थानेदार साहब... आपकी इच्छा है... आपकी मर्ज़ी। इसके पास कुछ भी नहीं है... तो क्या करना है। छोड़ दो।'' उसके दयालु पिता ने चोर को वैसे ही छोड़ देने की वकालत की।

''अच्छा देखते हैं। क्या हो सकता है!'' थानेदार ने कहा।

रतन चंद अपनी ही नज़रों में शायद मर चुका था। उसे आत्मग्लानि थी या नहीं, पता नहीं? लेकिन इतनी मार खाने के बाद भी, बंदे ने उफ तक नहीं किया था। बिना आना-कानी के उसके साथ बैठकर सौ किलोमीटर दूर थाने तक आना उसकी कायरता थी, अथवा पश्चाताप का प्रयास? वह समझ नहीं सका। पकड़े जाने पर गुनाहगार वैसे ही हीनता, अपराध बोध से मनोवैज्ञानिक तौर पर अधमरे जैसे हो जाते हैं। रतन चंद भी कोई अपवाद नहीं था।

उसके पिता रतन चंद से मिलकर वापस आ गए थे। बाद में पता चला, पुलिस ने उस डरपोक कहें या शरीफ, चोर को दो-तीन दिन थाने में रखने के पश्चात् बिना किसी कार्रवाई के उसे छोड़ दिया था।

सम्पर्क : नाग मंदिर कालोनी, शमशी, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश।

e-mail : shersingh52@gmail.com

टनल पर्यटन के बीच वह जो बचाया जाना चाहिए

सतीश कुमार लोप्पा

रटांग के छिद जाने और अटल टनल रोहतांग के राष्ट्र को समर्पित कर दिए जाने के बाद लाहुल और पांगी घाटी के लिए जैसे संभावनाओं के द्वार खुल गए हैं। आम जन के लिए पहला लाभ जो मिला है वह यह है कि आवागम बहुत आसान हो गया। दस मिनट में रटांग के इस छोर से उस छोर पहुंचा जा सकता है। खराब स्वास्थ्य सेवाओं वाले इस क्षेत्र के वक्त बेवक्त बीमार होने वाले मरीज़ों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं हेतु यहां से शिफ्ट करने में यह बहुत बड़ी सहूलियत होगी। सब से बड़ी जो संभावना खुली है वह पर्यटन को लेकर है। हर तरफ यही चर्चा है कि पर्यटन व्यवसाय फलेगा फूलेगा और क्षेत्र के लोगों की आर्थिकी को बहुत अधिक बढ़ावा मिलेगा। मतलब यह कि घाटी की ओर पैसे का प्रवाह बढ़ेगा। पैसे का असंयमित प्रवाह बाढ़ के पानी की तरह होता है जो अपने रास्ते में आने वाली कई चीज़ों को बहा ले जाता है। इस बिन्दु पर मुझे सुरेन्द्र शौण्डा की कविता याद आती है ''चि ञदिईं''-पोको कतर ञदिईं , सचे सेम ञदिईं , नगरो भाईचारा ञदिईं, गोज़ि नाज़ि ञदिईं, बेसि दङ्सि ञदिईं, वस उफंग ञदिईं, सैणा याणो यशः ञदिईं, ढब्बो डढ़रिङ भत्ते ञदिईं। ''पैसे की बाढ़ में हमने सब खोया।'' सही है, हमने काफी कुछ खोया है। अब और नहीं खोना है। अपनी अच्छी चीज़ें हमें सहेज कर रखना है, चाहे बाढ़ कैसी भी हो, हमें अपनी चीज़ें सुरक्षित जगहों पर समेट रखना है। यह सजगता हर किसी में अब आ जानी चाहिए।

यह प्रश्न वाजिब है कि वह क्या है जिसे बचाया जाना चाहिए। इस में सबसे ऊपर आते हैं, हमारे जीवन मूल्य। हमारा समाज हज़ारों वर्षों से ज़िंदा और गतिशील समाज है, इस दौरान इस ने कई जीवन मूल्य स्थापित किए हैं जो उदात्त और उत्कृष्ट हैं, उन्हें बचाए रखना ज़रूरी है। बड़े बूढ़ों का आदर सम्मान यहां बचपन से सिखाया जाता है। कभी भी हम अपने बड़ों से ऊपर आसन ग्रहण नहीं करते। हमने गांव में देखा है, किसी समारोह में बुज़ुर्ग बैठे होंगे, यदि कोई लघु शंका के लिए भी उठता है तो उस के साथ एक युवक को जाने के लिए कहा जाता है। यदि कोई बुज़ुर्ग अकेला वहां से उठ कर घर की ओर जाने लगता है तो भी उस के साथ दो युवक छोड़ने जाते हैं। बुज़ुर्गों के प्रति ये हमारे मूल्य हैं।

ग्राम्य समाज एक वृहत्तर परिवार की तरह है। यहां हर कोई रिश्तों में बंधा है। यहां हर कोई चाचा है, ताया है, मासी है, चाची है, बुआ है, भाई है, बहन है। और अन्तर्मन से ऐसा ही मानते भी हैं। ये मूल्य हैं। पुराने समय में पारिवारिक सहकार अपने उच्चतम स्तर पर था, जब संयुक्त परिवार हुआ करते थे। यहां पर हमारे समाज को बहुत हानि उठानी पड़ी, ''पैसे की बाढ़ में''। आज हर घर में यही नारा साकार होता दिखाई देता है ''हम दो हमारे दो''। इस से आगे पीछे जैसे कुछ दिखाई ही नहीं देता। मेडिकल की भाषा में इस दृष्टि-दोष को पता नहीं क्या कहते होंगे। यह मूल्यों का क्षरण है। इस सोच से ऊपर उठना होगा। कम से कम जो भी बचा है उसे तो बचाए रखना ही चाहिए।

सामाजिक समरसता को बनाए रखना सब की ज़िम्मेदारी है। अतीत में हमारे ग्राम्य समाज में स्त्री और बच्चे कभी भी, असुरक्षित नहीं महसूस करते थे। आज शत प्रतिशत

विश्वास के साथ ऐसा नहीं कह सकते। पुरुष समाज के लिए आत्म चिंतन करने और खुद को बेहतर बनाने का अवसर है।

आने वाले वक्त में हमारी लोक भाषाओं पर भारी संकट आने वाला है क्योंकि हम अपने बच्चों को भाषा नहीं सिखा रहे। यह बहुत बड़ा सामाजिक-भाषिक गुनाह कर रहे हैं। एक भाषा को खड़ा करने में हज़ारों हज़ार वर्ष लगते हैं यह इस तरह फोकट में खो देने जैसी चीज़ नहीं है। इस का मूल्य पढ़ा-लिखा समाज समझे। कृपया अपनी भाषा बोलें और अपने बच्चों को सिखाएं। ताकि यह ज़िंदा रह सके।

हमें अपने अच्छे रस्मो-रिवाज़ों को सहेजे रखना चाहिए जब तक कि वे कुरीति की श्रेणी में गिनने योग्य नहीं बन जाते। हमारे मेले त्यौहार, लोकगीत, लोकनृत्य, लोकसंगीत, हमारी वेशभूषा, ये सब किसी समाज की जीवन्तता के लक्षण हैं इन को ज़िंदा रखना समाज के ज़िंदा रहने के लिए आवश्यक है। ये किसी भी ज़िंदा समाज की पहचान होते हैं।

मेले त्यौहारों को मनाते हुए, उन के निर्धारित समय और नियम मर्यादाओं का पालन बहुत आवश्यक है। मेलों-पर्वों के आनुष्ठानिक पक्ष एवं संबन्धित वस्तुओं को अन्यथा प्रदर्शित करते समय विशेष संयम की आवश्यकता अपेक्षित रहेगी। हर मेले-त्यौहार के अपने मायने

होते हैं, निहितार्थ और महात्म्य होते हैं। सर्दियों के मेले त्यौहार अगर गर्मियों में मनाए जाएं तो पैरों की बजाए सिर के बल चलने जैसा है। इन्हीं बातों का खयाल नए मेलों के नामकरण के समय भी रखा जाना चाहिए। पिछले स्नो-फेस्ट के समय इस तरह की विसंगतियां देखी गई हैं।

आज के वक्त में धर्म एक बड़ा मसला है। धर्म के नाम पर दुनिया भर में टकराव की स्थितियां हैं। हमारा इलाका धार्मिक समभाव का उदाहरण रहा है। आज भी है और आगे भी यत्नपूर्वक इसे बनाए रखना ज़रूरी है। ऐसी संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता कि कुछ राजनीति से प्रेरित धार्मिक संगठन इस क्षेत्र के धार्मिक समभाव में खलल डालने का प्रयास भविष्य में करें। यहां के समाज को जागरूक और सचेत रहने की ज़रूरत है। प्राचीन धार्मिक प्रतीकों के साथ किसी किस्म की छेड़ खानी और जमा-घटाई नहीं की जानी चाहिए। वे जैसे हैं वैसे ही ठीक हैं। स्थानीय ग्राम्य देवी-देवताओं के नामों को पुराणों के देवी देवताओं के नामों के काल्पनिक साम्य के आधार पर नए-नए नाम देने से हमें हरगिज़ परहेज़ करना चाहिए। जो जैसे हैं, वैसे ही अच्छे और प्रभावशाली हैं।

अन्त में यही कहूंगा, मेरा मानना है कि जब कोई समाज खतरों और समस्याओं से जूझता है तो वह धीरे-धीरे उन खतरों और समस्याओं के प्रति एक आन्तरिक सुरक्षा तंत्र विकसित कर लेता है। ठीक वैसे ही जैसे हमारा शरीर कीटाणुओं के संक्रमण के समय करता है। मुझे पूरा विश्वास है हमारा समाज भी भविष्य में आने वाले खतरों से टकराएगा और प्रतिक्रिया स्वरूप उचित प्रतिरक्षा तंत्र विकसित कर लेगा और खुद को बेहतर तरीके से परिस्थितियों के अनुसार प्रगतिशील भविष्य की ओर उन्मुख कर लेगा। हां, इतना ज़रूर कहूंगा कि समय पर खतरों के प्रति सजग रह कर आगे बढ़ना ''वैक्सीनेशन'' के तुल्य कारगर साबित होगा।

सम्पर्क :
satishklopa@gmail.com

लोकगाथा

सूर्य और चन्द्र के घुरे का सांगीतिक विश्लेषण एवं स्वर लिपि

समीर हंस

सुरुजा चंदूरा ए ऐढ़े नू गेयी जी ओ
ऐढ़े नू गेयी ए रघू डोमा नौड़े जी ओ
राघुरे नौड़े एकी सीतिरी आसे जी ओ
सुरुजा चन्दूरा ए मसाकीरी लागी जी ओ
बाते री माणू बतेयाना चाले जी ओ
बाते री माणू क्या प्रोजना लागी जी ओ
सुरुजा चंदूरा एक गिली फीरी पूछे जी ओ
सच्चा बोले सितीरी कुणू तेरे माता जी ओ
सच्चा बोले सितीरी कुणू तेरे पीता जी ओ
मेंढूणे पीता बिशूनू बराड़ी जी ओ
मेंढूणे माता ए धराती ए माता जी ओ
सुरुजा चंदूरा ए मुंहे मुहां हेरी जी ओ
बिशुनू बराड़ी ए त्रिए कूड़ी जामी जी ओ
जेठा जेठा कुड़िए नमो नारेणा ब्यायी जी ओ
तेठी कना कुड़िए लच्हा चारुणा गेयी जी ओ
लच्हा चरूंदे ए रघु डोमा चोरी कारी लेयी जी ओ
सुरुजा चंदूरा पूछूणे लागी जी ओ
राघु रे घारे क्या कामा करेला जी ओ
कूपूरी निषेला ए कूपूरी टुषेला जी ओ
तेला छापी कपूड़ा धोणा जी ओ
तेला छापी कापूड़ा धोणा जी ओ
करथोला चीरी ए मण्णा पाकाये जी ओ
सुरुजा चंदूरा ए मुंहे मूंहां हेरी जी ओ
चंदूरा भाई ए आपूणी बौड़ी चीरी जी ओ
बौड़ी चीरी ए बैणी छापाये जी ओ।।

सांगीतिक विश्लेषण एवं स्वर लिपि :

घुरे - सूर्य और चन्द्र
तल - दीपचन्दी
स्वर- सा, रे, म, प, नि, सां।
राग छाया - राग वृन्दावनी सारंग।

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	चं रे	दू म	- ऽ	रा प	- ऽ	ए प	- सां	ऐ नि	- नि	- प	सु सा ड़े म	रु ऽ - रे	जा सा - रे	- सा नू म
चिन्ह	X			२				०			४			
	गे म	- प	- म	ई रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- रेम	सु रेसा	रु निप	जा प	- प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	चं प	दू निप	- म	रा प	- ऽ	ए ऽ	- ऽ	ऐ रेरे	- सा	- ऽ	ड़े रे	- रे	- रे	नू म
चिन्ह	X			२				०			४			
	गे म	- प	- म	ई रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	गे रे	- म	- ऽ	थी प	- ऽ	ए प	- सां	र नि	घू नि	- प	ऐ सा डो म	- ऽ - रे	ड़े सा - रे	नू सा मा म
चिन्ह	X			२				०			४			
	नी म	- प	- म	ड़े रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- रेम	ऐ रेसा	- निप	ड़े प	नू प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	गे प	- निप	- म	यी प	- ऽ	ए [illegible]	- [illegible]	र रेरे	घू सा	- ऽ	डो रे	- रे	- रे	मा म
चिन्ह	X			२				०			४			
	नौ म	- प	- म	ड़े रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	नी रे	- म	- ऽ	ड़े प	- ऽ	ए प	- सां	ए नि	की नि	- प	रा सी सी म	- ऽ - रे	धु रू ती रे	रे सा री म
चिन्ह	X			२				०			४			
	आ म	- प	- म	से रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- -	- रे म	रा रे सा	- नि प	धु प	रे प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	नी प	- नि प	- म	ड़े प	- ऽ	- ऽ	- ऽ	ए रे	की रे	- सा	सी रे	- रे	ती रे	री म
चिन्ह	X			२				०			४			
	आ म	- प	- म	से रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	चं रे	दू म	- ऽ	रा प	- ऽ	ए प	- सां	म नि	सा नि	- प	सु सा खी म	रु ऽ - रे	जा सा - रे	- सा री म
चिन्ह	X			२				०			४			
	ला म	- प	- म	गी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- रे म	सु रे सा	रु नि प	जा प	- प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	चं प	दू नि प	- म	रा प	- ऽ	ए ऽ	- ऽ	म रे	सा रे	- सा	की रे	- रे	- रे	री म
चिन्ह	X			२				०			४			
	ला म	- प	- म	गी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
											बा	-	ते	री
	मा रे	- म	- ऽ	शू प	- ऽ	- प	- सां	ब नि	ते नि	- प	या म	- रे	- रे	ना म
चिन्ह	X			२				०			४			
	चा म	- प	- म	ले रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- रे म	बा रे सा	- नि प	ते प	री प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	मा प	- नि प	- म	शू प	- ऽ	- ऽ	- ऽ	ब रे	ते रे	- सा	या रे	- रे	- रे	ना म
चिन्ह	X			२				०			४			
	चा म	- प	- म	ले रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
-	मा रे	- म	- ऽ	शू प	- ऽ	- प	- सां	क्या नि	ए नि	- प	बा सा प्रो म	- ऽ - रे	ते सा ज रे	री सा ना म
चिन्ह	X			२				०			४			
	ला म	- प	- म	गी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- रे म	बा रे सा	- नि प	ते प	री प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	मा प	- नि प	- म	शू प	- ऽ	- ऽ	- ऽ	क्या रे	ए रे	- सा	प्रो रे	- रे	ज रे	ना म
चिन्ह	X			२				०			४			
	ला म	- प	- म	गी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	चं रे	दू म	- ऽ	रा प	- ऽ	ए प	- सां	गि नि	ली नि	- प	सु सा फी म	रु ऽ - रे	जा सा - रे	- सा री म
चिन्ह	X			२				०			४			
	पू म	- प	- म	छे रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- -	- रे म	सु रे सा	रु नि प	जा प	- प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	चं प	दू नि प	- म	रा प	- ऽ	ए ऽ	- ऽ	गि रे	ली रे	- सा	फी रे	- रे	- रे	री म
चिन्ह	X			२				०			४			
	पू म	- प	- म	छे रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	सि रे	- म	- ऽ	ती प	- ऽ	री प	- सां	कु नि	णू नि	- प	स सा ते म	च्चा ऽ - रे	बो सा - रे	ले सा रे म
चिन्ह	X			२				०			४			
	मा म	- प	- म	ता रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- -	- रे म	स रे सा	च्चा नि प	बो प	ले प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	सि प	- नि प	- म	ती प	- ऽ	री ऽ	- ऽ	कु रे	णू रे	- सा	ते रे	- रे	- रे	रे म
चिन्ह	X			२				०			४			
	मा म	- प	- म	ता रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	सी रे	- म	- S	ती प	- S	री प	- सां	- कु नि	णू नि	- प	स सा ते म	च्चा S - रे	बो सा - रे	ले सा रे म
चिन्ह	X			२				०			४			
	पी म	- प	- म	ता रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- S	- रे म	स रे सा	च्चा नि प	बो प	ले प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	सी म	- नि प	- म	ती प	- S	री S	- S	कु रे	णू रे	- सा	ते रे	- रे	- रे	रे म
चिन्ह	X			२				०			४			
	पी म	- प	- म	ता रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- S	- S				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	पी रे	- म	- S	ता प	- S	ए प	- सां	बि नि	शू नि	- प	में सा नू म	- S - रे	छू सा - रे	गे स व म
चिन्ह	X			२				०			४			
	रा म	- प	- म	ड़ी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- S	- रे म	में रे सा	S नि प	छू प	णे प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	पी म	- नि प	- म	ता प	- S	ए S	- S	बि रे	शू रे	- सा	नू रे	- रे	- रे	व म
चिन्ह	X			२				०			४			
	रा म	- प	- म	ड़ी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- S	- S				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	मा रे	- म	- ऽ	ता प	- ऽ	ए प	- सां	थ नि	र नि	- प	में सा ती म	- ऽ - रे	ढू सा ए रे	ने सा - म
चिन्ह	X			२				०			४			
	मा म	- प	- म	ता रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- रे म	में रे सा	- नि प	ढू प	ने प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	मा प	- नि प	- म	ता प	- ऽ	ए ऽ	- ऽ	थ रे	र रे	- सा	ती रे	- रे	ए रे	- म
चिन्ह	X			२				०			४			
	मा म	- प	- म	ता रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
											सु सा	रु ऽ	जा सा	ऽ सा
-	चं रे	दू म	ऽ ऽ	रा प	- ऽ	ए प	- सां	मु नि	हैं नि	- प	मू म	- रे	- रे	हां म
चिन्ह	X			२				०			४			
	हे म	- प	- म	री रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- -	- रे म	सु रे सा	रु नि प	जा प	ऽ प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	चं प	दू नि प	ऽ म	रा प	- ऽ	ए ऽ	- ऽ	मु रे रे	हैं सा	- ऽ	मू रे	- रे	- रे	हां म
चिन्ह	X			२				०			४			
	हे म	- प	- म	री रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	–	धा	धा	तिं	–	ता	तिं	–	धा	धा	धिं	–
											त्रि सा	शु –	नू सा	– सा
चिन्ह	X			२				०			४			
	ब रे	रा म	– ऽ	ड़ी प	– ऽ	ए प	– सां	त्रि नि	ए नि	– प	कू म	– रे	– रे	ड़ी म
	X			२				०			४			
	जा म	– प	– म	मी रे	– सा	जी सा	– रे	ओ सा	– ऽ	– रे म	वि रे सा	शु नि प	नू प	– प

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
				[illegible]	[illegible]	[illegible]	–	ता	तिं	–	धा	धा	धिं	–
	ब प	रा नि प	– म	ड़ी प	– ऽ	ए ऽ	– ऽ	त्रि रे रे	ए सा	– ऽ	कु रे	– रे	– रे	ड़ी म
चिन्ह	X			२				०			२			
	जा म	– प	– म	मी रे	– सा	जी सा	– रे	ओ सा	– ऽ	– ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	–	धा	धा	तिं	–	ता	तिं	–	धा	धा	धिं	–
	जे रे	ठा म	– ऽ	कु प	ड़ि ऽ	ए प	– सा	न नि	मो नि	– प	जे सा ना म	– ऽ – रे	ठा सा रे रे	– सा णा म
चिन्ह	X										२			
	व्या म	– प	– म	यी रे	– सा	जी सा	– रे	ओ सा	– ऽ	– रे म	जे रे सा	– नि प	ठा प	– प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	–	धा	धा	तिं	–	ता	तिं	–	धा	धा	धिं	–
	जे प	ठा नि प	– म	कु प	ड़ि ऽ	ए ऽ	– ऽ	न रे रे	मो सा	– ऽ	ना रे	– रे	रे रे	णा म
चिन्ह	X			२				०			२			
	व्या म	– प	– म	यी रे	– सा	जी सा	– रे	ओ सा	– ऽ	– ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	क रे	ना म	- ऽ	कु प	ड़ि ऽ	ए प	- सां	पं नि	जा नि	- प	ते सा पां म	- ऽ - रे	ठी सा डु रे	- सा पा म
चिन्ह	X			२				०			२			
	ब्या म	- प	- म	यी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- रे म	ते रे सा	- नि प	ठी प	- प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	क प	ना नि प	- म	कु प	ड़ि ऽ	ए ऽ	- ऽ	पं रे रे	जा सा	- ऽ	पां रे	ऽ रे	डु रे	पा म
चिन्ह	X			२				०			२			
	ब्या म	- प	- म	यी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	क रे	ना म	- ऽ	कु प	ड़ि ऽ	ए प	- सां	ल नि	खा नि	- प	ते सा चा म	- ऽ - रे	ठी सा रु रे	- सा णा म
चिन्ह	X			२				०			२			
	गे म	- प	- म	यी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- -	- रे म	ते रे सा	- नि प	ठी प	- प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	क प	ना नि प	- म	कु प	ड़ि ऽ	ए ऽ	- ऽ	ल रे रे	खा सा	- ऽ	चा रे	- रे	रु रे	णा म
चिन्ह	X			२				०			२			
	गे म	- प	- म	यी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	र रे	घु म	- ऽ	डो प	- ऽ	मा प	- सां	चो नि	री नि	- प	ल सा क म	वा ऽ - रे	चरू सा - रे	दे सा री म
चिन्ह	X			२				०			२			
	ले म	- प	- म	यी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- -	- रे म	ल रे सा	वा नि प	चरू प	दे प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	र प	घू नि प	- म	डो प	- ऽ	मा ऽ	- ऽ	चो रे रे	री सा	- ऽ	क रे	- रे	- रे	री म
चिन्ह	X			२				०			२			
	ले म	- प	- म	यी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	चं रे	दू म	- ऽ	रा प	- ऽ	ए प	- सां	पू नि	- नि	- प	सु सा छू म	रु ऽ - रे	जा सा - रे	- सा णे म
चिन्ह	X			२				०			२			
	ला म	- प	- म	गी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- रे म	सु रे सा	रु नि प	जा प	- प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	चं प	दू नि प	- म	रा प	- ऽ	ए ऽ	- ऽ	पू रे रे	- सा	- ऽ	छू रे	- रे	- रे	णे म
चिन्ह	X			२				०			२			
	ला म	- प	- म	गी रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	था रे	- म	- ऽ	रे प	- ऽ	- प	- सां	क्या नि	ए नि	- प	रा सा का म	- ऽ - रे	घु सा - रे	रे सा मा म
चिन्ह	X			२				०			२			
	क म	रे प	- म	ला रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- रे म	रा रे सा	- नि प़	घु प़	रे प़
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	था प़	- नि प़	- म़	रे प़	- ऽ	- ऽ	- ऽ	क्या रे रे	ए सा	- ऽ	का रे	- रे	- रे	मा म
चिन्ह	X			२				०			२			
	क म	रे प	- म	ला रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	नि रे	थै म	- ऽ	ला प	- ऽ	ए प	- सां	कू नि	- नि	- प	कू सा पू म	- ऽ - रे	पू सा - रे	री सा री म
चिन्ह	X			२				०			२			
	दु म	थै प	- म	ला रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- -	- रे म	कू रे सा	- नि प़	पु प़	री प़
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	नि प़	थै नि प़	- म़	ला प़	- ऽ	ए ऽ	- ऽ	कू रे रे	- सा	- ऽ	पू रे	- रे	- रे	री म
चिन्ह	X			२				०			२			
	दु म	थै प	- म	ला रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

<table>
<tr><td>मात्रा</td><td>१</td><td>२</td><td>३</td><td>४</td><td>५</td><td>६</td><td>७</td><td>८</td><td>९</td><td>१०</td><td>११</td><td>१२</td><td>१३</td><td>१४</td></tr>
<tr><td>बोल</td><td>धा</td><td>धिं</td><td>-</td><td>धा</td><td>धा</td><td>तिं</td><td>-</td><td>ता</td><td>तिं</td><td>-</td><td>धा</td><td>धा</td><td>धिं</td><td>-</td></tr>
<tr><td></td><td>छा
रे</td><td>-
म</td><td>-
ऽ</td><td>पी
प</td><td>-
ऽ</td><td>ए
प</td><td>-
सां</td><td>का
नि</td><td>-
नि</td><td>-
प</td><td>ते
सा
पू
म</td><td>-
ऽ
-
रे</td><td>ला
सां
-
रे</td><td>-
सा
ड़ा
म</td></tr>
<tr><td>चिन्ह</td><td colspan="3">X</td><td colspan="4">२</td><td colspan="3">०</td><td colspan="4">२</td></tr>
<tr><td></td><td>थों
म</td><td>-
प</td><td>-
म</td><td>णा
रे</td><td>-
सा</td><td>जी
सा</td><td>-
रे</td><td>ओ
सा</td><td>-
ऽ</td><td>-
रे म</td><td>ते
रे सा</td><td>-
नि प</td><td>ला
प</td><td>-
प</td></tr>
<tr><td>चिन्ह</td><td colspan="3">X</td><td colspan="4">२</td><td colspan="3">०</td><td colspan="4">४</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>मात्रा</td><td>१</td><td>२</td><td>३</td><td>४</td><td>५</td><td>६</td><td>७</td><td>८</td><td>९</td><td>१०</td><td>११</td><td>१२</td><td>१३</td><td>१४</td></tr>
<tr><td>बोल</td><td>धा</td><td>धिं</td><td>-</td><td>धा</td><td>धा</td><td>तिं</td><td>-</td><td>ता</td><td>तिं</td><td>-</td><td>धा</td><td>धा</td><td>धिं</td><td>-</td></tr>
<tr><td></td><td>छा
प</td><td>-
नि प</td><td>-
म</td><td>पी
प</td><td>-
ऽ</td><td>ए
ऽ</td><td>-
ऽ</td><td>का
रे रे</td><td>-
सा</td><td>-
ऽ</td><td>पू
रे</td><td>-
रे</td><td>-
रे</td><td>ड़ा
म</td></tr>
<tr><td>चिन्ह</td><td colspan="3">X</td><td colspan="4">२</td><td colspan="3">०</td><td colspan="4">२</td></tr>
<tr><td></td><td>थों
म</td><td>-
प</td><td>-
म</td><td>णा
रे</td><td>-
सा</td><td>जी
सा</td><td>-
रे</td><td>ओ
सा</td><td>-
ऽ</td><td>-
ऽ</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>चिन्ह</td><td colspan="3">X</td><td colspan="4">२</td><td colspan="3">०</td><td colspan="4">४</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>मात्रा</td><td>१</td><td>२</td><td>३</td><td>४</td><td>५</td><td>६</td><td>७</td><td>८</td><td>९</td><td>१०</td><td>११</td><td>१२</td><td>१३</td><td>१४</td></tr>
<tr><td>बोल</td><td>धा</td><td>धिं</td><td>-</td><td>धा</td><td>धा</td><td>तिं</td><td>-</td><td>ता</td><td>तिं</td><td>-</td><td>धा</td><td>धा</td><td>धिं</td><td>-</td></tr>
<tr><td></td><td>ची
रे</td><td>-
म</td><td>-
ऽ</td><td>री
प</td><td>-
ऽ</td><td>ए
प</td><td>-
सां</td><td>मण
नि</td><td>-
नि</td><td>-
प</td><td>क
सा
णा
म</td><td>र
ऽ
-
रे</td><td>थो
सा
-
रे</td><td>ला
सा
प
म</td></tr>
<tr><td>चिन्ह</td><td colspan="3">X</td><td colspan="4">२</td><td colspan="3">०</td><td colspan="4">२</td></tr>
<tr><td></td><td>का
म</td><td>-
प</td><td>-
म</td><td>ए
रे</td><td>-
सा</td><td>जी
सा</td><td>-
रे</td><td>ओ
सा</td><td>-
-</td><td>-
रे म</td><td>क
रे सा</td><td>र
नि प</td><td>थो
प</td><td>ला
प</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>मात्रा</td><td>१</td><td>२</td><td>३</td><td>४</td><td>५</td><td>६</td><td>७</td><td>८</td><td>९</td><td>१०</td><td>११</td><td>१२</td><td>१३</td><td>१४</td></tr>
<tr><td>बोल</td><td>धा</td><td>धिं</td><td>-</td><td>धा</td><td>धा</td><td>तिं</td><td>-</td><td>ता</td><td>तिं</td><td>-</td><td>धा</td><td>धा</td><td>धिं</td><td>-</td></tr>
<tr><td></td><td>वी
प</td><td>-
नि प</td><td>-
म</td><td>री
प</td><td>-
ऽ</td><td>ए
ऽ</td><td>-
ऽ</td><td>मण
रे रे</td><td>-
सा</td><td>-
ऽ</td><td>णा
रे</td><td>-
रे</td><td>-
रे</td><td>प
म</td></tr>
<tr><td>चिन्ह</td><td colspan="3">X</td><td colspan="4">२</td><td colspan="3">०</td><td colspan="4">२</td></tr>
<tr><td></td><td>का
म</td><td>-
प</td><td>-
म</td><td>ए
रे</td><td>-
सा</td><td>जी
सा</td><td>-
रे</td><td>ओ
सा</td><td>-
ऽ</td><td>-
ऽ</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>चिन्ह</td><td colspan="3">X</td><td colspan="4">२</td><td colspan="3">०</td><td colspan="4">४</td></tr>
</table>

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	कू रे	- म	- ऽ	टी प	- ऽ	ए प	- सां	भा नि	- नि	- प	शि सा ता म	बु ऽ - रे	र सा - रे	गा सा री म
चिन्ह	X			२				०			२			
	ना म	- प	- म	ए रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- रे म	शि रे सा	बु नि प	र प	गा प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	कू म	- नि प	- म	टी प	- ऽ	ए ऽ	- ऽ	भा रे रे	- सा	- ऽ	ता रे	- रे	- रे	री म
चिन्ह	X			२				०			२			
	ना म	- प	- म	ए रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				

	रे	म	ऽ	प	ऽ	प	सां	नि	नि	प	म	रे	रे	म
चिन्ह	X			२				०			२			
	ची म	- प	- म	री रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- रे म	चं रे सा	दू नि प	रा प	- प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	भा प	- नि प	- म	ई प	- ऽ	ए ऽ	- ऽ	आ रे रे	पू सा	णी ऽ	वौ रे	- रे	- रे	ढ़ी म
चिन्ह	X			२				०			२			
	ची म	- प	- म	री रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	ची रे	- म	- ऽ	री प	- ऽ	ए प	- सां	बै नि	- नि	- प	बी सा णी म	- ऽ - रे	ड़ी सा - रे	- सा छ म
चिन्ह	X			२				०			२			
	पा म	- प	- म	ये रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- -	- रे म	बी रे सा	- नि प	ड़ी प	- प
चिन्ह	X			२				०			४			

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
	ची प	- नि प	- म	री प	- ऽ	ए ऽ	- ऽ	बै रे रे	- सा	- ऽ	णी रे	- रे	- रे	छा म
चिन्ह	X			२				०			२			
	पा म	- प	- म	ये रे	- सा	जी सा	- रे	ओ सा	- ऽ	- ऽ				
चिन्ह	X			२				०			४			

सांगीतिक विश्लेषण :

इस घुरे में सांगीतिक दृष्टि से देखा जाए तो स्वर ताल और लय का अनूठा समावेश देखने को मिलता है। जिस तरह से इस घुरे में प्रयुक्त स्वर लहरियां एक तरह का वातावरण बना रहीं हैं उन्हें ध्यान में रखते हुए इस घुरे में भारतीय शास्त्रीय संगीत के राग ''राग वृन्दावनी सारंग'' की छाया देखने को मिलती है जिनके स्वर इस प्रकार हैं - सा, रे, म, प, नि, सां, और इस राग में कोमल निषाद अवरोह में प्रयोग किया जाता है पाठकों को और भी सरल तौर पर समझाने के लिए फिल्म संगीत में प्रयुक्त गीतों के माध्यम से उन स्वरों तक पहुंचाने का प्रयास कर रहा हूं। उन गीतों से आप सब को उन स्वरों के आन्दोलन का एहसास ज़रूर होगा। जो कि इस घुरे में प्रयुक्त हुए हैं, वे गीत हैं, लाहुल घाटी में अक्सर विवाह समारोहों में गाया जाने वाला हिन्दी गीत - जादूगर सईयां छोड़ो मोरी बईयां, फिल्म ''नागिन'', दूसरा इसी राग पर आधारित गीत है - कारे-कारे बदरा, जा रे जा रे बदरा, फिल्म 'भाभी', तीसरा गीत है - कहां से आए बदरा, फिल्म - 'चश्मे बद्दूर'। अब शायद पाठकों के ज़हन में राग वृन्दावनी की तस्वीर थोड़ी सी स्पष्ट हो गई होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। लाहुल की पटन घाटी में गाए जाने वाले ज़्यादातर घुरे में प्रयुक्त होने वाले तालों में दीप चन्दी ताल का समावेश देखने को मिलता है। आप सभी की जानकारी के लिए बता दूं कि ताल दीप चन्दी को पहाड़ी ताल भी कहा जाता है। इस ताल का प्रयोग खासकर कि ज़िला मण्डी, हमीरपुर, कांगड़ा, बिलासपुर व चम्बा इत्यादि के लोक गीतों में देखने को मिलता है। इस ताल में चौदह मात्राएं होती हैं जो कि स्वर में घुलकर और भी ज़्यादा कर्ण प्रिय लगती हैं। उदाहरण-(कुन्जु-चन्चलो गीत में प्रयुक्त ताल)।

सम्पर्क : गांव व डाक० शांशा, लाहुल।
sameerhns361@gmail.com

श्रद्धांजलि

वे इस दुनिया से तमाम सेक्टेरियन बाईनरीज़ को ध्वस्त कर देना चाहते थे

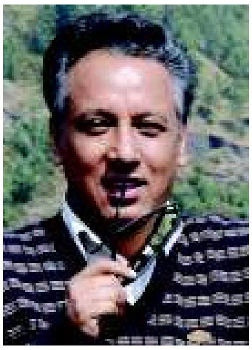

अजेय

भोटी अंकल नहीं रहे। छेरिङ दोर्जे जी को मैं इसी नाम से पुकारता था। भोटी मास्टर, ए पी आर ओ साब, गुस्क्यर तेते, गुस्क्यर मेमे, चलता फिरता एनसाईक्लोपीडिया, ग्रेंड ओल्ड मेन ऑफ लाहुल, गुरु जी, लामा जी, मिस्टर दोर्जे, दोर्जी सर,... कितने तो नाम थे उन के! एक बहुमुखी व्यक्तित्व। उन के व्यक्तित्व के जितने आयाम थे, उतने ही नाम इस दुनिया ने उन्हें दिए! उस आदमी की छोटी चमकदार आंखों और विशाल देह यष्ठि में दंतकथाओं वाले हिमालयी येति की झलक मिलती थी। लेकिन इस आदिम काया के भीतर अपने वजूद और अपनी अभिव्यक्ति के सम्पूर्ण अभिप्रायों, आशयों और सरोकारों में एक भविष्य-दृष्टि सम्पन्न अत्याधुनिक विश्वमानव भी रहता था।

वे हमारे पारिवारिक मित्र थे। पिता जी से उन की मित्रता राजनैतिक कारणों से थी, और नाना जी से उन की दोस्ती अध्यात्म और कलाभिरुचियों के कारण। स्मृतियों के कुछ छविचित्र हैं जो बचपन से ले कर अब तक मेरे मानस पटल पर अंकित हैं --- सत्तर के दशक की बात होगी। केलंग में हमारे घर में भोटी अंकल आए हैं। केलंग थर्बस के मकान में एक कमरे का वो घर था किराये का। पिता जी स्कूल टीचर थे। साथ में आए हैं ठोलंग से चित्रकार सुख दास जी, और करदङ गोम्पा से मेरे नाना जी आए हैं। नाना जी थंका पेंटर और साधक थे। यह उन महामानवों की रुटीन गोष्ठियों में से एक है। चित्रकला को ले कर गम्भीर बातें चल रहीं हैं। वनस्पतियों और खनिजों से कैसे रंग प्राप्त होता है, उन को कैसे सुखा कर, कूट कर, छान कर, तपा कर, काढ़ कर चित्र बनाने में प्रयोग करते हैं, हमारी लोक परम्परा क्या थी, तिब्बतियों ने कैसे किया और यूरोपीयन कैसे कर रहे हैं..रंगों की क्या कीमियागिरी है, कुदरती और सिंथेटिक रंगों की क्या खूबियाँ हैं! लट्ठे और सरेश से बने केनवस पर यह कैसे जादू पैदा करते हैं और कागज़ पर कैसे? देसी स्याही कैसे बनती है, कैलिग्राफी कैसे होती है, कचरा वेस्ट पेपेर की लुग्दी सेरी साईकल्ड आर्ट पेपर कैसे बनता है ... हम बच्चे लोग चुपचाप एक कोने में बैठे हैं .... कुछ चीजें समझ में आ रहीं हैं बहुत सी बातें सर के ऊपर से जा रहीं हैं.. ..मेरे मन में नाना जी जैसा थंका आर्टिस्ट बनने का सपना है और जुबान निःशब्द! झेंपता हुआ, लेकिन पूरी एकाग्रता से सुनता हुआ। बात चीत के बीच में भोटी अंकल ने जेब से फिरोज़ी हरा एक्रेलिक पेस्टल निकाल कर कागज़ पर मेप ड्रा किया है ... यह कोई तिब्बत की घाटी थी। येलो रिवर की कोई सहायक नदी। कोई प्रख्यात साधना केंद्र। वहाँ पहुँचने का एक कम प्रचलित रास्ता बता रहे हैं वे नाना जी को। नाना जी भी वहाँ गए हैं लेकिन शायद किसी अन्य रास्ते से। अंत में पिता जी को वह पेस्टल दिखाते हुए उन्होंने कहा है --अंग्रेज़ लोग आज कल ऐसे ऐसे रंग भी इस्तेमाल करते हैं। हम बच्चे भौंचक्के देख रहे हैं! उस एक्रेलिक पेस्टल का हरा मेरे ज़ेहन में छप गया है। माँ की छोटी सी कंठी में वह फिरोज़ी हरा खोज रहा हूँ। वहाँ और भी रंग हैं मूँगा, मोती, मणि, कारूच, चूनी, सोना .... ये रंग अद्भुत हैं। लेकिन भट्ट लाला की दुकान से जो कलर बॉक्स भाई ने खरीदा था उस में इन में से एक भी रंग नहीं है! नाना जी के थंका में मिलते हैं उन में से कुछ रंग । मैं जब पेंटिंग बनाऊँगा उस में वही सब असली रंग डालूँगा। दीदी कहती हैं ये रंग होते नहीं हैं बनाने पड़ते हैं। मेरी बाल बुद्धि कहती है - भोटी अंकल को वो तकनीक आती होगी, पक्का।

भोटी अंकल कलाकार नहीं थे, कलाविद् थे। इतिहासकार नहीं थे, पर इतिहासविद् थे।

भाषा शास्त्री नहीं थे, पर भाषाविद् थे। बहुत अधिक शिक्षित नहीं थे, लेकिन तमाम तरह के दुनियावी व पराभौतिक विषयों के बड़े गहन और व्यापक अध्येता थे। ह्यूमन इंटेरेस्ट का ऐसा कोई विषय नहीं होगा जिस के बारे वे ऐसी अनोखी सूचना न दे सकते हों, जो आप ने आज तक सुनी ही न हो! मेरी देखा-देखी में बहुत से मेरे यार दोस्त भी उन्हें भोटी अंकल ही पुकारने लगे थे..... जब भी हम किसी डिबेट में फँस जाते थे तो तुरत अंकल को फोन लगाया जाता- अंकल उस सवाल के आगे दस संदर्भ और बता देते, सामने एक नई खिड़की खुल जाती। अकसर हमारी बहस से कोसों दूर सच कुछ और ही निकलता। और हमारी बहस खत्म हो जाती।

पर मेरी नज़र में वे इस सब से आगे बढ़ कर एक पोलिटिकल विजनरी भी थे। नब्बे के दशक में रोहतांग टनल के लिए उन के संघर्ष को मेने करीब से देखा। उन दिनों मुझे नौकरी मिल गई थी और में केलंग में था। वे लोकगाथाओं के उस बूढ़े ज़िद्दी सह नायक की तरह ग्राँ-नग्गर, घाटी-चोटियों की खाक छानते

फिर रहे थे जिसे देस पर आसन्न संकट से निजात पाने के लिए कुछ सुपात्र नायकों की तलाश थी। वे एक बुद्धिजीवी को, एक सरकारी बाबू को, एक राजनेता से ले कर टेक्सी ड्राईवर और खेत गोड़ते किसान तक को उसी भाषा में, उसी शिद्दत से और उतनी ही तफसील से टनल का महत्व समझाते फिरते थे और लोगों की राय पूछते थे कि हमें इस काम को अंजाम देना तो है पर किस तरह से? उन्हें ''जन'' की नैसर्गिक सूझ पर बहुत गहरा यकीन था और वहीं से अपनी दृष्टि के सूत्र खोजा करते।

कर्गिल युद्ध से साल भर पहले की बात है एक ढाबे में चाय पीते हुए मिले और मेरा हाथ पकड़ कर बोले - कर्गिल में कुछ गडबड़ी के आसार हैं यदि कुछ खड़का धड़का हुआ तो हमारे रोहतांग टनल का रस्ता खुल गया, यह पक्का है। उन दिनों वे वैश्विक महा शक्तियों के बीच अतीत से चली आ रही ''हिमालयी ग्रेट गेम'' को ले कर आलेख लिख रहे थे। जो बाद में शायद चंद्रताल में छपा और कुछ दैनिक समाचार पत्रों में भी। कभी कभी मुझे लगता कि टनल को ले कर अंकल बहुत 'ऑब्सेस्ड' और सनकी हो गए हैं। एक बार मैंने कह भी दिया - अंकल आप व्यर्थ इस काम में अपनी ऊर्जा नष्ट कर रहे हो। आप से कुछ रचनात्मक कार्यों की अपेक्षा है। मेरा तात्पर्य संस्कृति कर्म से था। निश्चय ही उन्हें बेहद गुस्सा आया होगा। लेकिन प्रकटतः ठहाका मार कर हंसे - ''वो सब भी जारी रहेगा। पर यह भी तो रचनात्मक काम है ना? और यह काम तो महज़ कागज़ी न हो कर बाकायदा पहाड़ खोदने का काम है। एनर्जी नहीं लगाएंगे तो छेद कैसे निकालेंगे? सब लोग कागज़ ही खराब करने में लगे रहे तो दुनिया में कचरा बहुत हो जाएगा बेटा। ये भी शप्पा ही है! आप लोग कर रहे ना वो काम...और अब तो इतने सब नए बच्चे लिख रहें हैं कि मुझे लगता है मेरा वो वाला काम सम्पन्न हो गया..''

वे जानते थे टनल को ले कर में बहुत उत्साहित नहीं था। अद्‌भुत सेंस ऑफ ह्यूमर, कमाल का विट था अंकल का और गज़ब की हाज़िरजवाबी थी। बड़ी बात यह कि कभी भी ऑफेंडेड फील नहीं करते। और तकरार की हर स्थिति को अपने दुर्लभ हास्य बोध से एक शानदार लतीफे में बदल देते! वे अकसर कर्गिल की फौजी घुसपैठ की खबरें खोज खोज कर लाते और मुझे सुना कर खुश होते! यह सब टनल के लिए मसाला है। बस दो चार राऊँड फायर खुल जाए, बोर्डर पे, हमें अपनी बात फिर से रखने का अवसर मिल जाएगा। अकसर में चिढ़ जाता और बहस करता! मुझे उन पर गुस्सा भी आता और उन की इस सूझ का कायल भी होता जाता! इसी दौरान कर्गिल युद्ध आधिकारिक रूप से घोषित हो गया और बड़े बड़े बोफोर्स गन ट्रकों पर लद कर केलंग से हो कर सीमा की ओर कूच करने लगे. फौजी कानवॉय के कारण रोहतांग पर ट्रेफिक जाम रहने लगा। सामान्य जनजीवन प्रभावित हो रहा था लेकिन लोग युद्धोन्माद में पागल थे और चारों ओर फौजियों की जयजयकार हो रही थी। में इसे हिमालय की शांति में खलल की तरह देखता था। हिमालय की अमूल्य जैविक सम्पदाओं और प्रगैतिहासिक मानव समुदाय के साथ में परसनली अतिक्रमित महसूस करने लगा था। एक बेहद फ्रेजाईल व अति स्त्रैण हिमालय की पवित्रता भंग हो रही थी!

युद्ध क्यों ज़रूरी है? केलंग कस्बे में यह सवाल केवल एक व्यक्ति से पूछ सकता था मैं। भोटी अंकल प्रेम से मेरे सभी सवालों के जवाब देते - बेटा इस एपिसोड को ऐसे देखो कि हम लाहुल वालों की तो गेम बन गई। अब तो टनल बनना ही बनना है, सड़कें भी चौड़ी हो जानी है। अंकल हमें यह टनल कुछ ज़्यादा ही महँगा नहीं पड़ रहा? मुझे याद है, कुमाऊँ के सुप्रसिद्ध समकालीन हिंदी कवि हरीश चन्द्र पांडे ने बताया था कि उन के गाँव में सड़कें तब बनी जब चीन ने 1962 में लद्दाख और नेफा पर आक्रमण कर दिया। तभी से अलमोड़ा में विकास का शुभारम्भ हुआ। तो क्या सन बासठ का हमला न हुआ होता उत्तराखंड का वह गाँव पिछड़ा ही रहता? क्या 1999 का कर्गिल युद्ध न होता तो लाहुल पिछड़ा ही रह जाता? विकास के लिए युद्ध क्यों अनिवार्य है?

युद्ध से याद आता है बहुत पहले एक बार उन्होंने मुझे विश्वविख्यात रंगकर्मी हबीब तनवीर का एक पत्र दिखाया था (यह पत्र आज भी भोटी अंकल के घर में उन के निजी दस्तावेज़ों में मिलना चाहिए) जिस में हबीब तनवीर ने तिब्बती अचिल्हमो ओपेरा के एक नाटक 'नङ्सल होद्‌बुम' के स्क्रिप्ट की मूल भोटी प्रति के बाबत जानकारी माँगी थी। हबीब जी इस नाटक को छत्तीसगढ़ी नाचा शैली में करना चाहते थे। यह एक युद्ध विरोधी नाटक था और हबीब जी इस नाटक को विश्व साहित्य में युद्ध विरोध में लिखा गया सर्वश्रेष्ठ तथा सब से महत्वपूर्ण नाटक मानते थे। लेकिन टीपा (TIPA) धर्मशाला के पास जो इस का स्क्रिप्ट था उसे हबीब जी प्रक्षिप्त मानते थे। भोटी अंकल ने उन्हें सलाह दी थी कि मूल प्रति पालि भाषा में मिलेगी और पेरिस में मिलेगी। बहुत बाद में सन 2008 में हबीब तनवीर जी ने फोन पर इस बात की तसदीक की कि 'नङ्सल' की वह पालि स्क्रिप्ट बाकायदा पेरिस के एक संग्रहालय में प्रदर्शित है। हबीब जी ने दोर्जे जी की यादाश्त और नायाब सूचनाओं की भूरी भूरी प्रशंसा की और उस अद्‌भुत नाटक की भी जिसे नया थिएटर वाले फंडिंग की समस्या के चलते सिरे नहीं चढ़ा सके। मानव संसाधन मंत्रालय ने उन के इस प्रोजेक्ट को वित्तीय सहायता नहीं दी। हबीब जी ने गम्भीर अस्वस्थता एवम् अवसाद के बावजूद लगभग एक घंटा मुझ से बात की और उस नाटक की गाथाओं के अंश (अंग्रेज़ी अनुवाद) गा-गा कर मुझे सुनाए। और भोटी अंकल (grand old man of Himalayas) को सलाम भेजा!

बहरहाल, हम टनल पर थे -- अंततः भोटी अंकल की मेहनत रंग लाई, उन्हें वे सुपात्र नायक मिले ठोलंग के टशि दवा उर्फ अर्जुन गोपाल जी और घुषाल के अभय चंद राणा जी के रूप में। रोहतांग टनल की इस पूरी प्रक्रिया के निष्पादन में, उसे अमली जामा पहनाने में उन की अनोखी डिप्लोमेटिक सूझ और बेनज़ीर लॉबीईंग कौशल का प्रमाण मिलता है।

वे भविष्य को मानो सूँघ लेते थे जैसे! उन के नज़दीकी लोग जानते हैं। उन की दूरदर्शिता आप को अचम्भित करती थी और आप को अनएक्स्पेक्टेड धचके देती थी। और यह कोई चमत्कार या तिलिस्म नहीं था बल्कि यह उन की प्रखर इनसाईट और दुनियावी व सियासी सूझ की अनूठी जुगलबंदी थी जो जादू की तरह सर चढ़ कर बोलती थी। वे अपना बड़ा सा हाईटेक ट्रेकिंग शूज़ पहने, नफीस जर्मन मेड गरम जाकिट पहने, गले में केमरा या दूरबीन लटकाए,

स्विस, फ्रेंच, जर्मन, जापानी या रूसियों की टोली के साथ केलंग के बाज़ार में टहलते हुए, करदङ की चढ़ाई चढते हुए, गुङ्शेल की ओर ट्रेवर्सिंग करते हुए दिख रहें हैं अभी भी ..... 1993 की बात होगी शायद तत्कालीन उपायुक्त लाहुल-स्पीति श्री रतन लाल बिसोत्रा के साथ वे बीलिंग थाच से होते हुए परित्यक्त (असफल) तान्दी-सुमनम कुहुल से पैदल चल कर प्रस्तावित 'स्की हट' तक आए थे और हमें इस हट को मेंटेन करने बारे बहुमूल्य सुझाव दिए थे। ट्रेकिंग माऊंटेनियरिंग और एड्वेंचर स्पोर्ट्स को ले कर उन के पास बहुत बेशकीमती अनुभव और बड़े व्यवहारिक सपने थे।

बात चीत के दौरान उन्होंने एक सुझाव दिया था कि सुमनम नहर पर इतना बजट खर्चने और ब्लास्टिंग से पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने की बजाए टनल निकाल कर बोक्ट्रा नाला के कैचमेंट क्षेत्र में घट्ट के पास एक हाईड्रो प्रोजेक्ट स्थापित किया जाए और पानी को तांदी से लोट तक के पूरे सूखे क्षेत्र में वितरित किया जाए। डी सी साब और गाँव के छोकरों को तब यह प्रस्ताव वर्केबल नहीं लगा था। लेकिन आज की तारीख में यह असंभव नहीं प्रतीत हो रहा!

यादें बेशुमार हैं पर फिर वह संस्मरणों की एक किताब ही बनेगी .... वो फिर कभी। भोटी अंकल से अंतिम मुलाकात 12 सितम्बर 2020 को हुई। रोहतांग टनल के उद्घाटन के दिन नज़दीक आ रहे थे। लाहुली समुदाय में सेलिब्रेशंज़ और उत्सव का माहौल था। रोहतांग के इस पार भी उस पार भी। मेरा मन कर रहा था कि अंकल से मिला जाए। मित्र कवि यूसुफ को फोन लगाया तो वे जैसे तैयार ही थे। तुरंत प्रोग्राम बन गया। सुनीता कटोच को फोन किया, वह कट्राईं में थी मैंने कहा समय है तो सीधे बारी तुन्नी चले आओ। हम भोटी अंकल से मिलने जा रहे हैं। तीन चार लोग होंगे तो अच्छी चर्चा हो जाएगी। हम ने लगभग तीन घंटे बात चीत की। विविध विषयों पर। अंत में टनल पर लम्बी बात की। प्रधानमंत्री अटल जी से अप्वाईंट्मेंट का किस्सा बड़ा रोचक था। सुनीता कटोच ने काफी हिस्सा मोबाईल पर रेकॉर्ड भी कर लिया। अंकल का स्वास्थ्य अच्छा था और चेहरा चमक रहा था। वे संतुष्ठ और प्रसन्न नज़र आ रहे थे। राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा मेरी जीवन यात्रा (सजिल्द) अभी कुछ दिन पूर्व ही उन के पास पहुँची थी। उस किताब को हमें दिखा कर वे बेहद खुश हो रहे थे। हमें तनिक भी अहसास नहीं था कि इस महान हस्ती से यह अंतिम मुलाकात होगी। कोरोना के इस दौर से निपटने के बाद हम जल्द फिर से मिलने का वादा ले कर विदा हुए थे .... लेकिन मनहूस महामारी ने यह मौका नहीं दिया।

उन का जाना मेरे लिए एक तरह से दोहरी क्षति जैसी है। परसनली मैंने एक सच्चा मेंटर, गाईड और दोस्त खोया। उन्होंने अपनी संस्था रिंचेन जङ्पो साहित्यिक सभा की ओर से मेरे कविता संग्रह का पहला संस्करण छपवाने में आर्थिक मदद की, कुल्लू में सृजन संवाद नामक हिंदी साहित्य की पहली तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने में वित्तीय सहायता की। असिक्नी पत्रिका के दो महत्वपूर्ण अंक निकालने में मदद की। ये दो आयोजन लाहुल व कुल्लू में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में बहुत बड़ी और महत्वपूर्ण परिघटनाएं थीं। हिमाचल में हिंदी साहित्य पर इतना बड़ा आयोजन अभी तक एकाध बार ही हो पाया था। हिंदी साहित्य में भोटी अंकल की कोई रुचि नहीं थी, लेकिन हमारी सांस्कृतिक अभिरुचियाँ मेल खाती थीं। भाषा, इतिहास, समुदायों और भू खण्डों को बहुत गहरे में और बहुत बारीकियों में जा कर समझने की सिफत मुझे उन की सोहबत में मिली थी। वे एक सच्चे संस्कृति कर्मी थे। संस्कृति और विरासत जैसी बातें उन के लिए महज़ एक ''गर्व करने की चीज़'' नहीं थी। न ही कोई शुगल या हॉबी जैसी चीज़ थी। यह उन के लिए विद्वता दर्शाने या यश प्राप्त करने का साधन भी नहीं था। उन्हें संस्कृति में आत्यंतिक निजी रसानुभूति मिलती थी साथ ही उन्होंने इसे हमेशा एक जटिल राजनैतिक संकट की तरह देखा।

किसी से छिपा नहीं है कि आज के सामाजिक परिदृश्य में खतरनाक बाईनरीज़ उभर रहीं हैं। वैश्विक स्तर पर ही कुछ ऐसी विचारधारात्मक तथा राजनैतिक प्रवृत्तियाँ चल पड़ी हैं -- चाहे वो धार्मिक बाईनरी हो, नस्लीय बाईनरी हो, जातीय, भाषिक और क्षेत्रीय बाईनरीज़ हो : सब पर उन की दृष्टि थी। यह पैनी दृष्टि, इस संकट का आभास और उस का निदान भी ..... रोहतांग के आर पार के इलाके में केवल और केवल भोटी अंकल के पास थी। और इसी के चलते ही उन्होंने अपने अध्ययन के क्षेत्र को लामा वादी मोनेस्टिक बौद्ध मत और सांस्थानिक ब्राह्मण वादी वैष्णव मत से आगे जा कर जीववादी शमन धर्म तक पहुँचाया। बोन मत और जङ्जुङ भाषा की बात की। आर्य और भोट नस्लों से आगे जा कर किन्नर-किरात जातियों की बात की। और इन तमाम अवशेषों को लाहुल और कुल्लू समेत समस्त हिमालयी क्षेत्र में सप्रमाण ढूँढा। उन्हें पूरा भरोसा था कि शमन परम्परा में ही विभाजन की ये घातक मानव विरोधी खाईयाँ पाटने की कुव्वत है। और यही कारण है कि कुल्लू और लाहुल का सूझवान जन इन्हें समान रूप से सम्मान देता है। यह बड़ा योगदान है भोटी अंकल का। हम सब को मिल कर कोशिश करनी चाहिए कि उन की इस महती सदाशयता और नेकनीयती की इस 'लीगेसी' को आगे ले कर जाने की कोशिश करें।

उन का जाना मेरे लिए न केवल एक महत्वपूर्ण विश्वकोश के गुम हो जाने जैसा है, अपितु एक विराट चेतना के अचानक मद्धिम हो कर लुप्त हो जाने जैसा है जो उन के माध्यम से एक आदिम संसार से चल कर मेरी पीढ़ी की दुनिया तक निरंतर एक एसेंशियल प्राण वायु की मानिंद प्रवाहित होती रहती थी। चेतना की वो भरी पूरी नदी आज अकस्मात सूख कर तिरोहित हो गई है जिस का जैविक द्रव्य सुदूर भविष्य के रेगिस्तान में पूरे जीवट से लहलहाती चंद छोटी छोटी हरी कोंपलों को सींचकर जीवन से सराबोर करने लगा था।

सम्पर्क : गांव सुमनम, लाहुल।
e-mail : ajeyklg@gmail.com

स्व० छेरिङ दोर्जे जी, लाहुल के इस विराट् व्यक्तित्व को चन्द्रताल परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

– संपादक

स्वर्गीय प्रो. बनारसी लाल जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

ठिनले शाशनी

कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर में अग्रज तुल्य एवं सहकर्मी डॉ. बनारसी लाल जी का 20 अप्रैल, 2021 को 63 वर्ष की आयु में देहावसान होना, मेरी व्यक्तिगत क्षति के साथ ही साथ दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान के लिए ऐसी अपूर्णीय क्षति है, जिसकी भरपाई असंभव है। उनकी इतनी जल्दी असामयिक मृत्यु हो जाएगी और हमें वियोग सहना पड़ेगा, ऐसी कल्पना नहीं की थी। लेकिन नियति के समक्ष हम सभी बेबस हैं। भाई सतीश लोप्पा जी ने मुझे डॉ. बनारसी जी को श्रद्धांजलि स्वरूप उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में लिखने के लिए कहा, जिसे वह चन्द्रताल पत्रिका के आगामी अंक में प्रकाशित करना चाहते हैं। यद्यपि, मैं स्वयं भी कोविड-19 से पीड़ित होने के कारण अद्यावधि पूरी तरह से स्वस्थ महसूस नहीं कर रहा हूँ, लेकिन मेरे लिए भाई सतीश जी के निवेदन को ठुकराना संभव नहीं था, क्योंकि दिवंगत डॉ. बनारसी लाल जी के साथ मुझे विद्यार्थी जीवन से लेकर उनके अन्तिम समय तक एक अग्रज तथा सहकर्मी के रूप में जो सानिध्य मिला, वह मेरे लिए अविस्मरणीय है। दूसरी ओर, एक ही विभाग में कार्य करने के कारण, यह मेरा नैतिक दायित्व भी बनता है कि मैं दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग के अतिरिक्त बौद्ध जगत एवं हिमालयी संस्कृति के क्षेत्र में जो उनका शैक्षणिक योगदान है, उन्हें इस लेख के माध्यम से प्रस्तुत करूँ।

दिवंगत प्रोफेसर बनारसी लाल जी अत्यन्त मृदु-स्वभाव, व्यवहार-कुशल, कर्मठ एवं विद्यानुरागी व्यक्तित्व के धनी थे। आपका जन्म वर्ष 1958 में गाँव सरखंग (तेलिंग), ज़िला लाहुल एवं स्पीति, हिमाचल-प्रदेश में हुआ। आपने अपनी आरम्भिक शिक्षा मनाली स्थित हाई स्कूल से ग्रहण की। इसके बाद, बौद्धधर्म के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. टशी पलजोर जी के मार्ग-दर्शन में भारतीय संस्कृति की राजधानी काशी (वाराणसी) स्थित सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में अग्रिम शिक्षा हेतु आए। आपने इसी विश्वविद्यालय में वर्ष 1976 में उत्तर-मध्यमा कक्षा में प्रवेश लिया। तदनन्तर, बौद्ध-दर्शन विषय से शास्त्री एवं आचार्य की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसी विश्वविद्यालय में आपको अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रकाण्ड बौद्ध विद्वान, चिन्तक, हिमालयी संस्कृति के विशेषज्ञ एवं नेहरू फेलोशिप से सम्मानित स्मृतिशेष प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय जी तथा बौद्ध जगत में ख्यातिलब्ध विद्वान एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित स्वर्गीय प्रोफेसर रामशंकर त्रिपाठी जी के सानिध्य में रहकर बौद्ध-शास्त्रों का गम्भीर अध्ययन करने का सु-अवसर प्राप्त हुआ। आपने वर्ष 1985 में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से ही श्रद्धेय प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय जी के निर्देशन मेंआर्यमञ्जुश्री-नामसंगीतितन्त्रसम्मतं बौद्धतन्त्रदर्शनसमीक्षणम् विषय पर विद्या- वारिधि (पी. एच. डी.) की उपाधि प्राप्त की। जैसा कि विदित है आर्यमञ्जुश्रीनामसंगीति नामक यह तन्त्र-ग्रन्थ समस्त बौद्ध-तन्त्रों के सार के रूप में प्रतिष्ठित है। वर्ष 1985 में विद्यार्थी जीवन के दौरान ही आपको यूथ सेमिनार ऑन वर्ल्ड रीलिजन के तत्त्वावधान में विश्व-भ्रमण का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस दौरान आपने अमेरिका, फ्रांस, टर्की, इसरायल, इटली, स्विटज़रलेण्ड, थाईलेण्ड, पाकिस्तान, हांगकांग, कोरिया, जापान तथा चीन जैसे देशों की यात्रा की। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में अध्ययन-काल के दौरान प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय जी ने आपकी योग्यता एवं व्यक्तित्व को पहचानकर अपने शैक्षणिक

गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिए आपको सदैव अपने सानिध्य में रखा। आपने गुरु-शिष्य के सम्बन्ध को सर्वोच्च स्थान दिया और गुरु के द्वारा सौंपे गये हर तरह के दायित्वों को बहुत ही ईमानदारी और ज़िम्मेदारी से निभाया। मेरी दृष्टि में आपके जीवन में सबसे अधिक प्रभाव गुरुवर प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय जी का पड़ा है। इसलिए, में यहाँ गुरुवर प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय जी के विराट व्यक्तित्व का भी संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक समझता हूँ। प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय जी को आरम्भ में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के वेदान्त-विभाग में अध्ययन करने तथा कालान्तर में अध्यापन-कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुवर जगन्नाथ उपाध्याय जी के अनुसार, एक दिन किसी सभा में सम्मिलित होते समय भगवान बुद्ध की जीवनी और शिक्षाओं से सम्बद्ध एक लघु-पुस्तिका से उनका परिचय हुआ, जब उन्होंने उस पुस्तिका को पढ़ना आरम्भ किया तो वह अपने आप को रोक नहीं पाये और सभा से उठकर बाहर आ गये और पुस्तिका को अन्त तक पढ़कर ही संतोष लिया। उस पुस्तिका में वर्णित भगवान् बुद्ध के व्यक्तित्व से वे इतने प्रभावित हुए कि उनके जीवन में एक नयी दृष्टि जागृत हुई, जो आगे चलकर उनके जीवन में निर्णायक घटना सिद्ध हुई। गुरुवर के अनुसार, भारतीय चिन्तन-धारा में उनको ऐसी कोई वैचारिक दृष्टि नहीं मिल रही थी जिससे उनके जीवन-दृष्टि का समाधान हो

सके, इसलिए उनका झुकाव घोर कम्यूनिस्ट विचारधारा की ओर अग्रसर हो रहा था। किन्तु, भगवान बुद्ध की जीवन-दृष्टि से परिचय होने के बाद उनका विचार पूरी तरह से बदल गया। बुद्ध के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर कालान्तर में उन्होंने अपना कुलीन ब्रह्माण-धर्म को छोड़कर बौद्ध- धर्म को न केवल स्वीकारा अपितु जीवन पर्यन्त बौद्ध-अध्ययन, अध्यापन एवं विविध बौद्ध-संस्थानों की स्थापना तथा बौद्ध-शास्त्रों की खोज में सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। उन्होंने ही सर्वप्रथम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में श्रमण-विद्या संकाय की स्थापना की, जिसमें थेरवाद (पालि बौद्ध-धर्म), बौद्ध-दर्शन विभाग, प्राकृत एवं जैनागम-विभाग, तथा संस्कृत-प्रमाण-पत्रीय विभाग सम्मिलित हैं। उन्होंने भारत में, विशेषकर हिमालयी बौद्ध क्षेत्रों में, बौद्ध-विद्याओं को स्थापित करने में जो योगदान दिया है, वह अविस्मरणीय है। विदित है कि प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय जी को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय आदि अनेक विश्वविद्यालयों में पालि एवं बौद्ध-अध्ययन विभाग खोलने का भी श्रेय जाता है। उन्होंने हिमालयी क्षेत्रों के छात्रों को बौद्ध-विद्या के अध्ययन का अवसर मिले, इस उद्देश्य से दिल्ली स्थित केन्द्रीय विद्यालय, जनकपुरी, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह-लद्दाख, बौद्ध दर्शन संस्कृत महाविद्यालय, केलंग, तथा केन्द्रीय हिमालयी संस्कृति अध्ययन संस्थान, दाहुंग, अरुणाचल-प्रदेश आदि बौद्ध-अध्ययन संस्थानों की स्थापना में अपना अमूल्य योगदान दिया। उन्हीं के मार्ग-दर्शन एवं सत्प्रयास के फलस्वरूप आज इनमें से दो संस्थान विश्वविद्यालय का रूप ले चुके हैं। उन्होंने हिमालयी एवं विदेशी छात्रों के निवास के लिए सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रांगण में श्रमण-विद्या संकाय के साथ अन्तर्राष्ट्रीय छात्रावास का भी निर्माण करवाया, ताकि विदेशी छात्र सहित लदाख से लेकर अरुणाचल तक सुदूर हिमालय के छात्र यहाँ रहकर अपना अध्ययन पूर्ण कर सके। इसी छात्रावास में रहकर दिवंगत डॉ. बनारसी लाल जी ने भी अपने विद्यार्थी जीवन को शिखर तक पहुँचाया। इनके अतिरिक्त, गुरुवर जगन्नाथ उपाध्याय जी का धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन की गाथा बहुत लम्बी है, उसकी चर्चा करना यहाँ प्रासंगिक नहीं है, उन्हें हम उनकी रचनाओं से समझ सकते हैं। उनकी रचनाओं का संकलन केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह से बौद्ध-मनीषा के नाम से दो खण्डों में प्रकाशित हुआ है। सौभाग्य से डॉ. बनारसी लाल जी को ऐसे बहु-आयामी व्यक्तित्व के धनी गुरुवर के चरणों में वर्षों तक रहकर अध्ययन एवं ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला।

प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय जी ने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त होने के बाद वर्ष 1995 में केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ के प्रांगण में दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना की स्थापना की, जिसका उद्देश्य दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थों का शोध एवं प्रकाशन करना था। विशेषकर, वज्रयान या मन्त्रयान बौद्ध-साहित्य जो भारत, नेपाल, तिब्बत, युरोप, अमेरिका, जापान आदि देशों के ग्रन्थालयों एवं व्यक्तिगत संग्राहलयों में पाण्डुलिपि के रूप में उपलब्ध हैं। इस योजना के वह सर्वप्रथम निदेशक भी थे। उन्होंने इस योजना को संचालित करने के लिए सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के भूतपूर्व आगम एवं तन्त्रशास्त्र के आचार्य, भारतीय तन्त्रशास्त्र के विश्व प्रसिद्ध विद्वान् स्मृतिशेष प्रोफेसर व्रजबल्लभ द्विवेदी जी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के सरस्वती पुस्तकालय से सेवानिवृत्त पाण्डुलिपि विशेषज्ञ श्रद्धेय जनार्दनशास्त्री पाण्डेय जी तथा उनके तीन शिष्य डॉ. बनारसी लाल, डॉ. ठाकुरसैन नेगी, नेपाल के श्री महेन्द्ररत्न वज्राचार्य तथा केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान में आचार्य अन्तिम वर्ष में अध्ययनरत डॉ. वङ्छुग दोर्जे नेगी को सेवा का अवसर दिया। इस अवधि में कालचक्रतन्त्र-टीका विमलप्रभा जैसे प्रसिद्ध एवं अप्रकाशित बौद्ध-तन्त्र ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ। आरम्भिक काल में ही दुर्लभ बौद्ध-ग्रन्थों के शोध-कार्यों का विवरण एवं बौद्ध-तन्त्रों पर शोध-परक निबन्ध प्रस्तुत करने के उद्देश्य से धीः नामक शोध-पत्रिका का भी प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, जो अद्यावधि इसके 60 अंक प्रकाशित हो चुके हैं और 61वां अंक प्रकाशनाधीन है।

दुर्योग से दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना की स्थापना के एक वर्ष उपरान्त ही प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय जी का स्वर्गवास हो गया। कालान्तर में, भूतपूर्व निदेशक प्रोफेसर सम्दोङ् रिन्पोछे जी के सत्प्रयास से दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान का स्थायी अंग बना और तब से दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग के रूप में इसका नामकरण हुआ। प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय जी के निधन के उपरान्त प्रोफेसर व्रजबल्लभ द्विवेदी जी ने दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग के दायित्व को मृत्यु पर्यन्त संभाला। तत्पश्चात, श्रद्धेय श्री जनार्दन शास्त्री पाण्डेय जी के नेतृत्व में डॉ. बनारसी लाल जी ने अनुभाग के प्रशासनिक, शैक्षणिक एवं शोध कार्यों के दायित्वों को भलीभाँति निभाया। श्री जनार्दन शास्त्री पाण्डेय जी की मृत्यु के उपरान्त अनुभाग के सभी दायित्वों का निर्वहन करने में डॉ. बनारसी जी की अग्रणी भूमिका रही है। वह इस अनुभाग के आरम्भिक काल से ही अपने कर्तव्यों के प्रति पूरी निष्ठा से समर्पित थे। उन्होंने अनुभाग में पाण्डुलिपियों पर शोधकार्य करते हुए अपने ज्ञान में अत्यन्त वृद्धि की। डॉ. बनारसी लाल जी प्राचीन बंगला, मेथिली, मागधी, कुटिला, नेवारी, रञ्जना, भुजिमोल, सिद्धम, गिलगिट आदि प्राचीन लिपियों को पढ़ने में निपुण थे। उन्हें इन लिपियों में निबद्ध 80 से अधिक पाण्डुलिपियों का देवनागरी में लिप्यन्तर करने का अनुभव भी था।

इस अनुभाग में डॉ. बनारसी लाल जी ने 01–11–1985 से 1987 तक शोध–सहायक, वर्ष 1989 से 2000 तक शोध–अधिकारी, वर्ष 2000 से 2004 तक सहायक–सम्पादक, वर्ष 2005 से 2010 तक एसोशिएट प्रोफेसर तथा वर्ष 2011 से मृत्यु पर्यन्त प्रोफेसर पद पर आसीन रहकर अपने दायित्वों का सफलता पूर्वक निर्वहन किया। उन्होंने वर्ष 1987 से 1989 तक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह-लदाख में भी शोध अधिकारी के पद पर सेवारत ...शेष पृष्ठ 36 पर

विकास-यात्रा

टिप्रकोड़ि से पीज़ा और बर्गर तक का सफर

छाया राम

पाठकगण चौंकिए मत। यह टिप्रकोड़ि शब्द किस बला का नाम है? पीज़ा और बर्गर शब्द तो आज का आम और विशेषकर आज की युवा पीढ़ी के लिए तो सुनते ही मुंह में पानी भर आया कहावत को सार्थक करने वाला है। टिप्रकोड़ि शब्द जनजातीय एरिया को छोड़कर, देश विदेश की किसी भाषा अथवा बोली में प्रयोग होते हुए न सुना जाता है और न देखा जाता है। यह शब्द आज से लगभग एक शताब्दी पहले या इससे भी पहले एक भोज्य पदार्थ के रूप में लाहुल के खान-पान का एक अहम भाग था। उस समय अत्यन्त गरीबी के कारण एक नहीं, बल्कि चार पांच प्रकार की कोड़ियों का इस्तेमाल होता था। पहले नम्बर पर यहां की मुख्य उपज काठू को पीसने के बाद उसके मोटे छिलकों को जौ या गन्दम के साथ पीसकर एक आटा और उस आटे की रोटी बनाई जाती थी, जिसे टिप्रकोड़ि कहते थे। नम्बर दो पर काठू की पत्तियों को उबाल कर उसे गेहूं या जौ के आटे के साथ गूंध कर रोटी बनती थी, उसे अक्टोड़ि कहते थे। नम्बर तीन पर काठू के अधपके बहुत ही छोटे-छोटे दानों, जिन में पौष्टिक तत्व का सर्वथा अभाव होता था, उसे गेहूं या जौ के साथ पीस कर, उस की रोटी बनाई जाती थी, उसे मङ्जङ कोड़ि कहते थे। नम्बर चार पर खेतों में फसल के बीच 'एम' नाम की एक नाकारा घास होती है उसके पत्तों को उबाल कर आटे के साथ मिलाकर रोटी, उसे 'एमकोड़ि, कहते थे। नम्बर पांच पर, घराट में अनाज पीसने के बाद चक्की के चारों ओर आटे की एक बारीक परत जम जाती है जिसे प्रायः फैंक दिया जाता है, किन्तु गरीब लोग उसकी रोटी बनाकर खाते हैं, उसे ल्हुग्कोड़ि कहते हैं। उस समय लाहुल के लगभग 90 प्रतिशत लोग गेहूं की रोटी की जगह इन कोड़ियों से पेट भरते थे। मेरे लेख के इस शीर्षक का उद्देश्य देश की आज़ादी से पहले से लेकर आज तक की आर्थिक यात्रा पर प्रकाश डालना है, जिसे हमारी पुरानी पीढ़ी ने झेली है। वास्तव में उस समय इन पांच कोड़ियों के अतिरिक्त यहां की खेती से पैदा होने वाली तीन मुख्य उपजों, काठू, जौ और आलू का इस्तेमाल सुबह से शाम तक तीनों समय के खानों में विभिन्न रूप से होता था। सुबह के खाने में इन कोड़ियों में से कोई एक, दिन के समय उबले आलू और काठू के आटे से तैयार ल्वाड़ (चिलडा) और रात के भोजन में अड्डुछति या अड्डुथुक्पा, कभी कभार आलू की सब्ज़ी अन्यथा नमकीन चाय के साथ काम चल जाता था। गेहूं की रोटी के दर्शन कभी-कभार ही होता था। जौ के दाने भून कर और पीस कर सत्तू तैयार करते थे किन्तु आम लोगों को वह भी इच्छानुसार खाने को नहीं मिलता था। इस लिए सत्तू की कमी को पूरा करने के लिए गरीब लोग काठू और जौ के दानों को भूनकर मुक्सू नामक सत्तूनुमा भोज्य पदार्थ, जिसे नमकीन चाय, छाछ और लुगड़ी (चक्ति) के साथ घोल कर प्रयोग करते थे। इसी तरह लुगड़ी निथारने के बाद जो अवशेष रहता है उसे भी सुखा कर भुने जौ के साथ पीस कर सत्तू की जगह इस्तेमाल करते थे। दाल चावल का स्वाद लाहुल के प्रसिद्ध त्यौहार हल्डा (खोगल्) और कूंह कुस (फागली) में ही चखने को मिलता था। खान-पान की हमारी यह स्थिति, अर्थाभाव के कारण लगभग 1950 दशक के अन्त तक रही। आज़ादी के बाद 1960 के बीच इसमें कुछ सुधार अवश्य हुआ पर संतोषजनक नहीं।

असल में किसी क्षेत्र अथवा उसके समाज की आर्थिक स्थिति उसकी धरती में पैदा होने वाली फसलों, वहां की खनिज सम्पदा और उससे उत्पन्न उद्योग धंधे, व्यापार तथा पर्यटन पर निर्भर करती है। किन्तु 1960 से पहले एकमात्र कुठ की फसल थी जिससे लोगों के हाथ में कुछ पैसा आ सकता था। कहा जाता है कि 1930 में ज़िला कांगड़ा के नूरपुर के वैद्य श्री धनवन्तरी प्रसाद जी ने कुठ का बीज

लाहुल में लाया था। बीज बहुत महंगा था इसलिए आम आदमी उसे खरीदने में असमर्थ था। इसके अतिरिक्त इसके लिए बहुत ही उपजाऊ भूमि की आवश्यकता थी। इस लिए इसका लाभ चन्द्रभागा नदी के तटीय भागों में बसे लोग ही उठा पाए। आरम्भ में चन्द इने गिने लोग इस के लाभ से धनवान बन गए। बाद में इसके मार्केटिंग के उतार-चढ़ाव आने और बिचौलियों द्वारा शोषित होने के कारण लोग इसका इच्छित लाभ प्राप्त नहीं कर सके और अन्त में 1970 के दशक में आलू के कारण कुठ के प्रति लोगों का मोह भंग हो गया। खनिज पदार्थ और उद्योग की दृष्टि से तो लाहुल शून्य की स्थिति में था और आज भी है। व्यापार के नाम पर कुल चार पांच प्रतिशत लोग ऐसे थे जो तिब्बत से व्यापार करते थे। इस व्यापार से मात्र चार पांच प्रतिशत लोगों की आर्थिक स्थिति शेष 95 प्रतिशत की तुलना में कुछ अच्छी थी किन्तु इतनी अच्छी भी नहीं थी। अन्त में पर्यटन के लिए तो रटांग इस पिछड़े क्षेत्र के लिए एक अभिशाप स्वरूप मुंह बाए विराजमान था।

तो यह थी आज़ादी से पूर्व हमारी आर्थिक स्थिति। आज़ादी के शीघ्र बाद लाहुल के दो प्रथम स्नातकों ठाकुर देवी सिंह जी और ठाकुर शिव चन्द जी के सद्प्रयासों से हमारा यह क्षेत्र जनजातीय एरिया के रूप में घोषित हुआ, जिसके फलस्वरूप सरकार की ओर से हमारी मूलभूत सुविधाएं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी और आवाजाही की सुविधाएं आसानी से मिलने लगी। आवश्यकतानुसार स्वास्थ्य सुविधाएं मिलने लगी। स्कूल भवन, अस्पताल भवन, आवाजाही के लिए सड़कों के निर्माण के कार्यों से, यहां के बेकार लोगों को घर के आस पास आजीविका के रोज़गार भी मिलने लगा। नौकरियों में आरक्षण के कारण छोटी मोटी नौकरियां भी मिलने लगी। फलस्वरूप अब कोड़ियों की जगह गेहूं की रोटी, ल्वाड़ आलू और अड़ूछति की जगह अब दाल चावल का सेवन होने लगा। नमकीन चाय की जगह मीठी चाय ने ले ली। इस तरह लोगों के मायूस चेहरों पर मुस्कान भरी लाली दिखने लगी। यह स्थिति लगभग 1964 तक बनी।

जो देवी सिंह 1951 में इस पिछड़े क्षेत्र को जनजातीय एरिया घोषित कराने के बाद खंड विकास अधिकारी के रूप में सरकारी नौकरी में लग गए थे, वह 1964 में अपने ज़िला लाहुल स्पिति के केलंग विकास खंड में स्थानान्तरित होकर आ गए। उनका ध्यान लाहुल की आर्थिकी को सुधारने की ओर गया। फलस्वरूप उन्हीं ने तत्कालीन ज़िलाधीश सरदार के. एस. बेन्स के साथ विचार विमर्श करके आलू को एक नकदी फसल के रूप में चयनित करके इसका व्यापार पंजाब के साथ कराने का निर्णय लिया। इसके लिए उन्होंने व्यक्तिगत रुचि से काम करके अपनी बुनियादी सोच को साकार कर दिखाया। बीज आलू के इस लाभदायक कारोबार से किसानों की जेब में पैसा आने लगा, फलस्वरूप यहां की आर्थिकी ने गति पकड़ना आरम्भ कर दिया। 1967 में ठाकुर साहब सरकारी सेवा से त्याग पत्र देकर हिमाचल की विधानसभा में एक निर्दलीय विधायक के रूप में सार्वजनिक जीवन में आ गए। सार्वजनिक जीवन में कदम रखते ही उन्होंने बीज आलू के कारोबार को व्यापक रूप देने के लिए बीज अनुसंधान संस्था दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. पुष्कर नाथ जी को विश्वास में लेकर चन्द्रमुखी नाम से नवीनतम बीज आलू को एलपीएस के माध्यम से लाहुल के किसानों को वितरित करवाया। परिणाम स्वरूप लाहुल के खेतों में चन्द्र मुखी बीज आलू लहलहाने लगा। इस कारोबार ने इतना व्यापक रूप ले लिया कि अब लाहुल का एक भी किसान ऐसा नहीं रहा जो इसका लाभ लेने से वचित रहा हो। धीरे-धीरे ज्योति और बादशाह नाम के बीज आलू ने इस कारोबार के दायरे को और भी बढ़ाया, इस तरह यहां के लोगों के चेहरों पर खाली मुस्कान और लाली नहीं बरन उसमें एक नई चमक भी निखरने लगी। अब लाहुल के किसान नकदी उपज के महत्व को अच्छी तरह समझ चुके थे इसलिए लोगों ने अस्सी के दशक में मटर का कारोबार भी आरम्भ कर दिया। लोग अब काफी संतुष्ट दिखने लगे, क्योंकि उनको उनकी मेहनत का समुचित मुआवज़ा मिलने लगा था। आर्थिक विकास की यात्रा में इक्कीसवीं शताब्दी के अन्त तक बीज आलू और मटर से लोगों ने भरपूर लाभ उठाया उसके बाद बेमौसमी सब्ज़ियां, जैसे फूल गोभी, ब्रोकली, आइस बर्ग पैदा कर के सोने पर सुहागा कहावत को सार्थक करवाया। इसी दौर में सेब की भूमिका भी कुछ कम नहीं है। जेब में पैसा और हाथ खुला होने के कारण इस पिछड़े क्षेत्र ने जीवन के हर शोवे में जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और आधुनिकतम तकनीकों में यहां की युवा पीढ़ी उत्तरोतर आगे बढ रही हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है।

आज़ादी से पूर्व यहां का आम आदमी चार पांच प्रकार की कोड़ियों अड़ु ल्वाड़ और मुक्सू बड़्मा से पेट की आग

बुझाते थे वहां आज चिकन, मटन, पनीर और अण्डों से बने बहुमूल्य व्यंजनों और स्वादिष्ट पकवानों, साधारण दाल चावल की जगह चावल विरियानी, प्यास बुझाने के लिए पानी की जगह शीतल पदार्थों का सेवन करने में समर्थ हो गए हैं, यही नहीं आज की हमारी युवा पीढ़ी पीज़ा और बर्गर जैसे फास्ट फूड का स्वाद चख कर आनन्द विभोर हो रही है। टिम्रिकोड़ि से पीज़ा बर्गर तक के इस लम्बे सफर में प्राप्त संतोषजनक आर्थिकी के गर्भ में यहां के लोगों के खून पसीने से भरी कठिन तपस्या निहित है। इसमें कोई दो राय नहीं है। 1964—65 से आज तक की इस प्रगतिशील आर्थिक यात्रा में लाहुल के आम और खास सभी लोग भाग्यशाली रहे हैं क्योंकि हमें इस लम्बे काल में किसी प्राकृतिक आपदा से उत्पन्न अप्रिय घटना का सामना नहीं करना पड़ा। फलस्वरूप हमने नकदी फसलों से भरपूर लाभ उठाया और इस तरह हमने आर्थिकी को संतोषजनक स्थिति तक पहुंचाया। ऐसा शायद ऊपर वाले की अपार कृपा से सम्भव हुआ होगा, यह मेरा मानना है। यह स्थिति कब तक रहेगी कुछ कहना कठिन है। अन्यथा हमने देखा कि कुठ जैसी नकदी फसल से 1930 से लेकर आज तक लाहुल का आम आदमी आलू मटर की तुलना में कोई विशेष लाभ नहीं उठा सका जिसका ज़िकर मैंने पहले भी किया है। इसी तरह बीसवीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों में होप्स नाम की एक नकदी फसल यहां की आर्थिकी के लिए आशा की नई किरण बन कर आई, पर विपणन की अनिश्चितता के कारण उससे भी इच्छित लाभ नहीं ले सके, फलस्वरूप इसकी खेती को त्यागना पड़ा। भगवान न करे कहीं इन लाभदायक नकदी फसलों के साथ भी कोई अप्रत्याशित अनहोनी हो जाए इसलिए यहां की युवा पीढ़ी को इस बात के लिए सतर्क रहना होगा तो ऐसी स्थिति में आपके पास क्या विकल्प हैं? आपको ऐसे विकल्पों की खोज करनी पड़ेगी जिससे आज तक प्राप्त आर्थिक ढांचे को सुरक्षित रखते हुए भविष्य के लिए इसे और भी अधिक सुदृढ और सुनिश्चित कर सकें।

रटांग जो दो तीन वर्ष पूर्व तक यहां के लोगों के साधारण जीवन के साथ इसकी आर्थिक प्रगति की राह में अभिशाप स्वरूप था, आज इस पर टनल बन जाने से मानो यहां की आर्थिकी के लिए एक नया द्वार खुल गया हो। पर यह भी एक सच्चाई है कि रटांग के बाहर की दुनिया में अस्वीकार्य तत्वों के कारण जो विषैली हवा फैली हुई है वह नए द्वार से प्रवेश करके यहां की स्वच्छ और सुगंधित वायु को दूषित कर ले, इसकी सम्भावना बनी हुई है। परिणामस्वरूप इसका कुप्रभाव हमारे सहज और सरल जीवन तथा आर्थिकी पर पड़ सकता है। इन सम्भावित कुप्रभावों को अप्रभावी बनाने में आप युवा पीढ़ी की मुख्य भूमिका रहेगी, साथ में रटांग पर टनल को एक वरदान के रूप में स्वीकारते हुए उससे यथा सम्भव लाभ उठाना होगा, लाहुल का स्त्री-पुरुष और बाल वृद्ध सभी को यहां की युवा पीढ़ी से इस दायित्व की आशा ही नहीं पूरा विश्वास भी है।

गुरुबेहड़, ढालपुर, कुल्लू।

पृष्ठ 32 का शेष...

रहकर अपना अमूल्य योगदान दिया। इनके अतिरिक्त, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पूना में भी एसोशिएट फैलो के रूप में एक माह तक सेवारत रहे। इस अनुभाग में कार्य करने के दौरान विद्वतापूर्ण जो उनकी शैक्षणिक गतिविधियाँ रही हैं तथा देश के विभिन्न शिक्षा संस्थाओं, विशेषकर हिमालयी क्षेत्रों में आयोजित संगोष्ठियों, सेमिनारों तथा अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में जो योगदान किये हैं, उन्हें उनकी निम्नलिखित रचनाओं से समझ सकते हैं। पाण्डुलिपि अध्ययन, ग्रन्थ-सम्पादन, वज्रयान जैसे गम्भीर विषयों पर लेखन करने में वह अत्यन्त निपुण थे। उनकी विद्वता की जितनी तारीफ की जाये वह उनके लिए कम ही होगी। वह दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध-विभाग के स्तम्भ स्वरूप थे। उन्होंने अविवाहित रहकर अपना सम्पूर्ण जीवन अपने विभाग तथा बौद्ध-विद्या के प्रति समर्पित किया। आज के युग में विद्या-संस्थानों में ऐसे निष्ठावान एवं विद्या-प्रेमी विरले ही दिखते हैं। असामयिक मृत्यु के बावजूद उनका जीवन सफल एवं सार्थक था। इस तरह, डॉ. बनारसी लाल जी का सेवानिवृत्ति से दो वर्ष पूर्व ही निधन हो जाना उनके सभी निकट सहयोगियों एवं शुभचिन्तकों के साथ-साथ बौद्ध जगत के लिए भी अपूर्णीय क्षति है। हम सभी तथागत बुद्ध से उनकी चित्तसंतति को सद्‌गति प्रदान करने के लिए प्रार्थना करते हैं। दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग के सभी सहकर्मी उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का प्रयास करें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(बनारसी लाल जी की रचनाओं एवं शैक्षणिक उपलब्धियों का विवरण अगले अंक में दिया जाएगा)

सम्पर्क : दुर्लभ बौद्ध ग्रंथ शोध विभाग, उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, वाराणसी उत्तर प्रदेश।
e-mail : thinlaygonpapa@gmail.com

लाहुल के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान स्व० बनारसी लाल जी को चंद्रताल परिवार हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।
– सम्पादक।

अटल टनल और लाहुल का पर्यटन

ई० रामनाथ साहनी

अटल टनल के खुल जाने के पश्चात लाहुल में पर्यटन की अपार संभावनाएं खुल चुकी हैं। इस संभावना के अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के प्रभाव इलाके पर पड़ना ज़रूरी है। इस लिए इस का आकलन करना और उस हिसाब से तैयारी करना अति आवश्यक होगा। चंद्रताल का यह प्रयास निश्चय ही लोगों को सोचने पर मजबूर करेगा। अच्छे प्रभाव तो हर कोई चाहेगा परंतु बुरे प्रभाव से कैसे निजात पाना है इस का अध्ययन करना पड़ेगा। पर्यटन और पर्यटकों के कई प्रकार होंगे और प्रत्येक का अलग अलग उद्देश्य होगा और उस का प्रभाव भी उसी हिसाब से होगा।

सर्वप्रथम तो हमें शरद ऋतु पर्यटन (winter tourism) और ग्रीष्म ऋतु पर्यटन (summer tourism) को अलग-अलग ढंग से देखना पड़ेगा। लाहुल आने वाले पर्यटक निम्न लिखित उद्देश्य को ले कर आ सकते हैं।

१. बर्फ को देखने की चाह
२. ग्रीष्म कालीन खेल (summer sports)
३. भयंकर गर्मी से राहत पाने के लिए
४. धार्मिक पर्यटन
५. ऐडवेंचर और ट्रेकिंग की इच्छा
६. लाहुल के कल्चर और वेश-भूषा देखने की इच्छा
७. लद्दाख जाने वाले तथा विदेशी पर्यटक

पर्यटकों की दृष्टि में मनाली का सब से बड़ा आकर्षण बर्फ और स्नो प्वाइंट (snow point) का निकट होना बताया जाता है। मैंदानी इलाकों में रहने वाले जिन्होंने कभी बर्फ देखी ही नहीं उन्हें बर्फ देखने की चाहत पहाड़ों पर खींच लाती है। दिल्ली आदि रहने वाले मेरे कुछ मित्रों ने बताया कि बर्फ देखने की इच्छा ले कर वे क्रिस्मिस और न्यू इयर में शिमला गए परंतु बर्फ न पड़ने से निराश हो कर वापिस आए और बर्फ के दीदार नहीं हो सके। मनाली और रोहतांग के बीच पर्यटकों को लगभग पूरा साल बर्फ के दीदार तो हो ही जाते हैं चाहे वे बर्फ में खेल और अटखेलियाँ कर सके या न कर सकें। लाहुल में अटल टनल खुलने के पश्चात पर्यटकों को साल के कम से कम पाँच छह महीने बर्फ के दर्शन और भी आसान हो गए हैं। टनल पार करते ही उन्हें बर्फ के दर्शन हो जाते हैं। ऐसे पर्यटक तो अधिकतर गोंधला वेली और सिस्सू के आस पास तक ही सीमित रह सकते हैं। और इन का लाभ भी इधर के कुछ होटल और होम स्टे तथा दुकानदारों को हो सकता है। शेष वेली को तो घट-बध ही होगा। जहां तक नुकसान का सवाल है सब से पहला नुकसान तो ट्रेफिक जाम का रहेगा। ट्रेफिक का जो प्रॉबलम रोहतांग में होता था वह यहाँ शिफ्ट हो जाएगा। उस के अतिरिक्त साफ सफाई, कूड़ा-कर्कट और शौचालय आदि की समस्या रहेगी। जिस का समाधान पहले ही सोचना पड़ेगा। यह पर्यटन तो अक्तूबर से अप्रैल तक ही सीमित होगा। ऐसे पर्यटक तो अधिकतर उतरी भारत अर्थात दिल्ली, हरियाणा और पंजाब आदि से हो सकते हैं जो अधिकतर एरोगेंट होते हैं और छोटी-छोटी बात पर झगड़ा कर सकते हैं। होम स्टे वालों को विशेष कर सावधान रहना पड़ेगा

२. **शरद ऋतु खेल** (winter sports)

लाहुल में शीत कालीन खेलों की अपार संभावनाएं हैं। यदि हम इस को सचमुच में डिवैलप कर सके तो यहाँ पर विंटर ओलिंपिक्स भी कराया जा सकता है। परन्तु इस के लिए अधोसंरचना (infra structure) पर बहुत पर बहुत पैसे की आवश्यकता पड़ेगी। विंटर सपोर्ट में एक ओर पोले बर्फ पर स्नो स्कीइंग, क्रॉस कंट्री और डाउनहिल दोनों हो सकते हैं हिल वहाँ इस से संबन्धित खेल जैसे टोबोगन और लूज आदि जोड़े जा सकते हैं। दूसरी ओर जमे हुए पानी में आइस स्केटिंग और आइस हॉकी आदि खेल हो सकते हैं। इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिहाज़ से आइस वाले खेल का खर्च कम ही होगा। स्केटिंग रिंक बनाने में अधिक खर्च नहीं आयेगा। केवल एक मैदान में पानी भर कर रखना पड़ेगा और वह अपने आप ही जम जाएगा। प्रेक्टिस के लिए तो कहीं भी जमें हुए झील और तालाब जैसे सिस्सु आदि में किया जा सकता है। वैसे प्रेक्टिस और एंटेरटेनमेंट के लिए तो कोई भी स्लोप इस्तेमाल कर सकेंगे जैसे करदंग आदि में तो अभी भी स्की करते रहते हैं। परन्तु कंपीटीशन के लिए अच्छे स्लोप्स बनाने पड़ेंगे। हेली स्कीइंग की संभावना भी बहुत है। जैसे यदि कारगा के ऊपर रिबलिंग के पास हेलीपैड बनाई जाए और कारगा से ऊपर तक रोपवे बना दिया जाए तो अति उत्तम स्लोप वर्ल्ड स्टैंडर्ड का बन सकता है।

चूंकि इन खेलों का कार्यक्रम महीनों के हिसाब से नहीं तो हफ्तों का तो होगा ही। इस लिए इस का लाभ काफी लोंगों को हो सकता है। इस का लाभ होटल, होम स्टे आदि के अतिरिक्त काफी लोगों को काम भी मिल सकता है। किसानों को भी कई चीज़ें बेचने का मौका मिल सकता है। जैसे दूध, दही, मक्खन, घी, फल और सब्ज़ी की मांग रह सकती है। क्योंकि ऐसे कार्यक्रम कंट्रोल्ड ग्रुप में होगा इस लिए इस में हुल्लड़बाज़ी आदि की संभावना कम ही रहगी।

ग्रीष्म कालीन पर्यटन

३. **धार्मिक पर्यटन** : लाहुल में धार्मिक पर्यटन की भी काफी संभावनाएं हैं। जहां एक ओर पटन वेली के अंतिम छोर में त्रिलोकनाथ

और उदयपुर में मृकुला माता का मंदिर है और दूसरी ओर गाहर वेली में कई बुद्धिस्ट गोम्पा हैं। चंद्र भागा का संगम भी एक आकर्षण बन सकता है। समय के साथ शायद इस संगम में भी अस्तु का बिसर्जन एक रिवाज़ शेष भारत में भी हो सके।

उधर बौद्ध धर्म को जानने और मानने वालों के लिए कारदंग गोम्पा और शशुर गोम्पा आदि भी आकर्षण का केंद्र बन सकते हैं। कुछ पर्यटकों, विशेष कर जिन्होंने तंज़िन पलमो (Diane Perry) और डॉ गुंथर की पुस्तकें पढ़ी हों उन के लिए तायुल गोम्पा और वह गुफा जहां पर उन्होंने कई वर्षों तक मेडिटेशन किया वह भी आकर्षण का केंद्र हो सकते हैं। ऐसे पर्यटक तो अधिकतर विदेशी ही हो सकते हैं। प्रोफेसर गुंथर को जब में मिला तो उन्होंने कहा, ''आई मिस मई होम'' उन्होंने लाहुल को अपना घर बताया।

वैसे यदि हम तुपचिलिंग से गुरु घंटाल तक रोपवे लगा सकते तो यह भी एक आकर्षण बन सकता है। बहुत साल पहले धार्मिक पर्यटन के मद्देनज़र में ने फेसबुक आदि में लिखा था कि संगम में नदियों के संगम के साथ-साथ एक धार्मिक संगम की भी एक बड़ी संभावना बन सकती है। मेरा प्लान या विचार था कि तुप्चिलिंग में वैसे एक गोम्पा पहले से ही है वहाँ एक विशालकाय बुद्ध की मूर्ति बनाई जाए, उधर तांदी और कारगा के सिरे पर शिव की मूर्ति और गुशाल के सिरे पर कृष्ण की मूर्ति इस प्रकार बनाई जाए कि नीचे संगम से तीनों नज़र आ जाए और संगम साइड की दीवारें पूरे शीशे की हों। यह पर्यटकों के लिए एक बड़ा आकर्षण बन सकता था।

४. ग्रीष्म कालीन पर्यटन में सब से अधिक मैदानों की भयंकर गर्मी से राहत पाने के लिए आने वालों की संख्या अधिक हो सकती है। ऐसे पर्यटक हफ्तों या महीनों के हिसाब से रहने वाले भी हो सकते हैं। जिन का लाभ होटल रेस्टोरेन्ट या होम स्टे वालों के अतिरिक्त घरों में कमरे ले कर रहने वाले भी हो सकते हैं। विशेष कर जब स्कूलों में छुटियाँ होती हैं और नीचे मैदानों में बरसात से तंग आ जाते हैं तो वे लाहुल का रुख कर सकते हैं जहां उन दिनों मौसम बहुत सुहाना होता है और बारिश नाम मात्र की ही होती है।

५. इस के अतिरिक्त ऐडवेंचर और ट्रेकिंग पर आने वाले पर्यटक, लाहुल के कल्चर आदि को जानने की इच्छा वाले, तथा लद्दाख जाने वाले पर्यटक आदि सभी अल्प समय या राह चलते मुसाफिर की तरह ही होंगे। लाहुल वालों को इन का फाइदा तो नाम मात्र का ही होगा।

उपसंहार :

सुना है एक बार कुछ पर्यटक मनाली आ कर रोहतांग तक हो आए। वापस जा कर लाहुल वालों को ही बता रहे थे के वे रोहतांग हो आए पहाड़ के सिरे तक गए और वहाँ से आगे कुछ भी नहीं होता। लोगों ने लाहुल का नाम भी नहीं सुना था। लाहुल से आए हैं बताने पर पूछते थे लाहौर से आए हो? आज अटल टनल रोहतांग के कारण लाहुल को सब जानने लगे हैं। भारत के नक्शे में लाहुल उभर कर आ गया है। इस टनल और टूरिज़्म का लाहुल को क्या और कितना फाइदा हुआ है यह एक बहस का विषय है। टनल के फायदे से तो कोई इंकार नहीं कर सकता। इस के फायदे तो केवल सारे साल आने जाने के लिए ही नहीं बल्कि खेती बाड़ी के उपज को मार्केट पहुंचाने में सुविधा और सस्ता तथा किसी भी मौसम में ले जा सकते हैं। खराब मौसम की चिंता से छुटकारा मिल गया। उधर टूरिज़्म का लाभ सभी को नहीं मिल सकता। होटल रेस्टोरेंट होम स्टे आदि को तो फायदा होगा ही इस के इलावा कुछ लेबर वर्ग को भी लाभ हो सकता है। परंतु किसानों को इस का लाभ बहुत कम होगा। कुछ दूध, दही, सब्ज़ी और फल आदि बेच सकेंगे।

जहां तक नुकसान का सवाल है सब से पहले तो कूड़ा-कर्कट ,मल मूत्र आदि का हो सकता है जिस के लिए बहुत सारा इंतजाम करना पड़ेगा। इस के अतिरिक्त चोरी डाका आदि का भी खतरा रहेगा। सड़कों पर पहले की तरह आलू सब्ज़ी आदि छोड़ कर आना कठिन होगा। जिस प्रकार पिछले साल ही कई स्थानों से आलू और सेब आदि की चोरी हुई थी। उस समय मैंने हमारे मंत्री डॉ मारकंडा को फोन कर के बोला था कि पुलिस फोर्स को काफी बढ़ाना पड़ेगा। कम से कम तांदी पुल और सिस्सु टनल से पहले बेरियर जल्दी लगवाएँ और हर गाड़ी की चेकिंग कर के ही आगे जाने दिया जाए और जो भी समान हो उस का प्रूफ ड्राईवर के पास होना चाहिए। पुलिस को मोटर साईकल दिया जाना चाहिए ताकि जहां से भी शिकायत आए वहाँ वे जल्दी पहुंच सकें नहीं तो जैसे फिल्मों में दिखाया जाता है कि पुलिस जब सब कुछ हो जाता है तब जा कर पहुँचती है। इस के अतिरिक्त किड्नेपिंग और बलात्कार आदि का भी खतरा हो सकता है। इन सब के लिए मेरा एक सुझाव है कि हर गाँव में नौजवान छोकरों की एक वॉल्यंटर फोर्स की तरह ग्रुप्स बनाया जाए ताकि एमरजेंसी में पुलिस के पहुँचने से पहले स्थिति को संभाला जा सके।

सम्पर्क : शमशी, ज़िला कुल्लू, हि.प्र.।
e-mail : himalayan1@yahoo.com

टनल, पर्यटन और पर्यावरण सुरक्षा

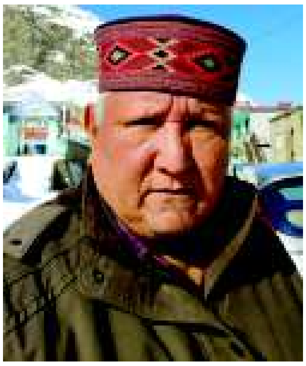

प्रेम चंद कटोच

3 अक्तूबर, सन् 2020 का पावन दिन, जब एक सपना जो लाहुल की जनता ने कई पीढ़ियों से अपने मन में संजोए रखा था साकार हुआ। जी हां, इस विशेष दिवस पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने करकमलों से रोहतांग टनल जिसका पुनः नामकरण 'अटल टनल रोहतांग' के रूप में हुआ है, का विधिवत उद्घाटन करके इसे राष्ट्र को समर्पित किया। लोगों ने इस दिवस को एक विशेष उत्सव के तौर पर बड़े हर्षोल्लास से मनाया। मनाएं भी क्यों नहीं, आखिर लोगों के स्मरणातीत काल से चली आ रही अपरिमित कष्टों का निवारण इस टनल निर्माण से संभव हुआ है। इससे न केवल छह मास के मुक्त वातावरण की कैद (Open air jail) से छुटकारा मिला है, अपितु आवागमन कम व्यय और कम समय के साथ बहुत सरल भी हुआ है। कृषि एवं बागवानी उत्पाद को मंडियों में पहुंचाने में जो विकट समस्या मौसम तथा रास्ता खराब होने की वजह से आती थी, वह समाप्त हो गया है। स्वास्थ्य सेवाओं के लिए जो विकट समस्याएं सर्दियों के दिनों में आती रही हैं, उससे कुछ हद तक राहत इस रूप में मिली है कि अब आने जाने की सुविधा सरलता से उपलब्ध होगी।

पर्यटन उद्योग को पंख लगने की बात आम जनमानस में हो रही है। और टनल खुलते ही पर्यटकों का जो सैलाव घाटी में देखने को मिला, उससे लोगों को लगा कि उनकी आर्थिकी सुदृढ़ होने की संभावना बढ़ गई है। यह सही भी है कि पर्यटन के विकास से घाटी में लोगों के रोज़गार के अवसर बढ़ेंगे और आर्थिक रूप से लाभान्वित भी होंगे, परन्तु घाटी में पर्यावरण और पारिस्थितिकी का जो क्षरण होगा, उस पर चिंतन मनन करने की आवश्यकता पर अभी तक बहुत कम ध्यान दिया गया है। यही नहीं कि केवल वातावरणीय प्रदूषण ही चिंता का विषय होगा, बल्कि हमारे सामाजिक ताने-बाने में बाहरी संस्कृति के अतिक्रमण तथा प्रभाव से हमारी समृद्ध संस्कृति, विशिष्ट परम्पराएं, जीवन शैली, खान-पान, भाषा और वेषभूषा तथा इसके अतिरिक्त हमारे नैतिक मूल्य भी अवश्य प्रभावित होंगे। इस अतुल्य एवं विशिष्ट परंपरा और संस्कृति को संरक्षित करने के उद्देश्य से उठाए गए एक सकारात्मक कदम इस वर्ष मनाए गए उत्सवों के उत्सव हिमोत्सव में देखने को मिला है जहां हमारी पुरातन संस्कृति को प्रदर्शित करने की कोशिश हुई है जिससे न केवल पर्यटक ही, बल्कि हमारी नई पीढ़ी भी इस समृद्ध संस्कृति से रूबरू हुई है यह सब मौजूदा उपायुक्त तथा उसकी टीम की दूरदृष्टि तथा प्रशासनिक सूझबूझ तथा स्थानीय जन प्रतिनिधिगण, स्वयंसेवी संस्थाओं, महिला मंडलों, युवा मंडलों एवं माननीय मंत्री महोदय एवं सरकार के सहयोग से संभव हो सका है। इस प्रकार की गतिविधियां निरंतर जारी रखने की आवश्यकता है।

वातावरणीय पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी को पर्यटन गतिविधियों की अति से कैसे महफूज़ रखा जाए, इस विषय में चिंतन मनन की आवश्यकता है। संबंधित पंचायत को अपने क्षेत्र में ऐसे किसी भी गतिविधि को संचालित करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए जिससे वहां के पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी पर दुष्प्रभाव पड़े। इस संबंध में मेरा यह मानना है कि हमें :-

(क) पर्यटन का पर्यावरण पर प्रभाव :-

१. "Mountain biking" या जिसे ATV कहते हैं, उसके संचालन की अनुमति बिल्कुल नहीं देनी चाहिए। यह हमारी पगडंडियों, चारागाह और घास के मैंदानों को पूरी तरह नष्ट कर देंगे। रोहतांग में इसके दुष्प्रभाव को देखते हुए NGT ने भी इसके संचालन को प्रतिबंधित किया था।

२. स्नो स्कूटर के कमर्शियल संचालन को भी तभी अनुमति दी जानी चाहिए, जब बर्फ की तह ४ फुट से अधिक हो, अन्यथा इसके अधिक संचालन से बर्फ समाप्त हो जायेगी, जो पर्यटकों के मुख्य आकर्षण का केंद्र बिंदु है। यदि बर्फ ही नहीं रहेगी तो पर्यटकों के घाटी से आकर्षित होने की वजह भी फीकी पड़ जाएगी।

३. पर्यटकों के मुक्त विचरण स्थलों पर घोड़े और याक को लाने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। इससे न केवल इनके मल (लीद) से वातावरण ही दूषित होगा, अपितु स्थानीय समुदाय के चारागाह भी इससे प्रभावित होंगे। इनकी अनुमति केवल लंबे ट्रेक रूट्स के लिए दी जा सकती है, वह भी स्थानीय ग्रामसभा या पंचायत की अनुमति से, जिनके ग्रेज़िंग राइट्स उन स्थानों पर पड़ता हो। पर्यावरण पर इनके दुष्प्रभावों के कारण NGT ने भी रोहतांग में इनके संचालन को प्रतिबंधित किया था।

४. सामुदायिक शौचालयों, मल निकास व्यवस्था तथा कचरा प्रबंधन की तरफ प्रशासन ने काफी ध्यान दिया है तथा योजनाएं भी बन रही हैं। आशा है कि योजनाओं के अनुरूप धरातल में भी काम देखने को मिलेगा। इसमें पारंपरिक 'घोप' व्यवस्था की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, जिसके लिए श्री एस०पी० ठाकुर आई०ए०एस० जो वर्तमान में ओडिशा सरकार में उच्च पद पर सेवारत हैं की पहल एवं सहयोग से स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत कुछ सर्वेक्षण के कार्य हुए हैं, उम्मीद है कि धरातल पर भी इसका क्रियान्वयन देखने को मिलेगा। जिससे वातावरणीय पर्यावरण की स्वच्छता भी अवश्य सुनिश्चित होगी।

५. पर्यटन और पर्यावरण के संतुलन को बनाये रखने के लिए यह भी आवश्यक होगा कि बेशक भूटान की तरह अक्षरशः नहीं, परन्तु देखभाल करने की क्षमता के मद्देनज़र, वहां की तर्ज़ पर पर्यटकों की आमद को जहां तक संभव हो नियंत्रित करने की आवश्यकता होगी। इसके लिए पर्यटकों द्वारा निजी वाहनों के प्रयोग को भी नियंत्रित करने के बारे में भी विचार करने की आवश्यकता है।

सम्पर्क : गांव सीसू, लाहुल।
e-mail : premsissu@gmail.com

अटल टनल रोहतांग और इसके खुलने के पश्चात् लाहुल घाटी में पर्यटन के संदर्भित प्रभाव

डॉ० हपिन्दर सिंह

खंगसर खर

अटल टनल रोहतांग विश्व के पटल पर भारत के निरन्तर विकास का एक प्रतिबिम्ब है। यह आज की बढ़ती तकनीक और आधुनिक जगत में भारत के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस रोड टनल के खुल जाने से कितनी ही समस्याएं हल हो जाएंगी। इस लाहुल घाटी के पिछड़े क्षेत्र को पूरे विश्व से जोड़ देने में रोहतांग टनल का अहम योगदान है। इस टनल के खुल जाने से अब लाहुल वर्ष भर हिमाचल के अन्य क्षेत्रों से जुड़ा रहेगा। अब लाहुल घाटी विकास के नए आयाम तक पहुंच पाएगी। यहां के स्थानीय लोग अब जीवन को थोड़ी सरलता से जी पाएंगे। रोहतांग टनल आज के समय के परिणाम नहीं अपितु यहां के बुजुर्गों के अथाह प्रयासों का फल है। आदरणीय अर्जुन गोपाल जी को इसके लिए याद किया जाना चाहिए। और अन्य उन सभी लोगों को जो निरन्तर इस टनल को खोलने के लिए प्रयासरत रहे।

आज यह टनल देश को समर्पित है। इस टनल के खुल जाने से अब लाहुल के लोगों को बहुत सहायता मिलेगी। अब वे समय पर मरीज़ों को अस्पताल पहुंचा सकेंगे। अब किसी को रोहतांग दर्रा पास करते हुए जान नहीं गवानी पड़ेगी। स्थानीय लोग अब समय पर अपने कृषि उत्पादों को बाज़ार में ला पाएंगे। लाहुल के लोग अब वर्ष भर अपने घर लाहुल जा पाएंगे। अब स्थानीय लोगों को रोज़मर्रा की चीज़ें उचित समय पर उपलब्ध करवाई जा सकेंगी। अटल टनल रोहतांग हर प्रकार से लाहुल वासियों के जीवन में एक आशा की किरण है। परन्तु विकास अपने साथ बहुत सारी सकारात्मकता के साथ-साथ कुछ समस्याएं भी लाता है। आधुनिकीकरण के बहुत से फायदों के साथ-साथ नुकसान भी लाता है।

आज अटल टनल रोहतांग के खुलते ही लाहुल घाटी पूरे विश्व से जुड़ गई है। इस टनल के खुल जाने से पर्यटन का विकास लाहुल में तेज़ी से हो पाएगा जैसा कि हम पिछले कुछ समय से देख रहे हैं। पर्यटन के लाहुल में बढ़ने से यहां के स्थानीय लोगों को रोज़गार के नए अवसर प्राप्त होंगे। होटल, ट्रेवल एजेंसी, टूर गाइड, साहसी पर्यटन जैसी क्रियाएं लाहुल के लोगों को अपनी आय कमाने का एक नया ज़रिया उपलब्ध करवाएंगी। पर्यटन के विकास से लाहुल में नये होटल, होम स्टे, पर्यटन स्थलों का विकास होगा। परन्तु पर्यटन अपने साथ-साथ विनाश को भी लेकर चलता है। यदि इसे सही तरीके से नहीं चलाया गया तो यह पूरी लाहुल घाटी की प्राकृतिक, धार्मिक और सामाजिक, सांस्कृतिक सुंदरता को समाप्त कर सकता है। आज पर्यटन लाहुल में अपनी प्रारम्भिक अवस्था में है और यही उचित समय है जो स्थानीय लोग और प्रशासन इसके बारे में हर तरह से विचार करें और लोगों में पर्यटन से सम्बन्धित जागरूकता लाएं ताकि भविष्य में पर्यटन को सही दिशा में चलाया जा सके।

पर्यटन के लाहुल की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

पर्यटन के विकसित होने से लाहुल में रोज़गार के नए अवसर खुलेंगे। होटल, होट स्टे, ट्रेवल एजेंसी, टूर गाइड, एडवेंचर क्रियाओं से लाहुल के लोगों को आय के नए साधन प्राप्त होंगे। यह कृषि के साथ-साथ अधिक आय कमाने का दूसरा ज़रिया बन सकता है। जिससे लोगों के जीवन स्तर में और विकास होगा। परन्तु इसके साथ-साथ यह भी समझना चाहिए कि इस अर्थव्यवस्था के विकास के साथ-साथ कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं। जैसे कि पर्यटन स्थलों में महंगाई का बढ़ना। रोज़मर्रा के सामान की कीमतों में वृद्धि। यह केवल पर्यटकों के लिए नहीं बल्कि स्थानीय लोगों के लिए भी बढ़ती है। साथ ही साथ यह लाहुल में कृषि को भी प्रभावित कर सकता है। यह पाया गया है कि जहां पर्यटन का विकास होता है वहां के लोग पर्यटन पर ज़्यादा निर्भर रहते हैं और जो पहले कृषि पर निर्भर थे, अब धीरे-धीरे उन्होंने कृषि को अपना द्वितीय काम बना लिया है। इसका कारण यह भी है कि पर्यटन में पैसा जल्दी आता है जबकि कृषि में यह प्रक्रिया लम्बी है। और रिस्क अधिक है।

पर्यटन का लाहुल के सामाजिक जीवन पर प्रभाव - पर्यटन का स्थानीय लोगों के जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

इससे अछूता नहीं रह सकता। बेहिसाब पर्यटकों की बढ़ती संख्या लाहुल के शुद्ध वातावरण को नष्ट कर सकती है। यहां के पेड़-पौधे और वन्य जीवन को अस्त-व्यस्त कर सकती है।

अतः इन सभी विषयों पर विचार होना अति आवश्यक है ताकि आने वाले समय में लाहुल में पर्यटन को उचित रूप से चलाया जा सके और स्थानीय लोगों को अधिक से अधिक फायदा हो और नकारात्मक प्रभावों को कम से कम किया जा सके।

पर्यटन के कारण लाहुल के सांस्कृतिक जीवन को विश्व के समक्ष रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। जब यहां पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी तो विश्व के विभिन्न देशों से पर्यटक आएंगे और यहां की संस्कृति और समाज को जानेंगे।

परन्तु साथ ही साथ लाहुल के लोग भी बाहर की संस्कृति से अवगत होंगे। पर्यटन के शोधपत्रों के अनुसार बाहरी संस्कृति यदि हमारी स्थानीय संस्कृति से मिलती है तो स्थानीय संस्कृति की वास्तविकता को प्रभावित करती है। इसके साथ स्थानीय लोग बाहरी जीवन की ओर आकर्षित होंगे जैसा कि कुल्लू-मनाली में देखा जा सकता है। जब संस्कृति का वाणिज्यीकरण होगा अर्थात् जब हमारे मेले, धार्मिक कार्यक्रम इत्यादि पर्यटकों को प्रदर्शित किए जाएंगे पर्यटन के उद्देश्य से तब यह हमारी शुद्धता को प्रभावित करती है। ऐसा लाहुल में भी हो सकता है।

पर्यटन का वातावरण पर प्रभाव

पर्यटन किसी भी स्थान के वातावरण को प्रभावित करता है। पर्यटकों की संख्या के बढ़ने के साथ-साथ किसी स्थान की वहन क्षमता (carrying capacity) पर गहरा प्रभाव पड़ता है क्योंकि किसी स्थान की एक सीमा होती है जहां तक वह क्षति हुए बिना पर्यटकों की संख्या को स्वीकार कर सकती है। यदि पर्यटन का विकास उस सीमा को ध्यान में रखते हुए न हो तो वहां के वातावरण पर नाकारात्मक प्रभाव डालती है जिसके आगामी परिणाम बहुत बुरे होते हैं। लाहुल का क्षेत्र भी

इसके लिए निम्न सुझावों पर ध्यान देना चाहिए

१. लाहुल में टूरिज़्म काउंसिल का होना ज़रूरी है जिसमें स्थानीय लोग, टूरिज़्म के विभिन्न व्यवसाय से जुड़े लाहुल के लोग, पंचायत अधिकारी और प्रशासन सभी की बराबर भागीदारी हो ताकि किसी भी निर्णय और पर्यटन के विकास में सबकी राय ली जा सके।

२. लाहुल में ग्रामीण पर्यटन, पर्यावरणीय पर्यटन और साहसिक पर्यटन जैसी चुनी हुए पर्यटन क्रियाएं हों ताकि चुनिंदा पर्यटक आएं और स्थानीय लोग अधिक पैसा कमा सकें और नकारात्मक प्रभाव भी कम हों, क्योंकि सामूहिक पर्यटन (Mass Tourism) लाहुल जैसे कम जनसंख्या वाले क्षेत्र को विनाश की ओर ले जा सकता है।

३. लाहुल में पर्यटन को कृषि के साथ-साथ विकसित करना चाहिए तथा इसे कृषि से जोड़ना चाहिए ताकि कृषि पर बुरा प्रभाव कम पड़े। और कृषि उत्पादों का यहां के पर्यटन विकास में उपयोग हो। जैसे ही होटल की आपूर्ति यहां के कृषि उत्पादों से हो सके।

४. स्थानीय लोगों में पर्यटन से सम्बन्धित जागरूकता प्रदान करना बहुत ज़रूरी है।

५. यहां के लोगों को अपना पर्यटन व्यवसाय शुरू करने के लिए आर्थिक मदद सरकार से मिलनी चाहिए।

६. पुराने ट्रेकिंग रूट्स को दोबारा एडवेंचर टूरिज़्म के लिए खोला जाना चाहिए।

७. लाहुल के युवाओं को टूर गाइड, ट्रैकिंग, स्कीइंग और अन्य एडवेंचर क्रियाओं की ट्रैनिंग प्रदान की जानी चाहिए।

८. होटल का निर्माण अधिक करने की बजाए होम स्टे को प्रमोट किया जाना चाहिए और बड़े-बड़े होटलों की बजाय छोटे, कम कमरों वाले होटल बनने चाहिए जो लाहुली शैली में हों ताकि पर्यावरण को नुकसान न हो।

९. मडहाउस का निर्माण भी एक अच्छा विकल्प है।

१०. पर्यटकों के लिए सख्त नियम बनाए जाने चाहिए ताकि वे नकारात्मक क्रियाएं न कर सकें।

११. इको पार्क का निर्माण होना चाहिए।

१२. लाहुल घाटी के सभी क्षेत्रों को पर्यटन के समान अवसर मिलने चाहिए और पूरे लाहुल में पर्यटन का विकास समान रूप से होना चाहिए।

१३. जगह-जगह पर मेडिकल और फर्स्ट एड की सुविधा होनी चाहिए।

१४. लाहुल के धार्मिक स्थानों को संरक्षित किया जाना चाहिए और तांदी संगम को पर्यटन के लिए विकसित किया जाना चाहिए।

यदि पर्यटन को सकारात्मक दिशा में बढ़ाना है तो स्थानीय लोगों को अभी से इसके बारे में गंभीरता से सोचना होगा तभी पर्यटन का उचित विकास होगा अन्यथा वह घाटी के विनाश का कारण बन सकता है। उदाहरण के लिए जैसे ही टनल खुली पर्यटकों का तांता लग गया और सोशल मीडिया के ज़रिये हमने पर्यटकों की नकारात्मक क्रियाएं भी देखी और लाहुल में ट्रैफिक जाम जैसी चीज़ें भी देखी जो कभी सोची भी नहीं थी।

इसलिए सरकार और स्थानीय लोग सभी को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए पर्यटन को विकसित करना होगा।

सम्पर्क :
असिस्टेंट प्रोफेसर (टूरिज़्म)
रा० डिग्री कॉलेज, चौड़ा मैदान, शिमला।
email: hapindersingh18@gmail.com

अटल टनल रोहतांग : लाहुल घाटी को संभावित स्वास्थ्य-दुष्प्रभावों से कैसे बचाएं?

डॉ० जय प्रकाश नारायण

डॉ० रंजीत वैद

3 अक्तूबर, 2020 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अटल टनल रोहतांग का उद्घाटन किया। यह लाहुली जनता के लिए एक ऐतिहासिक परिघटना थी। अचानक एक चमत्कार की तरह लाहुल वर्षभर के लिए शेष दुनिया से जुड़ गया। लाहुल और कुल्लू के बीच की दूरी पहले से काफी कम हो गई। तीस साल पहले जब मैं मनाली से चलता था तो अपने घर पहुंचने के लिए मुझे तीन दिन लग जाते थे। अब पांच घंटे भी नहीं लगते। यह अविश्वसनीय लगता है और पल भर के लिए अकल्पनीय भी।

टनल के बाद लाहुल की तरफ आने वाले आगंतुकों की संख्या अचानक तेज़ी से बढ़ गई है। टूरिस्ट सीज़न के दौरान और अधिक बढ़ने की संभावना है। इस में घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय दोनों प्रकार के पर्यटकों, खेतों में काम करने वाले बिहारी व नेपाली मज़दूरों के अलावा वे लाहुली लोग भी शामिल होंगे जो टनल से पहले अपने परिजनों से मिलने कभी कभार ही आ पाते थे, और अब अकसर आते जाते रहेंगे। विश्व की यह सबसे लंबी सुरंग जहां एक ओर आर्थिक एवं विकासात्मक इरादों में अवसरों के नए द्वार खोल रही है वहीं दूसरी ओर बहुत सी चुनौतियां भी खड़ी कर रही है। उदाहरण के लिए मानव समूहों के साथ सीमाएं लांघ कर आते हर तरह के रोग संवाहक जैसे मच्छर। इतिहास में ऐसी घटनाएं पहले भी घट चुकी हैं। और हमें इस नई चेतावनी का सामना करने के लिए तैयार होना चाहिए।

रोग नियंत्रण पर प्रभाव

तो उम्मीदें कुछ ऐसी बन रही हैं कि घाटी में जन स्वास्थ्य पर गहरे प्रभाव पड़ने वाले हैं। और ये प्रभाव कचरा प्रबंधन, पर्यावरणीय स्वच्छता एवं रोग नियंत्रण तक के मामलों में नज़र आएंगे। ज़ाहिर है कि ये प्रभाव सकारात्मक भी होंगे और नकारात्मक भी। सकारात्मक यह है कि मेडिकल एमरजेंसी वाले मरीज़ों को कुल्लू-मंडी जैसी उच्च स्वास्थ्य सुविधाओं वाली जगहों के लिए रेफर/ट्रांसपोर्ट किया जाना आसान हो गया है। खासतौर पर गर्भवती महिलाओं की प्रसव तथा सड़क दुर्घटनाओं के शिकार ट्रामा मरीज़ों के मामले में यह बहुत फायदेमंद है। टनल की सुविधा से स्वास्थ्य संबधी कर्मचारी आसानी से आ जा पाएंगे और साथ में दवाई तथा और आवश्यक सामान को भी लाहुल लाने में सुविधा होगी। वे कर्मचारी जिनका स्थानान्तरण हुआ हो वे भी शीत ऋतु में अपनी आवाजाही जारी रख पाएंगे।

बावजूद इसके, घाटी में ऐसे बाहरी लोगों की आवाजाही से बीमारियों के विषाणु अपने साथ लाकर ऐसी बीमारियों को फैलाने में सहायक हो सकते हैं। जो लोग वाईरस आदि से संक्रमित होकर भी लक्षण नहीं दिखा रहे हों, यहां रोगों के शुरू होने व फैलने का कारण बन सकते हैं। इसी प्रकार टनल खुलने से 'अस्वास्थ्यकर खाद्य सामग्री' की घाटी में आमद आसान होने वाली है। पर्यटन के प्रसार से जहां आर्थिक समृद्धि आने वाली है या स्थानीय निवासियों की क्रय शक्ति बढ़ने वाली है वहीं इससे आरामपरस्ती की प्रवृत्ति भी बढ़ेगी, जो आगे जा कर क्रॉनिक बीमारियों या तथाकथित 'लाईफ स्टाईल बीमारियों' को न्यौता देगी। जैसे कि मधुमेह, उच्च्व रक्तचाप, हृदयरोग व केंसर इत्यादि।

यदि हम संक्रामक रोगों की ही बात करें तो बड़े पैमाने पर और बड़ी तेज़ी के साथ बढ़ी हुई मानवीय आवाजाही से इन रोगों के लगने व फैलने की आशंका बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए ज्यों ही ये रोगाणु घाटी में प्रवेश करने लग जाएंगे जो यहां पहले अस्तित्व में ही नहीं थे या फिर बहुत कम थे। कोविड जैसी बीमारियां जो खतरनाक रूप से संक्रामक हैं अनजाने ही स्थानीय लोगों में फैल सकती है। यह उन लोगों के माध्यम से फैल सकती है जो पंजाब, चंडीगढ़ व हरियाणा से यहां आ रहे हैं, अर्थात् ऐसे राज्य जहां बीमारी का प्रकोप बहुत भारी है। इस से घाटी के ज़िला अस्पताल तथा अन्य स्वास्थ्य केन्द्रों के नाज़ुक एवं अपर्याप्त स्वास्थ्य संरचनाओं पर बोझ पड़ेगा। लाहुल में महामारी के आरंभ से लेकर 24 मई 2021 तक 2476 कोविड मरीज़ डायग्नोज़ किए जा चुके हैं और 15 की मौत हुई है।

इनमें से अधिकतर बी० आर० ओ० के मज़दूर हैं। या फिर वे मज़दूर हैं जो खेतों में काम करने आए हुए हैं। और ज़िला प्रशासन ने उनके लिए परीक्षण अनिवार्य कर रखा है।

पर्यावरण संबन्धी हेल्थ की बात करें, तो सबसे प्रत्यक्ष असर बांधों, पानी व भूमि से जुड़ी अन्य विकास परियोजनाओं से पड़ सकता है। बड़ी परियोजनाओं से स्थानीय पारिस्थितिकी में बड़े बदलाव आते हैं तथा संक्रमण के लिए 'मानवीय एक्सपोजर' की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। हाईड्रो प्रोजेक्ट सर्वोत्तम उदाहरण हैं- कि कैसे पूंजी का गमनागमन स्थानीय हालातों में परिवर्तन लाता है और यहां तक कि संक्रामक रोगों के फैलने में योगदान देता है।

यूं तो प्रकट रूप में बांधों व जल विद्युत परियोजनाओं का उद्देश्य बिजली का उत्पादन कर के स्थानीय आर्थिकी को बढ़ावा

देना है, तथापि इस तरह की गतिविधियां, जैसे कि बांधों का निर्माण इन वादियों की नाज़ुक व नैसर्गिक पारिस्थितिकी तंत्र को ध्वस्त कर सकती हैं और जन स्वास्थ्य संबंधी घातक दुष्परिणाम सामने आ सकते हैं।

घाटी में जन समूहों के आमदोरफ्त से दूसरी बड़ी समस्या जो उत्पन्न होने वाली है खाद्य पदार्थों के बाबत है। मसलन जंक फूड का प्रचलन और खान पान की अस्वास्थ्यकर आदतें व व्यवहार। इस के चलते घाटी में दीर्घकालीन रोगों के बढ़ने की संभावना अधिक हो जाती है। यहां यह सूचित करना उचित होगा कि टनल से पहले ही क्रॉनिक रोग ग्रस्त मरीज़ों की संख्या लगातार बढ़ रही है। विभिन्न सर्वेक्षणों के हवाले से प्राप्त आंकड़े बताते हैं कि लाहुल में तीन से पांच प्रतिशत लोग वर्तमान में मधुमेह से ग्रस्त हैं और उन्नीस प्रतिशत से अधिक उच्चरक्तचाप से। इन क्रॉनिक बीमारियों के मुख्य कारण हैं - अस्वास्थ्यकर भोजन, मदिरा का सेवन और शारीरिक गतिविधियों का न होना।

कालान्तर में बढ़ी हुई मानवीय आवाजाही एवं गतिविधियां वातावरण की गर्मी में वृद्धि करेंगी। यातायात के लिए फॉसिल इंधन (पैट्रोल/ डीज़ल आदि) का प्रयोग इसे और अधिक गति देगा। इससे हिमनद पिघलेंगे, अस्थायी 'ग्लेशियर झीलें' बनेंगी जो फट कर विध्वंसकारी हिमालयी आपदाओं को जन्म देंगी। जिस की क्रूरतम मिसालें 2013 में केदारनाथ तथा फरवरी 2021 में चमोली उतराखंड में देखी गईं।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण ऐसे परजीवी रोग संवाहक भी ऊंचाई वाले पहाड़ी क्षेत्रों में आ जाते हैं जो पहले वहां होते ही नहीं थे। जैसे मच्छर इनसे डेंगू और मलेरिया जेसी बीमारियों के फैलने का खतरा भी हो सकता है जिस के बारे हम पहले सोच भी नहीं सकते थे।

सामाजिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव- पर्यटकों की अनियंत्रित व बेरोकटोक आवाजाही का सब से दुर्भाग्यपूर्ण पहलू यह होगा कि इस भीड़ में अवांछित तथा असामाजिक तत्व भी

शामिल होंगे। हमारे समाज को हिंसा और उपद्रव की घटनाओं से दो-दो हाथ होना होगा। और इसके विध्वंसकारी आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक दुष्परिणाम होंगे। तनाव, भौतिक असुरक्षा, महिला सुरक्षा और इन सब से मानसिक यंत्रणाएं या मानसिक बीमारी। ये स्थानीय लोगों के मुख्य सरोकार बनने वाले हैं। जबकि ऐसी घटनाएं घाटी में अभी तक नहीं सुनी गई हैं और हमारा ज़िला एक अपराध शून्य ज़िले के रूप में जाना जाता है।

असल में टनल खुलने के सप्ताह भर के भीतर ही सोशल मीडिया में ऐसे वीडियोज़ और खबरें आने लगी थी जिनमें पर्यटक शराब पी कर महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार कर रहे थे और बदतमीज़ी से पेश आ रहे थे। ऐसा हुड़दंगी व्यवहार एवं अपराधिक माहौल घाटी के शांतिप्रिय लोगों के लिए विशेष चिंता का विषय है। जोकि गर्मियों में जब पर्यटक सीज़न चरम पर हो, तब तेज़ी से बढ़ने वाली हैं। ऐसी घटनाओं के साथ पूरी कानूनी ताकत का प्रयोग कर के निपटा जा सकता है।

रास्ते क्या हैं

सर्वप्रथम लाहुल प्रशासन को एक डिजिटल प्लेटफार्म विकसित कर उन सभी लोगों को 'ट्रेक' करना चाहिए जो सुरंग से होकर लाहुल आ रहे हैं। होटल मालिकों को चाहिए वे पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति व जीवन शैली की जानकारी दें और समझाएं कि कैसे उन्हें अपने व्यवहार का स्तर कायम रखते हुए स्थानीय संस्कृति के साथ संवेदनशील तरीके से पेश आना चाहिए। और ऐसा कोई व्यवहार नहीं करना चाहिए जो एक सम्मानित मेहमान को शोभा नहीं देता।

विभिन्न विभागों के कर्मचारी, जैसे - पुलिस, रेवेन्यू, स्वास्थ्य आदि। अलग-अलग जगहों पर बाहरी लोगों का प्रवेश दर्ज करें और इस तरह प्राप्त 'डेटा' को एक पोर्टल पर एकत्रित कर के सहेजा जाए जिससे लोगों को पहचानना और उनकी उपस्थिति को 'ट्रेक' करना आसान होगा।

डूज़ और डोण्ट्स की निर्देशिकाएं पम्फलेट के रूप में साउथ पोर्टल पर प्रवेश करने से पहले ही बांटी जा सकती हैं। आगंतुकों के खराब व आपराधिक व्यवहार के प्रति कोई ढिलाई नहीं बरती जाए।

दूसरे, ज़िला प्रशासन को चाहिए कि स्थानीय स्टेक होल्डर्ज़ के साथ परामर्श कर के "लाहुल में विकास एवं स्वस्थ पर्यावरण" विषय पर एक व्यापक पंचवर्षीय प्रस्ताव तैयार करे और इसे राज्य सरकार के माध्यम से विश्व बैंक अथवा केन्द्र सरकार को प्रस्तुत करे ताकि वित्तीय सहायता प्राप्त की जा सके और इस प्लान को कार्यान्वित किया जा सके। प्रस्ताव में पर्यटकों की अत्यधिक आवाजाही के चलते पर्यावरणीय, विकासात्मक, तथा स्वास्थ्य संबंधी दुष्प्रभावों के स्पष्ट एवं विस्तृत विवरण हों तथा स्थानीय संस्कृति, स्वास्थ्य सुरक्षा के मुद्दे, एवं पारिस्थितिकी संरक्षण हेतु उठाए जा सकने

...शेष पृष्ठ 86 पर

लाहुल-स्पीति : प्रकृति का नैसर्गिक भंडार

डॉ. मिलाप चंद शर्मा

आज के कुल्लू-मनाली की सांस्कृतिक सीमाओं से परे, हमारा वैदिक मगर कठिन क्षेत्र कुलांतपीठ अब सर्वाधिक पसंदीदा स्थानों में शुमार हो गया है। हमारे पूर्वजों के हम अत्यंत आभारी हैं, जिन्होंने अपरिपक्व पर्वतीय मिट्टी तथा यहां के भूभाग को अपनी कुशलता तथा कठोर परिश्रम से अपने उपयोग के अनुकूल बनाया। बहुत से लोग आज भी नहीं जानते हैं कि वे कहां से आए थे। लेकिन वे जानते हैं कि वे देश के सबसे कठिन भौगोलिक परिवेश में एक-दूसरे से पूर्णतः घुल-मिलकर यहां रहे। प्रकृति के ऐसे दुष्कर माहौल में अपनी संस्कृति तथा रीति-रिवाज़ को बनाने एवं बनाए रखने में जुटे रहे। उन्होंने सह अस्तित्व एवं एक-दूसरे पर निर्भरता के सिद्धान्त को अपनाकर, प्रेमपूर्वक मिल-जुलकर प्रवास किया। कभी हार नहीं मानने का आशीर्वाद हमें इसी प्रतिकूल भूखंड से प्राप्त हुआ है। अपने पूर्वजों के हम ऋणी हैं, जिन्होंने हाल के वर्षों तक भौगोलिक एवं प्राकृतिक कठिनाइयों के बावजूद यहां स्थायी प्रवास किया। अब हमें प्रकृति को, सदियों से चली आ रही अपनी संस्कृति तथा रीति-रिवाज़ों को मौजूदा समय में हमारे ज़िले को सुगम आवागमन की सुविधा उपलब्ध हो जाने के दृष्टिगत, इन्हें नष्ट होने से बचाने व संरक्षित करने की आवश्यकता है। अब, जबकि आना-जाना बहुत आसान हो गया है, जिसके कारण अपनी संस्कृति-संस्कारों को बचाए रखने की चुनौती भरी ज़िम्मेदारी हमारे ऊपर आ पड़ी है। इसलिए, अब हमें व्यापक योजना तैयार करने की आवश्यकता है, जिससे हम अपने सुंदर, प्राचीन, अक्षत पर्यावरण तथा संस्कृति वाले इस भू भाग को बचाए रखने में सफल हो सकें। ज़िले का प्रत्येक कोठी एक कृषि जलवायु इकाई है जिसका आने वाले समय में समृद्ध जैविक अस्तित्व बनाए रखने की पूरी संभावना है।

हमारा ज़िला भू-सांस्कृतिक अस्तित्व का अनूठा रूप है, जिस में बहुविध परिदृश्य का सौंदर्य अद्वितीय है। पहाड़ों की ऊंची चोटियां तथा उन ऊंची चोटियों पर कटोरे के आकार वाली चन्द्र भागा नदी घाटी पूरे वर्ष बर्फ से ढकी रहती हैं। कुंज़ोम दर्रे के पार, प्रकृति के पर्वतीय विज्ञान के नियंत्रण द्वारा निर्मित की गई पर्वतमालाएं शेष बर्फ को मानो छिड़क, बिखेर देती हैं। इन चोटियों में जमा हुई बर्फ हिमनद (ज़रिम) बनाने का कार्य करती है, हिम स्खलन-प्रक्रिया (स्थानीय बोली में री) के कारण। इस प्रकार, दो अलग-अलग प्रकार के ग्लेशियर आकार लेते हैं। एक कुंज़ोम दर्रे के पश्चिमी ओर गर्म, तथा पूर्व दिशा के निकट शीत आधारित ग्लेशियर हैं। ऐसी विशेषताओं से युक्त आस-पास के भूभाग वाले ग्लेशियर न केवल वर्षा के स्रोत हैं, बल्कि इस प्रक्रिया में बहुत अधिक सक्रिय भी हैं। गर्मी पर आधारित ग्लेशियर अधिक मलबे से भरा अथवा ढका होता है, और ऐसे ग्लेशियर ठंड पर आधारित ग्लेशियर की तुलना में पिघलते भी शीघ्र हैं। गर्मियों के मौसम में इन ग्लेशियरों के गलने, पिघलने से नदियों के पानी के रंग से इनका पता चलता है। ग्लेशियर तब बनता है, जब अधिक मात्रा में हिमपात होता है। लेकिन अब हमारा अनुभव है कि जमी हुई बर्फ कम होती जा रही है। इसका मुख्य कारण है, कम हिमपात तथा जमी हुई बर्फ का अधिक पिघलना। जमी बर्फ यानी ज़रिमों का तेज़ी से घटने के फलस्वरूप, हमारे अस्तित्व को लंबे समय तक बने रहने का संकट पैदा हो गया है। इस प्रक्रिया को शीघ्र रोक लेना बहुत आवश्यक है। मैं अपना आलेख ग्लेशियर तथा इनसे संबंधित मुद्दों पर ही केंद्रित करूंगा। यह एक ऐसा विषय है, जो मुझे अत्यधिक प्रिय है।

संसाधन :

प्रकृति के कुछ खूबसूरत लैंडस्केप संरचना के साथ चन्द्र-भागा और स्पीति की बलशाली नदियां, ऊंची नदी घाटियां, मलबा मुखी (Debris fans) मुलकिला की भव्य चोटियां, घेपंग गोह, गंगस्तंग, मेंथोसा, फबरंग तथा अन्य कई पर्वतमालाएं भारी ग्लेशियर से लदी हैं। इनके नाम यही हैं। कुछ विस्तृत घाटी किस्म के हिमनद हैं, जैसे बड़ा शिगरी, समुद्र टापू, मुलकिला, मयाड़ तथा अन्य का सीधा योगदान (Contribution) नहीं है। उनका केवल स्थानीय मौसम अथवा जलवायु पर प्रभाव पड़ता है। मुहाने वाले इन ग्लेशियरों का पिघला पानी सीधा चन्द्र-भागा नदी में बहता है। छोटे ग्लेशियर जिन्हें माऊंटेन बेसिन कहा जाता है, तथा आला यानी खिड़की (Niche) के प्रकार के हैं। गंगस्तंग, घुषाल और लेडी ऑफ केलंग ऐसे ही ग्लेशियर हैं। ये सभी बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये आबादी से बहुत ऊंचाई पर हैं। इनसे चश्मे और पिघला पानी अबाध रूप से चलता रहता है। गंगस्तंग पर्वतीय हौज़ (Mountain Basin) किस्म का है, और यह बहुत बड़े क्षेत्र को समेटे हुए है। यह लाहुल का अत्यधिक महत्वपूर्ण ग्लेशियर है। यह बिलिंग, लोट, शांशा, जाहलमा, थिरोट एवं गुम्बा नाले हैं जो अनेक गांवों के लिए जीवनदायी अवलंब यानी सहारे हैं। जमे बर्फ के इन ताज़ा पानी के प्राकृतिक स्रोतों को तथाकथित विकास गतिविधियों के मद्देनज़र, अब खतरा पैदा हो गया है। बर्फ और जमे हुए हिमनद हमारे लाहुल के निवासियों हेतु कई शताब्दियों से ताज़ा पानी के रूप में जीवन रेखाएं रही हैं। हमारे पूर्वजों ने अपनी कर्मठता और जीवट के कारण, इन जमे हुए ग्लेशियरों के पिघले पानी को सिंचाई के लिए उपयोग में लाया है, और ऐसा तब किया जब कि बाहरी संस्थाओं से कोई प्रोत्साहन अथवा सहयोग, सहायता नहीं मिली थी। ऐसा डिज़ाइन किया हुआ चैनल आज तक एक भी असफल नहीं हुआ! सरकारी पहल पर तीन बड़ी नहरें - बिलिंग, शांशा तथा सेंदवाड़ी में बहुत अधिक और बारंबार निवेश के बावजूद भी कामयाब नहीं हुईं। यह स्थानीय ज्ञान की पराकाष्ठा है, जिससे हमारे पुरखों ने सिंचाई के ऐसे नायाब डिज़ाइन बनाए, और उन्हें कभी असफलता का सामना नहीं करना पड़ा। ऐसे

परिवर्तनशील समय में समय की मांग है कि कमी वाले कुछ स्थानों में, सतत कृषि कार्यों से संबंधित गतिविधियों को चलाए रखने वास्ते हिमजल संचयन ढांचे बनाए जाने चाहिए। ऐसे प्रयासों के लिए स्थानीय लोगों का ज्ञान और उनकी सहभागिता बहुत आवश्यक है। जैसे छोटी नहर अथवा कुहल प्रणाली को यहां के निवासियों ने वर्षों पहले ईजाद की थी। इस संदर्भ में हमें यानी लाहुल के लोगों को, देशी इंजीनियरों तथा पर्यावरणविदों के रूप में अधिक सक्रिय तथा सावधान रहना चाहिए। चूंकि ताक/खिड़की (Niche) वाले ग्लेशियरों की संख्या अधिक है, और खड़ी ढलानों (Slopes) पर हैं। ऐसे में इनका कभी भी नष्ट होने अथवा टूटने की संभावनाएं हैं। इसे दोनों प्रकार से भारी लाभ, भारी हानि कह सकते हैं। एक छोटा सा तापीय परिवर्तन अनगिनत टनों वाले इन ग्लेशियरों को ढहा सकता है, जिसे स्थानीय बोली में बैण्ड़ा कहा जाता है। यह चमोली किस्म के विध्वंस का कारण बन सकता है तथा निचले क्षेत्रों में अकल्पनीय रूप से विनाश कर सकता है। ऐतिहासिक रूप से दर्ज़ बड़ा शिगरी ग्लेशियर 1850s में झील के रूप में परिवर्तित हो गया था, जो सीमा पार प्रभाव (Trans boundary effect) की याद दिलाता है।

ऐतिहासिक विस्तार :

हिमनदों के फैलाव तथा सिकुड़न पर यद्यपि प्रकृति का नियंत्रण रहता है, लेकिन हमारी बदलती हुई जीवन पद्धति एवं क्रिया-क्लापों ने हाल के दशकों में इनको बहुत अधिक क्षति पहुंचाई है। हाल ही में भूवैज्ञानिकों द्वारा दर्ज सर्वाधिक ग्लेशियर फैलाव ने लगभग समूचे चन्द्र-भागा त्रिकोण को भी अपने ज़द में ले रखा था, जो 85000 वर्ष पहले ठोलंग के निकट तक था। इसी प्रकार, स्पीति में भी ग्लेशियरों का विस्तार रहा है। पूर्व धारणा के अनुसार चन्द्र घाटी का सबसे बड़ा ग्लेशियर एक समय, कुंज़ोम दर्रे से स्पीति तक फैला हुआ था। लेकिन विश्वस्नीय प्रमाणों तथा ठोस साक्ष्यों के अभाव में इस तथ्य पर अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता है। जब से जमी हुई बर्फ सिकुड़ जाने से खण्ड़ित रूप में एक अलग ग्लेशियर बन गए, उनकी अब पूरे ज़िले में अलग-अलग एवं विशेष नाम से पहचान की गई है। इन सहायक ग्लेशियरों के विस्तार के स्थल रूप का एक अन्य उदाहरण दर्ज किया गया है, जो 8000 से 9000 वर्ष पहले का है। हिमालय के इस भूभाग में इन ग्लेशियरों की सामान्य प्रवृत्ति इन का अधोक्षरण (Down wasting) तथा पीछे की ओर सरकते जाना है, जो 4000 वर्ष के पश्चात अधिक तेज़ी से शुरू हुआ है। ग्लेशियरों के धीरे-धीरे पीछे की ओर हटने अथवा खत्म होने की प्रवृत्ति 1850 से ही शुरू हो चुकी है। इसका उदाहरण मयाड़ घाटी के थानपट्टन इलाके में लोगों के विस्थापन से देखा जा सकता है। उपलब्ध साक्ष्य बताते हैं कि ऊंचाई वाले ये क्षेत्र दसवीं से मध्य १६वीं शताब्दी के दौरान आबाद थे। कुछ ऊंचे स्थानों वाले जैसे रानिका कोठी में टेलंगबे से ऊपर ञुर्बलपा था। हम यह मानकर चलते हैं कि लगातार कम होते फसली मौसम के कारण ये प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुए हैं। लगातार कम होते तापमान जिसे हम शुरूआती लघु शीतयुग से संबद्ध कर सकते हैं, के कारण यहां निवास करने वालों को बेहतर स्थानों में प्रवास के लिए जाना पड़ा। घुषाल की लोककथा का इस प्रकार की घटनाओं से निकट संबंध हैं। कुछ समकालीन ग्लेशियर हमारे मूल वैज्ञानिक सोच का खण्डन करते हैं, जिसका मुख्य कारण उनका सभी प्रकार की विषमताओं को दरकिनार करना है। कुछ अन्य ग्लेशियर अब एक सदी से भी अधिक समय से लगातार पीछे की ओर खिसक रहे हैं। यानि ग्लेशियर आकार में कम से कम होते जा रहे हैं। यह निश्चित है, हमारी वर्तमान गतिविधियों का इन ग्लेशियरों पर आने वाले समय में बहुत अधिक दुष्प्रभाव पड़ेगा। समुद्र टापू एवं घेपंग गोह के ग्लेशियरों द्वारा निर्मित झील बढ़ने से, जिसको अब लगभग आधी सदी हो गई है, आने वाले समय में बहुत खतरनाक होने वाली हैं, जैसा हमने 2013 में केदारनाथ की भयानक दुर्घटना अथवा वाकया देखा है। नीलकंठ झील अब तक स्थिर है, लेकिन उसके पास छोटी सी झील अर्जुन है, जो मौसम के अनुसार अपना आकार घटाती-बढ़ाती रहती है। इससे, भविष्य में खतरे की कोई संभावना नहीं लगती है। दूसरी ओर, हाल के समय में ग्लेशियर के ऊपर बनती झीलों की बढ़ती संख्या पर लगातार निगरानी करने की आवश्यकता है। ये कभी भी टूट सकती हैं, और तबाही मचा सकती हैं।

समकालीन ग्लेशियर :

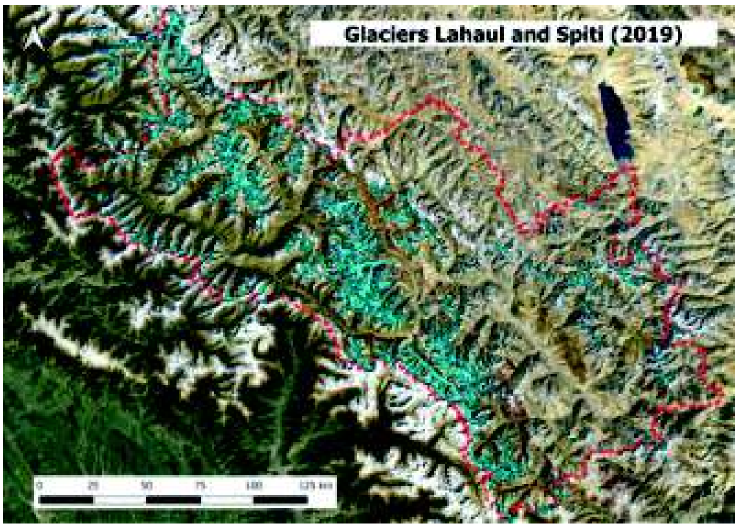

लाहुल और स्पीति में 1230 ग्लेशियरों का जमाव है, जिनका चन्द्र-भागा तथा स्पीति (सतलुज की सहायक नदियां) तक फैलाव है। इन क्षेत्रों में सर्दियों में जमा होने वाले किस्म के ग्लेशियर हैं। टुंड्रा क्षेत्रीय जलवायु के अन्तर्गत वर्गीकृत स्पीति समुद्र तल से औसत 3000 मीटर की ऊंचाई पर है। यहां का वार्षिक तापमान –8 डिग्री तथा 27 इंच तक वर्षा (Precipitation) होती है। (स्टेशन-काज़ा)। जबकि लाहुल में यह 3 से 8 डिग्री तथा 30.2 इंच वर्षा होती है। (स्टेशन-केलंग)। स्पीति में वर्षण अधिकतर शरद ऋतु में होती है। वहीं, लाहुल में वर्षण दोहरी प्रणाली/बाई मॉडल से वितरित होती है, जो अधिकतर ग्रीष्मकाल में होती है। यह सर्द ऋतु में मध्य अक्षांश (latitude) पश्चिमी हवाओं से

पश्चिम की ओर से होता है। ज़िले में गर्मियों में बरसात की तुलना में सर्दियों के दौरान बहुत अधिक हिमपात होता है। किसी भी कमी अथवा वेशी के प्रति ये ग्लेशियर तथा बर्फ वाले भू-भाग बहुत संवेदनशील होते हैं। अध्ययन से पता चला है कि धूल तथा कार्बन के छोटे-छोटे अंश अब इन ग्लेशियरों तक पहुंच रहे हैं। इससे, इन ग्लेशियरों के पिघलने की प्रक्रिया तेज़ हो गई है। इनको शीघ्र पिघलने से रोकने के लिए समय पर ठोस उपाय करना बहुत आवश्यक है। ब्लैक कार्बन (बीसी) का तिंगरट तथा मेंथोसा ग्लेशियरों की निगरानी करने पर यह पाया गया है कि गांवों में सुबह भोजन बनाने के लिए ईंधन जलाने से भी असर हो सकता है। कार्बन तथा धूल के ये कण ४४५० मीटर तक, तथा ग्लेशियर के ऊपर भी पहुंच जाते हैं। ब्लैक कार्बन की कालिख से ग्लेशियर शीघ्र पिघलने लगते हैं। जैसे भारी हिमपात के पश्चात अपने आस-पास वैसे ही जैसे राख बुरकने से बर्फ शीघ्र पिघल जाती है। बर्फ पर राख या धूल डालने से यह १० गुणा तेज़ी से पिघल जाती है। बड़े पैमाने पर ऐडवेंचर एण्ड टूरिज़्म हेतु निर्माण तथा भारी परिवहन एवं आवाजाही के कारण, हिमनद अपेक्षा से कहीं अधिक शीघ्रता से गलना-पिघना शुरू हो जाएंगे। लाहुल की संकरी घाटियों में किसी भी प्रकार के जलाशयों का निर्माण सूक्ष्म जलवायु को विपरीत रूप में प्रभावित करेगा। इससे समीपवर्ती ग्लेशियर एवं बर्फीले क्षेत्र गुप्त ऊष्मा में बढ़ोतरी के कारण अधिक गर्म हो जाने पर तेज़ गति से पिघलना शुरू कर जाएंगे। डबल पीक प्रभाव से घाटी की गर्म हवाएं दिन के समय साथ की चोटियों तक ऊपर उठती हैं, और ग्रीष्म काल में वर्षा होने का कारण बनती हैं। यह प्रक्रिया बदले में गर्म तथा आर्द्र हवा लेती है, और उच्च स्तरों पर जमे हिमनदों को भी गर्म कर डालती हैं। इस प्रकार रिज़रवायर और झील इस क्षेत्र के पहले से ही विलुप्त तथा अपूर्णीय स्रोतों की तबाही का कारण बनेंगे।

ज़िले का लगभग पूर्णतः सटीक डाटा उपलब्ध है, जिनका सेटेलाइट से ली गई तस्वीरों के साथ ग्लेशियरों के माप से तुलना करने पर बहुत साम्यता है। साथ ही ग्लेशियल झीलों के बाढ़ के रूप में टूटने की संभावनाओं का भी मूल्यांकन किया गया है। सुविधा के लिए हमने ग्लेशियरों को दो प्रशासनिक यूनिट के तौर पर अलग-अलग वर्गीकृत किया है, क्यों कि इन हिमनदों की प्रकृति, परिवेशगत विशेषताओं को समझना एवं मूल्यांकन करना, इनकी प्रवृत्ति तथा प्रभाव को जानना आवश्यक है। स्पीति नदी के वाटरशेड में 417 ग्लेशियर हैं, और 396.02 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। इनमें अधिकतर माऊंटेन ताक (Mountain Niche) (लटकते और आकार में छोटे) किस्म के हैं। लाहुल में चन्द्र-भागा

Aspect	No. of Glaciers	Area in 2000	Area in 2016	Area in 2019	% change in Area 2000-2016	% change in Area 2016-2019	% change in Area 2000-2019
Lahaul							
N	33	15.77	15.63	15.67	0.92	-0.25	0.64
NE	172	402.9	397.77	397.76	1.27	0	1.28
E	98	207.86	207.17	207.86	0.33	-0.33	0
SE	90	70.75	69.23	69.54	2.15	-0.45	1.71
S	95	97.34	94.88	95.33	2.53	-0.48	2.06
SW	68	69.46	67.5	67.67	2.82	-0.26	2.57
W	94	186.84	185.4	185.34	0.77	0.03	0.8
NW	164	256.79	254.96	254.95	0.71	0	0.72
Spiti							
N	31	12.88 ± 0.02	12.69 ± 0.02	0.20 ± 0.01	1.53	0.46	1.98
NE	139	148.06 ± 0.05	147.04 ± 0.05	1.02 ± 0.05	0.69	-0.32	0.37
E	64	76.61 ± 0.05	78.06 ± 0.06	-1.45 ± 0.07	-1.89	2.55	0.71
SE	32	24.81 ± 0.03	24.41 ± 0.03	0.4 ± 0.02	1.60	-0.94	0.68
S	10	19.42 ± 0.40	19.36 ± 0.09	0.06 ± - 0.00	0.31	-1.39	-1.08
SW	4	11.01 ± 0.05	10.94 ± 0.04	0.07 ± 0.00	0.65	0.08	0.73
W	0	11.46 ± 0.04	11.35 ± 0.04	0.10 ± 0.01	0.90	-0.62	0.29
NW	116	94.41 ± 0.04	93.23 ± 0.04	1.18 ± 0.06	1.25	0.09	1.34

Aspect-Class Statistics of glacier changes during 2000-2019 in Lahaul & Spiti

Lahaul							
Slope Class	No. Of Glaciers	Area (km^2) (2000)	Area in square kilometre (2016)	Area (km^2) (2019)	% change in Area 2000-2016	% change in Area 2016-2019	% change in Area 2000-2019
10° to 15°	84	466.9802 ± 0.2779	463.0518 ± 0.2756	459.98 ± 0.2750	0.84	-0.22	0.62
15° to 20°	279	623.0767 ± 0.1116	616.5511 ± 0.1104	623.36 ± 0.1100	1.04	-0.2	0.85
20° to 25°	233	160.8482 ± 0.0345	157.7579 ± 0.0338	156.56 ± 0.0334	1.92	0.82	2.73
25° to 30	131	40.5450 ± 0.0154	39.3734 ± 0.0150	39.28 ± 0.0150	2.88	-0.2	2.69
30 to 35°	64	14.1308 ± 0.0110	13.7068 ± 0.0107	13.74 ± 0.0106	3	0.88	3.82
35° to 40°	15	1.1444 ± 0.0038	1.0689 ± 0.0035	0.97 ± 0.0034	6.59	0.94	7.02
40° to 45°	6	0.3442 ± 0.0028	0.3316 ± 0.0027	0.29 ± 0.0025	3.65	-0.42	2.53
45° to 50°	1	0.0568 ± 0.0014	0.0568 ± 0.0014	0.01 ± 0.0014	0	0	0.00
Spiti							
Slope Class	No. Of Glaciers	Area (km^2) (2000)	Area in square kilometre (2016)	Area (km^2) (2019)	% change in Area 2000-2016	% change in Area 2016-2019	% change in Area 2000-2019
10° to 15°	40	43.67 ± 0.05	43.32 ± 0.05	43.49 ± 0.05	0.81	-0.39	0.42
15° to 20°	181	244.25 ± 0.06	244.29 ± 0.06	243.24 ± 0.06	-0.02	0.43	0.41
20° to 25°	117	68.22 ± 0.02	67.46 ± 0.02	67.36 ± 0.02	1.12	0.15	1.27
25° to 30	51	30.36 ± 0.02	29.98 ± 0.02	29.89 ± 0.02	1.28	0.30	1.57
30 to 35°	16	8.74 ± 0.02	8.67 ± -0.02	8.65 ± 0.02	0.81	0.21	1.01
35° to 40°	9	2.66 ± 0.01	2.63 ± 0.01	2.62 ± 0.01	1.15	0.38	1.53
40° to 45°	2	0.67 ± 0.01	0.64 ± 0.01	0.64 ± 0.01	3.64	-0.11	3.53
45° to 50°	1	0.09 ± 0.004	0.09 ± 0.004	0.09 ± 0.004	0.00	0.00	0.00

Slope-Class Statistics of glacier changes during 2000-2019 in Lahaul & Spiti

जलग्रहण क्षेत्र में 813 ग्लेशियर हैं। लाहुल में 17 बड़े ग्लेशियर हैं, जिनके आकार 10 वर्ग कि. मी. से अधिक, तथा कुल 391. 45 वर्ग कि. मी. है। जबकि कुल ग्लेशियर एरिया 1194 वर्ग कि. मी. है। ये कुल 656 की संख्या में से हैं। ये ग्लेशियर आकार में 0.5 वर्ग कि. मी. से भी छोटे हैं। (लाहुल में 432 एवं स्पीति में 224 हैं) इन छोटे हिमनदों की लगातार निगरानी आवश्यक है, क्यों कि ये कभी भी तबाही के रूप में टूट सकते हैं। स्पीति में छोटे हिमनदों की एरिया में कमी ज़्यादा दिखती है। दो दशकों 2000–2019 के दौरान 2.62 प्रतिशत का नुकसान हुआ है, जबकि लाहुल में इन छोटे ग्लेशियरों का 2000–2016 के मध्य 2.25 प्रतिशत क्षेत्र का नुकसान है। लेकिन लगभग 6.06 प्रतिशत वृद्धि भी हुई है। यह 2016–2019 के आंकड़े हैं जो केवल 3 वर्षों के भीतर इन ग्लेशियरों के विस्तार को दर्शाता है। यह क्षेत्र विस्तार केवल प्रसारण से हुआ है या वास्तविक वृद्धि के परिणाम स्वरूप हुआ है, इस गूढ़ रहस्य को हम अभी तक समझ नहीं पाएं हैं। बड़े ग्लेशियर धीरे–धीरे गलते हैं। लाहुल इकाई के मामले में, यह घटत 0.03 वर्ग कि मी प्रति वर्ष है जबकि स्पीति में 0.03 वर्ग किलोमीटर प्रति वर्ष बढ़त रिकॉर्ड किया गया है। चित्रों के स्केल तथा कालक्रम अनुसार गुणवत्ता मुद्दे के मद्देनज़र संभव है, हमारे विश्लेषण में बहुत मामूली त्रुटियां हों।

हमारे लिए अनिवार्य एवं प्रभावी मूल्यांकन हेतु इन ग्लेशियरों का अभिमुखीकरण (Orientation) के लिए विश्लेषण किया गया। यह देखा गया कि लाहुल में दक्षिण तथा दक्षिण–पश्चिम पहलुओं वाले ग्लेशियरों को एरिया से संबंधित नुकसान अधिकतम प्रतिशतता में हुआ है जो 2.06 प्रतिशत से 2.57 प्रतिशत (2000–2019) तथा उसी निरंतरता और अधिक मात्रा में 2000–2016 के दौरान भी हुआ है। हालांकि स्पीति में ग्लेशियर अभिमुखीकरण उत्तर तथा उत्तर–पश्चिम की ओर वाले क्षेत्रों में गिरावट की अधिकतम प्रतिशतता रही जो (1.98 प्रतिशत तथा 1.34 प्रतिशत की कमी (2000–2019) दर्शाता है। जबकि दक्षिणमुखी ग्लेशियरों में एरिया की दृष्टि से 2000–2019 के दौरान 1.08 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, यानी ग्लेशियर में कुछ

Lahaul						
Debris cover Class	**Area (km^2) (2000)**	**Area in square kilometre (2016)**	**Area (km^2) (2019)**	**% change in Area 2000-2016**	**% change in Area 2016-2019**	**% change in Area 2000-2019**
0	431.36 ± 0.03	421.07 ± 0.03	428.9020 ± 0.03	2.39	-0.11	-0.03
1% - 25%	357.99 ± 0.19	357.49 ± 0.19	357.38 ± 0.19	0.14	0.03	0.01
26% - 50%	394.98 ± 0.21	390.64 ± 0.21	390.7898 ± 0.21	1.1	-0.03	-0.01
51% - 75%	61.44 ± 0.11	61.38 ± 0.11	61.7348 ± 0.11	0.1	-0.57	-0.93
76% - 100%	61.34 ± 0.07	61.30 ± 0.07	60.2286 ± 0.07	0.06	1.75	2.85

Debris-Class Statistics of glacier changes during 2000-2019 in Lahaul & Spiti

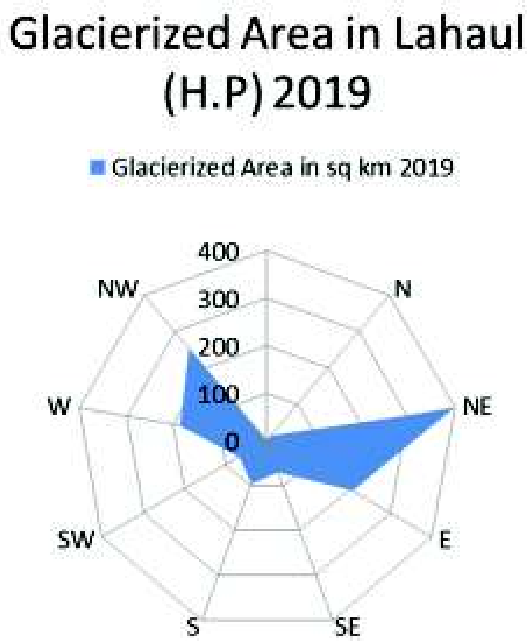

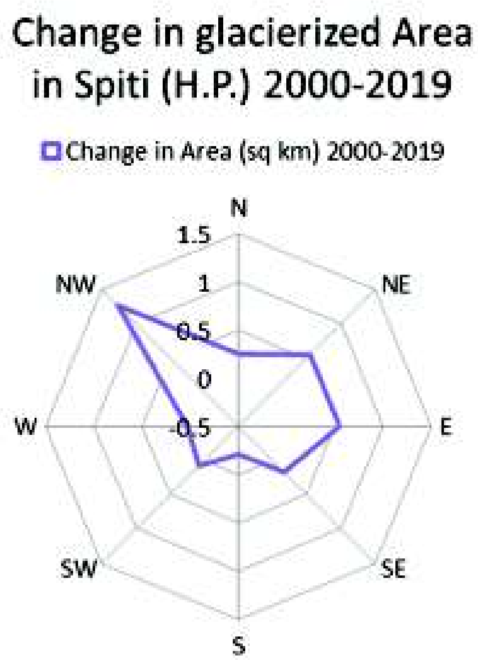

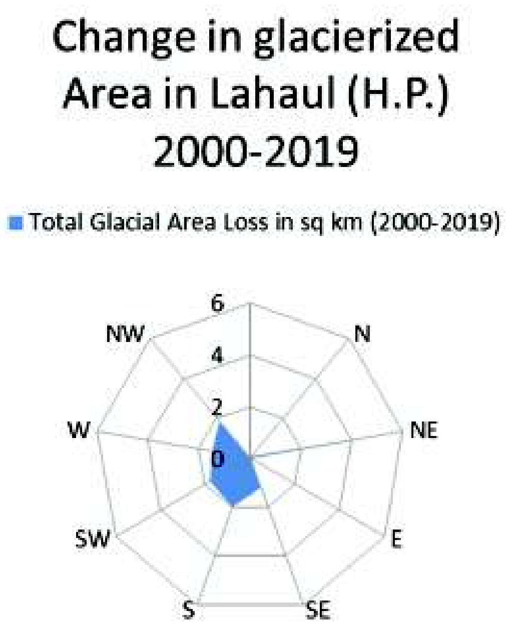

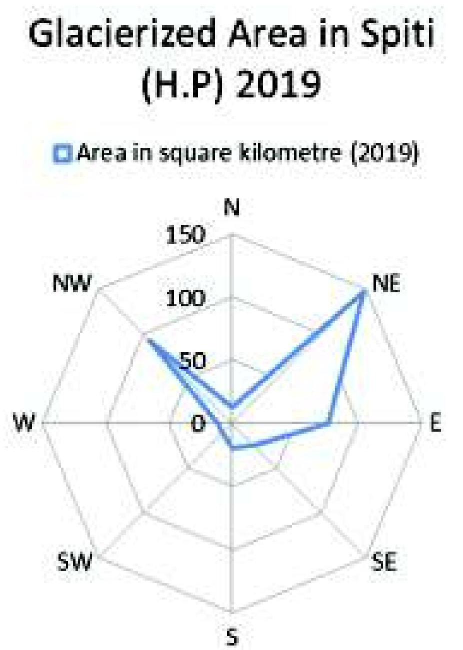

Plate 1: Glacier opposite Ralling has had almost no changes in last 30 years (1993-2021)

Plate 2: Glacier above Gushal has undergone visible changes between 1911-2020

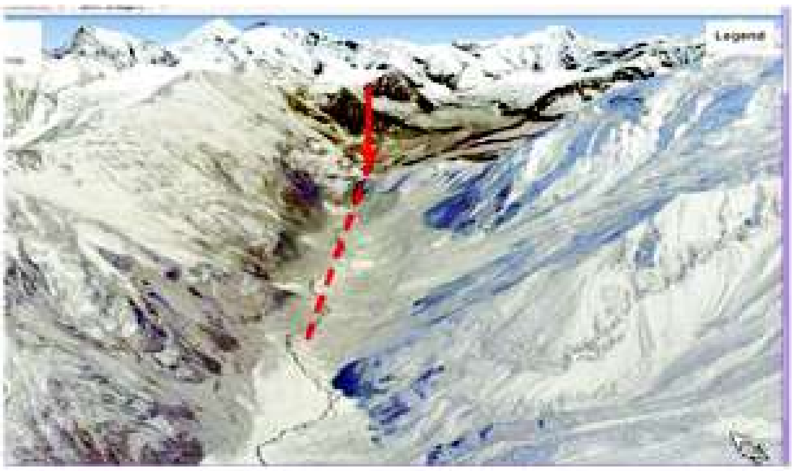

Plate 3: Sonapani (Kulti) glacier opposite Rohtang Pass, has retreated by almost three kilometres between 1906 & 2020. This is the largest retreat recorded in the entire region.

Plate 4: Menthosa in Miyar Valley (Urgus-Tingrit) shows a general trend of retreat in most of the smaller valley glaciers across the Himalaya.

Acknowledgement: The Space Applications Centre/ISRO and Department of Science & Technology, Govt of India, and friends from Tingrit and Urgus villages in Miyar.

भाग और जुड़े हैं। क्या, अब हम इस स्थिति में हैं कि साईबेरियन जेट (ध्रुवीय) द्वारा अत्यधिक लाभ पहुंचाने की भूमिका का मूल्यांकन कर सकें? कृपया स्मरण करें, पिछले कुछ वर्षों में शीत का प्रभाव कुछ अधिक ही पड़ा है जिसके कारण **गर्मियां देरी से शुरू हुई हैं। फिर भी, लाहुल में दो दशकों (2000–2019) के दौरान पूर्व दिशा की ओर संचित ग्लेशियर में कोई विशेष संचयी परिवर्तन नहीं दिखता है।**

यदि औसत ग्लेशियर ढलान के आधार पर परीक्षण किया जाए, तो लाहुल में उच्च कोण वाले ढलानदार हिमनदों के एरिया में बहुत कमी हुई है और इसमें लगातार और कमी हो रही है। इससे हिमनदों के ढेर में बदलाव के कारण जमी हुई बर्फ (थ्तव्रमद प्बम) के शीघ्र ही समाप्त हो जाने की बहुत संभावना है। अधिकतर ग्लेशियर 15 से 20 डिग्री तथा 20 से 25 डिग्री वाले ढलान श्रेणी में वर्गीकृत किए गए हैं। जबकि लाहुल में 15 डिग्री से 20 डिग्री ढलान वाले ग्लेशियर 0.85 प्रतिशत की कमी दर्शाते हैं, वहीं 20 डिग्री से 25 डिग्री और 25 डिग्री से 30 डिग्री ढलान वाली श्रेणी में यह दर अत्यधिक बढ़कर क्रमशः 2.73 प्रतिशत और 2.69 प्रतिशत (2000–2019) हो जाती है।

लेकिन स्पीति में अधिकांश ग्लेशियरों पर अल्प अथवा बिल्कुल मलबा नहीं दिखता है। बड़ी घाटियों के हिमनदों में मलबे की मोटी परत से ढके होने का महत्व देखा जा सकता है। लाहुल में साफ ग्लेशियर 428.9 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में स्थित है। (2019)। मलबे की मोटी परत से ढके संचित क्षेत्र अनुमानतः 870 वर्ग कि. मी. भाग में फैले हुए हैं। हिमनदों के सिकुड़ने अथवा पीछे को खिसकने में मलबे की बहुत पेचीदा भूमिका है। कुछ मामलों में मलबे की मोटी परत हिमनदों को सिकुड़ने से बचाती है, जबकि अन्यों में महीन तलछटी परत होने के कारण तलछट में विकिरण को फंसाकर ग्लेशियर के ऊपर की ओर पतले होते जाने की प्रक्रिया को बढ़ा देता है जिससे वे अपनी जगह से खिसक जाते हैं। मलबा वर्ग के 76 से 100 प्रतिशत हिमनदों के खत्म होने की अधिकतम प्रतिशतता (2.85 प्रतिशत) ऐसे ही क्षेत्रों में है। जबकि मलबे से ढके वर्ग वाले ग्लेशियर 51–75 प्रतिशत तक हैं जिनमें वृद्धि की अधिकतम प्रतिशतता 0.95 प्रतिशत है। यह इस तथ्य को पुष्ट करता है कि मलबों की हिमनदों के सिकुड़ने तथा उनको बचाए रखने की दोहरी भूमिका है।

आगे की राह :

गलेशियर विभिन्न प्रकार के मापदण्डों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं, जिन्हें मैंने पहले सूचीबद्ध करने का प्रयास किया है। आइए हम अपने पीछे बड़े कार्बन पदचिन्ह न छोड़ने का भी संकल्प लें क्योंकि हम इस परिमित पृथ्वी पर आगन्तुक मात्र हैं। पृथ्वी और वायुमण्डलीय पदार्थों को लेकर बड़े पैमाने पर की जाने वाली विकासात्मक प्रक्रियाएं बर्फ-पिण्डों और हमारे पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालेंगी, यह सुनिश्चित कर लें कि मोचन की कोई संभावना न रहे। अतः किसी भी विकासात्मक गतिविधि के लिए ज़मीनी स्तर पर बड़े पैमाने पर लोकतांत्रिक परामर्श होना चाहिए, चाहे वे हमारे गांवों के सदस्य हों, पंचायतों के, खण्ड या उप-मण्डलीय घटकों के सदस्य हों। किसी भी हिमालयी परियोजना के कार्यान्वयन के लिए व्यापक परामर्श और सहमति को आईव्ज़ और मेस्सर्ली ने बहुत पहले 1989 में अपने क्लासिक ग्रन्थ में ध्वजांकित कर दिया था। ये पहाड़ ऊंचे-ऊंचे कंक्रीट वाले विकास को अधिक समय तक समायोजित नहीं कर सकते। पहाड़ों की ये ढलानें जिन पर हम बसे हैं, न केवल खड़ी हैं अपितु पेरीग्लेशियल, पेराग्लेशियल और ग्लेशियल प्रक्रियाओं द्वारा उत्पादित अत्यधिक असंघटित रेगोलिथ से निर्मित हैं जो बहुत ही कम बन्धनशील हैं। ऐसी स्थिति में अर्ध-शुष्क जलवायु बढ़ती हुई बारिशों और हिमपात की स्थिति में विनाशकारी ढलानीय हलचलों को प्रेरित करती है। यहां तक कि सहायक नदी-नाले भी बर्फ और हिमनद से पिघलने वाले पानी के हल्के उतार-चढ़ाव मात्र से ही इधर से उधर अपना बहाव बदल देते हैं। विवर्तनिक रूप से संवेदनशील (Tectonically sensitive) स्थिति के कारण इस तरह की प्रक्रियाओं के दुष्प्रभावों में वृद्धि ही होती है। मयाड़ घाटी में छालिंग, करपट और चांगुट के उदाहरण मात्र कुछेक अनुस्मारक हैं। पठारीय विशेषताएं जीवाश्म घटनाओं के जीवन्त प्रमाण हैं। इसलिए ये क्षेत्र किसी भी गतिविधि या उद्देश्य के लिए स्थाई रूप से रहने के लिए वर्जित क्षेत्र हैं। विवर्तनिक रूप से नाज़ुक भू-भागों में जलाशयों के निर्माण वाली विकास परियोजनाएं किसी भी भूकंप की घटना की स्थिति में न केवल उत्प्रेरक का काम करेंगी अपितु उस के प्रभाव को कई गुणा बढ़ाने वाली साबित होंगी, यह तय है। 1991 के उत्तर काशी भूकम्प को लेकर मनेरी जलाशय के साथ लगते जमक गांव में की गई हमारी जांच ने इस धारणा को फिर से और मज़बूत किया है कि बड़े जलाशयों और अगले ही दरवाज़े पर होने वाले कुल विनाश के बीच मज़बूत परस्पर अन्तर्सम्बंध होते हैं। स्थानीय ज्ञान, स्थानीय डिज़ाइन, स्थानीय सामग्री और स्थानीय अनुमोदन ही आज के समय की सब से बड़ी मांग है। यही इस सुन्दर-सुखद भूदृश्य वाले क्षेत्र के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र को बचा सकता है।

सम्पर्क : प्रोफेसर ऑफ जियोमोर्फोलोजी
जे०एन०यू०, दिल्ली।
e-mail : milap@jnu.ac.in

(अंग्रेज़ी से अनुवाद : शेर सिंह)

पर्यटन का लाहुल घाटी पर पड़ने वाले पर्यावरणीय प्रभावों का आकलन एवं समाधान

बी० एस० राणा
(आई०एफ०एस०)

एक छोटी सी शांतिप्रिय घाटी जहां की जनसंख्या लगभग 20—22 हज़ार के आस-पास और उसमें भी अधिकतर देश के दूसरे राज्यों में रहने वाले। कई दशकों की इंतज़ार के बाद वर्ष 2020 में बहुचर्चित रोहतांग सुरंग का गाड़ियों की यातायात के लिए खुल जाना और एक दम सैकड़ों से हज़ारों की संख्या में गाड़ियों की आवाजाही में बढ़ोतरी और लाखों लोगों की चहलकदमी इस छोटी सी घाटी में बढ़ जाना। जिस घाटी में लगभग सभी निवासी एक दूसरे को किसी न किसी तरह जानते हैं जबकि बड़े शहरों में बहुमंज़िला फ्लैट में रहने वाले कोई एक दूसरे को जानते ही नहीं हैं। उस से भी बढ़कर शहरों के चार पाँच बहुमंज़िला फ्लैटों में रहने वालों के बराबर पूरी घाटी की जनसंख्या। साल में लगभग 6 महीने बर्फ से लकदक पहाड़ियों के बीच की घाटी की सुन्दरता अपने आप में अनूठी है। गर्मियों में हर तरफ फूलों की घाटी की तरह चारों ओर हरियाली और बेशकीमती जड़ी बूटियों की सुगंध से महकती हुई घाटी किसी जन्नत से कम नहीं है। प्रदूषण मुक्त घाटी जो पर्यटन की दृष्टि से विश्व के दस सुंदर जगहों में अपना स्थान बनाए हुए हैं। कल-कल बहते हुए झरने और नाले जहां का पानी शहरों में मिलने वाली बोतल बंद पानी से भी स्वच्छ और लाभदायक है जिसे पीने से मरीज़ भी खिल उठता है। प्राकृतिक स्वास्थ्यवर्धक जड़ी बूटियों से भरपूर पहाड़ियाँ, उन पहाड़ों पर विश्व के अनूठे दुर्लभ चहलकदमी करते वन्य जीव इस घाटी को चार चाँद लगाते हैं। रात्रि के समय अगर आसमान को देखते हैं तो ऐसा लगता है कि मानो सारे आसमान के तारे पूरी घाटी में बिखेर दिए गए हों। ज़हरीले जीव जन्तुओं से मुक्त घाटी सभी प्रकार की परेशानियों से दूर जहाँ मच्छर भी नहीं होते हैं, ऐसी घाटी की तुलना स्वर्ग से करें तो भी कम है। जनसंख्या कम होने के कारण यहाँ प्रदूषण भी शून्य के बराबर है। ऐसी सुंदर घाटी में छोटी सी हलचल और बाहरी हस्तक्षेप एकदम लोगों का ध्यान आकर्षित करती है ।

उदाहरणतः छुरपग में किसी ठेकेदार द्वारा स्थापित गर्म बजरी मिक्सिंग प्लांट जो पिछले दो साल से लगाई गई है जो अब आसपास के तीन चार पंचायतों के लोगों को ज़हरीले धुएँ के गुब्बार से कहर बन कर अपना जलवा दिखा रहा है। यही घाटी लेह लद्दाख जाने वाले पर्यटकों का मुख्य द्वार है। इन सबके बावजूद इस छोटी सी घाटी में लगभग पचास के आसपास जल विद्युत परियोजनाएँ प्रस्तावित हैं। अगर यह सब परियोजनाएँ शुरू हो जाती हैं तो इस छोटी सी घाटी की अस्थायी आवादी (Floating Population) एकदम ही सैकड़ों से लाखों में पहुँच जाएगी। ऐसे हालात में ज़रा सोचिए इस घाटी का क्या हाल होगा जैसा कुल्लू ज़िले में सैंज स्थित पार्वती परियोजना द्वितीय और तृतीय चरण में हुआ। मात्र कुछ हज़ारों की संख्या वाली इस छोटी सी घाटी में एकदम अस्थायी आवादी बढ़ गई और वहन क्षमता (Carrying Capacity) से अधिक लोग इस परियोजना के विभिन्न ठेकेदारों द्वारा लाए गए। इनके साथ साथ टेक्सी यूनियन, ट्रक यूनियन, टिपर यूनियन, होटल ढाबे वाले, शराब के ठेके आदि चलाने वालों की बढ़ोतरी,जिस से पूरे इलाके की सामाजिक व्यवस्था चरमरा गई। वर्ष 2001—02 से शुरू हुए इन परियोजनाओं में अब तक स्थिति सुधर नहीं सकी है। इस दौरान घाटी में पहली बार सैंज स्थित भारतीय स्टेट बैंक में इन बाहरी लोगों द्वारा डाका डाला गया। पोस्ट आफिस के खज़ाने में पैसों की चोरी हुई। बहुत सारी हत्याएं, बलात्कार और अपहरण की घटनाएँ इलाके में घटी। आसपास के जंगलों से अवैध कटान, शिकार के मामले बढ़े। प्राकृतिक आपदाएँ जैसे बादल फटना, बाढ़, पीने के पानी की समस्या तथा सभी प्रकार के प्रदूषण से यह छोटी सी घाटी अभी भी उबर नहीं पा रही है। इन सबके ऊपर विस्थापन का दंश जो इन गरीब लोगों पर कहर बनकर आया, जिसे वह कभी भूल नहीं सकते हैं।

पर्यटन की दृष्टि से बहुत ही सुंदर

रमणीक घाटी लगभग पिछले बीस सालों से सामान्य नहीं हो पा रही है। जहां 25–30 साल पहले इन वादियों में वन्य प्राणियों को विचरण करते देखा जाता था, आज कोसों दूर तक इन प्राणियों के नामोनिशान नहीं हैं। यह उदाहरण हम यहाँ इस लिए दे रहे हैं क्योंकि हमने इस तरह की घटनाएँ अपनी आँखों से देखी हैं। इस लिए अब हम आँखें मूँद कर नहीं रह सकते हैं। इससे भी बुरा हाल ज़िला किन्नौर का है जहां ऐतिहासिक धरोहरें अपनी बर्बादी की राह देख रही हैं।

पर्यटन की दृष्टि से देखें तो लाहुल घाटी आज पूरे विश्व में सबसे उत्तम दस पर्यटक स्थलों में से एक है। हर कोई देशी व विदेशी पर्यटक इन जगहों में घूमना चाहता है। ऐसे माहौल में स्थानीय लोग भी इस मौके का फायदा उठाना चाहते हैं। रोहतांग सुरंग के बनने से पहले यह स्थिति कुछ और थी, लेकिन अब इस ऐतिहासिक सुरंग के उद्घाटन के बाद यह अति आवश्यक है कि इस पर ठोस नीति बनाई जाए। घाटी में टूरिज़्म और इको-टूरिज़्म की अपार सम्भावनाएँ हैं मगर ठोस नीति नहीं होने के कारण कई किस्म की समस्याएँ उत्पन्न हो चुकी हैं। जन सुविधाओं के नाम पर कुछ भी उपलब्ध नहीं हैं। पर्यटक इस स्थिति का नाजायज़ फायदा उठाकर हर कहीं कूड़ा फेंक कर चले जाते हैं। बेतरतीब वाहनों की आवाजाही और उनकी अधिकता पहले से ही झेल रही भूमंडलीय तापन (Global Warming) की समस्या को और बढ़ावा देने का काम करेगी जिससे पूरे उत्तर भारत की जल संसाधन की समस्या और बढ़ेगी। सदियों पुराने हिमनद जो कभी पूरे इलाके की शान होती थी आज अपना वर्चस्व खो रहे हैं। चंद्रा घाटी में स्थित शिगरी ग्लेशियर आज कई किलोमीटर लम्बाई और कई मीटर ऊँचाई तक अपना वजूद खो चुकी है। अगर हम पुराने रिकॉर्ड खंगालें तो मालूम पड़ता है कि यह ग्लेशियर वर्ष 1860 में चंद्रा नदी को छूती थी जो आज सिकुड़ कर कई किलोमीटर पीछे जा चुकी है। यही हाल शिथी नाला ग्लेशियर, मूलिंग नाला ग्लेशियर और घुषाल गाँव के ऊपर छमलोग और ककटी ग्लेशियर का है जो खत्म होने के कगार पर हैं। इसी समस्या के कारण इन ग्लेशियरों पर बहुत बड़ी दरारें भी आ चुकी हैं जिस पर आमतौर पर इंसान ध्यान नहीं देता है।

इसी तरह अगर 100 किलोमीटर के दायरे में 50 से अधिक जल विद्युत परियोजनाएँ इस शीतमरुस्थल में लग जाएँ तो पूरी घाटी ही बर्बाद हो जाएगी। सदानीरा चिनाब नदी अपना नदी पारिस्थितिकी तंत्र (Riverine Ecosystem) खो देगी और स्थानीय लोग घाटी से पलायन करने को मजबूर हो जाएंगे। जगह-जगह पर बाँध बनाने के बाद वाष्पीकरण के असर से शीतमरुस्थल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और प्राकृतिक आपदाओं से जूझना पड़ेगा। इलाके का सदाबहार वृक्ष जूनिपर जो कई सदियों बाद घाटी में प्राकृतिक रूप में बड़ी मुश्किल से पनप रहा है, वह सदा के लिए यहाँ से लुप्त हो जाएगा।

पर्यटन उद्योग जो हर अमीर गरीब सभी के लिए वरदान साबित होता है जबकि

यह जल विद्युत परियोजनाएँ सिर्फ बड़े उद्योगपतियों के ख़ज़ाने भरने के लिए हैं। ऐसी परिस्थिति में जहां इको टूरिज़्म की घाटी में बहुत अच्छी सम्भावनाएँ हैं जो स्थानीय युवाओं के लिए स्वरोज़गार का बहुत बढ़िया स्रोत बन सकता है जो शुरू होने से पहले ही ध्वस्त हो जाएगा।

सही मायने में अगर हम पर्यावरणीय प्रभावों का आकलन करें तो यह कहना गलत नहीं होगा कि घाटी में पर्यटन का कारोबार अभी शुरू ही नहीं हुआ है। मात्र रोहतांग सुरंग के खुलने और उसे देखने के लिए लोगों का सिस्सू तक आना और आकर उसी दिन वापस चले जाना टूरिज़्म नहीं है। असली टूरिज़्म तो वह है जब पर्यटक घाटी में आए और कम से कम एक सप्ताह घाटी के अलग-अलग ठिकानों पर घूमने जाएँ और हर किस्म के हितधारकों से वहाँ के अच्छे बुरे विचारों का आदान-प्रदान कर सकें। सुबह आकर शाम को वापस चले जाना और वह भी ढेरों कूड़े को नदी नालों और सड़क किनारे फैंक कर चले जाना टूरिज़्म नहीं है। अभी तक तो यही चला है। लेह-लद्दाख जाने वाले पर्यटक तो फिलहाल लाहुल घाटी को एक गलियारे (Corridor) के तौर पर प्रयोग करते आ रहे हैं। अब तो यह भी मुमकिन है अगर सही सुविधाएँ प्रदान न की जाएं तो पर्यटक रात्रि ठहराव लाहुल में न करके उसी दिन आगे चले जाएँ क्योंकि सुरंग खुलने के बाद मनाली से एक घंटे में ज़िला मुख्यालय केलंग पहुँच जाते हैं। इसलिए मेरे हिसाब से यह कहना अभी जल्दबाज़ी होगी कि पर्यटन का घाटी के पर्यावरण पर किस तरह का प्रभाव पड़ेगा।

जहां तक पर्यटन का घाटी पर पड़ने वाली पर्यावरणीय प्रभावों की बात है, यह तो मालूम ही है कि अगर ठोस पर्यटन नीति नहीं बनाएँगे तो आने वाले समय में इसका प्रभाव बुरा ही होगा। सिर्फ गाड़ियों की आवाजाही ही घाटी के स्वच्छ वातावरण को बर्बाद करने के लिए काफी है, जिसका सीधा असर घाटी के छोटे छोटे बिखरे जंगलों, सिकुड़ते हिमनदों, बेमौसमी नक़दी फसलों, दुर्लभ जड़ी-बूटियों और जीव जन्तुओं पर पड़ेगा। क्योंकि अव्यवस्थित पर्यटन किसी भी इलाक़े की पारिवेशिक संतुलन को बिगाड़ने के लिए काफी है।

यह समस्या तब शुरू होगी जब घाटी में वहन क्षमता से ज़्यादा पर्यटक घाटी में आएंगे। फिलहाल ऐसा नहीं है। इस लिए सबसे पहले पर्यटन नीति का होना आवश्यक है। सभी किस्म की जन सुविधाएँ उपलब्ध कराना होगा। गाँव में होम स्टे की सुविधाएँ तैयार करनी पड़ेंगी। जगह-जगह पर द्विभाषीय साइनेज/साइनबोर्ड लगाने पड़ेंगे। केलंग, गोंधला और उदयपुर स्थित अस्पताल को उत्तम स्वास्थ्य सुविधा के लिए स्पेशलिस्ट डॉक्टरों से सम्पन्न कराना पड़ेगा।

इको टूरिज़्म से सम्बन्धित स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षण देना चाहिए। घाटी के सभी अनछुए पर्यटन स्थलों में कैम्पिंग की सुविधाएँ रखनी चाहिए। साहसिक खेलों की अपार सम्भावनाएँ हैं, इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हिमाचल सरकार और हिमाचल टूरिज़्म को ऐसे स्थानीय युवाओं और संस्थाओं को प्रोत्साहन देना चाहिए। इको टूरिज़्म सोसायटी बना कर ऐसे युवाओं को आगे आना चाहिए ताकि वे अपने आप आत्मनिर्भर रहने लगें। जितना भी पौधरोपण योग्य खाली जगह है उसे Community Foresats के रूप में आसपास के गाँव वालों के द्वारा वन विभाग के सहयोग से पौधारोपण करवा कर विकसित करना चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जाना चाहिए,जिस तरह पिछले कई दशकों से स्थानीय महिलाओं द्वारा घाटी में वन और वन्य जीवों की सुरक्षा के लिये अच्छे कदम उठाए गए हैं उसे और अधिक महत्व देकर उन्हें और मज़बूत किया जाए। समय रहते इन सब पहलुओं पर ध्यान केंद्रित नहीं करेंगे तो हम अपनी आने वाली पीढ़ी को क्या मुंह दिखाएंगे।

चीफ कंज़रवेटर फोरेस्ट (सेवानिवृत्त)
e-mail : bsrana61@gmail.com

पर्यटन का लाहुल घाटी पर पड़ने वाले पर्यावरणीय प्रभाव एवं समाधान

शेर सिंह वैद

हिमालय के सुदूर आंचल में कुल्लू और लाहुल-स्पीति ज़िलों को जोड़ती ''अटल टनल रोहतांग'' का खाका पहली बार तब बनना प्रारंभ हुआ था, जब स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी अपने बाल-सखा लाहुल घाटी के ठोलंग गांव के स्वर्गीय श्री टशि दवा उर्फ अर्जुन गोपाल जी के अनुरोध पर केलंग पधारे थे। यहां वाजपेयी जी ने एक बहुत बड़ी जनसभा को सम्बोधित करते हुए रोहतांग टनल के निर्माण की सार्वजनिक मंच से घोषणा की थी। आगे चलकर वर्ष 2010 में रक्षा मंत्रालय की देखरेख में टनल निर्माण का कार्य विधिवत प्रारंभ हुआ। कुल 3200 करोड़ की लागत से निर्मित टनल का विगत वर्ष दिनांक 03/10/2020 को देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कर-कमलों द्वारा एक भव्य समारोह में राष्ट्र को समर्पित किया गया। पहले टनल का नाम सिर्फ 'अटल टनल' था। बाद में लाहुल के कुछ सेवानिवृत्त बुद्धिजीवियों ने पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री प्रेमसिंह परशीरा जी की अगुवाई में रक्षा मंत्रालय से अनुरोध कर टनल का नामकरण 'अटल टनल रोहतांग' करवाया।

इधर टनल के निर्माण के दौरान ही प्रिंट मीडिया और सोशल मीडिया पर टनल को बहुत प्रचार-प्रसार मिलने लगा। हर किसी को टनल देखने की उत्सुकता जागने लगी। उद्घाटन समारोह को देश-विदेश के मीडिया ने खूब बढ़-चढ़कर दिखाया। फिर क्या था। कुल्लू की खूबसूरत वादियों में टनल का लोकार्पण होना था कि सैलानियों की जैसे सुनामी आ गई। क्योंकि, ऐसा अंदेशा किसी को नहीं था। अतः बुनियादी सुविधाओं के अभाव में सैलानियों का इस कदर सैलाब उमड़ पड़ना, स्थानीय प्रशासन के लिए संभालना मुश्किल हो गया। सबसे अधिक लाहुल की संकरी सड़कों पर रेंगती गाड़ियों से पार पाना यातायात पुलिस के लिए गले की हड्डी बन गई। बेतहाशा लोग, लेकिन न इनके लिए उचित भोजन की व्यवस्था, न ठहरने का इंतज़ाम। टनल के आसपास हर तरफ गंदगी, खाली बोतलें और रेपर बिखरे पड़े मिलने लगे। वही गंदगी जो पिछले सालों तक रोहतांग दर्रा और मढ़ी में देखने को मिलती थी। उस समय का जो मंजर मैंने देखा, मैं सोच में पड़ गया कि अभी यह हाल है, जब पूरी दुनिया कोरोना महामारी से पीड़ित है। अधिसंख्य लोग घरों से बाहर निकलने से खौफ़ज़दा हैं मगर निकट भविष्य में जब भी हम कोरोना से निजात पाएंगे और देश-विदेश के पर्यटक मैदानी इलाकों की भीषण गर्मी और प्रदूषण से कुछ दिनों के लिए छुटकारा पाने के लिए टनल देखने आएंगे, तब क्या होगा? दो संकरी पहाड़ियों के मध्य बसी लाहुल घाटी क्या तब इस जन-सैलाब का बोझ अपनी छाती पर झेल पाएगी। यह तो वही हुआ कि एक कपड़े के बैग में लगातार सामान ठूंसते ही जाओ। क्या एक समय ऐसा नहीं आएगा, जब यह बैग 'अत्यधिक ठूंसन' को झेल नहीं पाएगा और अंततः फट जाएगा। हम देख रहे हैं कि वैसे भी विगत कुछ वर्षों से लाहुल का पर्यावरण लगातार बिगड़ता जा रहा है। न सर्दियों में पहले जैसी फुटों के हिसाब से बर्फबारी होती है और न ही पहले जैसी कड़ाके की ठण्ड पड़ती है। ऋतु चक्र में यह परिवर्तन पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने के लिए कदापि शुभ संकेत नहीं है। बर्फबारी कम होने की वजह से हिमनदों (ग्लेशियरों) का विस्तार निरंतर सिकुड़ता जा रहा है। पर्यावरण में लगातार हो रहे बदलाव का कुप्रभाव है कि घर की समृद्धि की निशानी बेली के पेड़ लगभग खत्म होने को हैं। गांव-गांव में निकलने वाले छोटे-छोटे जल-स्रोत सूखने लगे हैं। कम वर्षा और ठंड के कारण जंगल पहले से ही बहुत कम हैं। वनस्पति रहित नंगी पहाड़ियां हैं। ऐसे हालात में बेतहाशा पर्यटकों की आमाद यहां के पर्यावरणीय व्यवस्था पर अधिक प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाले, हमें अभी से दीर्घकालिक आवश्यकताओं को मद्देनज़र रखते हुए, योजनाओं को कार्यरूप देना होगा।

पर्यावरणीय प्रभावों के आसन्न संकट से घाटी और घाटी वासियों का कम-से-कम नुकसान हो, समाधान हेतु मेरे सुझाव निम्नवत हैं –

१. अटल टनल के रोहतांग के दक्षिणी छोर पर

एक निगरानी चौकी स्थापित की जाए। जहां हर प्रकार की गाड़ीवाले की प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण-पत्र की जांच की जाए। यहां यह भी सुनिश्चित किया जाए कि प्रत्येक वाहन में कूड़ादान या गार्बेज़ बैग साथ हो।

२. हर दिन एक निश्चित संख्या में निजी गाड़ियों को टनल पार करने की अनुमति दी जाए।

३. होटल, होम स्टे और ढाबा मालिकों को विशेष निर्देश हो कि वे अपने यहां ठहरने अथवा भोजन करने वालों से आसपास की सफाई व्यवस्था बनाए रखने के लिए विशेष कदम उठाएं।

४. सिस्सू और तांदी पुल के बीच कूड़ा-करकट प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित किया जाए। इसके अलावा पूरी घाटी में जगह-जगह गीला और सूखा करकट डालने के लिए कूड़ेदान की व्यवस्था हो। अन्यथा अभी जैसा देखने को मिलता है, हर गांव के शुरू और आखिरी छोर पर कूड़े के ढेर लगे रहते हैं।

५. मुख्य सड़क के दोनों ओर वृक्षारोपण किया जाए और संबंधित गांव को भविष्य में इनकी देखरेख का ज़िम्मा सौंपा जाए।

६. गांव के अंदर सम्पर्क सड़कों को पक्का कर रोशनी की व्यवस्था और सफाई व्यवस्था को दुरुस्त रखा जाए। गांव के अंदर खुले नल के पानी की समुचित निकासी व्यवस्था हो।

७. लाहुल की पहाड़ियां नंगी हैं। यहां वनस्पति बहुत कम उगती है। अतः स्कूलों को वृक्षारोपण से जोड़कर वनक्षेत्र को बढ़ाने पर तवज्जो दी जाए।

८. एक समय था, जब बेली के वृक्ष को घर की समृद्धि का सूचक माना जाता था। आज पर्यावरण में आए बदलाव के कारण बेली के वृक्ष लगभग खत्म हैं। अतः इसका विकल्प ढूंढकर घर और खेतों के इर्द-गिर्द हरियाली को बढ़ावा देना होगा। सफेदा का पेड़ भी एक विकल्प हो सकता है। गांव के आस-पास की बंजर और खाली पड़ी भूमि पर संबंधित गांववासी वृक्षारोपण करें।

९. भारत सरकार द्वारा आगामी वर्षों में कई बांधों का निर्माण प्रस्तावित है। बांध निर्माण के दौरान पर्यावरण पर जो प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और पर्यावरण को जो क्षति पहुंचेगी, उस पर गहन मंथन का समय आ गया है।

१०. दैनिक जीवन में गैस, हीटर और इंडक्शन का अधिक इस्तेमाल करने से ईंधन की लकड़ी की खपत को कम कर जंगलों को बचाया जाए।

११. इन तमाम कार्यों के लिए ग्राम पंचायतों को और सक्रिय करना होगा। महिला मंडलों को विशेष तवज्जो देकर महिलाओं से नशाबंदी जैसे जन-आंदोलन की फिर से उम्मीद की जा सकती है।

१२. ज़िला प्रशासन अपने स्तर पर पर्यावरण के संरक्षण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करे।

१३. और अंततः प्रत्येक वर्ष पर्यावरण संरक्षण में श्रेष्ठ भूमिका निभाने वाले गांव अथवा पंचायत को 'पर्यावरण मित्र पुरस्कार' देने संबंधी ज़िला स्तर पर कोष का गठन किया जाए।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हमें आगामी 10–20 वर्षों के लिए नहीं, बल्कि भावी पीढ़ियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए योजनाओं को अमलीजामा पहनाना होगा। त्वरित आर्थिक लाभ से हटकर भविष्यद्रष्टा बनना पड़ेगा। अन्यथा एक दिन ऐसा भी आएगा जब लोगों के पास खूब बैंक-बैलेंस तो होगा, लेकिन पर्यावरण इतना प्रदूषित हो चुका होगा कि सांस लेने में भी मुश्किल पेश आएगी। आज की तारीख में बेशक मेरे विचार अप्रासंगिक और अतिशयोक्तिपूर्ण लग रहे होंगे, मगर यह निश्चित है कि यदि हम अभी नहीं चेते तो आने वाली पीढ़ियों को इसका बहुत बड़ा खामियाज़ा भुगतना पड़ेगा।

सम्पर्क : गांव व डाक० जाहलमा, लाहुल।
e-mail :
shersingh1961.vaid@gmail.com

अटल टनल के खुलने के बाद लाहुल में पुलिसिंग : चुनौतियां एवं समाधान

मानव वर्मा
(आई.पी.एस.)

मनोहर लाल गिल (आई०ए०एस० ज़िला उपायुक्त लाहुल-स्पीति (1962–1963) ने अपनी पुस्तक 'हिमालयन वंडरलैंड' में उल्लेख किया है कि कैसे लाहुल और स्पीति ज़िला अस्तित्व में आया। पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारा एक नया ज़िला बनाने का निर्णय एक राजनीतिक निर्णय की बजाय एक रणनीतिक निर्णय था। तिब्बती उच्च मैदानों में चीनी गतिविधियों के कारण, पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री प्रताप सिंह कैरों ने पंजाब (अब हिमाचल प्रदेश) के सीमावर्ती क्षेत्रों में विकास कार्यों में तेज़ी लाने के लिए कांगड़ा ज़िले का विभाजन किया।

तत्पश्चात्, यह ज़िला 01 जुलाई, 1960 को अस्तित्व में आया। राज्य के पुनर्गठन के बाद, यह ज़िला 01.11.1966 को हिमाचल प्रदेश का हिस्सा बन गया। हालांकि अटल सुरंग रोहतांग का उद्घाटन पूर्वोक्त घटनाओं की तरह ही ऐतिहासिक है। अटल टनल रोहतांग का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री द्वारा ३ अक्तूबर, 2020 को किया गया था। सुरंग के खुलने से जीवन और समाज के विभिन्न आयामों में बड़े पैमाने पर परिवर्तन आया है और निश्चित रूप से पुलिस को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सुरंग के खुलने से बड़ी संख्या में पर्यटक आ रहे हैं, जो उत्तरी पोर्टल और लाहुल घाटी के विभिन्न हिस्सों जैसे त्रिलोकीनाथ, उदयपुर, चंद्रताल झील, जिस्पा आदि का दौरा कर रहे हैं। लगभग 1400 से 1500 वाहन प्रतिदिन लाहुल घाटी में प्रवेश कर रहे हैं। साथ ही अधिकांश यात्रियों की संख्या में वे पर्यटक हैं, जो लाहुल घाटी में पहली बार आ रहे हैं। साथ ही, बड़ी संख्या में संभावना रहती है कि पर्यटक दुर्गम क्षेत्रों और नदी के किनारों जैसे खतरानाक स्थानों में फंस सकते हैं और ऐसे स्थानों पर लगातार निगरानी की आवश्यकता होती है।

अनुमान है कि प्रतिदिन औसतन 5000 वाहन लाहुल घाटी में प्रवेश करेंगे और इतनी ही वाहनों की संख्या ज़िले से वापस जाएंगे। अनुमान है औसतन 40000 आबादी ज़िले में प्रतिदिन प्रवेश करेगी, जो कि 2011 की जनगणना के अनुसार ज़िले की आबादी से अधिक होगी।

नई पुलिसिंग चुनौतियां

अभूतपूर्व वाहन यातायात के कारण यातायात प्रबंधन, पर्यटक सुरक्षा और कानून व्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है, जो अनिवार्य रूप से संसाधन सघन कार्य है। 32 पुलिस कर्मियों को एटीआर की सुरक्षा, पर्यटकों की सुरक्षा, वाहनों के यातायात के नियमन और कानून-व्यवस्था की ड्यूटी बनाए रखने के लिए हिमाचल सरकार द्वारा स्वीकृत किया गया है। उक्त बल के अलावा, ज़िला मुख्यालय केलंग से उपरोक्त उद्देश्य के लिए अतिरिक्त जनशक्ति को तैनात किया जा रहा है, जिन्हें प्रतिदिन 70 किलोमीटर की यात्रा करनी पड़ती है। फिल्म की शूटिंग के साथ-साथ बड़ी संख्या में गणमान्य व्यक्ति/वीवीआइपी/वीआइपी/ न्यायाधीश दल लगातार ज़िले में घूमने आ रहे हैं। सुरंग के उद्घाटन से शीतकालीन पर्यटन सीज़न का भी विस्तार हुआ है। पिछले वर्षों की तुलना में सर्दियों में वाहनों की आवाजाही पहली तिमाही में आने वाले पर्यटकों की संख्या लगभग नगण्य थी, लेकिन इस वर्ष बड़ी संख्या में पर्यटक और स्थानीय वाहन इस क्षेत्र से गुज़रते रहे।

इसके अलावा, रक्षा कर्मियों (सेना/अर्ध-सैनिक), सैन्य वाहनों, आवश्यक वस्तुओं/ सामग्रियों के परिवहन जैसे सभी हितधारक अटल टनल रोहतांग से गुज़रेंगे। यातायात और जनसंख्या में वृद्धि के अनुपात में सड़क के बुनियादी ढांचे और परिवहन सुविधाओं में वृद्धि नहीं हुई है। परिणाम स्वरूप सड़कें लोगों और सामानों के लिए परिवहन का एकमात्र साधन है जिससे सड़क पर प्रतिदिन भीड़भाड़ होती है। औसतन, लगभग 40 पुलिस कर्मियों को अकेले एटीआर नॉर्थ पोर्टल से सिस्सू टूरिस्ट विलेज तक यातायात के प्रबंधन के लिए तैनात किया गया था, जो 10,000 फीट से अधिक ऊंचाई पर स्थित है और सर्दियों के तापमान –10 से –20 डिग्री

सुरंग के उद्घाटन से पहले और बाद में पर्यटकों की आवाजाही की तुलना

Duration	Total traffic movement	Average traffic per day*
Before inauguration of Atal Tunnel Rohtang		
1st January,2020 to 2nd October,2020	1,63,053	590
After inauguration of Atal Tunnel Rohtang		
Month of October	57,099	2196
Month of November	38,496	1833
Month of December	44,533	2024
Month of January	8295	2073
Month of February	9934	2483
Month of March	62,122	2389
*Excluding days when traffic/tourist movement was restricted due to avalanche warning or bad weather.		

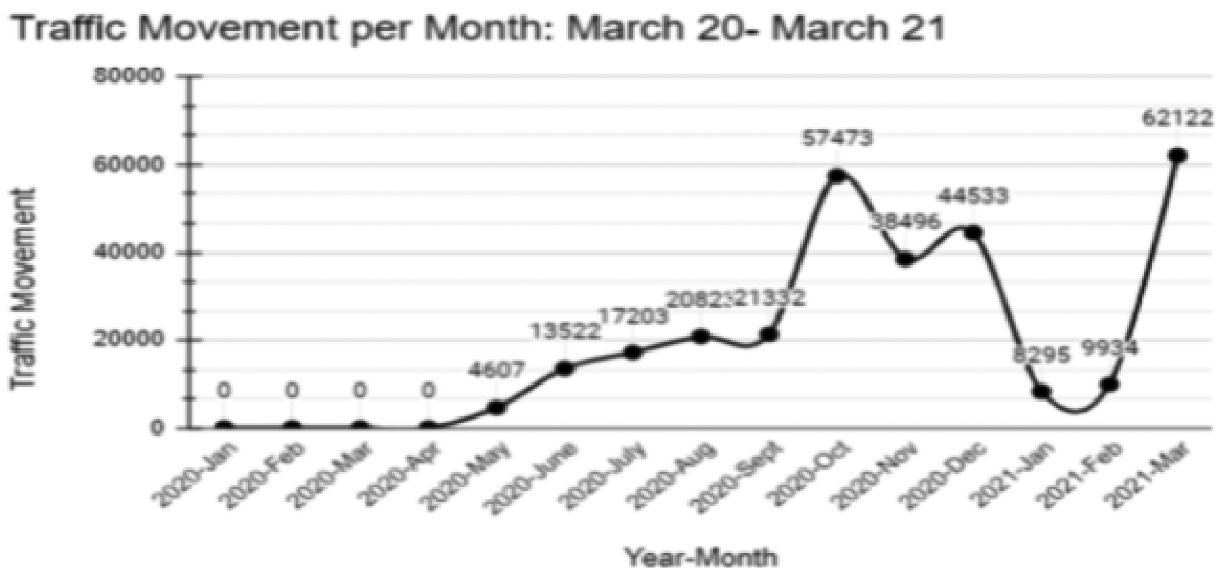

Chart: Total Traffic Movement before and after inauguration of Atal Tunnel Rohtang.

*Excluding days when traffic was restricted due to avalanche warning or bad weather.

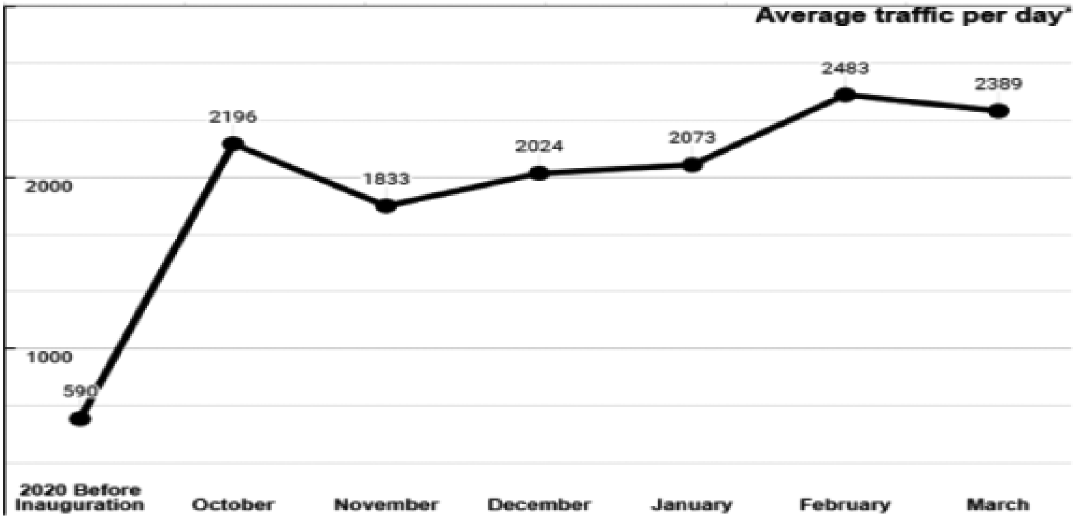

Chart: Average traffic per day* before and after inauguration of Atal Tunnel Rohtang.
*Excluding days when traffic was restricted due to avalanche warning or bad weather.

Chart: Winter Season Total Traffic comparison for previous two seasons.
* Excluding days when traffic was restricted due to avalanche warning or bad weather.

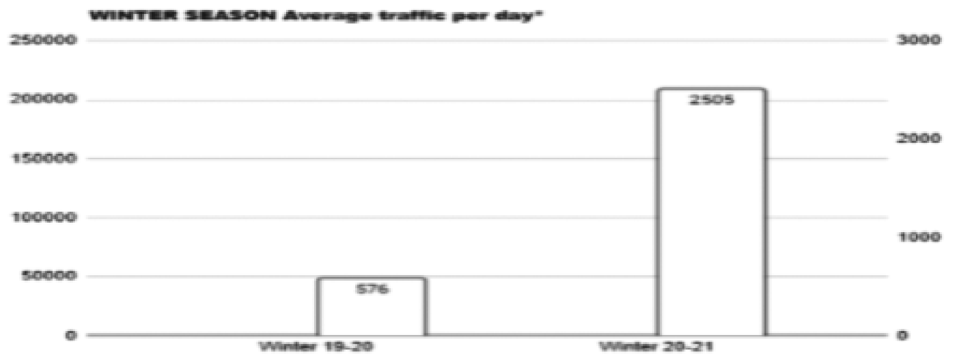

Chart: Winter Season Average Traffic per day comparison for previous two seasons.
* Excluding days when traffic was restricted due to avalanche warning or bad weather.

के आसपास है।

अप्रत्याशित परिदृश्य विशेष रूप से रिकॉर्ड ट्रैफिक नंबर दिन-ब-दिन दर्ज किए जा रहे हैं, भविष्य में भी क्षेत्र में तैनाती और सक्रिय पुलिसिंग दोनों की आवश्यकता है, इसके लिए आपातकालीन परिदृश्यों पर भी तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि वाहनों के यांत्रिक हिस्से टूटने की स्थिति में बचाव के लिए संकट कॉल की संख्याएं बढ़ने के लिए तैयार है। खासकर रोहतांग दर्रा, चंद्रताल, दारचा, शिंकुन ला, बरालाचा दर्रा जैसे बहुत ऊंचाई वाले क्षेत्र। यह भी अनुमान है कि ज़िले में रोहतांग ला, शिंकुन ला, बारालाचा ला और अन्य ऊंचाई वाले क्षेत्रों में आसान और तेज़ पहुंच के कारण उच्च ऊंचाई की बीमारी से संबंधित पर्यटकों से अधिक संकटपूर्ण कॉल आएंगे।

बौद्ध मठों जैसे शशुर, ताबो, की, किब्बर, डङ्खर आदि और महत्त्वपूर्ण मंदिरों जैसे राजा घेपन, त्रिलोकीनाथ मंदिर, मृकुला मंदिर आदि के मद्देनज़र हज़ारों भक्त/अनुयायी आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए लाहुल घाटी का दौरा करेंगे। पिछले वर्षों में, सितम्बर 2018 में हाल के अनुभव के साथ, बेमौसम भारी बर्फबारी के कारण इस ज़िले के विभिन्न स्थानों पर पर्यटकों की एक बड़ी संख्या (विभिन्न दर्रों से बचाए गए लगभग 4000–4500 लोग) फंस गई थी। इसलिए, इस ज़िले के सभी तीन उप-मंडलों को आदर्श रूप से भविष्य में किसी भी प्रकार की आपदा की स्थिति/संकट की स्थिति से निपटने के लिए अतिरिक्त जनशक्ति की आवश्यकता होती है और इसलिए वर्तमान में पुलिस बल पर अधिक कार्यभार है। गर्मी के मौसम में बर्फ के पिघलने से छोटे-छोटे नालों, नदियों में बाढ़ आ जाती है, जिससे कोकसर, पागल नाला, तेलिंग नाला, ज़िंगज़िंबार में सड़कें अवरुद्ध हो जाती हैं। सराय, तिंदी, उदयपुर सड़कें आदि नष्ट हो जाती हैं, जहां दैनिक आधार पर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया जाता है।

अटल टनल रोहतांग (एटीआर) के खुलने के कारण विशेष रूप से यातायात की आवजाही में वृद्धि के कारण ज़िला पुलिस जिन नई चुनौतियों का सामना कर रही है, उन्हें संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है :

- एटीआर उत्तर पोर्टल सुरक्षा
- उत्तर पोर्टल पर यातायात प्रबंधन
- चंद्रा ब्रिज से सिस्सू नर्सरी तक यातायात प्रबंधन
- पर्यटक सुरक्षा, सूचना और जागरूकता
- बचाव और आपदा प्रतिक्रिया
- सड़क दुर्घटना स्थल प्रबंधन
- कोविड-19 निर्देशों का प्रवर्तन
- माल वाहनों का पंजीकरण
- पार्किंग प्रबंधन
- वीवीआइपी अनुरक्षण
- फिल्म क्रू की सुरक्षा
- एटीआर रखरखाव घंटों के दौरान अभिगम नियंत्रण
- बूम बैरियर और बहूद्देश्यीय चेकपोस्ट का प्रबंधन
- एटीआर टनल के माध्यम से खतरनाक/पेट्रोल/मिट्टी के तेल के टैंक एस्कॉर्ट ड्यूटी।

पुलिस रणनीति : ज़िला पुलिस ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं :

पुलिस रणनीति : ज़िला पुलिस ने मौजूदा क्षमता और स्थानीय समुदाय से विचार-विमर्श करके और परिस्थितियों का आकलन करके निम्नलिखित कदम उठाए हैं -

सड़क भेद्यता मूल्यांकन और सर्वेक्षण : सीमा सड़क संगठन के साथ पूरे ज़िले की सड़कों का सर्वेक्षण किया गया है और सड़क सुरक्षा सुविधाओं, दुर्घटना अवरोधों और सड़क संकेतों की स्थापना के लिए एक मास्टर प्लान बनाया गया है। दो लाख रुपये की राशि से पुलिस

विभाग द्वारा भी घाटी भर में ट्रैफिक संकेत लगाए गए हैं। व्हीकल प्रबंधन प्रणाली (VMS) एवं इंटेलिजेंट ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम (ITMS) ज़िला उपायुक्त द्वारा तैयार ''विजन लाहुल'' टूरिज़्म योजना के अनुसरण में ज़िले में व्हीकल प्रबंधन प्रणाली एवं इंटेलीजेंट ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम प्रणाली स्थापित की जाएगी। ITMS सिस्टम में ट्रैफिक उल्लंघनों का पता लगाने और उन्हें दण्डित करने के लिए सॉफ्टवेयर के साथ ANPR कैमरे शामिल होंगे। वाहन प्रबंधन प्रणाली ''ग्रीन टैक्स'' के प्रतिबंधित उपयोग और संग्रह को सुनिश्चित करने में मदद करेगी।

पंचायत की भूमिका : पंचायत प्रतिनिधियों ने विभिन्न चिंताओं से पुलिस विभाग को परिचित करवाया जिसमें सुरक्षा के साथ-साथ पर्यटकों द्वारा हुड़दंग की आशंका, सड़क दुर्घटना महिलाओं की सुरक्षा और यातायात के कारण ट्रैफिक जैम शामिल हैं। राज्य राजमार्ग 26 (तांदी से उदयपुर) पर स्थित पंचायतों को सलाह दी गई है कि वे पिछले वर्ष के अनुभव को देखते हुए फसल के मौसम में खेत के माल की लदान के लिए सामुदायिक भूमि की पहचान करें। असामाजिक और आपराधिक तत्वों पर नज़र रखने के लिए पंचायतों को अपने क्षेत्रों में सीसीटीवी लगाने के लिए प्रेरित किया गया है। इससे क्षेत्र में यातायात की निगरानी में भी मदद मिलेगी।

उच्च ऊंचाई बचाव प्रशिक्षण : चूंकि, काफी पर्यटक निचले ऊंचाई क्षेत्रों से सीधे ज़िले का दौरा करेंगे, यह आशंका है कि ''माउंटेन सिकनेस'' के कारण उनकी तबियत खराब हो सकती है। इसलिए उच्च ऊंचाई वाली बीमारी के मामलों के प्रबंधन के लिए पुलिस कर्मियों के क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण के लिए संयुक्त प्रशिक्षण आयोजित किया गया है। साथ ही भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल ने अटल नटन रोहतांग सिक्योरिटी यूनिट के लिए हाई एल्टीट्यूड सर्वाइवल कोर्स भी चलाया था।

ज़िला पुलिस बल : ज़िले में कुल 271 की स्वीकृत संख्या है, हालांकि ज़िले में कुल 242 कर्मचारी तैनात हैं। ज़िले में 40 स्पेशल पुलिस ऑफिसर (एसपीओ) भी हैं, जिन्हें मयाड़ गांवों और दारचा गांवों में भर्ती किया जाता है। होमगार्ड की 8वीं बटालियन की 7वीं कंपनी भी ज़िले में तैनात है, हालांकि कंपनी में केवल 79 लोगों की भर्ती की जाती है और इनमें से 31 होमगार्ड ज़िले के बाहर ड्यूटी पर हैं।

हिमाचल सरकार के संबंधित विभागों से एसपीओ और होमगार्ड की संख्या बढ़ाने के साथ-साथ ज़िले में पुलिस बल की संख्या बढ़ाने का अनुरोध किया गया है क्योंकि ज़िले को विशेष रूप से पर्यटन सीज़न में 8 से अधिक मौसमी चेक-पोस्ट के साथ अधिक तैनाती की आवश्यकता है। पिछले वर्षों में ज़िला पुलिस पर काम का बोझ कम था क्योंकि रोहतांग दर्रे को बंद करने के बाद, घाटी में सर्दियों में लगभग शून्य यातायात था। हालांकि अब अटल टनल खुलने के बाद ज़िला पुलिस को साल भर काम करना होगा, जिसके लिए लाहुल-स्पीति पुलिस बल हमेशा तैयार है।

सम्पर्क : एस.पी., केलंग, लाहुल-स्पीति।

लाहुल घाटी में पर्यटन : कानून व्यवस्था एवं यातायात संबंधी समस्याएं तथा उपाय

अश्वनी कुमार
(एच.ए.एस.)

अटल टनल के खुलने के साथ लाहुल घाटी में पर्यटन गतिविधियों ने गति पकड़ ली है। भौगोलिक रूप से दो विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल मनाली तथा लद्दाख के मध्य स्थित होने के कारण लाहुल घाटी में पर्यटकों का भारी आमद रहना तय है। ज़ाहिर सी बात है कि जब हज़ारों की संख्या में पर्यटक घाटी में आएंगे तो इससे यहां की कानून व्यवस्था तथा यातायात प्रणाली पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। बल्कि यह कहने में भी कोई हर्ज़ नहीं होगा कि पर्यटन का सबसे पहला प्रत्यक्ष प्रभाव यातायात प्रणाली, कानून व्यवस्था तथा पर्यावरण पर नज़र आएगा। उपरोक्त दो विषयों से संबंधित समस्याएं तथा उपाय/सुझाव निम्न प्रकार से हैं-

१. पार्किंग की समस्या -

लाहुल घाटी में अधिकतर गांवों में पार्किंग सुविधा न के बराबर है। ज़िला मुख्यालय केलंग, तांदी, त्रिलोकीनाथ तथा उदयपुर में भी पर्यटकों की आवश्यकतानुसार पर्याप्त पार्किंग सुविधा उपलब्ध नहीं है। हलांकि सिस्सू से तांदी-जिस्पा की तरफ सड़क का चौड़ाकरण होने के कारण सड़क किनारे काफी पार्किंग उपलब्ध है जिसे व्यवस्थित रूप से पीली रेखा अंकित कर चिन्हित किया जाना चाहिए ताकि बेतरतीब पार्किंग न हो। पीली रेखा लगाकर पार्किंग स्थल चिन्हित करने की प्रक्रिया हर गांव में भी की जा सकती है। इसके अतिरिक्त मुख्य सड़क मार्ग के साथ वाले हर गांव में कम से कम 100 गाड़ियों की पार्किंग सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए जिसमें स्थानीय लोग तथा पर्यटक अपना वाहन सुरक्षित रूप से पार्क कर सकें। घाटी में किसी भी स्थान को पर्यटकों के लिए खोलने से पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि वहां पार्किंग की उचित व्यवस्था हो तथा निरंतर यातायात के प्रवाह हेतु पर्याप्त सड़क सुविधा उपलब्ध हो। इसके अतिरिक्त बिना पार्किंग सुविधा वाले होटल, गेस्ट हाऊस तथा कैंपिंग संचालकों को अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

२. यातायात अवरोध की समस्या -

पर्यटन से जुड़ी सबसे आम तथा बड़ी समस्याओं में से एक यातायात अवरोध की समस्या है। जैसाकि हम मनाली में मुख्य पर्यटन सीजन (मई-जून) में देखते हैं कि सड़कों पर वाहनों की कतारें इतनी लम्बी होती हैं कि 10 कि०मी० का सफर तय करने में 3–4 घंटे लग जाते हैं। इसी तरह की समस्या रोहतांग दर्रा, मढ़ी तथा व्यास नाला में हमेशा से रही है। यातायात अवरोध से बचने के लिए निम्नलिखित उपाय हो सकते हैं -

१. सड़कों का चौड़ीकरणः-

तांदी से उदयपुर तक मुख्य सड़कमार्ग का चौड़ीकरण न होने के कारण इस भाग में ट्रेफिक की बहुत समस्या आ रही है तथा वाहनों की संख्या में बढ़ोतरी के साथ यह विकराल रूप धारण कर सकती है। अतः इस भाग का शीघ्रातिशीघ्र चौड़ाकरण किया जाना अति आवश्यक है।

२. वृत्ताकार सड़कें -

यातायात व्यवस्था को बिना रुकावट चलाने के लिए वृत्ताकार सड़कें बहुत कारगर होती हैं। मनाली कस्बा तथा इसके आसपास के इलाकों में ट्रैफिक जाम लगने का कारण यही है कि वहां सर्कुलर रोड़ विकसित नहीं किए गए हैं। लाहुल घाटी में जहां-जहां भी संभव दो सम्पर्क मार्गों को आपस में जोड़कर तथा मुख्य सड़क मार्ग से जोड़कर सर्कुलर रोड़ बनाए जाने चाहिए ताकि यातायात व्यवस्था सुचारू रूप से चले।

३. सड़कों से बर्फ हटाने के लिए बेहतर व्यवस्था बनाना -

सर्दियों के मौसम में समय पर सड़क साफ न होने से या सही ढंग से बर्फ साफ न होने के कारण यातायात अवरोध की समस्या रहती है। इस कार्य हेतु तकनीकी उन्नयन तथा दक्षता दोनों की आवश्यकता है जिससे यातायात अवरोध के साथ-साथ सड़क दुर्घटनाओं से भी बचा जा सकता है।

क. पर्याप्त ट्रैफिक पुलिस/पर्यटक पुलिस/स्वयंसेवी -

यातायात नियमों की अनुपालना सुनिश्चित करने हेतु पर्याप्त ट्रैफिक पुलिस का होना अति आवश्यक है। मुख्य सड़क मार्ग पर लगातार गश्त होनी चाहिए जिससे यातायात व्यवस्था दुरुस्त रहे। इसके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार जागरूकता हेतु पुलिस के साथ-साथ स्वयंसेवकों की टीम भी लगाई जानी चाहिए।

ख. ट्रैफिक की निगरानी हेतु आधुनिक तकनीक का प्रयोग -

घाटी में आने वाले ट्रेफिक के आकार को मद्देनज़र रखते हुए उचित स्थानों पर सी सी टीवी कैमरे लगाए जाने चाहिए तथा उनकी लगातार निगरानी की जानी चाहिए ताकि ट्रैफिक नियमों की अनुपालना सुनिश्चित हो तथा किसी प्रकार की अप्रिय घटना भी न हो।

अपद्ध वाहनों की संख्या तथा समय बारे नियम -

यातायात अवरोध से बचने के लिए यह भी आवश्यक है कि किसी विशेष स्थान पर जाने हेतु वाहनों के लिए समय तथा संख्या दोनों निर्धारित किए जाएं तथा उसकी सख्ती से अनुपालना भी सुनिश्चित हो। रोहतांग दर्रा इसका एक जीवंत उदाहरण है जहां वाहनों की अंधाधुंध आवाजाही तथा बेतरतीब पार्किंग की समस्या के कारण राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण द्वारा वाहनों की संख्या तथा समय पर पाबंदी लगा दी गई।

३. सड़क दुर्घटनाएं एवं सड़क सुरक्षा -

लाहुल घाटी की सड़कें तंग, घुमावदार तथा उतराई-चढ़ाई वाली होने के कारण सड़क

दुर्घटनाओं की दृष्टि से अति संवेदनशील है। अतः इससे बचने के लिए संबंधित विभागों द्वारा ''ब्लैक स्पॉट'' चिन्हित कर उनकी वांछित मुरम्मत की जानी चाहिए तथा संवेदनशील स्थान जैसे पत्थर गिरने वाले, अंधे मोड़, फिसलन वाले स्थानों पर उचित चेतावनी पट्टिकाएं लगाई जानी चाहिए।

४. पर्यटन से जुड़ी साहसिक तथा मनोरंजन गतिविधियों पर नियंत्रण –

पर्यटन व्यवस्था एवं संबंधित साहसिक तथा मनोरंजन गतिविधियां जैसे ट्रैकिंग, पर्वतारोहण अभियान, राफ्टिंग, पैरा गलाईडिंग, माऊंटेन बाईकिंग, मनोरंजन पार्क, डिस्को इत्यादि पर सख्त कानूनी नियंत्रण होना बहुत आवश्यक है अन्यथा अवैध रूप से इन गतिविधियों के संचालन के कारण कई तरह की दुर्घटनाएं हो जाती हैं। इसके लिए पर्यटन विभाग/प्रशासन को यह सुनिश्चित करना होगा कि इस तरह की गतिविधियां चलाने हेतु केवल व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त युवकों को ही अनुमति दें जिससे घाटी में साहसिक पर्यटन विकसित होगा तथा गुणवत्ता भी बनी रहेगी।

५. नशीले पदार्थों का कारोबार –

नशीले पदार्थों का कारोबार पर्यटन स्थलों की एक प्रमुख समस्या है। इस गंदगी से निपटना प्रशासन तथा पुलिस के लिए एक बड़ी चुनौती रहेगी। यहां यह कहना उचित होगा कि पर्यटन व्यवसाय से जुड़े समस्त हितधारकों को भी यह सुनिश्चित करना होगा कि वह किसी भी परिस्थिति में अल्प अवधि में मुनाफा कमाने के लिए इस तरह की गैर कानूनी गतिविधियों को बढ़ावा न दें। साथ ही साथ विभिन्न सामाजिक संगठनों को भी इस के लिए हमेशा तैयार रहना होगा।

६. अन्य गैर कानूनी गतिविधियां –

पर्यटन स्थलों में नशीले पदार्थों के सेवन के अतिरिक्त अन्य गैर कानूनी गतिविधियां जैसे चोरी, डकैती, देह व्यापार इत्यादि की घटनाएं भी प्रायः देखी जा सकती हैं। इस प्रकार के अवांछित गतिविधियों से निपटने के लिए अलग-अलग स्तर पर व्यवस्था बनाने की आवश्यकता है। लाहुल घाटी आज तक इस प्रकार की चीज़ों से अछूता रहा है। यहां तक कि लगभग सभी गांवों में दिन के समय जब कृषि कार्य के लिए लोग खेतों में चले जाते हैं तो उस समय घर में ताला भी नहीं लगाया जाता। परन्तु पर्यटकों के आगमन के साथ इस तरह घरों को खुला छोड़ना संभव नहीं होगा। हर गांव को अपनी सुरक्षा व्यवस्था बनानी होगी तथा निजी रूप से भी सभी को सतर्क रहना होगा। जगह-जगह सी सी टीवी सर्विलांस सुनिश्चित करना होगा ताकि आने जाने वाले लोगों पर निगरानी रखी जा सके। प्रशासन, गांव वासी, नागरिक संगठनों सभी को इस दिशा में मिलकर काम करना होगा।

पर्यटन का आगमन लाहुल घाटी के विकास के इतिहास में बिलकुल नई घटना तो नहीं है परन्तु फिर भी 80% लोगों को इस के संबंध में जानकारी नहीं है। सबसे सकारात्मक बात यह कि आज लाहुल के लोग सुशिक्षित हैं तथा कुल्लू-मनाली में पर्यटन के अच्छे-बुरे प्रभावों को नज़दीकी से देख भी चुके हैं। अतः उन अनुभवों से सीख लेकर यदि सभी हितधारकों द्वारा सुनियोजित ढंग से कार्य किया जाए तो कानून व्यवस्था तथा यातायात की समस्याओं से बचा जा सकता है या काफी हद तक कम किया जा सकता है। कहने की ज़रूरत नहीं है कि इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए एक दूरदर्शी सोच, समर्पण तथा व्यक्तिगत आकांक्षाओं से ऊपर उठने की आवश्यकता है। यदि समाज का हर वर्ग एक सकारात्मक सोच के साथ कार्य करे तो पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों को काफी हद तक कम किया जा सकता है जिससे लाहुल घाटी आने वाले समय में स्वच्छ, स्वस्थ तथा उत्तरदायी पर्यटन के लिए जाना जाएगा।

सम्पर्क : अतिरिक्त ज़िला दण्डाधिकारी, पूह, ज़िला किन्नौर हि० प्र०।
e-mail:
ashwanikumar2009has@gmail.com

भूटान मॉडल : क्या लाहुल में स्थापित हो पाएगा! क्यों हैं हम इतने उदासीन?

प्रेम ठाकुर

अटल टनल के पश्चात का परिदृश्य जहाँ देश की सुरक्षा को मज़बूत कर गया वहीं दुर्गम कबायली ज़िला लाहुल स्पीति के लिए एक नए युग की शुरुआत भी कर गया है। जिस ज़िले के कभी नाम मात्र से प्रदेश वासी व कर्मचारी घबरा जाते थे आज वो सबके लिय स्वर्ग दिखने लगा है। वर्ष 1998 में मेरे एक सैनिक अधिकारी मित्र मेरे साथ लाहुल गए थे। उस दिन पागल नाला उफान पर था। ऊबड़ खाबड़ व धूल भरे रास्तों को देख कर मेरे मित्र ने कहा कि प्रेम लाहुल में आना जाना ही अपने आप में एक सज़ा है और वही मित्र अपने हाल ही के लाहुल दौरे के बाद मुझे कहते हैं प्रेम तुम्हारा देश स्वर्ग है। एक सुरंग ने लाहुल के प्रति लोगों के सोच में इतना बदलाव ले आना सच में युग परिवर्तन ही है। लाहुल-स्पीति अपने दुर्गमता व कठिन भौगोलिक स्थिति के कारण बाहरी लोगों के लिए हमेशा जिज्ञासा का केंद्र बना रहा है। यहाँ की संस्कृति, लोग, पहनावा, खान पान, मौसम सब इस क्षेत्र को सबसे अलग करता है। जो अब एक आकर्षण का केंद्र बनता जा रहा है।

अब पर्यटन के साथ जहाँ आय में इज़ाफा होगा वहाँ परेशनियाँ भी ज़रूर पहुँचेंगी, इससे लाहुल-स्पीति अछूता नहीं बच सका है। पिछले कुछ महीनों पर नज़र मारें तो यही देखने को मिल रहा है कि लोगों का हजूम इस घाटी में प्रवेश कर रहा है। आँकड़ों की मानें तो पिछले रविवार कुल 7410 रिकॉर्ड वाहन अटल टनल से आर व पार हुए। गौर करने वाली बात ये भी है कि इन 7410 वाहनों में 4348 वाहन स्थानीय पर्यटकों की थी, अर्थात् लगभग 59 प्रतिशत हिमाचल के विभिन्न ज़िलों से आए लोग थे जिन्हें अटल टनल व लाहुल को देखने का कौतूहल इस ओर खींच लाया। जो लाहुल के प्रति प्रदेश निवासियों के बदलते सोच का एक उदाहरण मात्र है।

इसके साथ ही लाहुल जैसे शांत घाटी में भी अचानक वाहनों के शोरगुल के साथ-साथ कुछ हुड़दंगियों का भी प्रवेश हो गया। सिस्सु हेलीपेड में भगाती गाड़ियाँ, खुले सनरूफ से बाहर निकल अभद्रता करते मेहमान, संकरी व तंग सड़क किनारे, खेत खलियान व पवित्र चंद्राभागा नदी के किनारे जमघट लगाते लोग, शराब व ऊँचे संगीत की मस्ती में नृत्य करते लोग अब लाहुल में जगह-जगह दिखने लगे हैं। मंडी में तलवारबाज़ी कर सीधे लाहुल में पकड़े जाना भी सुरक्षा पर सवालिया निशान छोड़ जाता है। खड़ी फसल, फल व सेब के पेड़ तक तोड़ देना कृषकों की महीनों की मेहनत व एक परिवार के आर्थिक रीढ़ को तोड़ने जैसा व्यवहार, महिलाओं के साथ अभद्रता, पिकनिक व पार्टी करते लोग प्लास्टिक व अन्य कचरे को पीछे छोड़ जाना, जो लाहुल-स्पीति जैसे शांत व प्रकृति की अनुपम देन से भरपूर क्षेत्र के लिए चिंता जनक है। स्थानीय लोग, संस्था व प्रशासन इस विषय में अभी ज़्यादा गम्भीर नज़र आते नहीं दिख रहे हैं।

अब तक कृषि प्रधान रहा ज़िला अचानक पर्यटन का हब बनता दिख रहा है। जबकि अभी तक इस क्षेत्र में पर्यटन की कोई ठोस नीति नहीं बन पाई है। अगर ज़िले के कुछ बड़े ग्रुपों की पिछली 7–8 सालों की चर्चा पर गौर करें तो अधिकतर बुद्धिजीवी भूटान मॉडल को लाहुल-स्पीति में लागू करने के पक्ष में दिखते आए हैं। भूटान व लाहुल-स्पीति में कई भौगोलिक, धार्मिक मान्यताओं व अलग वेष भूषा जैसी कई समताएं हैं। अलग है तो सिर्फ सोच व एकजुटता की कमी। प्रशासन की अपनी सीमाएँ हैं, जिससे बाहर आना उनकी मजबूरी भी। भूटान की भाँति अब लाहुल-स्पीति में भी अगर कृषि, संस्कृति व धर्म के साथ एक बेहतरीन पर्यटन को भी विकसित करना है तो हमें, 'उच्च मूल्य-कम मात्रा' (High Value & Low volume) अर्थात् नियंत्रित पर्यटन पर ज़ोर देना ही होगा। इस विषय में अधिक सोचने की ज़रूरत नहीं है। विश्लेषण किया जाए तो अगर मुझे छह कमरों के एक बेहतरीन होम स्टे से वही आय हो रही हो जो एक बीस कमरों के सस्ते होटल से होती होगी तो फिर मैं क्यों बीस कमरे बनाऊँगा? सस्ते होटल में सस्ते व हुड़दंगी मेहमानों की भीड़ ही नज़र आएगी जबकि एक उत्कृष्ट स्थानीय अच्छे होम स्टे में सम्भ्रांत व कम शोर करने वाले सभ्य मेहमान ठहरेंगे। भीड़ को नियंत्रित करना व समझाना कठिन होता है जबकि कम किंतु उत्कृष्ट मेहमान अक्सर आपकी संस्कृति व रीति-रिवाज़ का सम्मान करते हुए ही मिलेंगे। इसके साथ घाटी के कुछ बिंदुओं को भी हमें भूलना नहीं होगा, जो शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति, धार्मिक स्थल व आस्था, कृषि ,फसल व महिलाओं की सुरक्षा से कोई समझौता नहीं होनी चाहिए। इसके लिए सभी मेहमानों को विभिन्न सोशल मीडिया, प्रिंट व एलेक्ट्रोनिक मीडिया, होटेल व होम स्टे परिसर, सड़क किनारे बोर्ड व अटल टनल प्रवेश पर उचित माध्यमों से सचेत किया जाना बेहद ज़रूरी है। पुलिस व प्रशासन सुरक्षा चूक से बचें और घाटी में प्रवेश कर रहे हथियारबंद व अपराधी तत्वों पर नकेल सख्ती से कसें। पुलिस बल कम हो तो स्थानीय स्वयं सेवक संगठन व युवाओं को एक विशिष्ट पहचान दे कर सेवाएं ली जाएं।

सम्पर्क : होटल नीलकण्ठ BYKE
प्रीणी, मनाली, हि.प्र.।
e-mail : premthakurg@gmail.com

एकीकृत पर्यटन परिपथ मॉडल लाहुल के संदर्भ में

बलदेव कृष्ण घरसंगी

मुख्य कार्यालय : फेडरेशन ऑफ टूरिज़्म, एडवेन्चर एण्ड हॉसपिटेलिटी इंडस्ट्री लि० गांव व डा० शान्शा, ज़िला लाहुल एवं स्पीति (हि०प्र०)

पर्यटन सहकारी सभाएं

पटन वैली के पांच ग्राम पंचायत उपरोक्त फेडरेशन के अर्न्तगत कार्य करेंगे जो निम्नलिखित होंगे।

ट्राईबल एडवेंचर, टूरज़िम एण्ड हॉसपिटेलिटी को-ऑपरेटिव इंडस्ट्रियल सोसाईटी लि० शान्शा, रानिका, जोबरंग, गोहरमा एण्ड जाहलमा।

ध्येय : मुख्यतः अपने कार्य क्षेत्र में एडवेंचर पर्यटन और आतिथ्य उद्योग को सहकारिता के अर्न्तगत संगठित होकर विकसित वा इसे अपने सदस्यों के हित में कार्यान्वयन में लाना

१. ध्येय : इसे सहकारी संस्था से सम्बन्धित व किसी सहकारिता विषय के विशेषज्ञ से लिखवा सकते हैं।

२. उप नियम : यह भी उप पंजीयक के कार्यालय केलंग से प्राप्त किया जा सकता है व इस सम्बन्ध में सहायता प्राप्त की जा सकती है।

३. कार्यकारिणी का गठन : इस बावत पूरा विवरण उपरोक्त कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।

४. दृष्टिकोण उल्लेख : इस पूरी व्यवस्था को समझने व धरातल पर कार्यान्वयन हेतु एक विस्तृत दृष्टिकोण का उल्लेख होना आवश्यक है जिसे विशेषज्ञों के साथ बैठ कर विकसित किया जा सकता है।

५. प्रणाली विश्लेषण : इसका तात्पर्य व कार्य प्रगति प्रणाली विश्लेषण (system analysis) पर निर्भर करेगी। इसे वैश्विक पर्यटन सहकारी सभाओं के कार्य प्रणाली का विश्लेषण करके समय और स्थान विशेष के हिसाब से विकसित करना होगा।

६. नियम और नियन्त्रण : नियम व नियन्त्रण की व्याख्या उप पंजीयक सहकारी सभाओं से प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त विशेषज्ञों से राय लेकर इसे अपनी आवश्यकताओं के अनुसार बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

७. जांच व संतुलन : इसी प्रकार जांच व संतुलन की भी पूरी व्याख्या की जाने की आवश्यकता है जोकि इसके विशेषज्ञ समय व स्थान के हिसाब से विकसित कर उल्लेखित करेंगे।

८. शुल्क, अर्थ-दण्ड और नियम-दण्ड : शुल्क, अर्थ-दण्ड और नियम अवहेलना-दण्ड का निर्धारण भी सभा व फेडरेशन समय व स्थान की अनुकूलता व प्रतिकूलता को देखते हुए तय कर इसका विस्तृत उल्लेख करेगी।

९. समान हित : फेडरेशन सभी सदस्य सभाओं के हितों को तय कर जो समान हित होंगे, का उल्लेख करके इसकी विस्तृत व्यवस्था करने के संदर्भ को भी लिपिबद्ध करेगी। फेडरेशन यह देखेगी कि समान हित पर सबका मत एक सा है व सुनिश्चित करेगी कि इसकी विस्तृत जानकारी लिपि बद्ध हो।

संभावनाएं : सभी सभाएं अपने कार्यक्षेत्र के अन्दर निम्नलिखित सम्भावनाएं तलाश करेगी और समय, स्थान व आवश्यकताओं के अनुरूप इन्हें अपना कर कार्यान्वयन में लाएगी तथा फेडरेशन का कार्य इन सभी सम्भावनाओं को विशेषज्ञों से परामर्श करके सभाओं को परामर्श देगी साथ में वैज्ञानिक व तकनीकी तौर पर आवश्यकता अनुसार नियमित भी करेगी जो कोई फेडरेशन के नियम व उपनियम, दृष्टिकोण उल्लेख और नियम व नियंत्रण की अवहेलना करेगी।

१. सड़क किनारे सुविधाएं : शौचालय, वॉशरूम, मोबाईल चार्जिंग स्पाट, एटीएम, फूड ट्रक, मोटर वर्कशॉप, दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को हटाने के लिए सचल निष्क्रमण सुविधाएं दुर्घटना की अवस्था में निष्क्रमणार्थी आपतकालीन निष्क्रमण करने की व्यवस्था जैसे कि 1018 न० को सूचना देना, गतिशील एम्बूलेंस व रास्तों में स्वचालित तकनीक व यान्त्रिक व्यवस्था, एप का प्रयोग व गतिशील पर्यटक सहायता स्टाफ इत्यादि।

२. रोप वे, राफ्टिंग, पेरा ग्लाईडिंग, ज़िप लाईन, साईकलिंग, मोटर साईकलिंग, ATV Ride व माऊंटेन बाईकिंग, हॉट एअर बैलूनिंग, रिवर क्रॉसिंग, रॉक कलाइम्बिंग, रैपलिंग, ट्रैकिंग, हाईकिंग, माऊंटनियरिंग, ग्लेश्यिल वाचिंग, कैनोईंग, क्वैड बाईक राईडिंग और भी बहुत कुछ।

बुनियादी ढांचा :

(क) एकीकृत सीवरेज प्रणाली व सॉलिड वेस्ट मेनेजमेन्ट अधोसंरचना को धरातल पर स्थापित करना।

(ख) यूरोपियन मानकों के अन्तर्गत हाईटेक वाटर सप्लाई सिस्टम को अपनाना।

(ग) रिन्यूअल एनर्जी तकनीक की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

(घ) सोलर पैनल्ज़, जल विद्युत का आवश्यकतानुसार विवेकपूर्ण दोहन।

(ङ) बस, टैक्सी व तीन पहिया वाहनों में इलैक्ट्रिक वैटरी चालित प्रणाली का भरपूर उपयोग और डीज़ल, पैट्रोल से चलित वाहनों का कम से कम उपयोग या पूर्ण निषेध।

(च) घोड़ों से जुते बग्घी व इलेक्ट्रिक रिक्शा का प्रयोग व प्रोत्साहन।

(छ) स्काई वै, स्काई वॉक को पेश कर उपयोग में लाना।

(ज) रोप वे, एस्केलेटर्ज़ व लिफ्ट्स को यातायात में उपयोग हेतु पेश करना।

(झ) वैलनेस एण्ड स्पा रिज़ोर्ट्स, हेल्थ एण्ड वैलनेस पर्यटन अधोसंरचना का विकास, चार सितारा अस्पताल व एलाईड सर्विसिज़ को पेश करना तथा पांच सितारा स्कूलों को पेश कर एक व्यवस्थित पर्यटन हव विकसित करना।

(ञ) आवासीय सुविधाएं : आवास सुविधाओं में इन सभाओं द्वारा हर पंचायत में एक पांच सितारा होटल, दो-तीन, चार सितारा होटल, गेस्ट हाऊस, मोटेल्ज़, होम स्टेज़ व कैम्पों की व्यवस्था चरणबद्ध तरीकों से करना होगा।

इस तरह सहकारिता मॉडल ही लाहुल के संदर्भ में उपयुक्त रहेगा क्योंकि, लाहुली आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था में सहकारिता एक अभिन्न अंग रहा है और रहेगा।

ग्रामीण पर्यटन की रीढ़ : होम स्टे

रिगज़िन हयरपा

हिमाचल प्रदेश सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटकों को आकर्षित करने और स्थानीय लोगों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में सहायक होने वाली ''हिमाचल प्रदेश होम स्टे योजना 2008'' सही दिशा में एक कदम है। इस योजना के अन्तर्गत पर्यटकों को गांव के शान्त एवं शुद्ध वातावरण में रहने का अवसर प्राप्त होता है। साथ ही इस योजना से निश्चित रूप से ग्रामीण पर्यटन को गति मिलती है।

ग्रामीण पर्यटन का सबसे अधिक सम्भावनाओं वाला पहलू ''होम स्टे'' है। जिस पर अभी तक बहुत कम ध्यान दिया गया है। जब हम पर्यटक आवास के बारे में सोचते हैं तो सर्वप्रथम दिमाग में होटल, लॉज, गेस्ट हाऊस व कैम्पिंग इत्यादि ही आता है। लेकिन आज के इस भागम-भाग एवं चकाचौंध की दुनिया में पर्यटक प्राकृतिक रूप से सुन्दर स्थलों में अपने घर जैसा अनुभव देने वाले वातावरण में रहना पसन्द कर रहे हैं। देश-विदेश से आने-वाले पर्यटक आम तौर पर स्थानीय संस्कृति, परम्पराओं को देखने और घर में बने भोजन को पसन्द करते हैं। एक ग्रामीण पर्यटन स्थल पर स्थानीय परिवार के साथ रहने से खर्च भी कम आता है और उस स्थान के लोगों के रीति-रिवाज़ व संस्कृति को जानने का मौका भी मिलता है। इसके लिए ''होम स्टे'' सबसे स्टीक विकल्प है, जो हिमाचल के अति दुर्गम एवं जनजातीय इलाकों में हाल के दिनों में बहुत अधिक लोकप्रिय हो रहा है। ''होम स्टे'' से ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को अपनी समृद्ध संस्कृति, परम्पराओं और प्राचीन धरोहरों से पर्यटकों को अवगत कराने का अवसर प्राप्त होगा। साथ ही ग्रामीणों को बिना निवेश किए आय का सतत और वैकल्पिक साधन भी उपलब्ध होगा।

''होम स्टे'' के तहत ग्रामीण घरों के ही एक हिस्से को मेहमानों के लिए तैयार किया जाता है और पर्यटक को ठहरा कर उन्हें मेहमानों की संस्कृति और रीति-रिवाज़ों को भी जानने का अवसर प्राप्त होता है।

हिमाचल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत अपने-आप में भिन्न है। यहां की प्राचीन स्मारकें, किले, हवेलियां, घाटियां, झरने, झीलें, नदी-नाले, मिट्टी के बने मकान और अन्य भौगोलिक दृश्य आकर्षक एवं मनमोहक हैं। इसके अतिरिक्त वन्य प्राणी अभयारण्य, नेचर पार्क, हर्बल पार्क, झीलें और मेले एवं त्योहार पर्यटकों को आनंदित करते हैं।
'होम स्टे' योजना के तहत जो बिन्दु सरकार सम्बन्धित विभाग ने तैयार किए हैं वे निम्न हैं-

हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में ग्रामीण पर्यटन के विकास का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यहां की 80 से 85 प्रतिशत की आबादी गांव में रहती है। ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन देने से न केवल ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी बल्कि उनकी जीवन शैली में भी सुधार होगा।

- पर्यटक का ग्रामीण क्षेत्र में हिमाचली/लाहुली परिवार के साथ रहना।
-पर्यटकों को ग्रामीण परिवेश से अवगत कराना।
- घर में पकाये स्थानीय व्यंजन परोसना और स्थानीय हथकरघा उत्पादों का प्रचार-प्रसार करना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में सेब-बगीचों, चाय-बगीचों, ऑर्गेनिक फार्म व फूलों एवं सब्ज़ियों की खेती, खेत खलिहानों की सैर कराना और ट्रैकिंग-कैम्पिंग कराना।
- हिमाचली रीति-रिवाज़ों, परम्पराओं, ग्रामीण गीत-संगीत और ग्रामीण तीज-त्यौहार व मेलों के बारे में बताना।

लाहुल-स्पीति ज़िले में भी कई गांवों में पंजीकृत होम स्टे इकाइयां उपलब्ध हैं, जहां पर्यटकों को रहने की पूरी सुविधा के साथ-साथ ग्रामीण रहन-सहन, जीवन शैली, दुर्लभ जन-जातीय संस्कृति, गांव की सीधी-सादी ज़िन्दगी में कठोर मेहनत का नज़ारा भी पर्यटकों को देखने समझने को मिलता है। पर्यटकों को गांव में अस्थाई तौर पर रह कर ग्रामीणों व किसानों की रोज़मर्रा की ज़िन्दगी को समझने का मौका भी मिलता है।

ज़िलाधीश लाहुल-स्पीति की पहल पर गत मार्च को ज़िले के उपमंडल लाहुल व उदयपुर में दो-दो दिवसीय एकल खिड़की-प्रणाली के तहत केम्प लगाकर 4 दिनों में 500 के लगभग होम स्टे पंजीकृत किए गए, शिविर में होम स्टे पंजीकरण में जो भी दस्तावेज़ लगनी थी, सभी दस्तावेज़ों को एक ही छत के नीचे उपलब्ध करवाया गया, पर्यटन व्यवसायी व गैर सरकारी संगठनों ने जिसे खूब सराहा।

ज़िलाधीश पंकज राय ने कहा कि होम स्टे योजना उन पर्यटकों में अधिक लोकप्रिय हो रही है जो सिर्फ पिकनिक मनाने के उद्देश्य से यहां नहीं आते बल्कि जिनका मकसद राज्य की समृद्ध संस्कृति को समझना होता है। होम स्टे योजना राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटकों को प्रदेश की संस्कृति से सीधे रूबरू करवाती है। घर के माहौल में रहकर पर्यटक यहां की संस्कृति में रच बस जाते हैं और थोड़े समय में ही उन्हें यहां की आबोहवा भी अपनी लगने लगती है।

ज़िले में तोद घाटी के प्रथम-गांव क्वरिंग को विलेज बेस्ड होम स्टे के तहत पूरे गांव को होम स्टे में तबदील किया गया है। ग्राम पर्यटन समिति क्वरिंग के संयोजक तन्ज़िन मिनग्युर का कहना है कि संपूर्ण गांव को होम स्टे में तबदील कर ग्रामवासियों की आर्थिकी को बढ़ाना है, उन्होंने कहा कि बिना कुछ निवेश किए पर्यटन को वे न केवल अपनी कमाई का साधन बना सकते हैं बल्कि बाहर से आने वाले मेहमानों की मेज़बानी करके संतुष्टि

भी प्राप्त कर सकते हैं। समिति ने यह भी निर्णय लिया है, कि गांव के होम स्टे में केवल एकल ग्रुप व परिवार समेत आए महिला पर्यटकों को ही कमरे मिला करेंगी। घर/परिवार व गांव की सुरक्षा के दृष्टिगत यह निर्णय लिया गया। क्वरिंग ग्राम वासियों को मार्च में आयोजित स्नो फेस्टिवल के तहत खंगसर-खर में प्रदेश के मुख्य सचिव अनिल खाची के हाथों पंजीकरण प्रमाण पत्र दिए गए।

योजना के तहत प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में कोई भी व्यक्ति अपने घर में कम से कम एक कमरा और ज़्यादा से ज़्यादा चार कमरों को होम स्टे के लिए पर्यटन विभाग के पास पंजीकरण करवाना होगा।

सिस्सू गांव में स्थित ''जगमो होम स्टे'' की संचालिका सुमन, जो ग्राम पंचायत सिस्सू की प्रधान भी है, का कहना है कि सरकार को ग्रामीण पर्यटन के लिए अलग से नीति बना कर होम स्टे व ब्रैड एंड ब्रेकफास्ट योजना पर खास ध्यान देना होगा। सुमन का मानना है कि यदि मौसम व मास के हिसाब से प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में माकूल होम स्टे की सुविधाओं को सूचीबद्ध किया जाए और पर्यटन विभाग की किसी एकीकृत बेवसाईट पर उन्हें डाल दिया जाए तो सैलानियों को भी आसानी होगी और होम स्टे का कारोबार भी तेज़ी से बढ़ेगा।

गेमुर गांव स्थित गेमुर हाऊस होम स्टे के संचालक एवं होटल व्यवसायी दोर्जे ठाकुर का मानना है कि ग्रामीण पर्यटन में सरकार शिल्प ग्राम जैसी पहल भी कर सकती है। लाहुल स्पीति में जितनी विविधता है उतनी प्रदेश में कहीं नज़र नहीं आती है। यहां के खानपान, बोली एवं भाषा और संस्कृति ही नहीं शिल्प में भी गज़ब की विविधता है। यदि होम स्टे व शिल्प ग्राम को एक साथ जोड़ दिया जाए तो सोने पे सुहागा हो जाएगा।

जिस्पा ग्राम स्थित ठाकुर होम स्टे के संचालक तन्ज़िन छोटुप उर्फ राजू का मानना है कि होम स्टे एक इको टूरिज़्म यूनिट है व ग्रामीण क्षेत्र के बेरोज़गार युवाओं के लिए आय का एक स्रोत है। बिना कुछ अतिरिक्त निवेश किए एक आम ग्रामीण भी पर्यटन उद्यमी बन सकता है।

ज़िला पर्यटन विकास अधिकारी रमन कुमार शर्मा ने कहा कि होम स्टे योजना के तहत पर्यटन अधिकारी गतिविधियों से होने वाली आमदनी पर होटलों व अतिथि गृहों की तरह सरकार न तो लग्सरी टैक्स वसूलती है और न ही सेल टेक्स या वेट। इतना ही नहीं होम स्टे योजना के तहत इस्तेमाल किए जाने वाले पानी व बिजली के बिल नहीं दिए जाते बल्कि पहले की तरह ही घरेलू दरों पर बिलों की बसूली की जाती है। इस योजना की इस तरह की विशेषताओं के चलते ही यह योजना लगातार लोकप्रिय हो रही है।

ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने वाला एक अत्यन्त सराहनीय प्रयास ''इनक्रेडिबल इंडिया ब्रेड एण्ड ब्रेकफास्ट/होम स्टे भी है। यह योजना विदेशी एवं भारतीय पर्यटकों को सुदूर अंचलों में भुगतान के आधार पर भारतीय परिवारों के साथ रहने एवं आवासीय सुविधाएं प्रदान करने पर आधारित है। दो श्रेणियों ''सिल्वर एवं गोल्ड'' में पर्यटकों को सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। इस इकाई का अनुमोदन एवं पंजीकरण पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा किया जाता है। जिसमें सम्बंधित मालिक अथवा देखभालकर्त्ता अपने परिवार के साथ रहता हो तथा पर्यटकों के लिए न्यूनतम एक तथा अधिकतम छह कमरों की व्यवस्था उपलब्ध कराता हो।

लाहुल-स्पीति होम स्टे एसोसिएशन के अध्यक्ष ने सरकार से मांग की है, कि योजना के बेहतर संचालन के लिए पर्यटन विभाग संचार कौशलों की प्रशिक्षण की व्यवस्था करे, इस योजना के (लाभार्थीगण होम स्टे संचालक) आतिथ्य और पर्यटन उद्योग की जनशक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कौशल विकास की व्यवस्था की जाए।

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री कौशल विकास मिशन ने पर्यटन मंत्रालय और उद्योग हेतु वर्ष 2022 तक पचास लाख व्यक्तियों का कुशल कार्यबल तैयार करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

सम्पर्क : गांव क्वरिंग, लाहुल
e-mail : rigzinr@gmail.com

बढ़ते पर्यटन का स्थानीय समाज पर क्या प्रभाव होंगे और इससे किस तरह निपटा जाना चाहिए?

रणवीर सिंह शाशनी

यहां सर्वप्रथम तो किसी एक्सपर्ट या फिर इस विषय के जानकार की हैसियत से मैं बात नहीं कर रहा और न ही अनाधिकार चेष्टा है मेरी, बल्कि हाल ही में अटल टनल के खुल जाने से लाहुल एक प्रमुख पर्यटक स्थल के रूप में उभर कर सामने आया है। शायद सम्भावनाएं भी बहुत बढ़ी हैं। इसी कारण से यह मुझ जैसे आम आदमी को सोचने के लिए मजबूर करता है कि इसका सामाजिक तौर पर क्या असर पड़ेगा? चाहे अच्छे की बात हो या फिर बुरे की। कहा जाता है कि पर्यटन एक आर्थिक गतिविधि है, इससे आर्थिक विकास और अनेकानेक छोटे-मोटे व्यवसायों और अस्थायी नौकरियों को जन्म देता है। पर्यटन भिन्न-भिन्न समाज और संस्कृति के लोगों को निकट भी लाता है और उसका परस्पर मेल-मिलाप करवाता है। जिसके फलस्वरूप शांति और सह-अस्तित्व की भावना विकसित हो पाती है, साथ ही साथ कई बार कड़वाहट भी और इस तरह जिन-जिन क्षेत्रों में पर्यटन व्यवसाय होता है, उन-उन क्षेत्रों में सम्पन्नता लाती है और लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि होती है, लेकिन साथ ही साथ इसके दूसरे पहलू भी हैं जो समाज, संस्कृति और पर्यावरण के लिए घातक भी साबित हो सकते हैं यदि उन पर समय रहते ध्यान नहीं दिया जाए तो। इसलिए पर्यटन एक वरदान भी है और अभिशाप भी।

हमारा ज़िला हाई एण्ड टूरिस्ट डेस्टीनेशन नहीं है और न ही हमारी धारिता क्षमता पर्याप्त है। अभी हम लोग पर्यटन व्यवसाय में शैशव अवस्था में हैं। घरेलू पर्यटन का क्षेत्र अवश्य बन सकता है। हमारे इलाके के बुद्धिजीवियों ने तथा हितसाधकों ने बहुत बार कई सलाह मशविरे सुझाए हैं जिन पर ध्यान दिया जाए तो शायद पर्यटन व्यवसाय पर और निखार आएगा। सकारात्मक पहलू यह हो सकता है कि हमारे ज़िले की आर्थिकी में सुधार हो सकता है। वैसे आम तौर पर पर्यटकों के लिए इने गिने स्थल ही आकर्षण के केंद्र होते हैं जिस कारण इनका आगमन और मनोरंजन का स्थल उन्हीं क्षेत्र विशेष तक सीमित रहता है। इन आकर्षक स्थलों का ज़्यादा से ज़्यादा क्षेत्रों में फैलाव अत्यावश्यक है, जिससे उन अमुक पर्यटक-स्थलों में ज़्यादा भीड़ न बढ़े और उनका प्रबंधन आसान हो पाए। (मनाली से तांदी और केलंग की ओर सड़क पर्याप्त हद तक चौड़ी व ठीक है पर पटन की ओर बहुत संकरी है। इन क्षेत्रों में लगातार जाम का सामना करना पड़ सकता है। अतः ट्रैफिक पुलिस का काम यहां बढ़ जाता है।) इस तरह, पर्यटन के अन्य स्थलों का भी विकास संभव हो पाएगा। हां शीत ऋतु में यह संभावना घट जाती है और यह कुछ स्थल विशेष तक सिमट कर रह जाती है। होटल व्यवसाय, चाहे स्थायी हो या अस्थायी, स्थानीय पकवान, घर के उत्पाद जैसे घी, दूध, दही, सरा या छङ आदि और हमारे हस्त-शिल्प की वस्तुओं की बिक्री, स्थानीय जैविक उत्पाद की बिक्री आदि से आय निःसंदेह बढ़ेगी। साहसिक खेलों की गतिविधियों से, राफ्टिंग और हैंग-ग्लाइडिंग तथा हिच हाइकिंग, ट्रैकिंग, साइकलिंग, पर्वातरोहण आदि युवाओं के लिए बहुत से अवसर सामने हैं।

सुना है कि बढ़ती पर्यटन गतिविधि, विभिन्न तरह की जागरूकता भी लाती है, जैसे साफ-सफाई की, हमारे रहन-सहन में, बोलचाल में, सांस्कृतिक और धार्मिक तथा सामाजिक जागरूकता। हाल ही में लाहुल-स्पीति में सांस्कृतिक गतिविधियों में जो सक्रियता नज़र आई है वह न केवल अपनी संस्कृति में रुचि लेने, जानने समझने तथा अपनी संस्कृति को बचाए रखने का परिचायक है बल्कि बाहरी लोगों को एक तरह से अपनी घाटी की ओर आकर्षित करने का एक प्रयास भी है। संस्कृति का प्रदर्शन इस तरह होना चाहिए या नहीं, यह निःसंदेह बहस का मुद्दा हो सकता है। इसकी बात फिलहाल न करके हम और विषयों पर चिंतन करें तो बेहतर, किंतु एक सांस्कृतिक संक्रमण से लोक-कला, लोक साहित्य, लोक-गीत, और लोक-भाषा का विकास भी संभव है। साथ ही साथ इनके लुप्तप्राय होने के जोखिम भी निहित हैं। वैसे तो यहां के लोग पर्याप्त जागरूक हैं, इसलिए वे अपनी लोक-कला, भाषा, साहित्य और संस्कृति को बचाए रखने में सक्षम हैं, अतः चिंता की यद्यपि बात ही नहीं।

लाहुल-स्पीति का क्षेत्र अत्यंत पावन क्षेत्र है। इसलिए इसकी मासूमियत, इसकी पवित्रतता को बरकरार रखा जाना बहुत आवश्यक है। हो सकता है कि आने वाले समय में प्रमुख धार्मिक स्थलों को विकसित किया जाए। उन मंदिरों, गोम्पाओं को यदि ठीक से विकसित किया जाए तो इससे पर्यटन गतिविधियों में भी बढ़ावा मिलेगा और इन मंदिरों और गोम्पाओं की आय में भी वृद्धि होगी। आय बढ़ने से आप, मेडिटेशन हाल, प्रवचन या सभाकक्ष, स्कूलों की व्यवस्था जिनमें थंका चित्रकला या मूर्तिकला आदि सिखाने के बारे भी सोच सकते हैं। लाहुल-स्पीति स्पिरिचुअल गुरुओं को इन जगहों में ले आने में सक्षम हो पाएगा। जब ऐसा हो पाए तो जिन-जिन क्षेत्रों में गोम्पा और मंदिर हैं, या फिर जो आध्यत्मिक केंद्र हैं, उनके असपास के इलाके पर्यटन गतिविधियों से भरपूर होंगे। इसमें होम-स्टे को भी जोड़ सकते हैं। बाकी आप समझ सकते हैं और क्या-क्या हो सकता है। इस तरह धार्मिक पर्यटन को गति दी जा सकती है।

लाहुल-स्पीति एक ऐसा ज़िला है जहां एक साथ छह-सात भाषाओं को बोलने वाले लोग रहते हैं। उन सभी समुदायों की अलग-अलग संस्कृति होते हुए भी उनकी सांझी विरासत भी है। भाषा अनुसंधानकर्ता या फिर सांस्कृतिक रिसर्चर्स के लिए यह क्षेत्र अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थल है। निःसंदेह इनकी संख्या सीमित होती है फिर भी ऐसे

लोगों को भी यह क्षेत्र आकर्षित कर सकता है। यह छोटा क्षेत्र जैव-विविधता से भरपूर है। इस जैव-विविधता के अनुसंधानकर्ता या शोधकर्ता भी यहां आकर्षित हो सकते हैं। लाहुल-स्पीति के विभिन्न वन्य प्राणियों का साक्षात् दर्शन बहुत ही नज़दीक से किया जा सकता है। इससे इस तरह के पर्यटन व्यवसाय को बल मिल सकता हैं हमारे पहाड़ युवा वलित पर्वत हैं, जिनके गारों में विभिन्न तरह की वनस्पतियां हैं। कुछ हर्बलिस्ट भी इधर की ओर रुख कर सकते हैं। हो सकता है कुछ विशेष किस्म के खनिज हमारे इलाके में मौजूद हों, जिनके बारे अभी खोज नहीं हुई होगी। अतः ऐसे भूगर्भशास्त्री भी हमारी ओर आकर्षित होंगे। स्पीति में जीवाश्म भंडार है, सुना है हमारा यह क्षेत्र कभी टेथिस सागर के नीचे था। कुछ पर्यटक नदी तट से पर्याप्त आकर्षित होते हैं। ऐसे तटक्षेत्रों को भी विकसित करने की ज़रूरत है। इस तरह एक शैक्षिक एवं शोध व अनुसंधानात्मक पर्यटन या फिर इको-टूरिज़्म को हम बढ़ावा दे सकते हैं।

आजकल एक नया पर्यटन व्यवसाय की भी चर्चा ज़ोरों पर है। वह है स्वास्थ्य पर्यटन या हेल्थ टूरिज़्म उस लिहाज़ से लाहुल-स्पीति अत्यंत उत्तम साबित हो सकता है। हमारे प्राकृतिक जल-स्रोतों, साफ वातावरण, साथ ही साथ शुद्ध जैविक खाद्य पदार्थ, हमारे साधारण किन्तु उत्तम किस्म के पकवान तथा ठेठ ग्रामीण जीवन यापन इन पर्यटकों के लिए नवजीवनदायिनी साबित हो सकते हैं। स्वास्थ्य केवल उत्तम खान-पान से ही नहीं उपलब्ध होता है बल्कि एक स्वस्थ जीवन जीने से ही मिलता है। उसके लिए थोड़ा मानसिक और शारीरिक श्रम की भी आवश्यकता पड़ती है। लाहुल-स्पीति वह ज़िला है जो इस मामले में एक अकाट उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है।

मंदिरों, गोम्पाओं के आसपास के स्थल विकसित हो सकते हैं ताकि पर्यटकों को वहां रोका जा सके। इन जगहों में कुछ स्पिरिचुअल गार्डन्ज़, पार्क्स और कुछ बोटेनिकल गार्डन्ज़ विकसित किए जा सकते हैं।

इसी तरह, स्वास्थ्य पर्यटन से जुड़ी एक और महत्त्वपूर्ण बात यह हो सकती है कि

हम अल्टरनेटिव मेडिसन्ज़ को बढ़ावा दें। हमारे लोकल वैद्य या फिर अमचि इस कार्य में लग सकते हैं, अगर उन्हें ऐतराज़ न हो तो। उनका व्यवसाय भी बढ़ेगा और आमदनी भी। और उनकी देखा-देखी और लोग भी शायद इस कार्य को सीख लेंगे। आज के युग में लोग प्राकृतिक इलाज और प्राकृतिक भेषज की ओर मुड़ने अथवा आकर्षित होने लगे हैं। इसी तरह अस्थि भंग को ठीक करने की विद्या को भी गुरु चेला परम्परा से सीखने सिखाने की प्रथा को भी बल मिल सकता है। सर्व विदित है कि इस तरह हेल्थ टूरिज़्म + इको टूरिज़्म + स्पिरिचुयल टूरिज़्म आदि के संयुक्त प्रयास से एक विशिष्ट किस्म के वेलनेस टूरिज़्म को भी बढ़ावा मिल सकता है।

एक बात ज़रूर है कि सभी पर्यटक अच्छे और सौम्य व सभ्य पर्यटक नहीं हो सकते। अतः इस विषय पर ध्यान देना अत्यंत ज़रूरी है ताकि ऐसे पर्यटकों की सूचना स्थानीय पुलिस को दी जा सके। इस हेतु स्थानीय लोगों की एक गुप्त टोली स्थापित की जाए जो अपनी स्थानीय बोली में एक-दूसरे के सम्पर्क में रहें और एक-दूसरे को ऐसे लोगों से संबंधित सूचना देते रहें। फिर स्थानीय होटल वाले, फेरी वाले या फिर जो भी इस व्यवसाय से किसी तरह जुड़े हैं वे अपना सम्पर्क बनाए रखें और इन लोगों को इस विषय में सेंसिटाईज़ करना बहुत ज़रूरी है ताकि हम स्थानीय पुलिस के काम में हाथ बंटा सकें। अगर सम्भव या अनुमत्य हो तो हमारे खानों, कमरों तथा सेवाओं के बदले लिया जाने वाला दाम या कीमत सही-सही होना बहुत ज़रूरी है। न बहुत ज़्यादा हो और न ही बहुत कम। बाहर से आने वाले फेरीवालों पर भी नज़र रखना ज़रूरी। कई बार नकली सामान बेचते नज़र आए ये लोग,जैसे शिलाजित, केसर आदि बेचने वाले लोग पर्यटकों को खूब ठगते हैं। अतः या तो सामान जेनुइन हों अन्यथा घटिया व नकली सामान बेचने वालों को फटकने न दें।

मुझे एक खतरा, नशाखोरी और मादक द्रव्यों का सेवन बढ़ने का, महसूस हो रहा है क्योंकि जेब में पैसा हो तो लोग आसानी से इसका शिकार हो सकते हैं। और छुटपुट आतंकी गतिविधियों के बढ़ने के आसार भी, क्योंकि अटल टनल का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है। पाकिस्तान और चीन की नापाक नज़र इस पर है। अतः अति-सजगता की ज़रूरत है। कुछ लोगों के अनुसार इस आशंका से भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि यहां चोरी, डकैती, छेड़-छाड़ और वैश्यावृत्ति को बढ़ावा न मिले। इसलिए हमें बहुत सारे अप्रत्याशित चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है जिनके बारे आज से पहले हम बिलकुल निश्चिंत रह सकते थे।

कुछ वरिष्ठ विद्वत जनों की राय में, लाहुल के अधिकांश गांव के सभी परिवार को

चाहिए कि वे होम-स्टे में शामिल हों, जिससे बड़े होटलों को बढ़ावा न मिले और आमदनी का संतुलित वितरण हो पाए। यह निःसंदेह हो सकता है। केवल इसमें जो शामिल होना चाहे, यह उनकी इच्छा पर हो क्योंकि जो किन्हीं मजबूरियों की वजह से हो सकता है शामिल नहीं होना चाह रहे हों, उन्हें न शामिल करें। घर में ही एक कमरा जिसमें आपके इलाके के शिल्प के उत्पाद या फिर ताज़ातरीन खेतों अथवा बगीचों के उत्पाद बिक्री के लिए तैयार रखे जा सकते हैं। अगर आप चित्रकार या पोन हैं तो आपके थंका चित्र, यदि मूर्तिकार हैं तो आपकी बनाई मूर्तियां और जुराब, स्वेटर बुनते हैं तो उन उत्पादों को, यदि आप लेखक या कवि हैं तो आपकी कोई पुस्तक, किसान हैं तो जो ताज़ातरीन उत्पाद हो उसे, यदि आप कोई शिल्पकार हों तो वह अपने द्वारा तैयार किया गया कोई भी चीज़ प्रदर्शन और बिक्री के लिए घर में ही रख सकते हैं।

लाहुल-स्पीति के सुदूर गांव भी इस पर्यटन गतिविधि से अछूते न रहें उसके लिए हो सकता है शॉर्ट ट्रिप्स या ट्रेकिंग के कार्यक्रम विकसित हो पाएंगे। जिस घर में ठहरे उनसे संपर्क पूर्वतः साधा जा सकता है। आज के युग में यह सब आसान है। वहां भोजन और आवास की व्यवस्था हो। घी-दूध, मदिरा जो घरेलू उत्पाद हो उनका सेवन अवश्य कराया जाए। इस तरह जो इस आयोजन के कर्ता-धर्ता हैं, वे और स्थानीय लोग भी लाभान्वित होंगे और जो पर्यटक होंगे उनको भी अच्छा लगेगा।

लाहुल-स्पीति की एक या अनेक सांस्कृतिक टोलियां अस्तित्व में आ सकती हैं। इन्हें अपने इलाके की हर सांस्कृतिक पहलू की जानकारी होना आवश्यक है। वे एक स्टेज या किसी सभागार में अपनी प्रस्तुतियां समय-समय पर दे। इसके लिए आयोजनकर्ता उनका खर्चा उठाएं। कुछ टिकट भी लगाए जाएं। लाहुल के जो अग्रणी संगीतज्ञ, गायक-गायिकाएं, वादक, लोक-कला, लोक-गीत संगीत मर्मज्ञ उनका

मार्गदर्शन करेंगे तो इससे इस विधा में अवश्य निखार आएगा। निःसंदेह हमारे वेटरन कलाकारों की सेवाएं बड़े काम की साबित हो पाएंगी। संस्कृति मात्र लोकगीत, लोकनृत्य या फिर लोक संगीत तक ही सीमित नहीं, पूरी जीवनचर्या इससे जुड़ी है। अतः स्टेज में प्रस्तुति एक पक्षीय झलक मात्र है। पर इससे एक लाभ स्थानीय कलाकार को हो सकता है। कुछ और उधार के विचार जो एक तरह से मार्गनिर्देशक साबित हो सकते हैं, इस ज़िला में आने वाले पर्यटकों के लिए -

१. उनका व्यवहार अच्छा हो। हम स्वयं भी अच्छा व्यवहार रखें।

२. हाथ में खाने की चीज़ें उठाए, इधर-उधर ने घूमें।

या फिर अपने पानी की खाली प्लास्टिक बोतल या रेपर्ज़ जहां कहीं न फैंकें।

३. खाना बनाते वक्त वहां दखल न दें, अपने जूठे चम्मच खाने के बर्तन में न डुबोएं।

४. सार्वजनिक यातायात के साधनों का ज़्यादा उपयोग करें।

५. जहां कहीं सार्वजनिक स्थल पर नाक साफ न करें।

६. गंदगी न फैलाएं।

७. लोकल डिश का अवश्य आनंद लें और हम स्वयं इसकी गुणवत्ता सुनिश्चत करें।

८. स्थानीय उत्पाद को खरीदें, कलाकृति, जुराब, पूले आदि।

९. ऐतिहासिक स्मारकों और धार्मिक स्थलों में किसी तरह का लेखन द्वारा, छूकर खराब न करें।

१०. शान्ति से रहें। खास कर जब आप सार्वजनिक यातायात के साधनों का उपयोग कर रहे हों तब।

११. सदा बाएं हाथ चलें।

१२. किसी भी जगह बिना अनुमति के अपना कैमरा या मोबाइल का फलैश ऑन न करें और न ही खेतों से कोई उपज और पेड़ों से कोई फल तोड़ें।

१३. कहीं पेशाब या टट्टी न करें, स्थानीय प्रशासन जगह-जगह टॉयलेट्स की व्यवस्था करे।

१४. स्थानीय महिलाओं से सभ्य व्यवहार करें।

इसी तरह थोड़ी और भी बाते जोड़ी जा सकती हैं। इस तरह के मार्गनिर्देशक पट्टिकाएं जगह-जगह रखी जाएं।

सम्पर्क : रणवीर सिंह शाशनी, गांव व डाक० लोट, लाहुल।
e-mail: ranvirsinghkullu54@gmail.com

पर्यटन का लाहुल की कृषि अर्थव्यवस्था पर किस तरह के प्रभाव हो सकते हैं?

विक्रम कटोच

उत्तम खेती मध्यम व्यापार
निकृष्ट चाकरी करे गवार।

पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सुधार के लिए काम करने वाले श्री कुलभूषण उपमन्यु के अनुसार 1970 के समय में कोई भी सरकारी नौकरी नहीं करना चाहता था। कृषि करके लोग ज़रूरत का कमा लेते थे और हंसी खुशी जीवन निर्वाह करते थे। तब से लेकर अब तक स्थिति बहुत बदल चुकी है। सरकारी नौकरी में आमदनी 150 से 300 गुणा बढ़ी है। इसलिए लोगों का रुझान सरकारी नौकरी की तरफ या व्यापार की तरफ जा रहा है। प्राचीन समय में खेती एक स्वावलंबी व्यवस्था थी। लाख रुपये में भी अगर लोग अच्छे से खेती करेंगे तो किसी चीज़ की कमी नहीं होगी। खेती करने वाला किसी का गुलाम नहीं होता, अपनी ज़मीन में वह राजा है। खेती में व्यक्ति स्वतंत्र है। पर्यटन और कृषि दो लोक संस्कृतियां हैं और आम प्रचलित पर्यटन के इन स्थानीय लोगों को ऐसे पर्यटन को बढ़ावा देना चाहिए जोकि दोनों का मिश्रण हो। ग्रामीण इलाकों में पर्यटन का मॉडल ऐसा होना चाहिए जहां ग्रामीण इलाकों की बेश-भूषा, प्रकृति, खान-पान और यहीं बनी हुई चीज़ों की मांग हो।

सभी समुदाय के लोगों को मिलकर सामुदायिक भूमि पर पर्यटन से सम्बन्धित गतिविधियों को बढ़ावा देना चाहिए। ऐसी भूमि जहां पर गांव की बरतनदारी हो वहां पर सामुदायिक पर्यटन को बढ़ावा देकर आमदनी का कुछ हिस्सा पर्यटकों को शौचालय और स्वच्छ पानी की व्यवस्था करने में व्यय की जा सकती है। आर्थिक लाभ के हिस्से के बंटबारे की शर्तें पहले से तय हों। समुदाय की आमदनी का पर्यावरण संरक्षण में भी लाभ होना चाहिए।

अगर हम लाहुल के सन्दर्भ में बात करें तो यह क्षेत्र अटल सुरंग रोहतांग और पर्यटन की वजह से अत्यधिक चर्चा में रहा। द ट्रिब्यून में छपे 25 अप्रैल, 2021 की एक रिपोर्ट के अनुसार इस दिन 5674 वाहन अटल सुरंग के आप-पार हुए। पर्यटक मुख्यतः बर्फ देखने के लिए लाहुल का रुख सर्दियों में कर रहे हैं। इसे देखते हुए कहा जा सकता है कि लाहुल में शीतकालीन पर्यटन की अपार सम्भावनाएं हैं। सुरंग के यातायात के लिए खुल जाने के बाद लाहुल के किसानों को रोहतांग पास (3978 मीटर) पार करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। स्वास्थ्य सुविधाओं और कृषि से सम्बन्धित ज़रूरतों के लिए लाहुल के लोगों का कुल्लू-मनाली आना-जाना सुगम हो गया है। अमर उजाला की एक रिपोर्ट के अनुसार ३ अक्तूबर, 2020 को प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटन के पश्चात् अब तक सुरंग से पांच से छः लाख पर्यटक लाहुल आ चुके हैं।

सिस्सू और कोकसर पंचायत के पंचायत समिति सदस्य सुनील खिंगोपा के अनुसार सिस्सू पंचायत में 70 प्रतिशत और कोकसर पंचायत में लगभग 80 प्रतिशत किसानों ने अपनी कृषि योग्य भूमि, कृषि के लिए ही अन्य लोगों को लीज़ या ठेकेदारी पर दे दी है। युवाओं का रुझान पर्यटन की तरफ बढ़ गया है।

लीज़ और ठेकेदारी प्रथा पर उपमन्यु जी कहते हैं कि सबलेटिंग की प्रथा पर नज़र रखी जानी ज़रूरी है। कृषि और समुदायिक पर्यटन लाहुल की धरती पर साथ-साथ चल सकते हैं। स्थानीय युवाओं को अपने इलाके की पूरी जानकारी बटोरनी चाहिए ताकि ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा मिले।

विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार कृषि से सम्बंधित पर्यटन में कृषि योग्य भूमि को पर्यटकों के लिए खोला जाता है जहां पर पर्यटकों को आधुनिक और प्राचीन कृषि के बारे में विस्तार से जानकारी मिले।

शहरों में रहने वाले लोगों का भूमि से संपर्क न के बराबर है अतः बहुत से पर्यटकों को कृषि से संबंधित गतिविधियों में शामिल किया जा सकता है। कृषि से सम्बंधित

पर्यटन तीन सिद्धान्तों पर काम करता है -

१. पर्यटकों को कुछ नया देखने के लिए हो।

२. पर्यटकों के लिए कृषि सम्बंधित गतिविधियां हों।

३. पर्यटकों के लिए कुछ खरीदने के लिए हो। इन सिद्धांतों पर चलकर ग्रामीण उत्पादों की मांग बढ़ाई जा सकती है।

पर्यटन व्यवसायी कमल राशपा के अनुसार वह जिस्पा में कृषि योग्य भूमि को लीज़ पर लेकर केम्पिंग करते थे लेकिन कोरोनाकाल के दूसरे वर्ष में उन्होंने शौचालय के लिए बने सीमेंट के स्ट्रकचर को तोड़ कर हटा दिया है और भू मालिक दोबारा उस ज़मीन पर कृषि से सम्बन्धित गतिविधियां शुरू कर रहे हैं। इस तरह हम देख सकते हैं कि पर्यटन एक बेहद ही नाजुक व्यवसाय है जिसे कई सारे कारक प्रभावित कर सकते हैं।

पर्यटन को प्रभावित करने वाले कारक -

१. मौसम

२. प्राकृतिक आपदा

३. बीमारियां

४. युद्ध से प्रभावित देश

५. अर्थव्यवस्था

६. राजनैतिक हालात आदि।

पर्यटन का लाहुल की कृषि अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव -

सकारात्मक प्रभाव -

१. पर्यटन की मदद से कृषि अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सकता है इसके अर्न्तगत कृषि उत्पादों को सीधे पर्यटकों को बेच कर अधिक राजस्व प्राप्त किया जा सकता है।

२. पर्यटन से शहरी लोगों को कृषि भूमि से दोबारा परिचित करवाया जा सकता है जोकि बहुत समय से खो चुका है।

३. कृषि से सम्बन्धित पर्यटन में होम स्टेज़ को बढ़ावा मिलता है और स्थानीय लोगों को इससे लाभ होता है।

४. पर्यटन की मदद से सीबकथोर्न जैसे पौधों को बढ़ावा मिलता है।

५. पर्यटन की मदद से पर्यटक कृषि से सम्बन्धित गतिविधियों को गहराई से समझते हैं। पर्यटक जब स्थानीय संस्कृति, पर्यावरण और जीवन को गहराई से समझने लगते हैं तो यह राजनैतिक परिवर्तन लाने में मददगार साबित हो सकता है।

६. पर्यटन की मदद से पर्यटकों और स्थानीय लोगों की कई वर्जनाएं टूटती हैं। जोकि बेहतर समझ को बढ़ावा देती है।

७. सर्दियों में लाहुल में बर्फवारी और ठंड की वजह से खेतीबाड़ी से सम्बंधित काम नहीं होता। अटल टनल रोहतांग के आम यातायात के लिए खुल जाने के बाद स्थानीय लोगों को सर्दियों में भी पर्यटन से राजस्व की प्राप्ति हो सकती है।

८. कृषि से सम्बंधित पर्यटन में प्रचलित पर्यटन की तुलना में प्रदूषण कम होता है क्योंकि पर्यटक कृषि योग्य भूमि में ज़्यादा समय बिताते हैं और नया अनुभव ग्रहण करते हैं।

१०. कृषि से सम्बन्धित पर्यटन में स्थानीय युवाओं को रोज़गार मिलता है।

११. कृषि से सम्बन्धित पर्यटन से लाहुल से पलायन को रोका जा सकता है। पर्यटन को कृषि से जोड़कर अधिक राजस्व प्राप्त किया जा सकता है।

१२. कृषि से सम्बन्धित ज्ञान को बढ़ाने में बाहर से आने वाले पर्यटक मददगार सिद्ध हो सकते हैं।

नकारात्मक प्रभाव -

१. कृषि पर्यटन पर्यटकों के लिए एक वस्तु बन कर रह सकती है। अनुभव ग्रहण करने के बाद पर्यटक कृषि की महत्ता को हमेशा के लिए समझें यह ज़रूरी नहीं है।

२. पर्यटन के ग्रामीण इलाकों में आने से बाज़ार में वस्तुओं की कीमत बढ़ना तय है। इसके लिए ग्रामीण इलाकों में ग्रामीण क्षेत्रों में बने उत्पादों की मांग बढ़ाना ज़रूरी है।

३. पर्यटन के ग्रामीण इलाकों में आने से प्लास्टिक कूड़ा प्रबन्धन की समस्या बढ़ सकती है।

४. पर्यटन से ग्रामीण इलाकों के प्राकृतिक संसाधनों पर अतिरिक्त प्रभाव बढ़ेगा। पहाड़ों पर गलेशियरों का पिघलना प्रदूषण की वजह से बढ़ सकता है।

५. पर्यटन स्थानीय युवाओं में संशय पैदा कर सकता है और वह गलत दिशा में भटक सकते हैं। पर्यटकों की जीवन शैली की नकल करना स्थानीय लोगों के लिए घातक हो सकता है।

६. शहरी और ग्रामीण लोगों की जीवन शैली में भिन्नताओं की वजह से उनके बीच आपसी टकराव की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

७. भूमिहीन/कम भूमि वाले किसानों के लिए कृषि पर्यटन का अधिक लाभ न होकर प्राकृतिक संसाधनों का ही ज़्यादा उपयोग हो सकता है जिस पर कि सबका समान हक है।

८. पर्यटन के आने से ग्रामीण इलाकों में अनियंत्रित निर्माण कार्य शुरू हो सकता है। यह पर्यावरण को नुकसान पहुंचाएगा।

९. पर्यटन को बढ़ावा मिलने के साथ-साथ किसानों का कृषि पर से रुझान कम हो सकता है।

१०. कृषि योग्य भूमि की ठेकेदारी/लीज़ प्रथा पर्यटन को बढ़ावा मिलने के साथ-साथ बढ़ सकती है।

ठेकेदारी प्रथा बढ़ने से खेतों की उर्वरता पर प्रभाव पड़ सकता है। क्योंकि ठेकेदारों का सारा ध्यान अधिक लाभ कमाने पर होगा।

अन्तर -

कृषि से सम्बंधित पर्यटन में परम्परागत पर्यटन के मुकाबले प्रदूषण कम होता है। कृषि

से सम्बन्धित पर्यटन में आनंद और शिक्षा के उद्देश्य से खेती की भूमि का दौरा ग्रामीण अनुभव का महत्वपूर्ण भाग है। कृषि से सम्बंधित पर्यटन गतिविधियों में फलों को चुनना, बीजों का बोना, फसल काटना, शराब चखना, मधुमक्खी पालन, दूध निकालना आदि शामिल हैं। कृषि से सम्बंधित पर्यटन में पर्यटकों को पांच सितारा होटल में रुकवाने की बजाए खेतों के आस-पास बने गेस्ट हाऊस या होम स्टे में रुकवाया जा सकता है और उन्हें स्थानीय व्यंजन खाने-पीने के लिए मुहैया करवाया जा सकता है।

शिमला विश्वविद्यालय में पर्यटन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ० चन्द्र मोहन परशीरा के अनुसार अभी यह साफ तौर पर कहना मुश्किल होगा कि पर्यटन किस तरीके से कृषि अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेगा लेकिन पर्यटन आर्थिकी के मामले में कृषि को पीछे छोड़ देगा। लाहुल के सन्दर्भ में कृषि की बात करें तो २०२० में लाहुल के किसानों को ऐतिहासिक कीमतें फसलों के बदले मिले हैं। लाहुल की कृषि भूमि ने फसलों के मामले में अनेकों विविधताएं देखी हैं। स्थानीय किसान कृषि में आधुनिक उपकरणों का भी बहुत प्रयोग कर रहें हैं।

लाहुल आलू उत्पादक संघ के चैयरमेन सुदर्शन ज़स्पा के अनुसार पर्यटन के आने से कृषि योग्य भूमि कम पड़ेगी क्योंकि बहुत से युवाओं ने जिस्पा और सिस्सू में कैम्पिंग शुरू कर दी है। पर्यटन के आने से कृषि पर समय देना मुश्किल होगा और साथ ही साथ स्थानीय लोगों का झुकाव पर्यटन की तरफ बढ़ेगा। उन्होंने त्रिलोकनाथ और उदयपुर के दो किसानों का ज़िक्र किया जिन्होंने अपनी कृषि योग्य भूमि पार्किंग में तबदील की है। हालांकि पटन घाटी में कई किसान दो बार फसल लगाते हैं जोकि पर्यटन के मुकाबले अब तक उन्हें बहुत फायदा पहुंचा रहा है।

पटन घाटी के तांदी गांव में १ प्रतिशत किसानों ने और गौशाल में २ प्रतिशत किसानों ने ही कृषि योग्य भूमि पर पर्यटन से सम्बन्धित यूनिट स्थापित किए हैं।

तांदी गांव के पर्यटन उद्यमी और आलू के व्यापारी अमित ठाकुर के अनुसार कृषि में पर्यटन यूनिट स्थापित करने के मुकाबले लागत बहुत कम है। साथ ही साथ किसानों को गोभी और मटर के भी ऐतिहासिक लाभ मिल रहे हैं। पर्यटन उद्यमों को स्थापित करने में भारी रकम की आवश्यकता होती है ताकि पर्यटकों को मूलभूत सुविधाएं मिल सकें। लाहुल में कृषि के क्षेत्र में बेहद विविधताएं अभी भी देखना बाकी है। सीबकथोर्न जैसे पौधे के बेरी की मांग बाज़ार में बढ़ने वाली है। शरदकालीन पर्यटन में किसानों को ऑफसीज़न में भी कमाने का मौका मिल रहा है।

ग्रामीण और कृषि पर्यटन अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के उपाय :-

१. ग्रामीण इलाकों में आने वाले पर्यटकों को कृषि पर्यटन के बारे में प्रोत्साहित करना होगा।

२. एक ऐसी संस्था के बारे में सोचा जा सकता है जोकि ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने का काम करे।

३. पर्यटकों की सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित करने के बाद ही ग्रामीण और कृषि पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।

४. स्थानीय महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए पुलिस प्रशासन और महिला मण्डलों और पंचायतों में सहयोग को बढ़ाया जाए।

५. पर्यावरण को पर्यटन से होने वाले नुकसान पर नज़र रखना ज़रूरी है।

६. स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर किया जाए।

७. देश में पर्यटन से सम्बन्धित होने वाले मेलों और ट्रैनिंग में भाग लिया जाए।

सोशल मीडिया और टेक्नोलॉजी का सहारा लेते हुए कृषि पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।

निष्कर्ष :- पर्यटन से किसी भी समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देकर हस्तशिल्प कला को बढ़ावा दिया जा सकता है। पर्यटन कृषि के साथ-साथ चलते हुए राजस्व कमाने का एक ज़रिया बनाया जा सकता है। प्रचलित पर्यटन की तरह ही ग्रामीण पर्यटन में कूड़ा प्रवन्धन एक समस्या है जिसके बारे में स्थानीय जनता को विचार विमर्श करना ज़रूरी है।

लाहुल में पर्यटकों की आमद बढ़ने के साथ-साथ स्थानीय लोगों का यहां की संस्कृति और रीति-रिवाज़ों की रक्षा करना पहला कर्त्तव्य है। अटल सुरंग रोहतांग के खुलने के बाद जो कयास लगाये जा रहे थे वैसा अभी कुछ भी नहीं हुआ है। कोविड-19 महामारी के चलते सही तस्वीर सामने आने में अभी कुछ और वक्त लग सकता है।

सम्पर्क : गांव व डाकघर तांदी, लाहुल-स्पिति, हि.प्र.।

e-mail : vkatoch11@gmail.com

पर्यटन का परिवार संरचना, सामाजिक मूल्य व्यवस्था एवं रीति-रिवाज़ों आदि पर पड़ने वाले प्रभाव एवं निपटने के तौर-तरीके

निर्मला वैद

सर्वप्रथम दिनांक 3 जून, 2000 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी ने सामरिक महत्व के अटल टनल रोहतांग के निर्माण की औपचारिक घोषणा की थी। कालान्तर में दिनांक 3 अक्टूबर, 2020 को देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के हाथों टनल का लोकार्पण होना यह दर्शाता है कि अटल टनल रोहतांग सामरिक दृष्टि से केंन्द्र सरकार के लिए कितना महत्त्वपूर्ण है। विशेषकर करगिल युद्ध के पश्चात् रक्षा मंत्रालय के लिए टनल का निर्माण कार्य जितनी जल्दी संभव हो, सम्पन्न करना आवश्यक हो गया था। क्योंकि, पाकिस्तान सीमा के साथ तैनात भारतीय सेना के लिए रसद पहुंचाना इस रास्ते से कहीं अधिक सुगम, सुरक्षित और कम खर्चीला पड़ता है।

पूरे प्रदेश में सूचना तंत्रों से जिस प्रकार से अटल टनल रोहतांग को प्रचार मिला, वैश्विक महामारी के चरम पर होने के बावजूद पर्यटकों का हुजूम उमड़ पड़ा। प्रत्येक दिन मनाली और सिस्सू के मध्य लोगों का घंटों जाम में फंसे रहना, भविष्य के लिए एक ज्वलंत प्रश्न खड़ा कर दिया है। जबकि आगे चलकर यातायात की यह समस्या और अधिक बिगड़ेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

जैसा कि हमने देखा कि आज से 50—60 वर्ष पहले लाहुल में यातायात के लिए कोई साधन नहीं हुआ करता था। ज़रूरत का सारा सामान कुल्लू-मनाली से पीठ पर उठाकर अथवा घोड़े-खच्चरों पर लादकर पहुंचाते थे। पूरी घाटी का सम्पर्क रोहतांग दर्रा की वजह से साल भर में छह महीने के लिए पैदल यात्रियों के लिए भी बन्द रहता था। अर्थात् पूरी घाटी छह महीने के लिए शेष विश्व से पूर्णतः अलग-थलग पड़ जाती थी। लोगों का जीवन बेहद कठिन था। आमदनी के साधन सीमित थे। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं नाममात्र की थीं। लोगों के पास आज की तरह मनोरंजन के विविध साधन उपलब्ध नहीं थे। लेकिन, इतना कठिन जीवन होने के बावजूद लोग खुश और संतुष्ट जीवन-यापन करते थे। अपने सीमित संसाधनों से जीवन की तमाम खुशियां ढूंढ लेते थे। गांववासियों में आपसी तालमेल और मेल-मिलाप में कोई कमी नहीं थी। हर कोई एक-दूसरे की मदद के लिए तत्पर रहता था। तीज-त्यौहारों को बड़ी श्रद्धा और परम्परागत तरीके से मनाया जाता था। जैसे फागली त्यौहार का ही उदाहरण ले लीजिए। जब गांववाले हफ्तों के हिसाब से एक-दूसरे से मिलने और खाने-पीने में मशगूल रहते थे।

समय ने करवट लिया। आज एक के बाद एक विभिन्न प्रकार की नकदी फसलों और अपनी दिन-रात की मेहनत ने घाटी की अर्थव्यवस्था को पलटकर रख दिया। हम साधनहीन से साधन-सम्पन्न की श्रेणी में आ गए, जिस कारण समाज भौतिकतावादी मनोवृत्ति से निरन्तर घिरता जा रहा है। अब अटल टनल के खुलने से घाटी वासियों को विकास के बहुआयामी विकल्प उपलब्ध हो गए हैं।

जैसा कि मैं शुरू में स्पष्ट कर चुकी हूं कि अतीत में हमारे पास संसाधनों की, धन की कमी थी, लेकिन जीवन में आनंद और मस्ती थी। संयुक्त परिवार में रहकर सब एक-दूसरे की मदद करते थे। एक-दूसरे की भावनाओं की कद्र करते थे। कालांतर में लोगों में धन-अर्जन की होड़-सी लग गई। पारिवारिक संरचना में बिखराव आने लगा। संयुक्त परिवार प्रणाली का हिमाचल के इतिहास की पुस्तकों में गुणगान किया गया है, वही प्रणाली शनैः-शनैः क्षीण पड़कर बिखरने लगी है। जब परिवार टूटने लगे, स्वाभाविक है कि समाज में सामाजिक समरसता में कमी और सामाजिक मूल्यों में स्खलन स्वतः शुरू हो गया। ब्याह-शादी, तीज-त्यौहार और अन्य सामाजिक समारोहों में निभाये जाने वाले रस्मो-रिवाज़ को धीरे-धीरे तिलांजलि देते आ रहे हैं। शायद यही वजह है कि गांव-गांव में मनाये जाने वाले स्थानीय मेलों और त्यौहारों की कहीं गूंज अब नहीं सुनाई देती है। आज जिस संक्रमण-काल से लाहुल गुज़र रहा है, यदि यही दौर-दौरा कायम रहता है, तो भविष्य और विद्रूप होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। अटल टनल ने तरक्की के नये आयाम खोल दिए हैं। लाहुल, जो कभी पर्यटकों के लिए अनजान गंतव्य हुआ करता था, आज प्रतिदिन हज़ारों पर्यटक घूमकर चले जाते हैं। जब बाहर से पैसा आएगा, तो स्थानीय लोगों की आर्थिकी निश्चित रूप से बेहतर होगी। यही अधिक धन-प्रवाह हमारे सामाजिक और पारिवारिक ताने-बाने को नुकसान न पहुंचाए, यह एक ज्वलंत मुद्दा है, बहस का विषय है। क्योंकि मुझे डर है कि कहीं हम अधिक धनार्जन करते-करते पूर्वजों की दी हुई थाती, उनके दिए संस्कारों को संरक्षित कर पाने में कामयाब नहीं होते हैं, तो धन-माया हमारे पास खूब होगी पर पारिवारिक और सामाजिक मान्यताएं तथा मूल्य दूर पीछे कहीं छूट चुके होंगे। अतः धनार्जन के साथ-साथ जीवन-मूल्यों को, अच्छे रीति-रिवाज़ों को संजोकर रखना होगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम जनजातीय हैं। जिनकी अपनी विशिष्ट पहचान है। विशिष्ट पारिवारिक और सामाजिक मान्यताएं हैं। इन्हें सहेजकर, संजोकर रखना होगा। तभी हम सही मायनों में प्रगतिशील और गतिशील समाज कहलाने के हकदार होंगे।

सम्पर्क : गांव व डाक०, जाहलमा, लाहुल।
e-mail vaid.nirmla@gmail.com

रोहतांग में सुरंग : किंवदंतियां और हकीकत

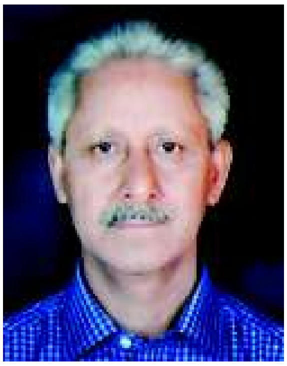

शेर सिंह

लाहुल और रोहतांग से संबंधित मुझे वो किंवदंती याद आ रही है, जिसमें लाहुल को पांडवों की माता कुंती का मायका होने का वर्णन है। इस बहुप्रचलित किंवदंती के अनुसार एक बार पांचों पांडव जब माता कुंती के साथ कुंती का मायका लाहुल को जा रहे थे, तो रोहतांग पर्वत के शिखर तक पहुंचने के लिए पहाड़ की ऊंचाईयां चढ़ते-चढ़ते, चलते-चलते माता कुंती थकने लगी। थक जाने के कारण चलने में पिछड़ने लगी। अधिक थकावट के कारण जब आगे चलना दुश्वार होने लगा, तो बलशाली भीम से माता का कष्ट देखा नहीं गया। भीम ने अपने पांव की एक ज़ोरदार ठोकर पर्वत के शिखर पर मारी। भीम के पांव की ठोकर से रोहतांग पर्वत का शिखर धंस गया। धंसकर एक दर्रे के रूप में परिवर्तित हो गया। अब समतल व चौड़ा दर्रा बन जाने से माता कुंती सहित पांचों पांडवों को चलने में बहुत आसानी हो गई। पैर की ठोकर से बन गए दर्रे को और अधिक समतल तथा नीचे करने के विचार से, भीम ने अपने पैर को दूसरा ठोकर मारने के उद्देश्य से फिर ऊपर उठाकर दर्रे पर चोट करना ही चाहा था, कि माता कुंती ने उसे तुरंत रोक दिया। कहा, ''पुत्र! ऐसा मत करना... यदि रोहतांग में रास्ता आसान हो जाएगा, तो मेरे मायके लाहुल को चोर-लुटेरे, डकैत-ठग लूट लेंगे। मेरे मायके को कलुषित-कलंकित, तथा संस्कृति-संस्कारों को नष्ट-भ्रष्ट कर देंगे।'' माता कुंती के कहने पर भीम ने दूसरा ठोकर मारने का विचार त्याग दिया। कहते हैं रोहतांग में जो दर्रा बना हुआ है, वो भीम के पांव की ठोकर से ही बना है।

यह तो थी किंवदंतियां और जनश्रुतियां! जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता है। लेकिन आम लोगों की आस्था और विश्वास, किंवदंतियों,दंतकथाओं को सहजता से खारिज नहीं करता है। जीवन में आस्था बहुत बड़ी नेमत है। आस्था और विश्वास से पर्वत गिराए जा सकते हैं। नदियां सुखाई जा सकती हैं। विश्वास यदि मज़बूत हो, इरादे पक्के और नेक हों, तो कुछ भी असंभव नहीं है। ऐसे असंभव को संभव होते हुए हम अपनी आंखों से देख और जान चुके हैं। रोहतांग में सुरंग का बन जाना, ऐसे ही असंभव का संभव होने के, हम सभी प्रत्यक्षदर्शी गवाह हैं। हमारे पूर्वजों अथवा कुछ दशकों पहले तक किसी ने शायद कल्पना भी नहीं की होगी, कि लाहुल को जाने या आने में इतनी आसानी हो जाएगी। यहां के लिए यानी लाहुल को हर कोई जाने के लिए उत्सुक और उतावला हो उठेगा। यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि होने के साथ ही साथ, समूची लाहुल घाटी के लिए एक वरदान जैसा है, जिसे वैज्ञानिकों एवं उच्चे टेकनॉलोजी ने संभव कर दिखाया है। एक नया इतिहास रचा जा चुका है 3 अक्तूबर, 2020 का दिन सदा याद रखा जाएगा, जिस दिन देश के वर्तमान प्रधानमंत्री ने रोहतांग में ''अटल टनल रोहतांग'' का लोकापर्ण करते हुए, इसे राष्ट्र को समर्पित किया था। भारतीय सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) द्वारा नया कीर्तिमान स्थापित हो चुका है । श्रेष्ठता और उच्च्व मानकता का नया अध्याय जुड़ चुका है। देश और विज्ञान की इस उपलब्धि पर घाटी के निवासी अति प्रसन्नत एवं उत्साहित हैं।

रोहतांग में टनल बनने से पूर्व, लाहुल घाटी बाहर के अधिकांश लोगों हेतु एक मिथ की तरह था। मिथक तो बेशक सर्वव्यापक, मगर काल्पनिक होता है। मिथक के सच्चाई रूपी हाथ-पैर नहीं होते हैं। मिथ और सच्चाई में यही अंतर है। मिथ की कल्पना-परिकल्पना कर सकते हैं, लेकिन सच वास्तविकता तथा ठोस धरातल पर आधारित होता है। अब रोहतांग में लगभग 9 किलोमीटर लंबी सुरंग बन जाने से, लोगों का आवागमन बहुत आसान व अत्यंत सुगम, सुरक्षित बन चुका है। किसी शारीरिक व मानसिक कष्ट के बिना 10 से 15 मिनट के भीतर लाहुल के सिस्सू में पहुंचना एक सपने जैसा है। पहले रोहतांग पार जाने हेतु लगभग पूरा दिन ही लग जाता था, जो अब केवल मिनटों में बदल चुका है। हमारे देश और विशेष रूप से लाहुल के लिए, सही मायनों में यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।

लाहुल घाटी के लोग जो लाहुल में अब तक पर्यटन अथवा किसी अन्य क्षेत्र में कोई भी गतिविधियां नहीं कर पाने पर, मन मसोस कर रह जाते थे। परन्तु अब सुरंग मार्ग से सुगम आवागमन से गदगद हैं। उनके हज़ारों-सैंकड़ों वर्षों के सपने साकार हो उठे हैं। देश-विदेश से टूरिस्टों के भारी आगमन पर एक प्रकार से किंकर्तव्यविमूढ़ हो उठे हैं। प्रतिदिन भारी संख्या में बाहरी लोगों, पर्यटकों के निर्बाध आगमन पर उनके भोजन, प्रवास हेतु जुट गए हैं। लाहुल की विभिन्न घाटियों, विशेषकर चन्द्रा वैली, भागा वैली और पट्टन वैली में प्रचलित संस्कृति-संस्कारों को प्रदर्शित करने सहित, आगंतुकों के आकर्षण हेतु अनेक अनूठे सांस्कृतिक आयोजन इत्यादि आयोजित किये गए हैं, अथवा किये जा रहे हैं। इससे पहले, घाटी सबके लिए अनजानी-अछूती थी अब सारी दुनिया के लिए, अली बाबा के ''खुल जा सिम... सिम'' की तरह हो गई है। सम्पूर्ण घाटी न केवल खुली किताब की तरह हो गई है, बल्कि सबके आकर्षण का केन्द्र बन चुकी है। बाहर से आने वाले पर्यटकों, अतिथियों हेतु घाटी के अनेक लोगों ने होटल, होम स्टे इत्यादि बना लिए हैं। अपने पारंपरिक निजी घरों को होम स्टे के तौर पर परिवर्तित कर, पर्यटन विभाग के साथ पंजीकृत करवा लिए हैं। घाटी के निवासियों हेतु आमदनी, खुशहाली तथा बाहरी लोगों को, उनकी संस्कृति को जानने-समझने का साधन एवं संपर्क बन गए हैं । हजारों पर्यटक प्रतिदिन सुरंग मार्ग से

लाहुल घाटी में पहुंच रहे हैं। यहां की अब तक अनछुई प्राकृतिक सुंदरता और विशिष्ट संस्कृति पर मुग्ध, मोहित हो रहे हैं। इतनी संख्यां में आते पर्यटकों से घाटी के जनसामान्य जहां गदगद हैं, वहीं उनकी आय आसमान की ऊंचाइयां छू रही है। विशेषकर सिस्सू, तांदीपुल, करगा, केलंग, जिस्पा, दारचा, उदयपुर व त्रिलोकनाथ के क्षेत्र पर्यटकों के भारी आगमन से सातवें आसमान में हैं। धन और यश की किसे चाहत नहीं?

जहां तक पर्यटकों के भारी आगमन से पर्यटन कारोबार अथवा उससे जुड़े लोगों का सवाल है, तो यह केवल कुछ चुनिंदा गांव जो मुख्यतः सड़क से जुड़े होंगे, को ही लाभ होगा। जैसा ऊपर की पंक्तियों में कुछ गांव के नामों का उल्लेख किया गया है, अधिकांश उन्हीं को। मयाड़ घाटी में थान पट्टन एक बहुत संभावना वाला क्षेत्र है। परन्तु यहां तक पहुंचने के लिए लिंक रोड की अनदेखी तथा रख-रखाव के अभाव में कितना संभव हो पाएगा? हां, उदयपुर के आगे मड़ग्रां और उसके आस-पास का क्षेत्र पर्यटन के लिए बहुत उपयुक्त है। इसे विकसित करने की आवश्यकता है। अपनी प्राकृतिक सौंदर्य-सुंदरता के कारण, इसे मिनी मनाली कहा जाता है। मुख्य सड़क के साथ वाले गांवों में बने अथवा बनाए जा रहे होम स्टे में, केवल ऐसे लोग ठहरेंगे जो रात्रि विश्राम के इरादे से रुकेंगे। इससे ज़्यादा की संभावना नहीं दिखती है। कृषि से संबंधित कार्य प्रमुखता में ही रहेगा। बेहतर आवागमन के कारण खेती-बाड़ी सुगम होने के साथ-साथ, किसानों की आय में पर्याप्त वृद्धि संभावित है, बशर्ते कि सिंचाई के लिए पानी की सुविधा पहले की भांति उपलब्ध हो। लेकिन इतनी भारी संख्या में पर्यटकों, बाहरी लोगों के आगमन से लाहुल की अपनी संस्कृति, लोककला, लोकजीवन अथवा जीवन शैली पूर्व की भांति अक्षुण्ण रह पाएंगी? लोक परंपराएं कितनी बची रहेंगी? शायद नहीं। जल, ज़मीन, जड़ से जुड़े रहने वाले को भूमिपुत्र कहा जाता है। लाहुल घाटी में ऐसी सोच वाले बहुत लोग हो सकते हैं। लेकिन उनकी प्रतिशतता कितनी होगी? इस तथ्य से कोई इंकार नहीं कर सकता है, जहां भी भिन्न संस्कृतियों का आदान-प्रदान होता है, अथवा एक-दूसरे के निकट संपर्क में आती हैं, तो दूसरे का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। अपनी मौलिकता बच नहीं पाती है। मूल स्वरूप, संकल्पना में अंतर आ ही जाता है। कुछ न कुछ मिलावट-मिश्रण तो सामान्य सी बात हो जाती है। अत्यधिक खुलेपन से कुछ संस्कृतियां तो इतनी दूषित हो जाती हैं कि उनके मूल को ढूंढ़ना-खोजना भी दुष्कर बनकर, समस्या के रूप में बदल जाती है। लाहुल संभवतः प्रेम, करूणा और शांति के रूप में अब तक जाना जाता रहा है। अब बदलते वक्त में अपने अस्तित्व को कितना बचा कर रख पाएंगे? यह एक अत्यंत विचारणीय बिंदु है। लोक जीवन और सांस्कृतिक संदर्भ को बनाए रखने से ही, घाटी की समृद्ध परंपराओं को बचाकर रख पाना संभव है। मुझे लगता है, अब तक लाहुल घाटी के लोगों ने अपनी जो विशेष संस्कृति, पहचान बना रखी थी, वो धीरे-धीरे मिश्रित संस्कृति में बदलती जाएगी। करवट लेते समय के साथ बहुत कुछ बदल जाता है। सामाजिक संबंध यदि स्पष्ट शब्दों में कहें, तो अंतर्जातीय, अंतर्प्रांतीय व अंतर्धर्मीय वैवाहिक संबंधों से यहां की परंपराएं अपने मूल स्वरूप एवं निष्ठावान निर्वहनकर्ताओं से वंचित होती जाएंगी। उनको अपनाने वाले पूरे मनोयोग से नहीं, केवल आधे-अधूरे मन से उन्हें निभाने का प्रयास भर करेंगे। पूरी निष्ठा और श्रद्धा शायद ही दिखे?

यह निर्विवाद तथ्य है कि लाहुल के लोग दूसरों की तुलना में उतने चतुर-चालाक यानी धूर्त-शातिर नहीं होते हैं, अपवादों को छोड़ दें तो, जितने अन्य क्षेत्रों के होते हैं। हां, बहुत स्वाभिमानी अवश्य होते हैं। यहां के आम लोग आधुनिकता में विश्वास करते हैं। प्रगतिशील विचारों के होते हैं। दकियानूसी सोच को किनारे रखने वाले। लेकिन दूसरों की देखा-देखी, नकल करने में पीछे भी नहीं रहते हैं। ऐसे एक नहीं, सैंकड़ों उदाहरण मिल जाएंगे। हालांकि यह बहुत ही नाजुक और निजी मामला है। परन्तु है, तो है। बेशक इसे कोई अन्यथा ले, अथवा बुरा मान जाए। मगर सत्य से कोई भाग नहीं सकता है।

वैसे देखा जाए तो, लाहुल की अधिकांश आबादी विशेषकर युवा व मध्यम आयु वर्ग के लोग, चाहे पुरुष हों अथवा महिलाएं, सभी शिक्षित तथा नौकरीपेशा हैं। अंतर्जातीय अथवा अंतर्प्रांतीय वैवाहिक संबंधों के फलस्वरूप विभिन्न संस्कृतियों संस्कारों का मिश्रण पहले ही आकार ले चुका है। रोहतांग में सुरंग के कारण आसान आवागमन के परिणामस्वरूप यहां की संस्कृति के प्रति, बाहरी लोगों का आकर्षण कितना बढ़ेगा? इसका अन्दाज़ा लगाना अथवा आकलन करना, संभवतः बहुत शीघ्रता होगी! मगर घाटी के निवासियों का बाहर से आते अन्य लोगों, खासकर ग्लैमरयुक्त संस्कृतियों-संस्कारों, आहार-विहार, आचार-विचार, बर्ताव-व्यवहार, आदत-मिज़ाज़ के कारण परिवर्तन होना किसी को भी चकित नहीं करेगा। परिवर्तन जीवन का नियम है। इस में कोई दो राय नहीं है। लोगों की जीवन शैली, बोल-व्यववहार तो पहले ही बदलने प्रारंभ हो चुके हैं। अपनी संस्कृति-सभ्यता, विशेषकर धार्मिक आस्था और विश्वास को बनाए रखना, किसी चुनौती से कम नहीं होगी। पर्यटक स्थलों में व्याप्त तरह-तरह की आदतों, बल्कि गंदी व बुरी आदतों, रीतियों-कुरीतियों, विकार-विकृतियों, अवांछित घटनाओं-वारदातों, दबे-छिपे प्रसंगों से अपने को बचाकर रखना सचमुच कठिन होगा। नामुमकिन बेशक न हो!

मुझे इस आलेख के प्रारंभ में वर्णित किंवदंती की याद बलात आ रही है, जिसमें माता कुंती ने रोहतांग दर्रे में आसान आवागमन के मद्देनज़र कहा था कि सबके आगमन से लाहुल को चोर-उचक्के, ठग-लुटेरे, डकैत-लठैत लूट लेंगे। इसे इस रूप में भी समझ लें, कि घाटी के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन घाटी के जनसामान्य की इच्छा के विपरीत पहले ही शुरू हो चुका है।

सम्पर्क : नाग मंदिर कालोनी, शमशी, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश
e-mail: shersingh52@gmail-com

बढ़ते पर्यटन का स्थानीय समाज पर क्या प्रभाव होंगे और इस से किस तरह निपटा जाना चाहिए

सुरेन्द्र सिंह 'यूसुफ'

टनल की परिकल्पना से ले कर अंजाम तक पहुँचने में न जाने कितने वर्ष लग गए और कितने ही मुश्किलों का सामना करना पड़ा, लेकिन आखिरकार लोगों का इंतज़ार खत्म हुआ अक्तूबर 2020 में जब टनल के दोनों छोर आपस में मिल गए। बहुप्रतीक्षित अटल टनल आखिर तैयार हो कर आम जनता के लिए खुल ही गया। वो पल एक ऐतिहासिक क्षण था जब टनल के दोनों छोर आपस में मिल गए। यूं जैसे अंधकार और उजाला आपस में मिल गए हों। हमारे जिन बुज़ुर्गों ने जो सपना टनल का देखा होगा अपने आने वाली पीढ़ियों के लिए, अधिकतर तो अब इस दुनियाँ में भी नहीं हैं लेकिन उन का सपना आखिर साकार हो गया।

टनल के खुलने के साथ ही हर तरफ यह आम बहस शुरू हो गई कि टनल का खुलना लाहुल के जन मानस के लिए क्या-क्या तोहफा ले कर आयेगी। क्या टनल लाहुल वासियों के लिए वरदान साबित होगा? क्या यह अभिशाप तो नहीं? लाहुल के समाज में किस तरह के प्रभाव पड़ सकते हैं? हर लाहुल वासी के मन में ये सवाल हैं और हर लाहुलवासी अपने हिसाब से आकलन भी कर रहा है, मगर इन सब का उत्तर तो भविष्य के गर्त में छिपा है।

इस बात को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता कि हमारे पूर्वजों ने निस्वार्थ टनल के लिए अपना हर संभव प्रयास किया। उन लोगों ने अपनी दुश्वारियों को देखा, जिया, भोगा, इसी लिए अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए यह प्रयास किया। दूसरी तरफ यह बात भी गौरतलब है कि हमारा आदिवासी इलाका किसी भी दृष्टि से महत्वपूर्ण ना होते हुए भी हमें यह सौगात मिलना हमारे ज़ेहन में एक सवाल ज़रूर खड़ा करता है कि क्या यह टनल सिर्फ हम लोगों के लिए निकाला गया है या कुछ और बातें हैं जो नेपथ्य में हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि देश की सुरक्षा के लिए यह टनल आवश्यक बन गया था। इस लिए कि सीमाओं की चौकसी के लिए यह मार्ग सुरक्षित है, या कहीं हमारे इलाके के प्राकृतिक सम्पदा पर नज़र तो नहीं। यह तो महज़ सवाल भर है जो बहुतों के दिमाग में उपजा है। बहरहाल, वजह जो भी हो, टनल खुल चुका है अब हमें इन बातों को नज़रअंदाज कर सोचना है कि हम टनल की उपयोगिता को अपने लिए अपने समाज के लिए कैसे बढ़ा सकते हैं।

ऐसा नहीं है कि टनल से सिर्फ लाहुल वासियों को सिर्फ फायदा ही फायदा होगा, इस के दोनों पक्ष होंगे, हमें फायदा होगा तो यकीनन कहीं नुकसान भी होगा। यही बात हमें समझने की है, कि हम इस अवसर का समाज के हित के लिए अधिकतम उपयोग कैसे कर सकते हैं।

पहले उन प्रभावों को देखते हैं जो समाज में सकारात्मक रूप से पड़ेंगे। जो मेरी नज़र में इस तरह से हैं :

- रोहतांग की दुश्वारी से मुक्ति : पहला और प्रत्यक्ष फायदा तो यह हुआ है कि उस रोहतांग को जिसे पार करते करते आज तक सैकड़ों जाने चली गईं, उस रोहतांग में न जाने कितने लोगों का साथ छूटा है उस रोहतांग से अब लोगों को मुक्ति मिल गई।

- रोज़गार के नए आयाम एवं आय में वृद्धि होगी : - अधिकांश लोग मानने लगे हैं और टनल के खुलते ही हमें दिख भी रहा है कि पर्यटन लाहुल वासियों के लिए एक वरदान साबित हो सकता है। आज तक हम लोग सिर्फ खेती के ऊपर निर्भर रहे, अब कृषि एवं नौकरी के अलावा पर्यटन एक और विकल्प के रूप में दिख रहा है। यह पक्का है कि टनल के उपरांत बहुत सारे और रोज़गार के मौके तैयार होंगे जिस में पर्यटन मुख्य होगा और हमारी आय बढ़ेगी ।

- खोई हुई विरासत को पहचान : - हम देखते हैं कि हमारे लोगों में अपनी संस्कृति के प्रति रुझान धीरे-धीरे खत्म होने लगा है। चाहे वो पुरानी पीढ़ी हो या नई पीढ़ी, उन में एक उदासीनता दिखा रही है अपने इन रस्म-ओ-रिवाज़ और संस्कृति के प्रति। इस की वजह कई हो सकते हैं। लेकिन हाल ही में मनाए गए स्नो फेस्टिवल के दौरान लोगों की पहल देख कर एक उम्मीद जगती है। भले ही एजेंडा कुछ और क्यों न हो मगर खोई हुई विरासत एवं रस्मों को एक सांस तो मिल ही रही है। इन आयोजनों से खोई हुई विरासत, संस्कृति को दोबारा जीवन मिलेगा, ऐसी उम्मीद जगती है।

इतना ही नहीं, हमारा इलाका अब तक बाहरी दुनिया के लिए एक छुपाये हुए खज़ाने की तरह था अब टनल ने उसे पूरी दुनिया के सामने ला कर रख दिया है। दुनिया को अब हमें, हमारी संस्कृति को देखने और समझने का मौका मिल सकता है।

-मातृभूमि से जुड़ने का मौका : - हमारी अधिकांश नई पीढ़ी लाहुल से बाहर रहती है, बहुतों का तो जन्म ही बाहर हुआ है। यह बच्चे अपनी मातृ भूमि के बारे अपने माता-पिता से ही सुनते हैं बहुत हुआ तो बस साल में एक-आध चक्कर लाहुल का लगा लिया, बस इतना ही जुड़ाव है हमारी नई पीढ़ी का अपनी मातृ भूमि से। यह पीढ़ी सिर्फ कागज़ों में ही लाहुल से जुड़ा है। इन की परवरिश भी शहरों में हुई है, ये अपनी संस्कृति से अनभिज्ञ हैं। टनल खुलने से इन बच्चों में अपनी मातृभूमि को देखने और समझने की ललक पैदा अवश्य होगी। स्नो फेस्टिवल एवं इस तरह के आयोजन इन बच्चों को अपनी ज़मीन से पुनः जोड़ने में मदद करेंगे।

- स्वास्थ्य सुविधाएं बेहतर होंगी : - एक समय था जब सर्दियों में कोई बीमार पड़ जाता तो उसे चाहते हुए भी इलाज के लिए कुल्लू या

अन्य जगह नहीं ले जा सकते थे, यहाँ तक कि मुख्यालय केलंग तक भी नहीं ले जा सकते थे, और अगर मुख्यालय पहुंचा भी देते तो वहाँ सुविधाओं के नाम पर सिर्फ आश्वासन ही होता था। गर्मियों में भी जब रोहतांग खुलता था तो भी समय पर मरीज़ को स्वास्थ्य सुविधा नहीं मिल पाती थी। इस तरह समय पर उपयुक्त इलाज न मिलने के कारण न जाने कितनी जानें जाती रही हैं आज तक। अब टनल के बाद इन हालातों से छुटकारा मिल जाएगा।

– मूलभूत सुविधाएं प्राप्त होंगी : – आज तक हम ने देखा है हमारे लाहुल में हर विभाग या हर क्षेत्र में मूलभूत सुविधाओं की हमेशा कमी रही है। जिस के चलते हम लोग हर जगह पिछड़ जाते हैं। योग्यताएं और हुनर होते हुए भी हम पिछड़ जाते हैं। टनल के उपरांत शायद यह स्थिति अब बदल जाएगी। शीतकालीन एवं साहसिक खेलों के लिए तो आपार संभावनाएं दिखती हैं। उम्मीद करते हैं अब अपने लाहुल से राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी भी पैदा होंगे।

– निवेश में वृद्धि होगी : – हम देखते हैं कि हमारे इलाके में आज तक किसी तरह का कोई निवेश नहीं हुआ है। ले दे कर हम ने अपने मकानों में निवेश किया है । आज तक जितना भी निवेश हुआ है वो लाहुल से बाहर हुआ है। इस का कारण यही रहा है कि लाहुल में निवेश के बाद वापसी प्रतिफल की कुछ भी संभावना नहीं है। अब टनल के बाद स्थिति एक दम बदलती नज़र आ रही है। लोगों ने निवेश करना शुरू भी कर दिया है। बड़े-बड़े होटलों के प्रोजेक्ट शुरू हो चुके हैं। निवेश की इस प्रक्रिया में रोज़गार उत्पन्न होगा, मांग उत्पन्न होगी चाहे वो वस्तुओं की हो या सेवाओं की, लोग बड़े-बड़े स्टोर स्थापित करेंगे। वित्तीय प्रणाली समृद्ध होगी। इस तरह आर्थिकी का एक चक्र बन जाएगा।

– मैत्री पूर्ण रिश्ते : पड़ोसी प्रदेशों से मैत्री पूर्ण रिश्ते कायम होंगे। सब से नज़दीक हमारा कुल्लू है, जहां से हमारे ताल्लुकात बहुत पुराने रहे हैं। हमारी आधी आबादी तो कुल्लू में बसती है। टनल के खुलने से कुल्लू वालों के लिए हमें जानने और समझने का और मौका मिलेगा। व्यापार, लेन देन में इज़ाफा होगा, नए रिश्ते स्थापित होंगे।

– सुरक्षा : रोहतांग टनल के बनने के पीछे शायद सब से बड़ा कारण यही था, देश की सुरक्षा। सुरक्षा के लिहाज़ से रोहतांग टनल एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। कर्गिल युद्ध को इतनी जल्दी कैसे भूल सकते हैं। सेना को बिना रोक-टोक के सुरक्षित और शीघ्र सहायता इसी मार्ग से दी जा सकती है।

– कर्मचारियों के लिए सुविधा : लाहुल में कार्य करने वाले सारे सरकारी संस्थानों में अधिकतर कर्मचारी बाहर ज़िलों से आए हैं। पूर्व में होता यह था कि ज़िले में तमाम कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारी नवंबर-दिसंबर माह में छुट्टियाँ ले कर या फर्लू घर निकल आते फिर रोहतांग बंद हो जाता और यह कर्मचारी पूरी सर्दी दफ्तरों से नदारद रहते। दफतरों में छोटे से छोटा काम भी लंबित पड़ा रहता। टनल खुलने से इन मुश्किलों से निजात मिल जाएगी। ज़रूरत के हिसाब से कर्मचारी आ जा सकेंगे और दफ्तरों का काम भी चलता रहेगा।

– हेलिकॉप्टर की पोलटिक्स : टनल के खुलने से हेलिकॉप्टर की पोलटिक्स खत्म हो गई। सर्दियाँ आते ही सरकार द्वारा लाहुल के लिए हेलिकॉप्टर की सुविधा प्रदान की जाती थी। लाहुल से आने वालों और लाहुल जाने वालों के लिए यह एक ना भूलने वाला अनुभव है। उस स्थिति के बारे में ज़रा सोचें जब चारों और बर्फ पड़ी हो आप को किसी मरीज़ को कुल्लू ले जाना हो और किसी तरह से सीट का जुगाड़ हो जाए और तय समय पर आप को हेलीपेड पहुंचना है, उस पर सितम यह की लाहुल का कोई भी हेलिपेड गाँव के आस-पास नहीं बने हैं ये या तो जंगलों में या नदी के किनारों पर बने हैं । उधर आप मरीज़ को ले कर हेलिपेड पहुंचे इधर आप की फ्लाईट कैंसिल को गई। अब आप हालत का अंदाज़ा लगा सकते हैं। यही हालात कुल्लू में भी होते हैं। जो अपना रसूक रखता है जिस की पहुँच होती है वो तो जुगाड़ कर लेते हैं मगर जिन का कोई नहीं वो डी सी दफ्तर का चक्कर लगाते लगाते थक जाते हैं। अब टनल से इन सब पर विराम लग जाएगा।

दुष्प्रभाव :

–पर्यावरण को नुकसान : – रोहतांग के खुलने से अब वो तमाम खतरे सामने आएंगे जो अब तक रोहतांग ने रोक कर रखा था या कह सकते हैं रोहतांग की वजह से रुके पड़े थे। पहली और सब से बड़ी चिंता तो ये कि टनल खुलने से अब वो सारे बड़ी-बड़ी विद्युत परियोजनाएं जो अब तक फाईलों में दबी पड़ी थीं, अब निकल कर मूर्त रूप लेंगी। देखना ये है कि कितनी जल्दी ये परियोजनाएं शुरू होती हैं। एक बार शुरू हो जाए ये परियोजनाएं, तो हम और आप सभी जानते हैं कि इन परियोजनाओं से हमें, हमारे पर्यावरण को कितना नुकसान पहुंचने वाला है। लाहुल की मिट्टी एवं पहाड़ों की संरचना जिस तरह की है उस को देख कर हम होने वाले नुकसान का अंदाज़ा बखूबी लगा सकते हैं ।

–रिश्तों में खलल : – लाहुल के अधिकतर परिवार संयुक्त परिवार के रूप में ही रहते हैं बेशक वो कागज़ों में रहे हों, लेकिन अब टनल के उपरांत अब परिवार बिखरेंगे कागज़ों में भी और दीवारों के अंदर भी। कुछ तो अभी से दिखने शुरू हो गए हैं। वो परिवार जो बरसों से लाहुल की तरफ नहीं आ रहे थे अचानक टनल के खुलने से उन्हें एक मौका दिखने लगा है। क्यों कि पुश्तैनी ज़मीनों का अभी बटवारा नहीं हुआ है, उन्हें लगता है कि अपना हिस्सा ले कर उस पर खेती करेंगे, कैंप लगाएंगे, या बट्टेदारी पर खेत देंगे, यानी सारा पैसों का खेल। जहां खेल पैसों का हो वहाँ रिश्तों में दरार तो पड़ना अवश्य है।

– कृषि पर खतरे : – आज जिस स्थिति में लाहुल के लोग हैं चाहे वो आर्थिक क्षेत्र हो चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, हम जानते हैं कि हमारे यहाँ तक के सफर के लिए हमारे पास कोई अकूत धन राशि नहीं थी, न कोई गढ़ा खज़ाना था, इस की वजह थी सिर्फ कृषि और हमारी मेहनत। कृषि ही थी हमारे पास जिस ने हमारे जीवन के स्तर को बहुत उठाया है, हमारे पास

इस के सिवाए और कुछ भी नहीं था। हमें इज़्ज़त, शोहरत इसी मिट्टी ने दी है। लेकिन नई पीढ़ी जिसे खेती और कृषि से ज़्यादा सरोकार नहीं दिखता है, उसे तो आसान पैसा चाहिए। वो कृषि के झमेलों में न पड़ कर इन का उपयोग किसी और तरह से करेंगे। जैसे लीज़ पर देंगे, किराए पर देंगे चाहे वो कृषि के लिए हो या कोई अन्य उपयोग के लिए। इस तरह धीरे धीरे हमारी पुश्तैनी फसलें सब खत्म हो जाएंगी।

– अपराध का ग्राफ बढ़ेगा : – टनल खुलने के बाद हम ने थोड़े समय में ही देखा कि हज़ारों की संख्या में लोगों ने लाहुल का रुख किया। देश के कोने कोने से लोग आने शुरू हुए, इस भीड़ में कुछ रोज़गार ढूँढने के लिए आएंगे, कुछ घूमने के लिए, अब इतने लोग जब आएंगे तो इन सब का स्कैन तो नहीं हो सकता कि कौन किस प्रवृत्ति का है। इन में कई लोग आपराधिक प्रवृति के लोग भी होंगे जिन का मकसद ही धोखाधड़ी, चोरी, लूट इत्यादि ही रहता है। अभी तक हमारे लोगों ने बाहरी दुनिया को, उस के चाल-चलन को नहीं देखा है। हम लोग उन के आसान शिकार हो सकते हैं।

–मूल भाषाएँ खतरे में पड़ेंगी : – जब बाहरी लोगों का आगमन होगा तो संवाद यकीनन हिन्दी या अंग्रेज़ी में ही होगा, सब से ज़्यादा तो हमें मज़दूरों से संवाद करना पड़ेगा, वो अभी भी हम हर गाँव या हर घर में देख सकते हैं जहां एक या एक से अधिक कामगार या तो नेपाली है या बिहारी है। इन से सुबह-शाम जो संवाद होता है वो हिन्दी में ही होता है। और हिन्दी भी या तो नेपाली टाईप या बिहारी टाईप। इन के देखा देखी हम लोग जो मूल निवासी हैं वो भी इसी तरह के बोलचाल बोलने लगते हैं। अब हम सोच सकते हैं कि हमारी मूल भाषाओं का क्या हश्र होने वाला है। बस धीरे-धीरे हम अपनी मूल भाषा को भूल कर खिचड़ी भाषा बोलने लगेंगे।

–अपसंस्कृति : – जब लाहुल बाहर की दुनिया से जुड़ जायेगा तो मुझे लगता है कि हमारी जो मूल संस्कृति है उस में वनावटी पन आ जाएगा। हम उस का मूल स्वरूप खो देंगे। बाहर ताकत है, पैसा है, ग्लैमर है अतः बाहर की संस्कृति को आने से हम नहीं रोक सकते हैं।

–नैतिक मूल्यों का हनन : – आज तक लाहुल से बाहर लोग हमें हमारी ईमानदारी और हमारे भोलेपन से ज़्यादा जानते हैं, जब खुशहाली बढ़ेगी, पैसा आने लगेगा तो ज़ाहिर सी बात है वहाँ भ्रष्टाचार भी बढ़ेगा। और ऐसी स्थिति में हमारे नैतिक मूल्यों का ग्राफ नीचे ही आयेगा ।

–स्वार्थी लोग अपना मतलब साधेंगे : – अभी तक हमें बहुत लोग ऐसे मिलेंगे जिन्हें अपनी मातृ भूमि से लगाव होगा, जो कुछ करना चाहते हैं अपने लोगों के लिए अपने इलाके के लिए। मगर बहुत लोग ऐसे होंगे जो मौके की फिराक में होंगे, बस वो तो मौका ढूँढेंगे, मौका मिलते ही दोहन शुरू करेंगे, भले ही वो प्राकृतिक सम्पदा का हो या भोले-भाले लोगों को ठगने का हो।

– असुरक्षा : – लाहुल जो अब तक प्राकृतिक रूप से सुरक्षित था। चोर उचक्के कभी सोच भी नहीं सकते थे कि लाहुल जा कर कोई ऐसा गैरकानूनी काम अंजाम दे सके, सर्दियों में तो यह मुमकिन ही नहीं था गर्मियों में भी यह सब आसान नहीं था। अब टनल के खुलने से सीमाएं असुरक्षित हो जाएंगी।

– सरकारी कोष पर भार : – सरकार को सीमाओं में चौकसी बढ़ानी पड़ेगी। अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात करनी पड़ेगी। जिस से राज कोष पर अतिरिक्त भार पड़ेगा।

– आरक्षण : – जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारा पूरा इलाका आदिवासी क्षेत्र घोषित है। संविधान के अंतर्गत यह प्रावधान किया गया है। मुझे लगता है देर सवेर टनल के खुलने के उपरांत जब सभी सुख सुविधाओं का लाहुल के लोग भोग करने लगेंगे जिन सुविधाओं से अभी तक महरूम हैं, तो वो समय भी दूर नहीं जब यह आरक्षण की सुविधा को खत्म कर दिया जाएगा।

उपरोक्त बातों से मुख्य रूप से यह स्पष्ट हो रहा है कि आने वाले समय में लाहुल में पर्यटन की वृद्धि होने वाली है और सभी बातें इसी के इर्द गिर्द घूमती दिखाई दे रही हैं। मेरे ख्याल से समय रहते हम पर्यटन को रेगुलेट करें या पर्यटन प्रबंधन को सही तरीके से समझें तो बहुत सी समस्याएँ हम कंट्रोल में कर सकते हैं।

मनाली जो कि एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल है, हम ने मनाली को साल दर साल कंक्रीट के जंगल में बदलते देखा है। आज भी हम देखते हैं कि मनाली में पर्यटन को रेगुलेट करने के लिए किसी के पास कोई विजन नहीं है। किसी ने चालीस साल बाद के मनाली के

बारे नहीं सोचा, कोई योजना नहीं बनाई। आज मनाली व उस के इर्द गिर्द का इलाका आर सी सी के स्ट्रक्चरों में तब्दील हो के रह गया है। अगर लाहुल में भी ऐसा ही रहा तो लाहुल को भी दूसरा मनाली बनने में ज़्यादा समय नहीं लगेगा। यहाँ सरकार को स्थानीय लोगों को, व्यावसायिक इकाइयों को, सभी को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी पड़ेगी। समय रहते अगर कोई सही कदम न उठाया तो बहुत देर हो जाएगी।

पर्यटन को रेगुलेट करने के लिए हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :

हमारे लिए पर्यटन एक सुनहरा अवसर बन कर आया है। हमें इसे सोने का अंडा देने वाली मुर्गी की तरह संभाले रखना चाहिए। मुर्गी का पेट न फाड़ें बल्कि ज़िंदा रखें लंबे समय तक अंडा खाते रहें। हमें इसे अपनी आर्थिकी की एक स्थायी इकाई बनानी पड़ेगी।

मुझे लगता है कि ज़िला स्तर पर एक कमेटी बनाई जाए जिस में प्रशासन भी हो, पंचायत के प्रतिनिधि हों, होटलीयर्स हों एवं उन सभी के प्रतिनिधि हों जिन का पर्यटन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हिस्सेदारी हो। कमेटी में अलग अलग समूह बनाई जाए जो अलग अलग कार्यों की समीक्षा करें जैसे कुछ सिर्फ निर्माण कार्यों से संबन्धित कार्य देखें, कुछ रूटीन का टूरिज़्म देखें, कुछ साहसिक खेलों, केम्पिंग इत्यादि देखें। इस तरह कुछ बातों का ध्यान रख कर हम पर्यटन को लम्बी आयु दे सकते हैं जैसे :

-घाटी में हो रहे व्यवसायिक भवन निर्माण को रेगुलेट किया जाए। कुछ शर्तें रखी जाएं जैसे भवन अधिकतम तीन-चार माले से ऊपर न हो।

- इन सभी भवनों की संरचना पारम्परिक हो जिस से लाहुल की एक अलग पहचान बनी रहे।

- हर होटल, केम्प या ढाबों में स्थानीय कर्मचरियों को तरजीह दी जाए।

- इन सब जगहों में लोकल ड्रेस कोड ज़रूरी हों।

- लोकल फूड को बढ़ावा दिया जाए।

- जब तक हमारे पास पर्यटकों को ठहराने के लिए उचित प्रबंध न हो आधार भूत संरचना तैयार न हो तब तक सीमित संख्या में ही पर्यटकों को आने की अनुमति दी जाए।

- टेक्सियों का पंजीकरण किया जाए, टेक्सी चालक इलाके के एम्बेसडर होंगे अतः इन्हें शिष्टता एवं शिष्ट आचरण के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए।

- लोकल गाईड तैयार किए जाएँ, उन्हें प्रशिक्षण दिया जाए।

- लघु उद्यमियों को, होम स्टे चलाने वालों के लिए प्रबंधन हेतु प्रशिक्षण दिया जाए।

- नए पर्यटन गंतव्य तैयार किए जाने चाहिए।

- सभी पर्यटन स्थलों का साहित्य तैयार किया जाना चाहिए जो सभी ऑन लाईन भी उपलब्ध होनी चाहिए।

- हर पंचायत में शौचालयों का निर्माण किया जाए। जिन का रख रखाव बाहरी ठेके पर दिया जाए।

लाहुल के भीतर सुरक्षा के लिए मुझे लगता है कि हमें निम्न बातों का ध्यान देना चाहिए :

- लाहुल के मुख्य मार्गों पर सीसी केमरे लगवाएँ।

- प्रवेश द्वार पर ही हर आने जाने वालों का पंजीकरण कराया जाए। चाहे वो टनल के द्वार पर हो, दारचा में हो या उदयपुर सभी स्थानों पर पंजीकरण की जानी चाहिए ।

हर गाँव में पंचायत स्तर पर एक कमेटी बनाई जाए जिस में गाँव में आने वाला आगंतुक जो लाहुल का न हो, उन की सूचना कमेटी के पास पहुंचाना ज़रूरी किया जाए। गाँव के प्रवेश द्वार पर एक बोर्ड लगा हो जिस पर कमेटी के सदस्यों का फोन नंबर दिया हो, जो नया बंदा गाँव आयेगा वो फोन कर किसी भी सदस्य को अपने आने का प्रयोजन बता सकता है। किस के घर जाना है, किस से मिलना है, कब तक रहना है। वगैरह वगैरह। अगर कोई बगैर इत्तला किए कोई गाँव में दाखिल होता है तो कोई भी गाँव वासी इन की सूचना कमेटी सदस्यों को बता सकते हैं ।

- लाहुल के सभी मुख्य मंदिरों, गोम्पाओं में सीसी केमरे लगवाएँ जाएं, इन सभी मंदिरों एवं गोम्पाओं की सम्पत्ति की सूची तैयार की जाए। ताकि सभी को मालूम तो पड़ सके कि उन के अमुक मंदिरों अथवा गोम्पाओं में क्या क्या सामान पड़ा है। हो सके तो इन की वीडियो ग्राफी भी की जाए।

- प्रवासी कामगारों, मज़दूरों का पंजीकरण आवश्यक तौर पर होनी चाहिए।

इन सब कार्यों की निगरानी उपरोक्त कमेटी सुनिश्चित करे।

सम्पर्क : अधिकारी यूको बैंक, मनाली।
surindermalpa98@gmail.com

लाहुल घाटी की सुरंग

विजय कुमार बौद्ध

निरंतर अपेक्षा और प्रतीक्षा के पश्चात, जनजातीय क्षेत्र लाहुल-स्पीति (खास कर लाहुल घाटी) में वो क्षण गर्वित हर्षोल्लास से परिपूर्ण रहा होगा जब लगभग समूचा देश, उसके तमाम नागरिक एक साथ रोहतांग टनल (सुरंग) के अवलोकन का सीधा प्रसारण देख रहे होंगे। हरी झंडी के साथ ही पथ परिवहन की पहली बस सेवा मनाली से केलंग के लिए रवाना हुई। निःसंदेह एक अद्भुत दृश्य था। एक लम्बे दशक का इंतज़ार, 3 अक्तूबर 2020 को आकर परिपूर्ण हुआ। रोहतांग अटल टनल (सुरंग) राष्ट्र के नाम समर्पित हुई।

04 अक्टूबर, 2020, निराशावादी अंतर्मन आज अपने अस्तित्व से बाहर 'उम्मीद' की छलांग लगाने की जुर्रत में कदम बढ़ाता, उस से पहले अतीत (2010—2011) में करी, 'पर्यटन', 'विद्युतीकरण' और 'पर्यावरण' की चर्चा, विवाद और परिचर्चा हावी हो गयी। अजेय जी की लिखी पंक्तियाँ फिर स्मरण हो उठी। जैसे पत्थर पर उकेरा कोई कलात्मक विचार हो। सरल पंक्तियों में छिपा गहन दर्शन, मानो समय के साथ निरंतर परिपक्व होने के साथ परम-सत्य का आभास दिला रहा हो। कवि कहते हैं,

'गर्म हवा, मच्छर और कुछ लोग आ जाएंगे इस छेद से'। फिर लाल चंद ढिस्सा जी से हुई भेंट के कुछ अंश पुनः सामने आए। तथ्य और अनुभव को जोड़ कटु सत्य से अवगत करते उन्होंने कहा था, 'अब लाहुल की बारी है'। आज से लगभग 10—11 वर्ष पूर्व, रोहतांग सुरंग और उस से खुलते-बंद होते आयाम इत्यादि का चिंतन हो चुका है। 'आशावादी' और 'निराशावादी' की दृष्टि से बहुत आगे का दार्शनिक दृष्टिकोण, समय और स्थान की सीमा से अप्रभावित रहता है। आम बोल चाल में इसे दूरदर्शिता कहा गया है।

आज से लगभग 10 वर्ष पहले, जल विद्युत परियोजना का आबंटन, और खाका तैयार किया जा रहा था। 'जिस्पा बचाओ आंदोलन' और 'सेली बचाओ आंदोलन' के अंतर्गत लाहुल और स्पीति में विभिन्न समितियों का गठन हो रहा था, निवासी एक जुट से दिख रहे थे। स्पीति में लारा-सुमदो परियोजना का विरोध हो रहा था। 'विस्थापन', 'पर्यावरण', 'जल-संसाधन', 'संस्कृति', और 'आजीविका' जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे थे, जो आम बोल-चाल की भाषा में प्रचलित और प्रचारित भी थे। मानो जानजातीय क्षेत्र के नागरिक जागरूक हो उठे थे। गहन चर्चा होती, सहमती, विवाद और परस्पर विचार में मैंने भी कुछ विवाद-संवाद में हिस्सा लिया। इसी विषय में पी०एच०डी० का शोध प्रबन्ध लिख डाला और कुछ शोध-पत्र भी। लाहुल-स्पीति के जनजातीय क्षेत्र में सुरंग, पर्यटन, जल विद्युत परियोजना के आगमन से अपेक्षित परिवर्तन का पूर्वानुमान लगाया जाता रहा। क्या और कैसे होना चाहिए, वाला समय शायद अब हाथ से निकल चुका है। पर्यटन दस्तक दिए बिना अंदर घूम रहा है, विद्युत परियोजना का आबंटन हो चुका है, खांचा भी तैयार है। आम बोल-चाल में आजकल, टनल (सुरंग) की चर्चा 'स्वच्छता', 'नैतिकता', और 'प्रदूषण' तक सीमित सी लग रही है। शायद ज़मीनी स्तर में विरोधाभास संगठित हो भी रहा होगा। यद्यपि जहाँ तक दीख पड़ रहा है, होम-स्टे, होटल और पर्यटन के उत्साह में किसानी, पर्यावरण और अन्य ज़मीनी मुद्दे धूमिल से पड़ते नज़र आ रहे हैं।

यद्यपि जल- संसाधन एक महत्वपूर्ण थीम है। बढ़ते पर्यटन के चलते लेह-लद्दाख में पारम्परिक शौचालय का स्थान आधुनिक सुविधाओं से लैस शौचालय ने लिया। परिणाम स्वरूप पानी की खपत बढ़ी और भू-जल दूषित हुआ। जिसका सीधा असर पेय जल, कृषि एवं जन-स्वास्थ्य पर हुआ। अतः लाहुल घाटी में भू-जल और नैसर्गिक जल स्रोत को प्रदूषीकरण से बचाना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

अन्यथा मौजूदा स्थिति से दिख पड़ता है कि किसी को कुछ खास पता नहीं कि आगे क्या होगा? बर्फ तलाश रहा पर्यटक आखिर सिस्सू से आगे कहाँ का रुख करता है। शायद दो-तीन वर्ष के पश्चात् ही सटीक आकलन स्थापित किया जा सके कि कौन-कौन से गांव में कृषि, पर्यटन, संस्कृति और अर्थव्यवस्था की आधारिक संरचना क्या आकार लेती है। सोच रहा हूँ, एक बार फिर से पी एच डी कर लूँ, लेकिन रोज़ी-रोटी का ख्याल सोच बदलने पर मजबूर कर देता है। आशावाद और निराशावाद का अंतर्द्वन्द्व छलांग लगाने को उत्तेजित हो उठा उस से पहले दार्शनिक अभिमत आवश्यक है। अतः छुट्टी की अर्ज़ी डाल दी है।

सम्पर्क : सहायक पुरातत्वविद, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण शिमला, हिमाचल प्रदेश
e-mail : vijaybodh@yahoo.in

लाहुल और पर्यटन : पुष्प और मधुकर

इशान मार्वल

कुछ वर्ष पहले, एक सभा में बैठे 'विकास' पर चर्चा चल रही थी।

सबने कुछ-कुछ कहा, कुछ ने बहुत कुछ कहा। इन सब बातों के बीच कुछ याद रहा तो कवि-मित्र शेर सिंह मेरुपा द्वारा इस्तेमाल की गई एक बौद्धिक उपमा, कि प्रकृति और मनुष्य का रिश्ता ऐसा हो, जैसा फूल और मधुमक्खी का। मधुमक्खी आकर रस तो ले लेकिन फूल को कोई नुक्सान ना हो, बल्कि फूल का भी परागण चलता रहे। अर्थात प्राकृतिक चक्रों का पारस्परिक लाभ।

आज जब लाहुल और पर्यटन पर कुछ लिखने की बात आई तो इसी उपमा का सहारा लूंगा। लाहुल नाम का फूल पब्लिक की नज़र में आ चुका है, और एकदम से ऐसे आया कि शायद किसी को उम्मीद न थी। एक छोटी सी जगह, ज़िले की बात करें तो भारत का न्यूनतम जनसंख्या घनत्व, परन्तु "अटल जिउ तोहफा" के चलते अब पर्यटक-मधुकरों का खूब आना-जाना रहेगा।

कोरोना विस्फोट, आलुओं की चोरी, महिलाओं से छेड़-छाड़, गन्दगी - स्वाभाविक है कि अब तक के रुझान देख लाहुलियों के मन में वही पुरानी चिंताएं जगी हैं, जो शायद किसी भी पृथक क्षेत्र के खुलने पर वहां के बाशिंदों में जगती हैं। हालाँकि बाशिंदों ने शायद होटल, कैंप, टैक्सियाँ तैयार रखीं हैं या तैयार कर रहे हैं। यह भी स्वाभाविक है। रही बात नेताओं और नौकरशाहों की, उन पर तो अलग ही नियम लागू हैं। यह स्वाभाविक नहीं, लेकिन है फिर भी माना हुआ सामूहिक यथार्थ।

तो रस की बात करते हैं।

जिस रस की खोज में पर्यटक घर से दूर किसी ऐसे दुर्गम स्थान पर आकर अपनी पूंजी खर्चते हैं - क्या रस मिलेगा उन्हें जब आखिरकार पड़ेंगे उनके कदम गेसर, घेपन, मिलारेपा व त्रिलोकीनाथ की भूमि पर? प्राकृतिक सौंदर्य के रस की तो भरमार है, दिक्कत है इसे बिन बर्बाद किए प्रचलन में लाने की। कैसे बनेगा यह संतुलन?

स्थानीय लोगों की एकजुट सतर्कता और भागीदारी, युवाओं के अभिनव प्रयोग, नीतिकारों और प्रशासन की सक्रिय जवाबदेही, और सभी के बीच संचार ... कुछ ऐसे ही किताबी शब्द आते हैं दिमाग में, क्योंकि ज़्यादा उम्मीद नहीं जुटा पा रहा। कूड़े की ही बात कर लो : अगर हर कोई गीला-सूखा अलग रखने लग भी जाए, और प्रशासन रोज़ इकट्ठा कर भी ले, तो क्या? ना भी जलाओ, जाएगा तो पास के किसी खड्ड या नाले में।

आखिर जहां नहीं पहुंचता प्रशासन न कोई यात्री, वहां भी तो पहुंच जाते हैं नेस्ले, पेप्सी और कोका-कोला - और फलती है उनकी मांग। जय पूंजीवाद! फिर क्या रीसाइक्लिंग प्लांट बनाओगे? या भेजोगे ट्रक भर-भर के कूड़ा नवजात टनल से वापस बाहर? कहाँ? कौन लेगा? ले भी ले तो क्या इतना खर्च करने को कोई है तैयार?

लेने वाला भी क्या ही कर लेगा?

बचा लेगा फिलहाल थोड़ा बहुत प्लास्टिक वातावरण में घुलने से, मगर जो शायद अगली बार किसी दूसरे रूप में सागर तक पहुँच ही जाए . . . दुनिया भर की दिक्कत है, और दुनिया भर में फैली है। जवाब तो हैं बहुत, लेकिन साध्यता और निष्पादन पर फिलहाल चुप हो जाना पड़ता है।

तो फिर जैसे दिल्ली, मनाली या किसी बड़े शहर में घुसते हुए विशाल कूड़े के पहाड़ स्वागत में दिखते हैं, क्या अब से कुछ साल बाद 'लेडी ऑफ केलोंग' की छाँव में एक और नन्हा पहाड़ दिखेगा? पर्यटन द्वारा बनाया गया, पर्यटन के लिए- आखिर एक सेल्फी तो बनती है, जैसे टनल के बीच गाड़ी रोककर बनती है। खैर, दूसरे रस पर आते हैं (हालाँकि नीयत के तौर पर दोनों एक दूजे से जुड़े हैं)। आखिर प्राकृतिक सौंदर्य तो कई जगह है, और आम नज़र से देखो तो सभी पहाड़ एक जैसे।

तो बात करते हैं उस रस की जो किसी भी जगह और उसके लोगों को बनाता है अनूठा। अर्थात मनुष्य और परिवेश द्वारा रचित सांस्कृतिक रस।

ऐसे में जनजातीय क्षेत्रों की बात तो कुछ और है ही, खासकर लाहुल जैसा सुखद क्षेत्र जहां राजनीतिक उथल-पुथल और प्रणालीगत उत्पीड़न की ज़्यादा गुंजाइश नहीं (प्रवासी व बाल मज़दूरों की बात और है), और लगभग सभी लोग कुछ हद तक साक्षर व आत्म-निर्भर हैं। ऊपर से हिन्दु, बौद्ध, बॉन आदि धर्मों का निराला मिश्रण और ट्रांस-हिमालयन वातावरण का भोजन, वेश-भूषा, वास्तु-कला, रिवाज़-परम्पराओं आदि पर प्रभाव . .. आखिर पहचान और अस्तित्व की बात है। ज़मीन, जंगल, बाँध और चंद्रभागा की बात है।

और इन सब के बीच, बात है 'लाहुलियत' नामक रस की।

पर सवाल उठता है कि क्या हम कुछ नायाब करने की चेष्टा रखते हैं?

क्या ज़्यादा आसान नहीं, करना वही जो चलता आ रहा है और शायद चलेगा? कंक्रीट, स्टील और शीशे का स्टैण्डर्ड-होटल-रूम-विद-अटैच्ड-बाथरूम-एंड-बालकनी, सस्ते प्लास्टिक टेंट, थोड़ी बहुत एडवेंचर एक्टिविटी, टैक्सी-चालकों की डकैती, बेनामी संपत्ति, भ्रष्टाचार, बाहरी निवेश, हर कैफे में सूफी-बॉलीवुड डीजे नाईट, पिज़्ज़ा-पास्ता-हुम्मुस-मोमो-मैग्गी-एंड-बटर-चिकन, और खूब सारी दारु, और धीरे-धीरे झुग्गियां और वैश्यापन।

सब चंगा सी, सब नोट गिणां सी!

अच्छे दिन ... आएंगे!

आखिर इस नए दौर में किस रूप में फलेगा लाहुल-वर्ष का पुष्प? देगा कैसा रस

भूले-भटके यात्रियों को?

सीधी सी बात है : बनेगा और दिया जाएगा जैसा रस, आने वाले पर्यटकों के व्यवहार, आचार और प्रकार भी रहेंगे वैसे, और आगे चलकर फैलेगा वैसा ही शहद और होगा वैसा ही परागण, लाहुल की पहचान का इन पर्यटक-मधुकरों द्वारा। दिशा जैसी भी पकड़ें, धीरे-धीरे प्रणालियां बैठ जाएंगी, व्यवस्थित या फिर अव्यवस्थित। समय है अभी नींव को उभारने का, आने वाली पीढ़ियों के लिए जड़ें पसारने का। वही सब - सस्टेनेबल डेवलपमेंट, ईको-टूरिज़्म, ट्राइबल राइट्स, ''थिंक ग्लोबल, एक्ट लोकल'' इत्यादि।

करेगा कौन? पता नहीं।

अन्य जगहों में ऐसी स्थितियों के परिणाम अधिकतर उत्साहजनक तो नहीं। लेकिन लाहुल के लोग समझदार और प्रगतिशील हैं, ऐसी मान्यता है। व्यक्तिगत रूप से कहूंगा कि ज़्यादा उम्मीद नहीं, लेकिन फिर भी कुछ तो करना होगा, हमीं को। शर्त लगाने को कहोगे तो वास्तविक संकेतों को देख अपना पैसा शायद 'लाहुलियत' के पतन की तरफ ही लगाऊं, पर मन में इसी प्रार्थना के साथ कि काश यह शर्त हार जाऊं।

फिलहाल, फालतू बातें छोड़, एक ही ठोस निष्कर्ष है और एक ही मूल भावना : कुछ तो करना होगा, हमीं को। मगर कैसे ढूंढें ''कॉमन ग्राउंड''? पता नहीं। इट्स नॉट माय जॉब, इज़ इट?

फिर भी, कुछ तो करना होगा, हमीं को... कम से कम जिनको दिख रहा है, उनको तो करना होगा, कुछ-कुछ, क्षमता अनुसार।

बाकी आप समझदार हैं।

जय ठारनाग!

सम्पर्क : असिस्टेंट प्रोफेसर (अंग्रेज़ी)
रा० महाविद्यालय, भरमौर।
ishanmarvel@outlook.com

लाहुल में पर्यटन की संभावनाएं

नीतू ठाकुर

भारतीय प्राचीन ग्रंथों में स्पष्ट रूप से मानव के विकास, सुख और शांति की संतुष्टि व ज्ञान के लिए पर्यटन को अति आवश्यक माना गया है। पर्यटकों को (अतिथि देवो भवः) कहा गया है। पर्यटक स्थानीय लोगों में अपनी संस्कृति के प्रति गौरव अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है। यह गौरव अनुभव करने की भावना उस समय सशक्त होती है, जब पर्यटक उनकी संस्कृति, कला व वहां से जुड़े स्थानों व प्रकृति के गुणों की प्रशंसा करते हैं। पर्यटक हमारी संस्कृति को अपनी अलग पहचान बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है। इसके अतिरिक्त पर्यटकों और स्थनीय लोगों के बीच संवाद से पर्यटन अनुभव और अधिक समृद्ध बनता है। इनके माध्यम से ही स्थानीय लोगों की संस्कृति, जीवन, कला ग्रामीण स्थलों के धरोहर आदि को दर्शाया जा सकता है। जिससे स्थानीय लोगों के आर्थिक और सामाजिक समुदाय को लाभ पहुंचेगा। ग्रामीण स्थानों का अपना एक अलग अनुभव होता है, जिसमें प्राकृतिक वातावरण की प्रमुखता होती है, यह त्यौहारों और स्थानीय उत्सवों से सराबोर होता है तथा सांस्कृतिक धरोहर और परम्परा पर आधारित होता है। परन्तु पर्यटकों का स्थानीय समाज पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ सकता है। पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होने से प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी हो सकती है, जिसका सीधा प्रभाव प्रकृति पर पड़ेगा, और प्राकृतिक सौदर्य कम हो सकता है और लोगों की रुचि खेती की बजाय पर्यटकों की ओर हो जाए। इससे ग्रामीण विकास पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए अपने प्राकृतिक सौन्दर्य को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि पर्यटकों को यहां सहज महसूस कराएं। उन्हें पहले इस क्षेत्र व वातावरण से अवगत कराया जाए। रीति रिवाज़ों के बारे में प्रमुख स्थानों, धार्मिक स्थलों के बारे में बताया जाए। ताकि वो मानसिक रूप से भी तैयार हो कर आए।

सम्पर्क : स्वास्थ्य विभाग, केलंग, लाहुल-स्पीति
email : thakur.nitu79@gmail.com

कितना बटोर लेना

शेर सिंह मेरुपा

खुले आसमानों में तारों से छोटी मोटी मुलाकात चाहिए। गूँजकर दोबारा साथ देने वाली वो बात चाहिए। खेतों के बीच से गुज़रने वाले रास्तों से प्यारी चंद्रा को नीले दुपट्टे में आते हुए देखना चाहता हूँ। खेत का दूसरा सिरा काफी फैला हुआ है चंद्रा से कहूँगा पलम धारा से बहन पल्मो को भी लेते आना। जुराब की थोड़ी बुनाई धर्म के रिश्तों के लिए भी बचाकर रखना। पीती देशा ठंडा पानी हो। एक जग पीने का पानी वाले क्या गैंग ऑफ वासेपुर का भी वेलकम कर पाएंगे। उस परपेंडिकुलर पर हम अपनी सभ्यता और संस्कृति का लंब वृत्त कैसे सुरक्षित रख पाएंगे। तब सोनी को चोलू और कुर्ता सुखाने के लिए धूप मिलने वाला नहीं है। लाज के परदों पर एक बड़ा उजाला आने वाला है। या तो सिमट जाएगा या फिर चकाचौंध में खो जाएगा। फायदे की बात चलाने वाले छिलका तक बेच देंगे और पैसे वसूलने की बात जानने वाले शरीर से चमड़ी तक खींच देंगे। चेक इन और चेक आउट के बीच में जो शॉउट है उसी पर तो डॉउट है। धीरे-धीरे भीतर पड़ा हुआ हर चीज़ सीलन पकड़ता है। तब फिर हम उस बदबू को झेल नहीं पाएंगे। जो भी है सब कुछ खेल में। और हर खेल में कोई हारता है कोई जीतता है। पुरखों ने दो रुपये की दिहाड़ी में 12 लोगों का परिवार संभाला। लेकिन आज होम स्टे बनाकर घर की शांति को भी खतरे में डाला। 60—70 बरस की उम्र में क्या और कितना बटोर लेना। चिड़िया का पेट कभी भी एक दाने से ज़्यादा बड़ा नहीं होता। कुछ लोग कहते हैं न मैं जिस चीज़ को छू लूँ वो सोना बन जाता है। अच्छी बात है। भावनाओं और संवेदनाओं को छू लोगे तो उसे भी मृत कर दोगे क्या आखिर में ये भी काम करोगे। जाना कहाँ भईया ये सब लेकर। कमाई के जितने ज़्यादा दरवाज़े खुलेंगे। आमदनी में जो पैसा है वो कभी भी किसी खुशी से

उठा लाना। जहाँ हम मुँह लगाएंगे। वहीं दूसरे किनारे कोई पाँव और भी कुछ। जुठ हो गया। घेपन के गुर के मुँह में छाला पड़ गया। अब क्या उपाय करेंगे। पार्किंग और लॉज होगा, छोटी सी बात पर झगड़ा रोज़ होगा। कुछ बाहुबली न्यू ईयर ईव पर हर्ट्स ऑन फायर करेंगे एक बड़ी डिज़ायर करेंगे। हम तुम और दूसरे छोटे बड़े की तमीज़ जानने समझने जुड़ता नहीं है पैसों की बात लगाने वाला रिश्तों की ओर कभी मुड़ता नहीं है।

सम्पर्क : बिलिंग, लाहुल-स्पीति।
shers8944@gmail.com

संस्मरण

अधजले नोटों की दास्तान

डॉ. बी. एस. रावल

एक :

पांचवें दिन हिमस्खलन से पूरा घर हिल गया। घर टूट कर ध्वस्त हो गया था। बलदेव के दस सदस्यों का परिवार सुबह की चाय पीते हुए मार्च शुरू (1979) से ही असमान्य रूप से लगातार हो रही बर्फबारी से बेहद चिंतित होकर आपस में कुदरत की इस विकट स्थिति से निपटने हेतु चर्चा और गंभीर विचार-विमर्श में लगे हुए थे। सभी अनिश्चितता की सोच में पड़ चुके थे, और किसी अनिष्ट होने की अशंका से बुरी तरह त्रस्त थे। उनके विवेक और बुद्धि जैसे काम नहीं कर रहे थे। अनिश्चितता से ग्रस्त होकर घर के बड़े-बूढ़े इस अप्रत्याशित और निरंतर हो रही बर्फबारी पर आपस में लगातार सलाह-मशविरा कर रहे थे। परिवार के सभी सदस्य बहुत अधिक डरे हुए थे। बच्चों सहित हर किसी के चेहरे पर चिंता और डर साफ दिख रहा था। सभी को लग रहा था कि इस प्रकार लगातार बर्फबारी से बहुत बड़ी मुसीबत और भयंकर विपदा आने वाली है। सभी बहुत आशंकित और किसी अनहोनी के विचार से बहुत बेचैन होकर चिंता में पड़ चुके थे। इस विपदा से शीघ्र छुटकारा दिलाने के लिए सभी भगवान से मन ही मन में प्रार्थना कर रहे थे।

उनका पड़ोसी राम दयाल जिनके परिवार के सदस्यों की संख्या छह थी, वे भी सावधानी बरतने, चौकस रहने तथा सुरक्षित स्थान मानकर बलदेव के घर में आकर ठहरे हुए थे। बाहर पड़ रही बर्फ और जब-तब पहाड़ से हिमस्खलन, ग्लेशियर की रुक-रुक कर आते धमाकों, बम फटने जैसी आ रही आवाज़ों से दहशत में भरे, घर के भीतर मौजूद लोग, भयभीत होकर अंदर ही दुबके पड़े थे। कोई भी घर अथवा कमरे के दरवाज़े से बाहर को नहीं निकल रहा था। बलदेव का घर सबसे सुरक्षित और मज़बूत लग रहा था। अचानक जब हिमस्खलन (Avalanche) तेज़ और भयंकर आवाज़ के साथ घर से टकराया, तो घर में मौजूद परिवार के सभी सदस्य सुरक्षित कोनों-किनारों की ओर तेज़ी से दौड़े। बलदेव अलमारी के साथ लग कर खड़ा हुआ ही था कि अलमारी उसके ऊपर ही गिर पड़ी। अलमारी उसके ऊपर से होता हुआ गर्म तंदूर के ऊपर गिरी, और तंदूर को तोड़ दिया। मिट्टीतेल (केरोसीन) से भरी एक बोतल अन्य सामानों के साथ ही वहां रखी हुई थी। मिट्टी तेल से भरी वो बोतल आग के ऊपर गिरी। आग में मिट्टी तेल पड़ने से आग और तेज़ी से भड़क उठी। आग की तेज़ और ऊंची लपटें उठने लगीं। बलदेव असहाय और लाचार पड़ा था। वह कुछ भी कर पाने की स्थिति में ही नहीं था। वह आग की लपटों में घिर कर जल गया। धीरे-धीरे आग सारे घर में फैल गई थी। बहुत भयंकर और तेज़ी से आया हिमस्खलन जब थमा, तो गांव और पास-पड़ोस के लोग उनकी सहायता के लिए पहुंच गए। बाहर आसमान से गिरती आफत और भारी बर्फबारी जारी थी। नीचे घर के अंदर आग लगी हुई थी। गांव के लोगों ने किसी तरह से घर की छत में सुराख बनाया। उन्होंने छत के एक कोने को छेद दिया था। छत में बनाए सुराख से सब ज़ोर-ज़ोर से बलदेव को आवाज़ें देने लगे, उसे पुकारने लगे।

लेकिन अंदर से बलदेव की कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। जब मदद करने आए गांव के लोगों ने मलबे में बदल चुके घर को देखना-खोदना शुरू किया, तो उन्होंने पाया कि राम दयाल तथा उसके परिवार के चार अन्य सदस्य चमत्कारिक रूप से घर के अंदर एक कोने में मलबे के नीचे दबे पड़े थे। लोगों ने उन्हें तुरंत मलबे से बाहर निकाला। परन्तु परिवार के दूसरे सदस्यों के वहां होने का कुछ भी पता नहीं चल रहा था। उन्होंने छत में अपने द्वारा बनाए सुराख से ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें लगाते हुए उन्हें ढूंढ़ने, खोजने की बहुत कोशिश की। धुएं और अत्यधिक गर्मी से बच्चों के कराहने, उनके चीखने-पुकारने की आवाज़ें उन्हें सुनाई दी। छत में बनाए सुराख में से धुआं बाहर को आ रहा था। बाहर हड्डियां जमाने जैसी ठंड थी। सहायता को पहुंचे लोगों ने मलबे के ढेर में तबदील हो चुके घर को अधिक खोदना उचित नहीं समझा। उन्हें डर था कि भीतर फंसे ज़िंदा व्यक्तियों को इससे चोट आदि लग सकती है। उन्होंने सुराख से बर्फ को अंदर आग पर उस ओर फैंकना शुरू किया, जहां से बच्चों की डर से भरी चीखने, पुकारने की आवाज़ें आ रही थीं। लोगों ने बचाव और सहायता का कार्य जारी रखा हुआ था। आखिरकार लोग छत में एक लकड़ी की कड़ी (शहतीर) को उठाने, हटाने में सफल हो गए। तीन बच्चे और बलदेव की बहन को मलबे से बाहर निकाला गया। वे सब जीवित बच गए थे। लेकिन बलदेव की बहन को बहुत अधिक चोटें लगी थीं। उसके शरीर के कई अंगों की हड्डियां फ्रेक्चर हो चुकी थीं। उसे बहुत अधिक बुखार भी चढ़ा हुआ था। परन्तु यह चमत्कार ही था, सभी बच्चे पूरी तरह से सुरक्षित और सही-सलामत थे। उन्हें कोई चोट नहीं लगी थी।

बाद में, बलदेव को भी ढूंढ़ लिया गया था। वह आग से बुरी तरह जल चुका था। उसका चेहरा और शरीर क्षत-विक्षत हो चुके थे। केवल एक बाजू और एक टांग ही सलामत थे। सहायता के काम में लगे लोगों को एक डिब्बे में 10 रुपयों के नोटों का एक बंडल मिला। करेंसी नोटों का वो पूरा बंड़ल आधा जल चुका था। मलबे में दबे 16 लोगों में से, नौ लोगों को बचाया जा सका था। 7 व्यक्तियों को बचा नहीं पाए थे। उनकी मौत हो चुकी थी। इस तरह अधजले रुपयों की इस दर्दनाक

कहानी अथवा त्रासद दास्तान आपको सोचने-विचारने के लिए, आप पर छोड़ देता हूं।

दो :

एक अन्य मामले में, प्रकृति की इस क्रूर मार को देख-जानकर, लोग ऐसे कारूणिक और मार्मिक दृश्यों से द्रवित हो गए थे। इस दृश्य ने सबकी आंखों को आंसुओं से भर दिया था। कठोर से कठोर हृदय वाला भी अपने आंसू रोक नहीं पाया था। दृश्य ही मन को ऐसा विचलित करने वाला था। एक मां ने अपने बच्चे को गोद में ले रखा था। मां जीवित थी, परन्तु मासूम और निश्छल बच्चा, मां की गोद में ही मर चुका था। मां को जीवित बचाया जा सका था।

तीन :

रामकृष्ण की टांग के ऊपर लकड़ी की एक कड़ी (शहतीर) गिर गई थी। भारी कड़ी को उठाना बहुत मुश्किल था। कई घंटों की कोशिश के बाद, लोगों ने रामकृष्ण को बचाने का बहुत प्रयास किया। लेकिन बहादुर बच्चे ने सहायता करते लोगों से कहा कि वे उसकी चिंता न करें। लोग असहाय से खड़े होकर उसको देख रहे थे। लड़के ने उनसे मलबे में फंसे दूसरे लोगों को बचाने और उनकी सहायता करने के लिए कहा। उसे अपनी चिंता नहीं थी। वह दूसरों के लिए चिंतित था। लेकिन लोगों ने उस लड़के को बचाने का काम जारी रखा। उन्हें एक आरी मिली। आरी से उन्होंने लकड़ी की बीम (शहतीर) को काटा। लड़के को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। वह जीवित बच गया था।

उसी दिन शाम तक अन्य कई स्थानों पर बहुत से दर्दनाक हादसे और मर्मांतक दृश्य पैदा हो चुके थे। ऐसे हृदयविदारक दृश्यों को देख, हर किसी का दिल रो रहा था। देखने वाले लोगों की आंखें दया, करुणा और कुदरत के आगे अपनी बेबसी पर आंसू बहा रही थीं।

(संयुक्त निदेशक सेवानिवृत्त, स्वास्थ्य विभाग, हिमाचल प्रदेश)

सम्पर्क : गुरु बेहड़, ढालपुर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश।

e-mail : rawalbs@gmail.com

पृष्ठ 43 का शेष...

वाले कदमों को भी रेखांकित किया जाए।

तीसरे, राज्य सरकार को चाहिए कि वह अपनी ओर से ज़िला में स्वास्थ्य इन्फ्रास्ट्रक्चर को यथासंभव मज़बूत करने का प्रयास करे। ज़िला अस्पताल, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के भवनों की मुरम्मत ज़रूरी है। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि समस्त स्वीकृत लेकिन रिक्त पदों को शीघ्र भरा जाए। इसमें ज़िला अस्पताल केलंग में विशेषज्ञ चिकित्सकों के सात पद भी शामिल हैं। केन्द्र सरकार की ओर से राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन वित्तीय मदद के लिए तैयार है बशर्ते कि राज्य सरकार इस दिशा में अपनी रुचि व संकल्पशीलता प्रदर्शित करे।

स्वास्थ्य कर्मचारियों व अधिकारियों के लिए रिहायशी मकानों की सुविधा अति आवश्यक है। यदि हम अच्छे प्रोफेशनल स्टाफ को लाहुल जैसे दूरदराज़ व सुविधा विहीन इलाकों की ओर आकर्षित करना चाहते हैं तो यह सब से ज़रूरी कदम है। माननीय जनजातीय विकास मंत्री महोदय जो लाहुल क्षेत्र के विधायक व चुने हुए जनप्रतिनिधि भी हैं, अपनी ओर से इस मामले में विशेष दबाब बना सकते हैं। वर्तमान में ज़िला में स्वास्थ्य कर्मियों की उपलब्धता निराशाजनक है और बिलकुल ही स्वीकार्य नहीं है। लाहुल में 'महामारीविद्' का पद भी रिक्त पड़ा है जबकि मौजूदा हालात में यह बेहद अनिवार्य है। और प्रधानमंत्री स्वयं राज्य सरकारों से आग्रहपूर्वक अनुरोध कर रहे हैं कि कोविड जैसी सर्वव्यापी महामारी का मुकाबला करने के लिए ये पद शीघ्र भरे जाने चाहिए।

चौथी बात, सड़क परिवहन एवं एंबुलेंसों में सुधार लाया जाए। क्यों कि पर्यटकों की आवक कई गुणा बढ़ जाने से घाटी की तंग सड़कें इतनी ट्रेफिक झेल पाने में असमर्थ होंगी। इस तरह से सड़क दुर्घटनाओं के बढ़ने की संभावना बहुत बढ़ गई है बीआरओ को चाहिए कि एक प्लान के तहत कुछ क्रिटिकल स्थलों पर सड़कों को खुला किया जाए। और इस बात का विशेष ख्याल रखा जाए कि यहां के पर्यावरण की कम से कम क्षति हो। स्वास्थ्य विभाग के पास वर्तमान में थोड़े से ही एंबुलेंस हैं। इनकी संख्या बढ़ानी होगी। ज़िला में ट्रॉमा सेंटर स्थापित होना चाहिए ताकि ज़िला में दुर्घटना ग्रस्त मरीज़ों को दूसरे ज़िलों में ट्रांसपोर्ट करने की बजाय यहीं पर उनका प्राथमिक उपचार किया जा सके।

अंत में, लाहुल के निवासियों की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए समस्त सरकारी विभागों तथा दूसरे इदारों को सम्मिलित करना चाहिए जिसमें परिवहन, बीआरओ, पुलिस के साथ-साथ स्थानीय समुदायों व पंचायती राज संस्थानों को भी शामिल किया जा सकता है। यदि हमें इस घाटी को, जहां कि मूलभूत संस्थाएं अभी तक पूरी तरह से विकसित नहीं हैं और यहां के निवासियों को, जोकि शांतिप्रिय, मित्रवत् तथा एक हद तक समावेशी और सहिष्णु भी हैं, पर्यटकों की अत्यधिक आवाजाही के दुष्प्रभावों से बचाना है तो ऊपर दर्शाए गए कदम शीघ्र अतिशीघ्र उठाए जाने की ज़रूरत है।

सम्पर्क :

डॉ. जे.पी. नारायण

पूर्व डॉइरेक्टर, डब्ल्यू. एच. ओ., रीजनल ऑफिस फॉर साउथ ईस्ट एशिया, नई दिल्ली।

narainjp88@gmail.com

डॉ. रंजीत वैद

ज़िला स्वास्थ्य अधिकारी

क्षेत्रीय अस्पताल, केलंग, लाहुल-स्पीति,हिप्र।

drranjitvaid@gmail.com

समीक्षा

स्नो फेस्टिवल सीरीज़ : एक झलक

ञगः छेरिङ

टनल खुलने के बाद लाहुल में 'स्नो फेस्टिवल सीरीज़' की धूम रही। यह 25 जनवरी, 2021 को शुरू हुई थी। और विभिन्न गाँवों में यह पूरे 75 दिन चली। प्रायः हर बड़े गाँव में एक नया मुख्य अतिथि आता था और दर्शक लोग इन अतिथियों के दर्शन के लिए उमड़ पड़ते। पुराने दिनों की यादें ताज़ा हो गईं जब इंदिरा गांधी जी, लता ठाकुर जी, देवी सिंह जी या संजय गांधी जी, मेनका या सोनिया जी को 'देखने' के लिए हुजूम उमड़ पड़ता था। या फिर बहुत पहले (सुना है कि) मुंशी साजा राम जी को देखने आते थे और टी०ए०सी० मेंबर सोमदेव जी को देखने आते थे!

टूरिज़्म प्रोमोशन के मद्देनज़र आयोजित इस 'महा श्रृंखला' के मुख्य आकर्षण थे स्थानीय कलाकारों और किसानों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, पारम्परिक परिधानों में रोड़ शोज़, युवाओं द्वारा कला एवं शिल्प प्रदर्शनियाँ, स्थानीय पारम्परिक खेल प्रतियोगिताएं। लेकिन वास्तव में मुख्य आकर्षण के केंद्र रहे प्रदेश के बड़े वी आई पी और ब्यूरोक्रेट। ऐसा नहीं कि राजनेताओं ने इस सीरीज़ में शिरकत नहीं की। बराबर की। ऐसा भी नहीं कि संस्कृति का प्रदर्शन नहीं हुआ। बिल्कुल हुआ। लेकिन आकर्षण का केंद्र ब्यूरोक्रेट ही रहे। लाहुल की जनता के लिए यह एक निपट नई चीज़ थी कि मुख्य सचिव और प्रधान सचिव स्तर के अफसर शाह सपत्नीक न केवल उन के गाँव के आंगन तक आए और पनिहारे का पानी पिए, डेहरा में शुर-यौरा चढ़ाए, बल्कि उन का हाथ पकड़ कर एक खुड़कि नाटी भी डाल गए... राजा प्रजा को यूँ आत्मीयता पूर्वक निकट लाने की इस प्रक्रिया के लिए लाहुल के विधायक एवम केबिनेट मंत्री डॉ० राम लाल मार्कंडा तथा उपायुक्त श्री पंकज राय इस सब के लिए खास तौर से बधाई के पात्र हैं।

इस क्रम में 25 फरवरी को एक आयोजन योबरङ गाँव में हुआ। इसे प्राचीन 'योर' पर्व के साथ जोड़ कर मनाया गया। 26 को 'योर' था। यह बहुत अच्छा किया कि इन दोनों को मिक्स नहीं किया गया। वर्ना खिचड़ी बन जाती। और कुछ गाँवों में खिचड़ी बनी भी। स्नो फेस्टिवल का ओवर ऑल कॉनसेप्ट बहुत अच्छा था। लेकिन प्रस्तुति काफी खराब रही। लाईव में अच्छा रहा होगा, पर सोशल मीडिया में कतई अच्छा नहीं दिख रहा था। और चूँकि यह आयोजन टूरिज़्म को बढ़ावा देने के लिए था, तो टूरिस्ट तो सोशल मीडिया ही देखता है। कुछ जगहों पर तो यह बड़ा फूहड़ हो गया। संस्कृति का मामला बेहद सम्वेदनशील मामला होता है। यदि इस के साथ अच्छे से पेश होना नहीं आया तो यह बदशक्ल और हास्यास्पद दिखने लगती है। संस्कृति को अच्छी तैयारी के साथ शो केस करना चाहिए। वर्ना टूरिस्ट के मन में इस के प्रति आकर्षण की जगह विकर्षण उत्पन्न हो जाएगा। इन प्रोमोशनल कार्यक्रमों को पारम्परिक अनुष्ठानों के साथ मिक्स नहीं करना चाहिए। लोकाचारों और अनुष्ठानों की पवित्रता, गरिमा दूषित न हो, उन का मौलिक सौन्दर्य बना रहे। माना कि सोशल मीडिया पर प्रशासन और कम्युनिटी का नियंत्रण नहीं है, पर कुछ तो हल खोजना होगा।

अत्यधिक आवृत्ति इस सीरीज़ की एक और कमी रही। बहुत मेहनत से कल्चरल डिस्प्ले की एक रेंज विकसित करनी होगी। इस श्रृंखला में हम ने कुछ सीमित चीज़ें बार-बार दुहराईं। और लोग उकताने लगे। बजाए इस के कुछ सीमित आयोजन पूरे बजट और मेन पॉवर इंवॉल्वमेंट के साथ किए जाते तो ये कुछ याद गार मिसालें बन जातीं ।

खैर, इस योबरङ वाले आयोजन में मुख्य अतिथि थे प्रधान सचिव (कृषि) ओंकार शर्मा। लोगों ने बर्फ की सुंदर कलाकृतियाँ बनाईं थीं। लेत्साड़ मेमे की मूर्ति बहुत अच्छी बनी थी। बर्फ की शिलाओं पर पुराने घरेलू उपकरण व पारम्परिक वस्त्रों की प्रदर्शनी लगी हुई थी। पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला का एक स्नो मॉडल बनाया गया था। वहाँ दर्शाए गए कुगुति गाँव, जोत और मणि महेश को देख कर प्रधान सचिव महोदय भावुक हो गए। देवावेश में हिंगरने लगे। ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगे और अपनी धुरी पर चक्कर काटने लगे। जय धूडू स्वामी माहराज! अंत बिअंत तेरी माया...सारा माहौल शिवमय हो रहा था!

वो सब तो ठीक था, पर मैं चिंतित हूँ कि भविष्य में कोई अफसर सरकारी फाईल साईन करते करते, आधिकारिक मीटिंग में बोलते बोलते इस कदर सहज भाव से ट्राँस में जाने लगे तो क्या होगा? मसूरी वाले लाल बहादुर अकादमी और मशोबरा वाले हिपा में इस तरह की 'स्पिरिचुअल क्राईसेज मेनेजमेंट कोर्स' का प्रावधान रहता होगा क्या? नहीं रहता हो तो सरकार को शीघ्र इस विषय पर गंभीरता से सोचना चाहिए। आने वाले समय में हिमालय देश के अधिकतर सरकारी अफसर अपने भीतर के 'शमन' को कंटेन कर के नहीं रख पाएंगे, यह तय है!

पोस्ट स्क्रिप्ट : एक तो यह कि, ग्राम पंचायत तांदी ने हमेशा की तरह लीक से हट कर कुछ करने का उपक्रम किया। इन्होंने सब से अलग 14 मार्च, 2021 को 'फस्ट लाहुल माऊंटेन ट्रेल बाईकिंग MTB चैंपियनशिप- 2021' का आयोजन किया। सुमनम गाँव की वीरान धूसर फाटों पर रंग और रौनक मेला जमा। देश भर से माऊंटेन बाईकर्स हिस्सा लेने आए। एड्वेंचर स्पोर्ट्स की ज़िला स्तरीय असोसिएशन बनी। प्रधान अमरजीत सिंह के नेतृत्व में ग्राम

पंचायत के उप प्रधान वीरेंद्र, अरविन्द, राजू, दिनेश आदि ने खूब मेहनत की। अमरजीत का यह पहला शो नहीं था। 1994 में रिवलिङ से ''येति फेस्टिवल'' (स्कींईंग) सीरीज़ की शुरुआत इन का ही कॉंसेप्ट था। 1998 में छुर्पग मेंदान में शायद पूरे हिमालय में समुद्र तल से 3000 मीटर की हाईट पर पहला 'मोटो क्रॉस' कम्पीटीशन इन्होंने ही करवाया। एड्वेंचर टूरिज़्म के इस उपेक्षित पहलू पर समुचित ध्यान देने की आवश्यकता है।

दूसरे, प्यूकर गाँव में बेटी के पैदा होने पर एक अलग 'चेमेद् गोचि' पर्व मनाया जाता है..... यह अद्भुत रहस्योद्घाटन पहली बार इसी वर्ष, स्नो फेस्टिवल के दरमियान हुआ। इस घोर पुरुष वर्चस्ववादी समय में इस तरह के कबायली अवशेषों का बचा रह जाना एक अर्थ में लाहुली समाज में स्त्रैण चेतना (फेमिनिस्ट सेंसिबिलिटी) के शीघ्र प्रस्फुटन की सम्भावनाओं की पुष्टि ही है।

तीसरे, सोशल मीडिया में गरजा पिति न्यूज़ चैनल पूरी तैयारी के साथ उतरा है। उन का अपना एक अति सक्रिय फेसबुक पेज भी है। उन का कवरेज और विषय चयन काबिले तारीफ है। उम्मीद है कि पोलिटिकल पत्रकारिता के क्षेत्र में यह एक बेहतरीन फोरम की तरह विकसित होगा।

फुटकर गतिविधियों में श्री रोशन थोरङ्पा द्वारा संचालित फ्रेंड्स फ्रोम गरजा पिति FFGP वाट्स एप ग्रुप तात्कालिक मुद्दों पर हाईपर एक्टिव रहा। इस ग्रूप में सेवा निवृत्त पुलिस महानिदेशक श्री प्रेम सिंह परशीरा अपनी टीम के साथ विभिन्न सामाजिक तथा प्रशासनिक एवं जन हितैषी मसलों से जूझते उन्हें स्ट्रीम लाईन करते नज़र आए, वहीं ''तांदी बाँध संघर्ष समिति'' का विधिवत गठन हुआ। विक्रम कटोच के प्रयासों से फेसबुक पर मेधा पाटकर जैसे विश्वविख्यात पर्यावरण कार्यकर्ता पहली बार लाहुली जनता से मुखातिब हो पाए। अंततः शालिनी गड़फा के ग्रुप भाषा ने लाहुली भाषाओं, संगीत एवं संस्कृति पर सुदीर्घ अंतहीन अनियोजित अनौपचारिक चर्चाएं करवाईं। इन्होंने अक्तूबर 2020 के प्रथम सप्ताह में पटनी भाषा में लिखी गई कविताओं पर तीन घंटे की वेबिनार गूगल मीट आयोजित की। जिस में सुनीता कटोच, यूसुफ, स्मिता लोप्पा, केसङ व इशान मार्वल की महत्त्वपूर्ण कविताएं पढ़ी गईं और उन कविताओं पर गम्भीर चर्चा की गई।

पुस्तकें –

इस बीच लाहुल के कई स्थापित एवं नवोदित लेखकों की पुस्तकें प्रकाशित होकर आईं हैं।

१. विधा : इतिहास

भाषा : अंग्रेज़ी

तोबदन हिमाचल प्रदेश के सुपरिचित इतिहासकार हैं। पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों पर एक दर्जन से अधिक महत्वपूर्ण किताबें लिख चुके हैं। इन का लेखन ऐतिहासिक शोध एवं व्यापक फील्ड वर्क पर आधारित होता है। प्रस्तुत किताब इसी परंपरा में एक अनुपम काम है। इस में लाहुली अतीत के बारे प्रचलित दंतकथाओं की तथ्यात्मक पड़ताल की गई है और कुछ नई स्थापनाएँ भी हैं।

२. विधा : साहित्य (कहानी)

भाषा : अंग्रेज़ी

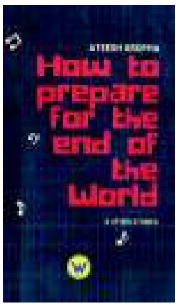

अतीश क्रोफा इस से पहले एक उपन्यास लिख चुके हैं जो अभी प्रकाशनाधीन है। प्रस्तुत किताब How to Prepare for the End of World पहली प्रकाशित किताब है जो कि कहानियों का संकलन है। इस में कुल 14 कहानियाँ संकलित हैं जो कि प्देजंहतंउ पर बेहद चर्चित हुई उन की 50 कहानियों में से चयनित है। हमारी जानकारी में किसी लाहुली द्वारा लिखित अंग्रेज़ी भाषा का यह पहला उपलब्ध कथा संग्रह है।

चयन और प्रकाशन लेखक का अपना है। नई पीढ़ी की वैचारिक चेतना और तेवरों के साथ लिखी गई इन कहानियों को पढ़ना एकदम नए अनुभव में से गुज़रने जैसा है।

३. विधा : साहित्य (यात्रा संस्मरण)

भाषा : हिंदी

शेर सिंह की यह चौथी किताब है। इस से पहले उन का एक कविता संग्रह,व दो कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। यद्यपि इस किताब में संग्रहीत कुछ संस्मरण काफी पुराने जान पड़ते हैं फिर भी एक उत्तरोत्तर शिल्पगत विकास इन चारों किताबों के क्रमानुसार पाठ अवलोकन से परिलक्षित होता है। कहना न होगा कि संस्मरण में आरंभ से ही उन का लेखक गहरे में प्रवृत्त हुआ है। इन की कहानियों में भी संस्मराणात्मकता द्रष्टव्य है और इन की भाषा यात्रा वृत्त के एकदम मुफीद है। अनुभव वैविध्य से ये रोचक बन पड़े हैं। हिमाचल में लिखित हिंदी साहित्य में इन संस्मरणों को एक मील पत्थर की तरह याद किया जाएगा।

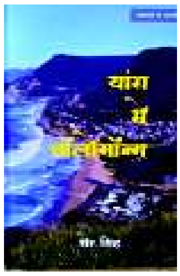

४. विधा : साहित्य (आत्मकथा)

भाषा : अंग्रेज़ी

इस किताब को एक सुंदर साहित्यिक किताब मानने में गुरेज़ नहीं होनी चाहिए। ई. राम नाथ साहनी की तीसरी किताब है। इस किताब में एक यूएस रिटर्न्ड NRI के स्वप्न, नोस्टेल्जिया, घर वापसी से लेकर मोहभंग तक की व्यथा कथा, भारत की बिगड़ी हुई ढीठ राजनीतिक, वाणिज्यिक और सामाजिक व्यवस्था से उलझते एक निर्दोष सीधे सच्चे इंसान की पीड़ा, व्यवस्थित तरीके से आत्मकथात्मक शैली में दर्ज हैं। किताब रोचक होने के साथ साथ प्रेरणा प्रद भी है। भाषा सरस, बोधगम्य एवं साहित्यक है। बेहद रीडर फ्रेंडली किताब।

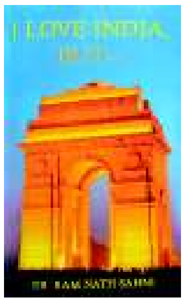

इस बीच संगीत लाहुली संगीत पर बात किए अरसा बीत गया। लॉकडाउन न होता तो वह घुरे गायन की वो सीरीज़ आगे बढ़ती जो तीन साल पहले संध्या पेलेस शमशी में शुरू हुई (तारीख याद नहीं) और वाईब्ज़

मनाली में परवान चढ़ी. . .लाइव सामूहिक गायन का अलग ही एंबिएंस रहता है। इन शहराती आयोजनों में गांव की पारम्परिक महफिलों से भी ऊर्जावान अनुभव रहे। महामारी न होती तो सिलसिला आगे बढ़ता।

मनाली वाला आयोजन चूंकि एक आधुनिक कवि ने किया था, सो कविता का एक कम्पोनेंट भी इसमें था। हालांकि घुरे के बरक्स वो खास उभर कर के नहीं आ पाया, पर वो ईवेंट एक महत्वपूर्ण संकेत छोड़ गया कि आधुनिक कविता और पारंपरिक लाहुली संगीत की संगत संभव है। इस भावना की थाह लेने के लिए हमें थोड़ा सा अतीत में जाना पड़ेगा।

हम घरसंगी के ''क म्होड़े घरबारो'' से बात शुरू करेंगे, जो बहुत लोकप्रिय गीत रहा है, अभी भी है। कारण है इस की सरलता। इसके तश्बीहात लोक में से उठाए गए थे और धुन भी लोकाभिरुचि सम्पन्न थी।

यह चूंकि आधुनिकता बोध का पहला लाहुली गीत था और इस में पारम्परिक गीत का फॉरमेट अनेक स्तरों पर तोड़ा गया था, अतः यह बेहद सराहा गया। इससे पहले के लाहुली गीतों में प्रेम का मतलब प्रायः ''बापु घरा छोड़ा'' और ''भाई बंधा छोड़ा'' तक सीमित था। हमारे समाज में भी प्रेम का मतलब ''भागना'' Elopement तक ही सीमित था। लेकिन इस गीत में नाकाम मुहब्बत का दर्द गाया गया तो लोगों को बहुत अपीलिंग लगा। श्रोताओं के दमित भावों को, दिल के ''फट्टड़'' हसरतों को आवाज़ मिली।

हालांकि कथ्य काफी हद तक फिल्मी था। गीत सुनते ही सड़क और महल की बाइनरी पर लिखे गए दुनिया भर के हिन्दी फिल्मी नगमें याद आ जाते हैं। इस गीत का वीडियो बनना चाहिए था। जोकि नहीं बना।

इस गीत के बाद बहुत से प्रचलित गीतों की रिकॉर्डिंग हुई। बाढ़ सी आ गई. . . वे सभी गीत लोकप्रिय हुए लेकिन उसी तरह से सराहे गए जैसे आमतौर पर पारंपरिक लोकगीतों के वीडियो सराहे जाते हैं।

मौलिक रचनाओं में गौरतलब थीं घरसंगी की ही दो और कंपोज़िशन्ज़ ''राङ् न्हुरे ल लच़ङ'' और इच्चा ञोकोल''। इनके बाकायदा वीडियो बने और छोटी-मोटी कोरियोग्राफी भी की गई...संगीत अरेंज करने पर भी मेहनत की गई दिखती है। इन दोनों गीतों का कंटेंट प्रेम में बड़े घर (म्होड़े घरबारो) के विमर्श से आगे जाता है। और ये गीत जैसी सहजता को खो कर वैचारिक कविताओं के भाव बोध पकड़ने लगे हैं। ध्यान से देखें तो ये गीत न होकर कविताएं ही हैं, और कविताओं को गाना और गवाना अपने आप में चुनौती है।

इस प्रक्रिया में सबसे अधिक कनफ्यूज़ हुआ है संगीतकार। उसने कविताओं के लिए कभी संगीत नहीं बनाया होगा ऐसा इस संगीत को सुन कर लगता है। पश्चिम में कविताओं को गाने की लंबी परम्परा है... रॉक, रेगे, डब, कंट्री, आर एण्ड बी, सभी विधाओं में जटिलतम भाव बोध की कविताएं गाई जाती रही हैं। आप बॉब डिलन को ले लो, या जिम मॉरिसन को. . . और पिंक फ्लआयड को। तदानुसार गंभीरतम संगीत कंपोज़ किया गया है। और भारत में भी गंभीर कविता को गाने की शास्त्रीय परंपरा रही होगी, मैं बहुत नहीं जानता, सिवा गज़ल और आध्यात्मिक सूफी संगीत के। हमारी फिल्मों में भी यह परंपरा नहीं रही। अपवाद स्वरूप वी शांता राम और गुलज़ार ने कुछ काम किए हैं, लेकिन वे भी उसे सही स्थान नहीं दिला सके। खैर हम ने दो विवेच्य रचनाओं में ''राङ् न्हुरे लच़ङ'' तो फिर भी काफी कैची, गेय और आम फहम रचना है। वीडियो शॉट्स बहुत

अच्छे हैं। कोरियोग्राफी संयमित है। इसकी धुन भी जटिल न होकर पब्लिक के मन की है।इंस्ट्रुमेंटल पीसेज़ और अधिक समृद्ध होने चाहिए थे। लिरिक्स से आपको प्रथम दृष्ट्या 'हम तो हैं परदेस में, देस में निकला होगा चांद' की याद आ जाती है जो कि राही मासूम रज़ा ने लिखी थी।

कॉलेज के दिनों में मेरे एक मणिपुरी दोस्त ने अपनी प्रेमिका के लिए गीत बनाया था- ''तुम इंफल के चांद को देखो मैं चंडीगढ़ वाले को....दोनों चांद एक ही हैं, हमारी आंखे एक होंगी तो हमारी रूहें एक होंगी''। ऐसे मेटाफर युवा कविताओं में सर्वत्र दिखते हैं। और बहुत आकर्षक हैं। लेकिन इस सबके बाबजूद लोगों की जुबान पर चढ़ नहीं पाए तो कारण ज़रूर खोजने चाहिए। ताकि हमारी संगीत परंपरा में सुधार आए। इस वीडियो में मुझे लिरिक्स, संगीत तथा विज़ुअल्ज़ में एक भीतरी कोहेसिवनेस का अभाव खलता है। इसके विपरीत ''इच्वा ञोकोल'' की समस्या है उसकी लिरिक्स। यह सामान्य प्रेम गीत से बढ़कर एलिएनैशन, अकेलेपन और अवसाद का गीत है। चाहे वह अवसाद और बेकरारी प्रेम जनित ही है। यह विरह, हिज्रो फिराक की एक Raw मनोभाव से आगे जाकर अस्तित्ववादी चेतना की रचना है, जिसे डिपिक्ट करने में संगीत और वीडियो दोनों असफल हैं। बहरहाल हमें कंपोज़रों के प्रयास और हिम्मत की दाद देनी चाहिए। इस बीच में हम किशन हंस और देव जस्पा के कामों को देखें तो वे अधिकतर पारंपरिक बेस को लेकर किया गया काम है। सामान्य होते हुए भी यह महत्वपूर्ण है क्योंकि लोक परंपरा का काफी हिस्सा कंपाईल हो जा रहा है। ये लोग भी संगीत और वीडियो में शिल्प को लेकर छोटे-बड़े एक्सपेरिमेंट करते रहते हैं लेकिन घरसंगी जैसा पेराडाईम शिफ्ट लाने की जुर्रत नहीं कर पाते। खासकर के लिरिक्स में बिल्कुल ही नहीं।

अलबता ''लचङ रिङ बङ्ज़ि योशि'' का ज़िक्र ज़रूर करना पड़ेगा, क्योंकि यह किशन हंस का अपनी शैली से हटकर किया गया प्रयास था। इसमें यूसुफ की कविता का विशेष महत्व है। बतौर कविता यह एक महत्वपूर्ण रचना है। यूसुफ ने बिंब और प्रतीक ठेठ लाहुल की धरती से लिए हैं, ठीक '' क म्होड़े घरबारो'' की तरह। बल्कि बिंबों की झड़ी लगा दी है। जो पाठ की कविता के लिए तो उचित है लेकिन गेय रचनाओं में इससे सही-सही रस ग्रहण में बाधा उत्पन्न हो जाती है। अंतरा में एकाध तश्बीहात एकाध मुहावरे और एक सशक्त स्थायी/टेक की आवृत्ति से असरदार गीत तैयार होता है। इस कविता को गीत में कनवर्ट करके गाया जाता तो बड़ा चमत्कार पैदा हो सकता था। लिरिक्स पर काम करने की ज़रूरत थी। या फिर संगीत ही कविता के अनुकूल बनाया जाता जैसा कि ऊपर बात की गई है। इस गीत का पहला अंतरा ठीक कंपोज़ हुआ है लेकिन आगे संगीत साथ निभा नहीं पा रहा। बहुत ही काम चलाऊ औपचारिकता निभाई गई है। हां, दोनों मुख्य मॉडल्ज़ ने अनुशासित और डीसेंट एक्सप्रेशन दिए हैं।

इधर पटनी भाषा में लिरिक्स लेखन का चलन तो खूब हुआ है, यूसुफ जैसे लोग इसे वांछित स्तर तक ले जा पाए हैं। स्मिता लोपा, इशान मार्वल जैसे लोग इस पेस को पकड़ भी रहे हैं लेकिन संगीत ने तदानुकूल टेलेंट उभरता नहीं दिख रहा है। टेलेंट है, लेकिन नवाचार की हिम्मत कम है। ''वेणु समागम'' वाले समीर हंस और अक्षय बोक्टपा जैसे युवाओं से बहुत उम्मीद है। लाईव इवेंट और वॉर्कशॉप इस काम को सिरे चढ़ाने में मदद करेंगे।

अंत में सतीश लोप्पा ने यूट्यूब में लाहुली रागों का जो ट्यूटोरियल(लाहुली राग माला) डाला है (Legacy of Lahul) वह बहुत व्यावहारिक ट्रैनिंग दे सकता है। यह एक बड़ा काम हुआ है लाहुल के मौलिक रागों और कंपोज़िशन्ज़ की जानकारी और प्रशिक्षण के लिए। इसे और अधिक तकनीकि बारिकी से तैयार किया जा सकता है। राम देव कपूर के घुरे रिकॉर्डिंग जो फेसबुक पर उपलब्ध हो रहे हैं, वे भी संगीत के डाक्यूमेंटेशन की दिशा में ज़रूरी काम है। उनकी अपनी एक युनीक गायन शैली है यह सहेजने लायक है। हमें

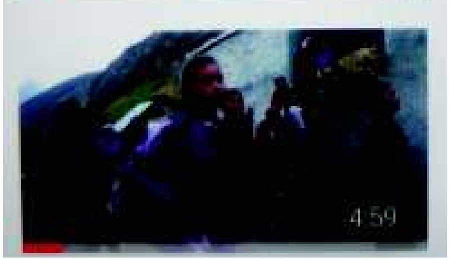

मलाल है कि फकत अपनी लापरवाही के चलते हम अपने-अपने गांव के अनेक नायाब क्लासिक घुरे और सुगिलि गायकों को रेकार्ड नहीं कर पाए... ।

अनिल सूर्यवंशी का म्यूज़िक वीडियो 'यू ट्यूब पर हिमालयन फोक मेश अप' वोल्यूम-1 आया है। हिमाचल में यह मैश अप स्टाईल इन दिनों फैशन में है और लोग खूब पसंद कर रहे हैं। चूंकि लाहुली कलाकार द्वारा इस तरह का यह पहला ही काम देखने को मिला है, हमें इस का स्वागत करना चाहिए। चाहे अभी काफी मशक्कत दरकार है इस वीडिओ में लाहुल के चार गीत शामिल हैं। शुरुआत मयाड़ के एक गीत से किया गया है, जिसमें पटन की भी एक धुन डाली गयी है। उस के बाद बुनन भाषा में और फिर बोलीवुड का एक। गीत-संगीत और ध्वनि रेकार्डिंग का स्तर बहुत अच्छा है। आगे

एक शायद लद्दाखी और फिर से एक पटन का गीत है। आखीर में नेपाली (खसकुरा) का एक नम्बर है। यद्यपि यह कलाकार की अपनी भाषा नहीं है, फिर भी इस में नेपाली का तलफ्फ़ुज़ और लहजा मुझे बहुत जचा। वीडिओ खूब जच रहा है और उस में मॉडल भी फब रहे हैं। हिन्दी गाने के बोल खासे साफ़ हैं। गायिकी में थोड़ा सा और खुलापन आना चाहिए। स्थानीय भाषाओं पर गायक को ज़रा मेहनत करने की ज़रुरत है कि उसे स्थानीय स्पीकर्स के बीच रह कर खूब मेहनत करनी चाहिए। हिमालय को थोड़ा और फैला देते, पूर्व और पश्चिम दोनों ही ओर... तो यह काम और अधिक आनंदमय हो जाता। इस की रेंज भी बढ़ जाती। यह मेरी पर्सनल ख्वाहिश है कि पारम्परिक लोक विज़ुअल्ज़, और वेश-भूषा को और अधिक नज़दीकी, गहराई और विस्तार से पकड़े जाए और 5— 7 मिनट के विडीओज़ में बहुत ऐसी पिक्चराईज़ेशन की अपार संभावनाएं हैं। वोल्यूम 1 में हम ऐसा ही कुछ उम्मीद कर सकते हैं। लायुल सुर संगम ने अपनी चिर प्रतीक्षित विडिओ फिल्म सुनी भुन्कू रिलीज़ कर ली है। 24 मिनट लम्बी इस फिल्म में लाहुल और चंबा में प्रचलित इसी नाम की लोकप्रिय प्रेम कथा फिल्माई गयी है। एकाधिक कारणों से इसे मैं अति सामान्य कोटि की फिल्म कहूंगा। इस में गद्दी भाषा में संवाद काफी मेहनत से, और सटीक लिखे - बोले गए हैं। कुछ संवाद पटनी में भी है। कथा में सूनी लाहुली चरित्र है लेकिन संवाद वह गद्दी भाषा में बोलती है। सोचता रहा कि उस युग में गद्दी और लाहुली भाषी परस्पर किस संपर्क भाषा में बात किया करते होंगे? फिर समझ में आता है कि प्रेम की अभिव्यक्ति किसी भाषिक परिधि में नहीं बंध सकती लेकिन फिल्म बनाने वाले के पास यह ‘क्रिएटिव सूझ’ होनी चाहिए कि किस प्रविधि से इस संकट का हल निकाला जाए? क्योंकि दर्शक तटस्थ होता है, वह कथा पात्रों की तरह प्रेम में डूबा नहीं है, उस की सुविधा का ख़याल रखना चाहिए। फ़्लैश बेक, वायस ओवर, नेरेशन, सब टाईटल आदि तकनीकों का और अच्छा इस्तेमाल हो सकता था। ध्यान आता है कुल्लू में केहर सिंह ठाकुर की एक्टिव मोनाल और डा. उरसेम लता की बहस नामक नाट्य संस्थाओं के पास पर्याप्त थिएटर के अनुभव हैं, उन से मदद ली जा सकती थी। फिल्म में दो गीत हैं, जिन में से एक- ‘‘प्यारी भोटड़िए तुध बिना मुल्क नमाणा ओ’’ मुझे रघु गार्ड के गीत जैसा लगा।

यह चंबा का काफी लोकप्रिय पारंपरिक गीत है और मुझे नहीं लगता कि इस का सूनी भुन्कू की कथा से कोई सम्बन्ध है। सूनी भुन्कू के और भी कई मौलिक गीत जो लाहुल, चंबा, चुराह, तथा पांगी तक प्रचलित हैं, उन में से किसी का प्रयोग किया जाता तो ज़्यादा अच्छा रहता। पूरी फिल्म में इस तरह की बहुत सी बारीक कमियां देख पाया। कास्टिंग में देखता हूँ कि संगीत का और फिल्म का भी निर्देशक गैर लाहुली है। किशन हंस ने प्रोड्यूस किया है। हंस जी को अरसा हो गया है इस फील्ड में, अतः इस से अगले लेवल के काम की अपेक्षा है। धैर्य से काम करें, हबड़-दबड़ से काम बिगड़ता है किन्तु चूंकि यह भी शायद लाहुल की पहली फिल्म है सो हमें इस का स्वागत करना चाहिए। भविष्य में और अधिक स्तरीय काम की उम्मीद के साथ।

रिपोर्ट

12 मार्च, 2022 को एल.पी.एस., मनाली द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन एल.पी.एस. सभागार, मनाली में किया गया, जिसका विषय था - ‘स्वर्गीय ठाकुर देवी सिंह का आधुनिक लाहुल-स्पीति के निर्माण में भूमिका एवं योगदान’। इसमें लाहुल-स्पीति के बहुत-से प्रबुद्ध लोगों ने भाग लिया। श्री रघुवीर सिंह ठाकुर इस कार्यक्रम में मुख्य-अतिथि के तौर पर मौजूद रहे।

एलपीएस के चेयरमैन श्री सुदर्शन ज़स्पा ने सर्वप्रथम गण्यमान्य अतिथियों का स्वागत अभिनन्दन किया और संस्था के कार्य-क्लापों का संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने लाहुल-स्पीति के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाली विभूतियों पर इस तरह के सेमिनारों की श्रृंखला आयोजिक करने की भी मंशा ज़ाहिर की। प्रमुख वक्ता के तौर पर श्री छाया राम जी ने अपने चिरपरिचित सधे हुए वक्तव्य में ठाकुर देवी सिंह जी के व्यक्तित्व और लाहुल-स्पीति के लिए उनके योगदान को सविस्तार प्रस्तुत किया। उन्होंने ठाकुर देवी सिंह जी को एक मितभाषी, ईमानदार, अपने असूलों पर दृढ़ रहने वाले, प्रचार से दूर रहने वाले, कर्मठ, दूरद्रष्टा और अपने इलाके तथा वहां के लोगों के प्रति स्ट्रोंग जज़्बात से लबरेज़ नेता के रूप में याद किया, जिनका अपने इलाके के विकास के लिए महती योगदान रहा है।

खुले सत्र में सर्वश्री नोरबु बरोङ्पा, रामनाथ, डॉ. बीर सिंह साहनी, डॉ. नील चंद, सचिन मेरुपा, भगवान सिंह, सहायक पंजीयक, केलंग आदि ने भाग लिया और अपने विचार रखे। यद्यपि खुली चर्चा के दौरान अधिकतर वक्ता विषय से भटकते हुए दिखाई दिए, ऐसे सेमिनारों में विषय पर संकेन्द्रित रहने की अपेक्षा की जाती है, तथापि यह अपने तरह का एक अच्छा आयोजन रहा।

अंत में श्री रघुवीर सिंह ठाकुर ने मुख्य-अतिथि के तौर पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने संक्षेप में ठाकुर देवी सिंह जी के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला।

- चन्द्रताल ब्यूरो

लिपि

सतीश लोप्पा कृत
लाहुली लोक भाषाओं-अनुकूल
वर्धित नागरी वर्णमाला
चन्द्रताल, अंक-31 में छपी वर्णमाला को अब इस संशोधित वर्णमाला से स्थानापन्न कर दिया जाता है।
31 अगस्त, 2021

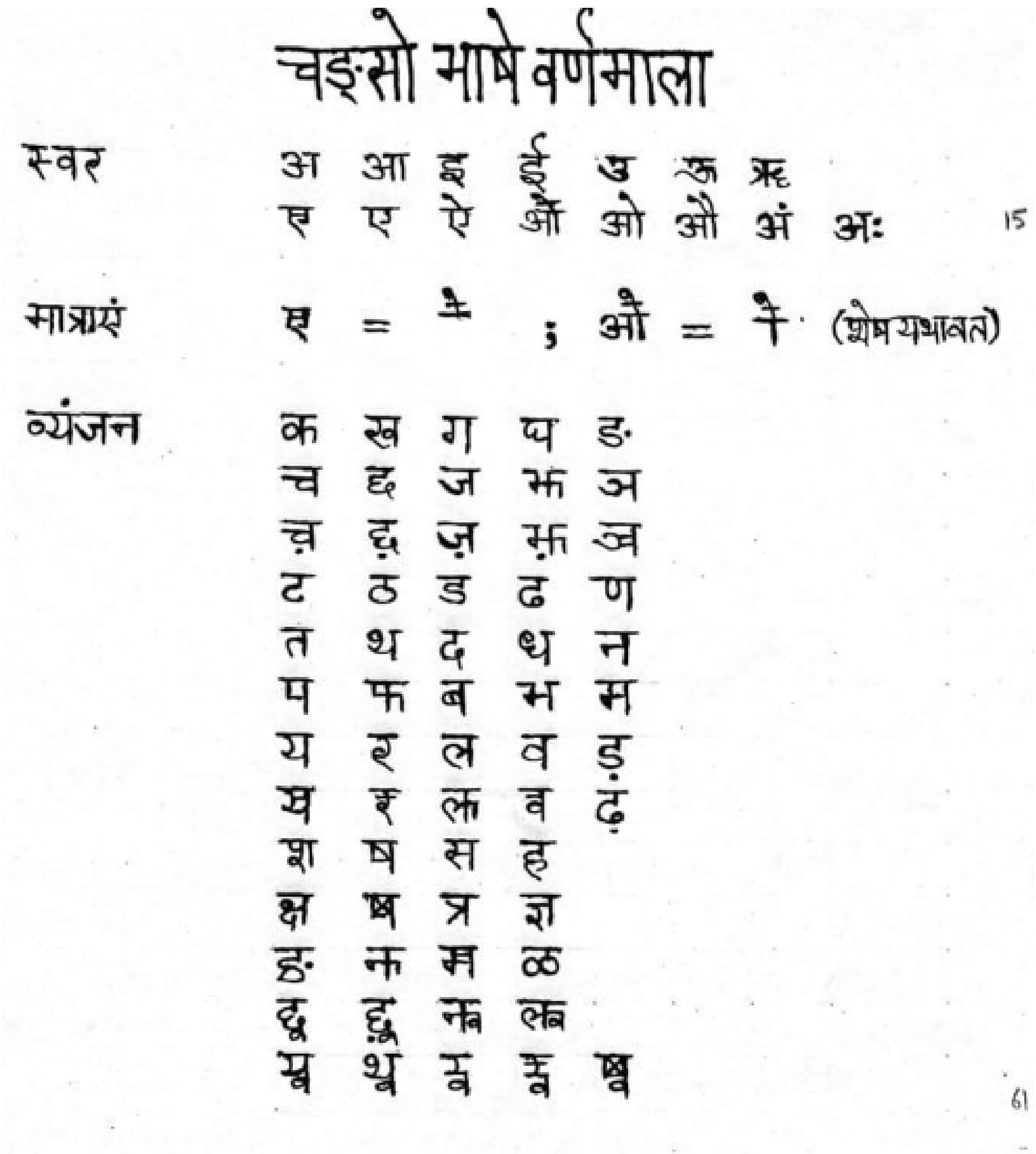

नव संयुक्त व्यंजन रचना

ङ्ह	=	ङ्	+	ह
ञ्ह	=	ञ्	+	ह
न्ह	=	न्	+	ह
म्ह	=	म्	+	ह
य्ह	=	य्	+	ह
र्ह	=	र्	+	ह
ल्ह	=	ल्	+	ह
व्ह	=	व्	+	ह
ळ	=	ल्	+	ड़
ढ्व	=	ढ्	+	व
ढ़्व	=	ढ़्	+	व
ऩ्व	=	ऩ्	+	व
ऴ्व	=	ऴ्	+	व
य्व	=	य्	+	व
थ्व	=	थ्	+	व
र्व	=	र्	+	व
ऱ्व	=	ऱ्	+	व
ष्व	=	ष्	+	व

नव हलन्त रूप

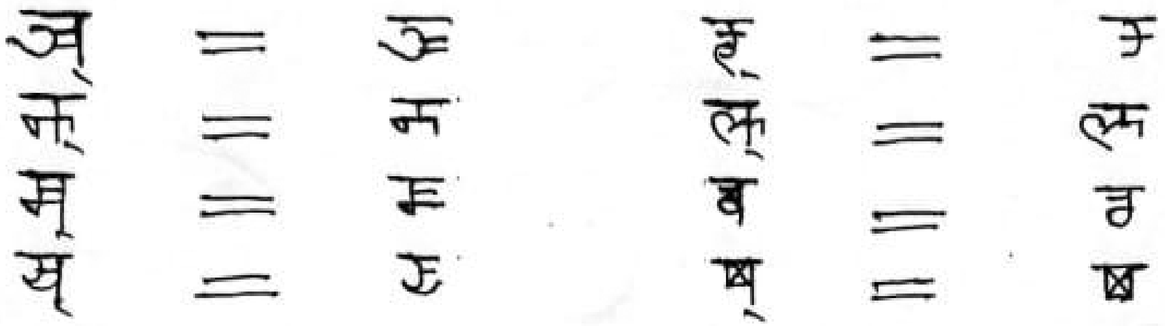

नए स्वरों का प्रयोग

स्वर : ऎ = ॆ

प्रयोग : बॆद = डर
सॆम = मन

स्वर : ऒ = ॊ

प्रयोग : मॊद = चेहरा
शॊद = दोपहर का भोजन

नोट : ये दोनों स्वर "ऎ" तथा "ऒ" क्रमशः "ए" तथा "ओ" की आधी मात्रा के बराबर के हैं।

नए व्यंजनों का प्रयोग

ङ़	→	ङ़ा	=	लामाओं का एक वाद्य
		संङ़ा	=	सीढ़ी
ञ	→	ञिलम	=	लोहा
		ञिजि	=	सात की संख्या (७)
न्क	→	न्कग	=	पीब
		न्कद	=	आराम करने की जगह
न्म	→	न्मर	=	घी
		न्मस	=	अधिक
न्स	→	न्सग	=	रात का भोजन
		न्सुर्न	=	जल्दी
ह्र	→	ह्रग	=	पत्थर
		ह्रङ़	=	घोड़ा
ल्क	→	ल्कगर	=	ऊन की पूनी
		ल्केह्	=	जीभ
व	→	वर-वर	=	खुले मुंह वाला
		वङ्फताड़	=	बहुत खुला कक्ष
ळ	→	मिल्ळ	=	बिल्ली
		कुल्ळु	=	हलवा
द्व	→	द्वा	=	गेहूं
		द्वाःड़	=	छलांग
द़्व	→	द़्वा	=	दाँत
		द़्वङ़ज़ि	=	ऊन सुलझाना
न्व	→	न्वार	=	शक्ल/सूरत
		न्वारि	=	एक अभिवादन

ल्ब	→	ल्बार	=	लुहार
		ल्बङ्ज़ि	=	उबकाई
ग्व	→	ग्वद	=	गिद्ध
		ग्वर्पि	=	सूजन का कम होना
थ्व	→	थ्वक्चि़	=	धागा आदि तोड़ना
		थ्वास	=	एक कुल नाम
त्व	→	त्वद़	=	चमड़े की बनी रस्सी
		न्वक्चि़	=	चारना
ङ्व	→	ङ्वक्चि़	=	संभालना
		ङ्वसल	=	एक घास
ख्व	→	ख्वग	=	एक कीट
		ख्वग-ख्वग	=	जीर्ण ख्वीर्ण
ष्व	→	ष्वङ	=	प्यास
		ष्वे	=	सेब
च्व़	→	च्व़िक्ठ	=	ठोडी
		च्व़िष्क्च़	=	दाँत से काटना
द़	→	द़ा	=	नमक
		द़ङि	=	उजाला
ज़	→	ज़ङ	=	स्वर्ण / सोना
		ज़स	=	भोज्य
झ़	→	झ़िरि	=	लकड़ी के मतले टुकड़े
		झ़स्क	=	तेज़ रगड़
ङ	→	ङन	=	पांच की संख्या (5)
		ङरग	=	पांच पत्थरों का खेल
ञ	→	ञाह्	=	नाक
		ञगः	=	तुला

उपसंहार - यद्यपि यह वर्धित वर्णमाला चङ्सा-क्षेत्र (पटन इलाका) में बोली जाने वाली भाषा 'चङ्सो-भाषे' (मनचद कद) को केन्द्र में रख कर बनाई गई है तथापि मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह इस क्षेत्र की सभी अन्य भाषाओं की आवश्यकताओं की भी समान रूप से पूर्ति करेगी क्योंकि 'चङ्सो-भाषे' में इस क्षेत्र में पाई जाने वाली सर्वाधिक भाषिक ध्वनियों का निसर्गतः समावेश है। मुझे यह भी विश्वास है कि यह वर्णमाला हिमाचल की अन्य लोक भाषाओं की आवश्यकताओं को भी पूरा करेगी।

मैं सर्वजन का आह्वान करता हूं कि आइए हम सब मिलकर अपनी लोकभाषाओं को लिपिबद्ध करने के लिए इस वर्धित नागरी वर्णमाला का प्रयोग करें और अपनी मातृ भाषाओं को समृद्ध और समर्थ बनाने में अपना योगदान दें। व्यक्तिगत हस्तलेखन में इसका प्रयोग ज़रा कर के तो देखिए कि यह कितना एक कारगर बन पाया है।

भवतु सब्ब मंगलम्!!!

- सतीश कुमार लोप्पा

कला

चार्ली हेब्दोऊ वरका

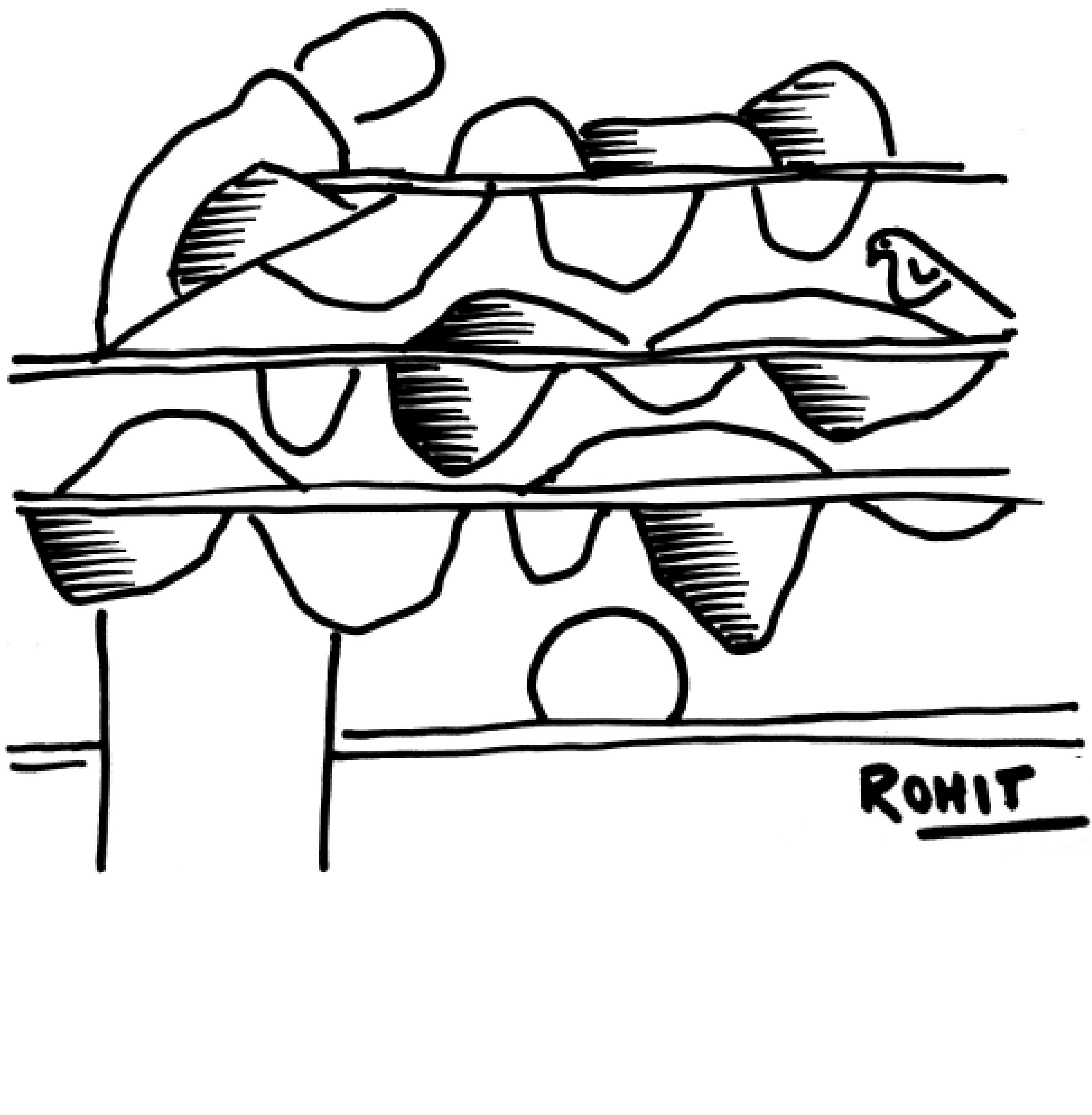

रोहित जी. रूसीया

स्वंगला एरतोग

लाहुल स्पीति में कला व संस्कृति उत्थान हेतु सोसाईटी रजि०

©Rajesh Baba

उद्देश्य

- सांस्कृतिक विरासत को संजोना व संकलित करना व उन्हें प्रकाश में लाना, पुर्नजीवित करना।
- लोक विधाओं को चिन्हित करना जो लुप्त होने के कगार पर हैं।
- साहित्यिक रुचियों का विकास व सृजन के प्रति रुझान पैदा करना।
- सामाजिक आर्थिक व सांस्कृतिक उत्थान के लिए एक मंच प्रदान करना जहां विचारों का सम्प्रेषण एवं जन प्रतिक्रिया का आकलन संभव हो।

151/1 रामशिला, अखाड़ा बाज़ार, कुल्लू, हि०प्र० 175101

स्वांगला एरतोग सोसाईटी रजि० के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक सतीश कुमार द्वारा हिमतरु प्रकाशन समिति, कुल्लू से मुद्रित एवं नीरामाटी, ज़िला कुल्लू, हि.प्र. से प्रकाशित। सम्पादक, डॉ. छिमे शाशनी।